



# आदाबे ज़िन्दगी



मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही



# आदाबे ज़िन्दगी

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

अनुवादक

डॉ० कौसर यज़दानी नदवी

मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स

नई दिल्ली-110 025

**AADAB-E-ZINDAGI (Hindi)**

**इस्लामी साहित्य ट्रस्ट प्रकाशन न०-41**

**©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

**किताब का नाम : आदाबे जिन्दगी (उर्दू)**

**लेखक : मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही**

**प्रकाशक: मर्कजी मक्ताबा इस्लामी पब्लिशर्स**

**D-307, दावत नगर, अबुल फज्जल इन्कलेव,**

**जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025**

**दूरभाष : 26981652, 26984347**

**फैक्स : 26987858**

**E-mail : mmipublishers@gmail.com**

**Website : www.mmipublishers.net**

**पृष्ठ : 380**

**संस्करण : नवम्बर 2015 ई०**

**संख्या : 4,100**

**मूल्य : ₹.175.00**

**मुद्रक**

**:**

**एच० एस० आफसेट प्रिंटर्स, नई दिल्ली-2**

# विषय सूची

दो बातें

5

## अध्याय — 1. सलीका और तहजीब

1. पाकी और सफ़ाई के आदाब	7
2. सेहत के आदाब	11
3. लिबास के आदाब	23
4. खाने-पीने के आदाब	35
5. सोने और जागने के आदाब	37
6. रास्ते के आदाब	49
7. सफ़र के आदाब	53
8. रंज व ग़म के आदाब	58
9. डर और खौफ़ के आदाब	69
10. खुशी के आदाब	76

## अध्याय — 2. अल्लाह की इबादत

11. मस्जिद के आदाब	82
12. नमाज़ के आदाब	87
13. कुरआन की तिलावत के आदाब	94
14. जुमा के दिन के आदाब	98
15. जनाजे की नमाज़ के आदाब	106
16. मध्यत के आदाब	110
17. क़ब्रिस्तान के आदाब	116
18. सूरज और चाँद-ग्रहण के आदाब	119
19. रमज़ान मुबारक के आदाब	121
20. रोज़े के आदाब	125
21. ज़कात और सदक़े के आदाब	129
22. हज़ के आदाब	132

## अध्याय — 3. बेहतर समाज

23. माँ-बाप से व्यवहार के आदाब	141
24. शौहर-बीवी के आदाब	153
25. औलाद की परवरिश के आदाब	163
26. दोस्ती के आदाब	176
27. मेज़बानी के आदाब	200



28. मेहमानों के आदाब	206
29. मज्लिस के आदाब	208
30. सलाम के आदाब	211
31. इयादत (रोगी का हाल पूछने) के आदाब	224
32. मुलाक़ात के आदाब	229
33. बात करने के आदाब	231
34. खत लिखने के आदाब	234
35. कारोबार के आदाब	237

#### अध्याय — 4. दीन की दावत

36. दीन की दावत देनेवालों के आदाब	242
37. दावत व तबलीग़ के आदाब	256
38. जमाअत बनाने के आदाब	267
39. रहनुमाई के आदाब	272

#### अध्याय — 5. बंदगी का एहसास

40. तौबा और इसतिग़फ़ार के आदाब	277
41. दुआ के आदाब	291
42. कुरआन की दुआएँ	306
43. नबी (सल्ल०) की दुआएँ	312
44. दरूद व सलाम	321
45. कुरबानी की दुआ	325
46. अक़ीक़े की दुआ	327
47. तरावीह की दुआ	329
48. कुनूते नाजिलो	331
49. हाजत (ज़रूरत) की नमाज़	333
50. कुरआन हिफ़ज़ करने की दुआ	334
51. कुरआन की समझ के लिए दुआ	338
52. जुमे का ख़ुतबा	340
53. निकाह का ख़ुतबा	352
54. इसतिख़ारा	355
55. अस्मा-ए-हुस्ना (अच्छे नाम)	357
56. मस्नून दुआएँ—एक नज़र में	375

## दो बातें

ज़िन्दगी से भरपूर फ़ायदा उठाना, मज़ा लेना और असल कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारना यक़ीनी तौर पर आपका हक़ है, लेकिन उसी वक़्त जब आप ज़िन्दगी का सलीका जानते हों, कामयाब ज़िन्दगी के उसूल और आदाब की जानकारी रखते हों और न सिर्फ़ जानकारी रखते हों, बल्कि अमली तौर पर आप उन उसूलों और आदाब से अपनी ज़िन्दगी को सँवारने और बनाने की बराबर कोशिशें कर रहे हों ।

अदब व सलीका, सफ़ाई-सुथराई, पाकी और पाकीज़गी, अच्छे अख़लाक़, नेक अमल, हमदर्दी, भाईचारा, नमी, मिठास, त्याग, कुरबानी, बेग़रज़ी, खुलूस, मुस्तैदी, फ़र्ज निभाने का एहसास, खुदा से डरना, परहेज़गारी, हिम्मत, बहादुरी वग़ैरह— ये इस्लामी ज़िन्दगी की ऐसी सुन्दर पहचान हैं, जिनकी वजह से मोमिन की बनी-सँवरी ज़िन्दगी में वह ग़ैर मामूली कोशिश और अथाह आकर्षण पैदा हो जाता है कि न सिर्फ़ मुसलमान, बल्कि इस्लाम को न समझनेवाले खुदा के दूसरे बन्दे भी बेइख़तियार उसकी ओर खिंचने लगते हैं और आम ज़ेहन यह सोचने पर मजबूर होते हैं कि इनसानियत से भरी हुई जो तहज़ीब ज़िन्दगी को निखारने, सँवारने और ग़ैर मामूली आकर्षण पैदा करने के लिए इनसानियत को यह कीमती उसूल व आदाब देती है, वह यक़ीनन हवा और रोशनी की तरह सारे इनसानों की आम मीरास है और बेशक़ इस काबिल है कि पूरी इनसानियत उसको क़बूल करके उसकी बुनियादों पर अपने निजी और सामूहिक जीवन का सफल निर्माण करे, ताकि दुनिया की ज़िन्दगी भी सुख-शान्ति से गुज़रे और दुनिया के बाद की ज़िन्दगी में भी वह सब कुछ मिले, जो एक कामयाब ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी है ।

इस किताब 'आदाबे ज़िन्दगी' में इस्लामी तहज़ीब के उन्हीं उसूल और आदाब को लेख क्रम के साथ पेश करने की कोशिश की गई है । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की शिक्षाओं और बुज़ुर्गों की अमली रहनुमाई और इस्लामी स्वभाव की रोशनी में ज़िन्दगी का सलीका सिखानेवाला यह संग्रह (मजमूआ) पाँच महत्वपूर्ण अध्यायों पर आधारित है—

पहला अध्याय — सलीका व तहज़ीब

दूसरा अध्याय — अल्लाह की इबादत

तीसरा अध्याय — बेहतर समाज

**चौथा अध्याय — दीन की दावत**

**पाँचवाँ अध्याय — बन्दगी का एहसास**

इन पाँच अध्यायों के तहत जिन्दगी के लगभग सभी पहलुओं से ताल्लुक रखनेवाले इस्लामी आदाबों को—

- प्रभावी क्रम,
- आसान और सादा ज़ुबान,
- सबकी समझ में आनेवाली और दिल में बैठ जानेवाली व्याख्या और,
- जोरदार दलीलों

— के साथ वर्णन शैली में क्रमशः पेश किया गया है ।

आशा है कि 'आदाबे जिन्दगी' का यह संग्रह हर वर्ग और हर उम्र के व्यक्तियों के लिए खुदा की मेहरबानी से बहुत ज्यादा फायदेमन्द साबित होगा । इस्लाम से मुहब्बत रखनेवाले भाई और बहनें इन क़ीमती आदाब और दर्द-भरी दुआओं से अपनी जिन्दगियाँ भी सँवारें और अपने छोटों के अखलाक़, आदतों और तौर-तरीकों को भी सुधारने और बनाने की कोशिश करें और जहाँ तक मुमकिन हो, छोटों को ये आदाब और दुआएँ याद कराएँ, इन आदाबों से सजी हुई जिन्दगी दुनिया में भी इज़्जत व एहतिराम और मुहब्बत व अक़ीदत की निगाह से देखी जाएगी और आखिरत में भी अच्छे बदले और इनाम की हक़दार बन जाएगी ।

किताब की तरतीब में जिन अहम किताबों से फ़ायदा उठाया गया है, उनके हवाले मौक़े ही पर दे दिए गए हैं ।

अल्लाह बुजुर्ग व बरतर से दुआ है कि वह इस सेवा को क़बूल फ़रमाए और मुसलमानों को तौफ़ीक़ दे कि वे इन उसूल व आदाब से अपनी जिन्दगियों को बना-सँवारकर इस्लाम के लिए दिलों में गुंजाइश और शौक व अक़ीदत के जज़्बात पैदा करें और यह संग्रह (मजमूआ) खुदा के बन्दों को खुदा के सच्चे दीन की तरफ़ खींच लाने में एक असरदार ज़रिया और तरतीब देनेवाले के लिए माफ़िरत का ज़रिया साबित हो और दीन के उन खादिमों को भी अच्छे बदले में शरीक़ फ़रमाए, जिनकी क़ीमती किताबों से फ़ायदा उठाया गया है । आमीन !!!

मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही  
30 अगस्त, सन् 1967 ई०

# सलीका और तहजीब

## 1. पाकी और सफ़ाई के आदाब

खुदा ने उन लोगों को अपना महबूब करार दिया है जो पाकी और सफ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देते हैं और नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“पाकी और सफ़ाई आधा ईमान है।”

यानी आधा ईमान तो यह है कि आदमी रूह को पाक-साफ़ रखे और आधा ईमान यह है कि आदमी जिस्म की सफ़ाई और पाकी का खयाल रखे।

रूह की पाकी यह है कि उसको कुफ़्र व शिर्क और खुदा की नाफ़रमानी और गुमराही की गन्दगियों से पाक करके साफ़-सुथरे अक़ीदे और पाकीजा अखलाक़ से सजाया जाए और जिस्म की पाकी और सफ़ाई यह है कि उसको ज़ाहिरी नापाकियों से पाक व साफ़ रखकर सफ़ाई और सलीके के आदाब से सजाया जाए—

1. सोकर उठने के बाद हाथ धोए बग़ैर पानी के बरतन में हाथ न डालिए। क्या मालूम सोते में आपका हाथ कहाँ-कहाँ पड़ा हो ?

2. गुस्लाखाने की ज़मीन पर पेशाब करने से परहेज कीजिए, खासतौर से उस वक़्त, जबकि गुस्लाखाने की ज़मीन कच्ची हो।

3. ज़रूरतों से फ़ारिग़ होने के लिए न क़िबला रुख बैठिए और न क़िबले की तरफ़ पीठ कीजिए। फ़ारिग़ होने के बाद ढेले और पानी से इस्तिंजा कीजिए या सिर्फ़ पानी से पाकी हासिल कीजिए। लीद, हड़डी और कोयले वग़ैरह से इस्तिंजा न कीजिए और इस्तिंजा के बाद साबुन या मिट्टी से ख़ूब अच्छी तरह हाथ धो लीजिए।

4. जब पेशाब-पाखाने की ज़रूरत हो तो खाना खाने न बैठिए, फ़ारिग़ होने के बाद खाना खाइए।

5. खाना वग़ैरह खाने के लिए दाहिना हाथ इस्तेमाल कीजिए। वुजू में दाएँ हाथ से काम लीजिए और इस्तिंजा करने और नाक वग़ैरह साफ़ करने के लिए बाएँ हाथ का इस्तेमाल कीजिए।

6. नर्म जगह पर पेशाब कीजिए ताकि छींटें न उड़ें और हमेशा बैठकर पेशाब कीजिए । हाँ, अगर ज़मीन बैठने के लायक न हो या कोई बाकई मजबूरी हो तो खड़े होकर पेशाब कर सकते हैं, लेकिन आम हालात में यह बड़ी गंदी आदत है, जिससे सख्ती के साथ परहेज करना चाहिए ।

7. नदी, नहर के घाट पर, आम रास्तों पर और छायादार जगहों पर हाजत पूरी करने के लिए न बैठिए, इससे दूसरे लोगों को तकलीफ़ भी होगी और अदब व तहज़ीब के खिलाफ़ भी है ।

8. जब पाखाना जाना हो तो जूता पहनकर और सर को टोपी वगैरह से ढाँपकर जाइए और जाते वक़्त यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ. (بخاری، مسلم)  
अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइस ।

(बुखागी, मुस्लिम)  
“ऐ अल्लाह ! तेरी पनाह चाहता हूँ शैतानों से, उन शैतानों से भी जो नर हैं और उनसे भी जो मादा हैं ।”

और जब पाखाने से बाहर आएँ तो यह दुआ पढ़िए—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَذْهَبَ عَنِّى الْاَذٰى وَعَافٰنِىْ. (نابى، ابن ماجه)  
अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़-ह-य अन्निल अज़ा व आफ़ानी ।

(नसई, इब्न माज़ा)

“खुदा का शुक्र है, जिसने मुझसे तकलीफ़ दूर फ़रमाई और मुझे आफ़ियत (कुशलता) बख़्शी ।”

9. नाक साफ़ करने या बलग़म थूकने के लिए एहतियात के साथ उगालदान इस्तेमाल कीजिए या लोगों से नज़र बचाकर अपनी ज़रूरतें पूरी कीजिए ।

10. बार-बार नाक में उँगली डालने और नाक की गन्दगी निकालने से परहेज कीजिए । अगर नाक साफ़ करने की ज़रूरत हो, तो लोगों की नज़र से बचकर अच्छी तरह इतमीनान से सफ़ाई कर लीजिए ।

11. रूमाल में बलग़म थूककर मलने से सख्ती के साथ परहेज कीजिए । यह बड़ी धिनौनी आदत है, अलावा इसके कि कोई मजबूरी हो ।

12. मुँह में पान भरकर इस तरह बातें न कीजिए कि सामनेवाले आदमी पर

छींटें पड़ें और उसे तकलीफ हो । इसी तरह अगर तम्बाकू और पान ज्यादा खाते हों, तो मुँह साफ रखने पर भी बहुत ज्यादा ध्यान दीजिए और इसका भी खयाल रखिए कि बात करते वक्त अपना मुँह सामनेवाले आदमी के क़रीब न ले जाएँ ।

13. बुजू काफ़ी एहतियाम के साथ कीजिए और अगर हर वक्त मुमकिन न हो तो ज्यादा से ज्यादा बाबुजू रहने की कोशिश कीजिए । जहाँ पानी न मिले, तय्यमुम कर लीजिए । 'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' कहकर बुजू शुरू कीजिए और बुजू के बीच यह दुआ पढ़िए—

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ  
وَرَسُولُهُ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ. (ترمذی)

अशहदु अल्लाइला-ह-इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क-लहू व अशहदु  
अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम्मज-अलनी  
मिनतत्त्वाबी-न वज-अलनी मिनल मु-त-तहहिरीन ।

(तिरमिज़ी)

“मैं गवाही देता हूँ कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) खुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं । ऐ खुदा ! मुझे उन लोगों में शामिल कर, जो बहुत ज्यादा तौबा करनेवाले और बहुत ज्यादा पाक-साफ़ रहनेवाले हैं ।”

और बुजू करने के बाद यह दुआ पढ़िए—

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ

إِلَيْكَ. (نَائِي)

सुब्हा-न-क अल्लाहुम-म व बिहमदि-क अशहदु अल्लाइला-ह इल्ला  
अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क ! (नसई)

“ऐ अल्लाह ! तू पाक व बरतर है, अपनी हम्द व सना के साथ । मैं गवाही देता हूँ कि कोई माबूद नहीं मगर तू ही है । मैं तुझसे माफ़िरत चाहता हूँ और तेरी तरफ़ रुजू करता हूँ ।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“कियामत के दिन मेरी उम्मत की निशानी यह होगी कि उनकी पेशानियाँ और वुजू के आज्ञा (अंग) नूर से जगमगा रहे होंगे, तो जो आदमी अपने नूर को बढ़ाना चाहे, बढ़ा ले ।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

14. पाबन्दी के साथ मिस्वाक कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि अगर मुझे उम्मत की तकलीफ का खयाल न होता तो मैं हर वुजू में उनको मिस्वाक करने का हुक्म देता । एक बार आपके पास कुछ लोग आए जिनके दाँत पीले हो रहे थे । आपने देखा, तो ताकीद फरमाई कि मिस्वाक किया करो ।

15. सप्ताह में एक बार तो ज़रूर ही गुस्ल (स्नान) कीजिए । जुमा के दिन गुस्ल का एहतिमाम कीजिए और साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर जुमा की नमाज़ में शिरकत कीजिए । नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“अमानत की अदाएंगी आदमी को जन्नत में ले जाती है ।”

सहाबा (रज़ि०) ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! अमानत से क्या मतलब है ?”

नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“नापाकी से पाक होने के लिए गुस्ल करना, इससे बढ़कर खुदा ने कोई अमानत मुकर्रर नहीं की है । इसलिए जब आदमी को नहाने की ज़रूरत हो जाए तो गुस्ल करे ।”

16. नापाकी की हालत में न मसजिद में जाइए और न मसजिद में से गुज़रिए और अगर कोई शक्ल मुमकिन ही न हो तो तयम्मुम करके मसजिद में जाइए या गुज़रिए ।

17. बालों में तेल डालने और कंघा करने का भी एहतिमाम कीजिए । दाढ़ी के बड़े हुए बेढंगे बालों को कैंची से ठीक कर लीजिए । आँखों में सुरमा भी लगाइए । नाखून कटवाने और साफ़ रखने का भी एहतिमाम कीजिए और सादगी और सन्तुलन के साथ मुनासिब साज-सज्जा का एहतिमाम कीजिए ।

18. छींकते वक़्त मुँह पर रूमाल रख लीजिए, ताकि किसी पर छींट न पड़े । छींकने के बाद ‘अल-हम्दु लिल्लाह’ (खुदा का शुक्र है) कहिए । सुनने वाला ‘यर्हमुकल्लाह’ (खुदा आप पर रहम फरमाए) कहे और उसके जवाब में ‘यहदीकल्लाह’ (खुदा आप को हिदायत दे) कहिए ।

19. खुशबू का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल कीजिए । नबी (सल्ल०) खुशबू को बहुत पसन्द करते थे । आप सोकर उठने के बाद जब ज़रूरतों से फ़ारिश होते तो खुशबू ज़रूर लगाते ।

## 2. सेहत के आदाब

1. सेहत खुदा की बहुत बड़ी नेमत है और बहुत बड़ी अमानत भी । सेहत की कद्र कीजिए और इसकी हिफाजत में कभी लापरवाही न कीजिए । एक बार जब सेहत बिगड़ जाती है, तो फिर बड़ी मुश्किल से बनती है । जिस तरह छोटी-सी दीमक बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियों को चाटकर तबाह कर डालती है, उसी तरह सेहत के मामले में ज़रा-सी लापरवाही और छोटी-सी बीमारी ज़िन्दगी को तबाह कर डालती है ! सेहत के मामले में ग़फलत बरतना और उसकी हिफाजत में कोताही करना बेहिंसी भी है और खुदा की नाशुक्री भी ।

इनसान की ज़िन्दगी की असल खूबी अक़ल, अख़लाक़, ईमान और सलीका है, और अक़ल व अख़लाक़, ईमान और सलीका की सेहत का दारोमदार भी बड़ी हद तक जिस्म की सेहत पर है । अक़ल व दिमाग़ को बढ़ाने, अख़लाक़ी बढ़ाई के तकाज़े और दीनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने के लिए जिस्म की सेहत बुनियाद की हैसियत रखती है । कमज़ोर और बीमार जिस्म में अक़ल व दिमाग़ भी कमज़ोर होते हैं और उनकी कारगुजारी भी निहायत ही हौसला तोड़नेवाली होती है और जब ज़िन्दगी उमंगों, वलवलों और हौसलों से दूर हो, इरादे कमज़ोर हों और भावनाएँ ठंडी हों तो ऐसी बेरौनक़ ज़िन्दगी कमज़ोर जिस्म के लिए बोझ बन जाती है ।

ज़िन्दगी में मोमिन को जो बड़े कारनामे अंजाम देने और खिलाफ़त की जिस बड़ी ज़िम्मेदारी को निभाना है, उसके लिए ज़रूरी है कि जिस्म में जान हो, अक़ल व दिमाग़ में ताक़त हो, इरादों में मज़बूती हो, हौसलों में बुलन्दी हो और ज़िन्दगी वलवलों, उमंगों और अच्छे जज़्बात से भरपूर हो । सेहतमन्द और ज़िन्दादिल लोगों से ही ज़िन्दा कौमें बनती हैं और ऐसी ही कौमें ज़िन्दगी के मैदान में बड़ी क़ुरबानियाँ देकर अपनी जगह पैदा करती हैं और ज़िन्दगी का मूल्य और महत्व समझाती हैं ।

2. हमेशा हँसते-मुस्कराते और चाक़ व चौबन्द रहिए । हँसकर, मुस्कराकर, अपने अख़लाक़ और ज़िन्दा-दिली से ज़िन्दगी को सजाइए, दिलचस्प और सेहतमन्द बनाए रखिए । ग़म, गुस्सा, रंज, फ़िक़्र, हसद, जलन, बुरा चाहना, तंग-नज़री, मुर्दा-दिली और दिमागी उलझनों से दूर रहिए ।

ये अख़लाक़ी बीमारियाँ और ज़ेहनी उलझनें मेदे पर बहुत बुरा असर डालती हैं और मेदे की खराबी सेहत की बदतरनी दुश्मन है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“सीधे-सादे रहो, बीच का रास्ता अपनाओ और हँसते-मुस्कराते रहो ।”

(मिशक़ात)



एक बार नबी (सल्ल०) ने एक बूढ़े आदमी को देखा कि वह अपने दो बेटों का सहारा लिए हुए उनके बीच में घसिटता हुआ जा रहा है। आपने पूछा, “इस बूढ़े को क्या हो गया है ?” लोगों ने बताया कि इसने बैतुल्लाह तक पैदल जाने की नज़र मानी थी। नबी (सल्ल०) ने इशाराद फ़रमाया—

“खुदा इससे बेनियाज़ है कि यह बूढ़ा खुद को अज़ाब में डाले और उस बूढ़े को हुक्म दिया कि सवार होकर अपना सफ़र पूरा करो।”

हज़रत उमर (रज़ि०) ने एक बार एक जवान आदमी को देखा कि मरियल चाल चल रहा है। उन्होंने उसको रोका और पूछा, “तुम्हें क्या बीमारी है ?” उसने कहा, “कोई बीमारी नहीं है।” उन्होंने अपना दुरा उठाया और उसको धमकाते हुए कहा, “रास्ते पर पूरी ताक़त के साथ चलो।”

नबी (सल्ल०) जब रास्ते पर चलते तो निहायत जमे हुए कदम रखते और इस तरह ताक़त के साथ चलते कि जैसे किसी ढलान में उतर रहे हों।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) कहते हैं—

“मैंने नबी (सल्ल०) से ज़्यादा मुस्करानेवाला कोई आदमी नहीं देखा।”  
(तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने अपनी उम्मत को जो दुआ सिखाई है, उसका भी एहतिमाम कीजिए—

اللَّهُمَّ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَضَلَعِ الدِّينِ وَغَلَبَةِ  
الرِّجَالِ. (بخاری، مسلم)

अल्लाहुम-म अऊज़ु बि-क मिनल हम्मि वल-हुज़्जि वल-अज़्जि  
वल-क-सलि व ज़ल-इद दैनि व ग-ल-बतिरिज़ाल

(बुखारी, मुस्लिम)

“ऐ खुदा ! मैं अपने को तेरी पनाह में देता हूँ पेशानी से, ग़म से, बेचारागी से, सुस्ती और काहिली से, क़र्ज़ के बोझ से और इस बात से कि लोग मुझको दबाकर रखें।”

3. अपने जिस्म पर बरदाश्त से ज़्यादा बोझ न डालिए। जिस्म की ताक़तों को बरबाद न कीजिए। जिस्म की ताक़तों का यह हक़ है कि उनकी हिफ़ाज़त की जाए और उनसे बरदाश्त के मुताबिक़ काम लिया जाए।

हजरत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“उतना ही अमल करो, जितना कर सकने की तुम्हारे अन्दर ताकत हो, इसलिए कि खुदा नहीं उकताता, यहाँ तक कि खुद तुम ही उकता जाओ ।”

(बुखारी)

हजरत अबू कैस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि वे नबी (सल्ल०) की खिदमत में ऐसे वक़्त हाज़िर हुए जबकि नबी (सल्ल०) खुतबा दे रहे थे । हजरत अबू कैस (रज़ि०) धूप में खड़े हो गए । नबी (सल्ल०) ने हुक्म दिया तो वे साए की तरफ़ हट गए ।

(अल अदबुल मुफ़रद)

नबी (सल्ल०) ने इससे भी मना फ़रमाया कि आदमी के जिस्म का कुछ हिस्सा धूप में रहे और कुछ साए में ।

क़बीला बाहिला की एक औरत मुजीबा (रज़ि०) बयान करती हैं कि एक बार मेरे अब्बा नबी (सल्ल०) के यहाँ दीन का इल्म हासिल करने के लिए गए और दीन की कुछ अहम बातें मालूम करके घर वापस आ गए । फिर एक साल के बाद दोबारा आप की खिदमत में हाज़िर हुए तो नबी (सल्ल०) उन्हें बिलकुल न पहचान सके तो उन्होंने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या आपने मुझे पहचाना नहीं ?” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “नहीं, मैंने तो तुम्हें नहीं पहचाना । अपना परिचय कराओ !” उन्होंने कहा, “मैं क़बीला बाहिला का एक आदमी हूँ, पिछले साल भी आपकी खिदमत में हाज़िर हुआ था ।” तो नबी (सल्ल०) ने कहा, “यह तुम्हारी हालत क्या हो रही है ? पिछले साल जब आए थे तब तो तुम्हारी शकल व सूरत और हालत बड़ी अच्छी थी ।” उन्होंने बताया कि जब से मैं आपके पास से गया हूँ । उस वक़्त से अब तक बराबर रोज़े रख रहा हूँ, सिर्फ़ रात में खाना खाता हूँ ।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तुमने ख़्वाह मख़्वाह अपने को तकलीफ़ में डाला (और अपनी सेहत बरबाद कर डाली) ।” फिर आपने हिदायत फ़रमाई कि रमज़ान में महीने भर के रोज़े रखो और उसके अलावा हर महीने एक रोज़ा रख लिया करो । उन्होंने कहा, “हुज़ूर ! एक दिन से ज़्यादा की इजाज़त दीजिए ।” इरशाद फ़रमाया, “अच्छा, हर महीने में दो दिन रोज़े रख लिया करो ।” उन्होंने फिर कहा, “हुज़ूर ! कुछ और ज़्यादा की इजाज़त दीजिए ।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अच्छा हर महीने में तीन दिन ।” उन्होंने कहा, “हुज़ूर ! कुछ और बढ़ा दीजिए ।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अच्छा, हर साल मुहर्रम के महीने में रोज़े रखो और छोड़ दो । ऐसा ही हर साल करो ।” यह इरशाद फ़रमाते हुए नबी (सल्ल०) ने अपनी तीन उँगलियों से इशारा फ़रमाया, उनको मिलाया, फिर छोड़ दिया (इस तरह यह बताना चाहते थे कि रजब, शव्वाल, जीक़अदा

और ज़िल हिज्जा में रोज़े रखा करो और किसी साल नागा भी कर दिया करो) । नबी (सल्ल०) का इरशाद है, “मोमिन के लिए मुनासिब नहीं है कि वह अपने को ज़लील (रुसवा) करे ।” लोगों ने पूछा, “मोमिन भला कैसे अपने आपको ज़लील करता है ?” इरशाद फ़रमाया, “अपने आपको बरदाश्त न होने के काबिल आजमाइश में डाल देता है ।” (तिरमिज़ी)

4. हमेशा सख्ती सहने, मेहनत-मशक्कत करने और बहादुरी दिखानेवाली ज़िन्दगी गुज़ारिए । हर तरह की सख्तियाँ झेलने और मुश्किल से मुश्किल वक़्त का मुकाबला करने की आदत डालिए, और सख्त जान बनकर सादा और मुजाहिदाना ज़िन्दगी गुज़ारने का एहतिमाम कीजिए । आराम-तलब, सहलपसन्द, नज़ाकतपसन्द, काहिल, पस्तहिम्मत और दुनियापरस्त न बनिए ।

नबी (सल्ल०) जब हज़रत मुआज़ बिन ज़बल (रज़ि०) को यमन का गवर्नर बनाकर भेजने लगे तो हिदायत फ़रमाई—

“मुआज़ ! अपने को आराम-तलबी से बचाए रखना, इसलिए कि खुदा के बन्दे आरामतलब नहीं होते ।” (मिशकात)

और हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“सादा (साधारण) ज़िन्दगी गुज़ारना ईमान की निशानी है ।”

(अबू दाऊद)

नबी (सल्ल०) सादा और मुजाहिदाना ज़िन्दगी गुज़ारते थे और हमेशा अपनी मुजाहिदाना ताक़त को बचाए रखने और बढ़ाने की कोशिश करते थे । आप (सल्ल०) तैरने में भी दिलचस्पी रखते थे, इसलिए कि तैरने से बेहतरीन वरज़िश हो जाती है । एक बार एक तालाब में नबी (सल्ल०) और नबी (सल्ल०) के कुछ साथी तैर रहे थे । नबी (सल्ल०) ने तैरनेवालों में से हर एक की जोड़ी मुक़र्रर फ़रमा दी कि हर आदमी अपने जोड़े की ओर तैरकर पहुँचे । चुनौचे प्यारे नबी (सल्ल०) के साथी हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) क़रार पाए । नबी (सल्ल०) तैरते हुए उन तक पहुँचे और जाकर उनकी गरदन पकड़ ली ।

नबी (सल्ल०) को सवारी के लिए घोड़ा बहुत पसन्द था । नबी (सल्ल०) अपने घोड़े की खुद खिदमत फ़रमाते, अपने हाथ से उसका मुँह पोंछते और साफ़ करते । उसके सिर के बालों को अपनी उँगलियों से कंधी करते और कहते, “भलाई इसकी पेशानी से क्रियामत तक के लिए जुड़ी हुई है ।”

हज़रत उक्रबा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“तीर चलाना सीखो । घोड़े पर सवार हुआ करो । तीरंदाज़ी करनेवाले

मुझे घोड़ों पर सवार होनेवालों से भी ज्यादा पसन्द हैं और जिसने तीरंदाजी सीखकर छोड़ दी, उसने खुदा की नेमत की नाकद्वी की ।” (अबू दाऊद)  
हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फरमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“जिसने खतरे के मौके पर मुजाहिदों की देखभाल की, उसकी यह रात शबेक़दर से ज्यादा अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) है ।” (हाकिम)  
नबी (सल्ल०) ने सहाबा किराम को खिताब करते हुए फरमाया—

“मेरी उम्मत पर वह वक़्त आनेवाला है जब दूसरी क़ौम उसपर इस तरह टूट पड़ेगी जिस तरह खानेवाले दस्तरख़्वान पर टूट पड़ते हैं,” तो किसी ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या उस ज़माने में हमारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि हमें निगल लेने के लिए क़ौमों एक जुट होकर हम पर टूट पड़ेंगी ?” इरशाद फरमाया— “नहीं, उस वक़्त तुम्हारी तादाद कम न होगी, बल्कि तुम बहुत बड़ी तादाद में होगे, लेकिन तुम बाढ़ में बहनेवाले तिनकों की तरह बेवज़न होगे । तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से तुम्हारा रौब निकल जाएगा और तुम्हारे दिलों में पस्तहिम्मती घर कर लेगी ।” इसपर एक आदमी ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! यह पस्तहिम्मती किस वजह से आ जाएगी ?” नबी (सल्ल०) ने फरमाया— “इस वजह से कि तुम दुनिया से मुहब्बत और मौत से नफ़रत करने लगोगे” ।

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“बेहतरीन ज़िन्दगी उस आदमी की ज़िन्दगी है जो अपने घोड़े की लगाम पकड़े हुए खुदा की राह में उसको उड़ाता फिरता है । जहाँ किसी खतरे की खबर सुनी, घोड़े की पीठ पर बैठकर दौड़ गया । क़त्ल और मौत से ऐसा निडर है गोया उसकी खोज में है ।” (मुस्लिम)

5. औरतें भी मेहनत व मशक्क़त की ज़िन्दगी गुज़ारें । घर के काम-काज अपने हाथों से करें । चलने-फिरने और तकलीफ़ बरदाश्त करने की आदत डालें । आराम-तलबी, सुस्ती और आराम-पसन्दी से बचें और बच्चों को भी शुरू से ही मेहनती और सख़्त-जान बनाने की कोशिश करें । घर में नौकर हों तो भी अपने बच्चों को बात-बात में नौकर का सहारा लेने से मना करें और आदत डलवाएँ कि बच्चे अपना काम खुद अपने हाथ से करें । सहाबिया औरतें अपने घरों का काम अपने हाथ से खुद करती थीं । रसोई घर का काम खुद करतीं, चक्की पीसतीं, पानी भरकर लातीं, कपड़े धोतीं, सिलाई-बुनाई का काम करतीं और मेहनत-मशक्क़त की ज़िन्दगी गुज़ारतीं और ज़रूरत पड़ने पर लड़ाई के मैदान में घायलों की मरहम-पट्टी

करने और पानी पिलाने का इन्तिज़ाम भी सँभाल लेतीं । इससे औरतों की सेहत भी बनी रहती है, अखलाक भी सेहतमन्द रहते हैं और बच्चों पर भी उसके अच्छे असरात पड़ते हैं । इस्लाम की नज़र में पसन्दीदा बीबी वही है जो घर के काम-काज में लगी रहती हो और जो रात-दिन इस तरह अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों में लगी हुई हो कि उसके चेहरे से मेहनत की थकन भी ज़ाहिर हो और बावर्चीख़ाने की कालिख और धुएँ का धुआँसा भी ज़ाहिर हो रहा हो । नबी (सल्ल०) का इशाराद है—

“मैं और धूमिल गालोंवाली औरत क्रियामत के दिन इस तरह होंगे ।”

(आपने शहादत की उँगली और बीच की उँगली को मिलाते हुए बताया ।)

6. सुबह जल्दी उठने की आदत डालिए । सोने में संतुलन रखिए । न इतना कम सोइए कि जिस्म को पूरी तरह आराम व सुकून न मिल सके और जिस्म में थकन और टूटन रहे, और न इतना ज़्यादा सोइए कि सुस्ती और काहिली पैदा हो । रात को जल्द सोने और सुबह को जल्द उठने की आदत डालिए ।

सुबह उठकर खुदा की बन्दगी बजा लाइए और बाग़ या मैदान में टहलने और तफ़रीह करने के लिए निकल जाइए । सुबह की ताज़ा हवा सेहत पर बहुत अच्छा असर डालती है । हर दिन अपने जिस्म की ताक़त के लिहाज़ से मुनासिब और हल्की-फुल्की वरज़िश का भी एहतिमाम कीजिए ।

नबी (सल्ल०) बाग़ की तफ़रीह को पसन्द फ़रमाते थे और कभी-कभी खुद भी बाग़ में तशरीफ़ ले जाते थे ।

नबी (सल्ल०) ने इशा के बाद जागने और बातें करने को मना फ़रमाया और फ़रमाया “इशा के बाद वही आदमी जाग सकता है, जिसको कोई दीनी बात करनी हो या फिर घरवालों से ज़रूरत की बात-चीत करनी हो ।”

7. आत्म-संयम (ज़ब्त नफ़्स) की आदत डालिए । अपने जज़्बों, ख़यालों, ख़्वाहिशों और शहवतों (काम वासनाओं) पर क़ाबू रखिए । अपने दिल को बहकने, ख़यालों को बिखरने और निग़ह को आवारा होने से बचाइए । ख़्वाहिशों का बहकाव और नज़र की आवारगी से दिल व दिमाग़, सुकून व आफ़ियत से महरूम हो जाते हैं और ऐसे चेहरे ज़वानी के हुस्न व ज़माल, मलाहत (लवण्य), कशिश और मदों जैसी खूबियों की दिलकशी से महरूम हो जाते हैं और फिर वे ज़िन्दगी के हर मैदान में पस्तहिम्मत, पस्तहौसला और डरपोक साबित होते हैं ।

नबी (सल्ल०) का इशाराद है—

“आँखों का ज़िना बदनिगाही (कुदृष्टि) और ज़बान का ज़िना बेहयाई

की बातें हैं । नफ़स तकाजे करता है, और शर्मगाह या तो उसकी तस्दीक कर देती है या उसे झुठला देती है ।”

किसी अक्लमन्द आदमी ने कहा है—

मुसलमानो ! बदकारी के करीब न फटको, इसमें छः खराबियाँ हैं । तीन खराबियाँ तो दुनिया की हैं और तीन आखिरत की । दुनिया की तीन खराबियाँ ये हैं कि इससे—

□ आदमी के चेहरे की रौनक और कशिश जाती रहती है ।

□ आदमी पर गरीबी और फ़कीरी की मुसीबत नाज़िल होती है, और

□ उसकी उम्र कम हो जाती है ।

8. नशीली चीज़ों से बचिए । नशीली चीज़ें दिमाग़ पर भी असर डालती हैं और मेदे पर भी । शराब तो ख़ैर हाराम है ही, इसके अलावा भी जो नशीली चीज़ें हैं, उनसे भी परहेज़ कीजिए ।

9. हर काम में बीच का रास्ता अपनाइए और सादगी पर ध्यान दीजिए । जिस्मानी मेहनत में, दिमागी कामों में, मियाँ-बीवी के ताल्लुक में, खाने-पीने में, सोने और आराम करने में, फ़िक्र करने और हँसते रहने में, खेल-तमाशों और इबादत में, चाल-ढाल और बातचीत में, गरज़ हर चीज़ में बीच का रास्ता अपनाइए और उसको ख़ैर व ख़ूबी का खज़ाना समझिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“खुशहाली में बीच का रास्ता क्या ही ख़ूब है, ग़रीबी में बीच का रवैया क्या ही भला है और इबादत में बीच का रास्ता क्या ही बेहतर है ।”

(कंज़ुल उम्माल)

10. खाना हमेशा वक़्त पर खाइए । ज़्यादा खाने से बचिए, हर वक़्त मुँह चलाने से परहेज़ कीजिए । खाना भूख लगने पर ही खाइए और जब कुछ भूख बाकी हो तो उठ जाइए । भूख से ज़्यादा तो हरगिज़ न खाइए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“ईमानवाला एक आँत में खाता है और ग़ैर ईमानवाला सात आँतों में खाता है ।”

(तिरमिज़ी)

सेहत पेट के ठीक-ठाक रहने पर सही रहती है और ज़्यादा खाने से मेदा ख़राब हो जाता है । नबी (सल्ल०) ने इसे एक मिसाल से भी समझाया है—

“मेदा बदन के लिए हौज की तरह है और नसें इस हौज से सींची जानेवाली हैं । इसलिए अगर मेदा सही और तन्दुरुस्त है तो नसें भी सेहत से सिंची हुई लौटेंगी और अगर मेदा ही खराब और बीमार है, तो नसें बीमारी चूसकर लौटेंगी ।” (बैहक्की)

कम खाने पर उभारते हुए नबी (सल्ल०) ने यह भी फरमाया—

“एक आदमी का खाना दो आदमियों के लिए काफी है ।”

11. हमेशा साधारण खाना खाइए, बगैर छने हुए आटे की रोटी खाइए । ज्यादा गर्म खाना खाने से भी परहेज कीजिए । मसालों, चटखारों और ज़रूरत से ज्यादा जायकेदार चीजों से परहेज कीजिए ।

ऐसे खानों को पसन्द कीजिए जो जल्द हज्म हों और साधारण हों और जिनसे जिस्म को सेहत और ताक़त मिले । सिर्फ़ लज़्जत हासिल करने और ज़बान का जायका हासिल करने के पीछे न पड़िए ।

नबी (सल्ल०) बगैर छने आटे की रोटी पसन्द करते । ज्यादा पतली और मैदे की चपाती पसन्द न करते । बहुत ज्यादा गर्म खाना, जिसमें भाप निकलती होती, न खाते, बल्कि ठंडा होने का इन्तिज़ार करते । गर्म खाने के बारे में कभी फरमाते कि खुदा ने हमको आग नहीं खिलाई है और कभी इरशाद फरमाते कि गर्म खाने से बरकत नहीं होती । आप गोश्त पसन्द फरमाते, खास तौर पर हाथ, गर्दन और पीठ का गोश्त चाब से खाते । हकीकत में जिस्म को ताक़त पहुँचाने और मुजाहिदाना मिज़ाज बनाने के लिए गोश्त एक अहम और ज़रूरी भोजन है और मोमिन का सीना हर वक़्त मुजाहिदाना ज़ब्जों से आबाद रहना चाहिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी खुदा की राह में जिहाद किए बगैर मर गया और उसके दिल में इसकी आरजू भी नहीं थी, वह निफ़ाक़ (कपट) की एक हालत में मरा ।” (मुस्लिम)

12. खाना निहायत इतमीनान व सुकून के साथ खूब चबा-चबाकर खाइए । ग़म, गुस्सा, रंज और घबराहट की हालत में खाने से परहेज कीजिए । खुशी और ज़ेहनी सुकून की हालत में इतमीनान के साथ जो खाना खाया जाता है, वह जिस्म को ताक़त पहुँचाता है और रंज व फ़िक्र और घबराहट में जो खाना निगला जाता है, वह मेदे पर बुरा असर डालता है और इससे जिस्म को पूरी तरह ताक़त नहीं मिल पाती । दस्तरख़्वान पर न तो बिलकुल खामोश, दुखी और ग़मगीन होकर बैठिए और न हद से बढ़ी हुई दिल्लगी ज़ाहिर कीजिए कि दस्तरख़्वान पर ठहाके

उठने लगे । खाने के दौरान ठहाके लगाना, कभी-कभी जान के लिए खतरे की वजह भी बन जाता है ।

दस्तरख्वान पर सन्तुलन के साथ हँसते-बोलते रहिए, खुशी-खुशी खाना खाइए और खुदा की दी हुई नेमतों पर उसका शुक्र अदा कीजिए और जब बीमार हों तो परटेज भी पूरे एहतिमाम से कीजिए ।

उम्मे मुंजिर (रजि०) कहती हैं कि नबी (सल्ल०) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए । हमारे यहाँ खजूर के खोशे लटक रहे थे । हुजूर (सल्ल०) उनमें से खाने लगे, हज़रत अली (रजि०) भी आपके साथ थे । वे भी खाने लगे तो नबी (सल्ल०) ने उनको रोक दिया कि तुम अभी बीमारी से उठे हो, तुम मत खाओ । चुनौचे हज़रत अली (रजि०) रुक गए और नबी (सल्ल०) खाते रहे । उम्मे मुंजिर (रजि०) कहती हैं कि फिर मैंने थोड़ा-सा जौ और चुकन्दर लेकर पकाया । नबी (सल्ल०) ने हज़रत अली (रजि०) से फ़रमाया, “अली ! इसे खाओ, यह तुम्हारे लिए मुनासिब खाना है ।” (शमाइले तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) के दस्तरख्वान पर जब कोई मेहमान होता तो वे बार-बार उससे फ़रमाते जाते, खाइए और खाइए । जब मेहमान ख़ूब पेट भर लेता और बेहद इनकार करता, तब आप अपने इसरार से बाज़ आते । यानी नबी (सल्ल०) बड़ी ही खुशगवार और खुशी के माहौल में मुनासिब बातें करते हुए खाना खाते ।

13. दोपहर का खाना खाने के बाद थोड़ी देर कैलूला (आराम) ज़रूर कीजिए और रात का खाना खाने के बाद थोड़ी देर चहल-कदमी कीजिए और खाना खाने के बाद तुरन्त कोई सल्लत क्रिस्म का दिमागी या जिस्मानी काम हरगिज़ न कीजिए । अरबी की मशहूर कहावत है—

त-गद-द त-मद-द, त-अश-श त-मश-श ।

“दोपहर का खाना खाओ, तो लम्बे हो जाओ । रात का खाना खाओ तो चहल-कदमी करो ।”

14. आँखों की हिफ़ाज़त का पूरा एहतिमाम कीजिए, तेज़ रौशनी से आँखें न लड़ाइए । सूरज की तरफ़ नज़र जमाकर न देखिए । ज़्यादा हल्की या ज़्यादा तेज़ रौशनी में न पढ़िए, हमेशा साफ़ और दरमियानी रौशनी में पढ़िए । ज़्यादा जागने से भी बचिए । धूल-गुबार से आँखों को बचाइए । आँखों में सुरमा लगाइए और हमेशा आँखें साफ़ रखने की कोशिश कीजिए । खेतों, बाग़ों और हरी-हरी घासों में सैर व तफ़रीह कीजिए । हरियाली देखने से निगाहों पर अच्छा असर पड़ता है । आँखों को बदनिगाही (बुराई) से बचाइए । इससे आँखें बेरौनक़ हो जाती हैं और



सेहत पर भी बुरा असर पड़ता है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“तुम्हारी आँखों का भी तुम पर हक़ है । मोमिन का फ़र्ज है कि वह खुदा की इस नेमत की क़द्र करे, उसको खुदा की मरज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करे, उसकी हिफ़ाज़त और सफ़ाई का एहतिमाम रखे, वे सारी तदबीरें अपनाए, जिनसे आँखों को फ़ायदा पहुँचता हो और उन बातों से बचा रहे, जिनसे आँखों को नुक़सान पहुँचता हो ।”

इसी तरह जिस्म के दूसरे अंगों और ताक़त की हिफ़ाज़त का भी ख़याल रखिए ।  
नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“लोगो ! आँखों में सुरमा लगाया करो । सुरमा आँख के मैल को दूर करता है और बालों को उगाता है ।” (तिरमिज़ी)

15. दाँतों की सफ़ाई और हिफ़ाज़त का एहतिमाम कीजिए । दाँतों को साफ़ रखने से फ़रहत (खुशी) हासिल होती हैं, हाज़मे पर अच्छा असर पड़ता है और दाँत मज़बूत रहते हैं । मिस्वाक की आदत डालिए, अच्छे मंजन वग़ैरह का भी इस्तेमाल कीजिए । पान या तम्बाकू वग़ैरह की ज़्यादाती से दाँतों को ख़राब न कीजिए । खाने से पहले और खाने के बाद दाँतों को अच्छी तरह साफ़ कर लिया कीजिए ।

दाँत गन्दे रहने से तरह-तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं, इसलिए नबी (सल्ल०) का तरीक़ा था कि जब नींद से जागते तो मिस्वाक से अपना मुँह साफ़ करते ।  
(बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं—

“हम नबी (सल्ल०) के लिए वुजू का पानी और मिस्वाक तैयार रखते थे । जिस वक़्त भी खुदा का हुक्म होता, आप (सल्ल०) उठ बैठते थे और मिस्वाक करते थे । फिर वुजू करके नमाज़ अदा करते थे ।” (मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“मैं तुम लोगों को मिस्वाक करने के बारे में बहुत ताकीद कर चुका हूँ ।” (बुख़ारी)

हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“मिस्वाक मुँह को साफ़ रखनेवाली और खुदा को राज़ी करनेवाली चीज़ है ।”  
(नसई)

आप (सल्ल०) का इरशाद है—

“अगर मैं अपनी उम्मत के लिए बोझ न समझता तो हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता ।”  
(अबू दाऊद)

एक बार नबी (सल्ल०) से मिलने के लिए कुछ मुसलमान हाज़िर हुए, उनके दाँत साफ़ न होने की वजह से पीले हो रहे थे । नबी (सल्ल०) की नज़र पड़ी तो फ़रमाया—

“तुम्हारे दाँत पीले क्यों नज़र आ रहे हैं ? मिस्वाक किया करो ।”  
(मुस्नद अहमद)

16. पेशाब-पाख़ाने की ज़रूरत हो तो फ़ौरन ज़रूरत पूरी कीजिए । इन ज़रूरतों को रोकने से मेदे और दिमाग़ पर बहुत बुरे असरात पड़ते हैं ।

17. पाकी और सफ़ाई का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए । कुरआन में है—

“ख़ुदा उन लोगों को अपना महबूब रखता है जो बहुत ज़्यादा पाक व साफ़ रहते हैं ।”  
(कुरआन, अत्तौबा)

और नबी (सल्ल०) का इरशाद है— “सफ़ाई और पाकीज़गी आधा ईमान है ।”

सफ़ाई और पाकीज़गी की इसी अहमियत को देखते हुए नबी (सल्ल०) ने पाकी के अहकाम खुलकर बयान किए हैं और हर मामले में पाकी और सफ़ाई की ताकीद की है । खाने-पीने की चीज़ों को ढ़ँककर रखिए, उन्हें गन्दा होने से बचाइए और मक्खियों से हिफ़ाज़त कीजिए । बरतनों को साफ़-सुथरा रखिए । कपड़ों और लेटने-बैठने के बिस्तरों को पाक-साफ़ रखिए । उठने-बैठने की जगहों को साफ़-सुथरा रखिए । जिस्म की सफ़ाई के लिए वुजू और गुस्ल (नहाने) का एहतिमाम कीजिए । जिस्म, कपड़े और ज़रूरत की सारी चीज़ों की सफ़ाई और पाकीज़गी से रूह को भी खुशी हासिल होती है और जिस्म को भी ताज़गी मिलती है । इस तरह कुल मिलाकर इनसानी सेहत पर इसका बहुत-ही ज़्यादा खुशगवार असर पड़ता है ।

हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

“जब से मैंने इस्लाम क़बूल किया है हर नमाज़ के लिए बावुजू रहता हूँ ।”  
(मुस्लिम)

एक बार नबी (सल्ल०) ने हज़रत बिलाल (रज़ि०) से पूछा, “कल तुम मुझसे पहले जन्नत में कैसे दाख़िल हो गए ?” बोले, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मैं जब भी अज़ान कहता हूँ तो दो रकअत नमाज़ ज़रूर पढ़ लेता हूँ और जिस वक़्त भी वुजू टूटता है फ़ौरन नया वुजू करके हमेशा बावुजू रहने की कोशिश करता

हैं ।”

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“हर मुसलमान का खुदा पर यह हक़ है कि हर हफ़्ते में एक दिन ज़रूर नहाया (स्नान) करे और अपने सिर और बदन को धोया करे ।”

(बुखारी)

### 3. लिबास के आदाब

1. लिबास ऐसा पहनिए जो शर्म व हया, गैरत व शराफत और जिस्म को ढाँके और उसकी हिफाजत के काम को पूरा करे और जिससे तहजीब व सलीका और ज़ीनत व जमाल ज़ाहिर होता हो ।

कुरआन पाक में अल्लाह तआला ने अपनी इस नेमत का जिक्र करते हुए इरशाद फरमाया है—

يٰۤاٰدَمُ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلٰیكَمۡ لِبَاسًا یُّوَارِیۡ سَوَآءِکُمۡ وَرِیۡشًا. (الاعراف)

“ऐ आदम की औलाद ! हमने तुम पर लिबास उतारा है कि तुम्हारे जिस्म की शर्मगाहों को ढाँके और तुम्हारे लिए ज़ीनत और हिफाजत का ज़रिया भी हो ।”  
(कुरआन, 7:26)

कुरआन मजीद की उक्त आयत में अरबी शब्द ‘रीश’ आया है। ‘रीश’ दरअसल चिड़ियों के पंखों को कहते हैं । चिड़ियों के पंख उसके लिए खूबसूरती का भी ज़रिया हैं और जिस्म की हिफाजत का भी । आम इस्तेमाल में ‘रीश’ शब्द जमाल व ज़ीनत और बहुत अच्छे लिबास के लिए बोला जाता है ।

लिबास का मक़सद साज-सज्जा और जिस्म को मौसम के असर से बचाना भी है, लेकिन पहला मक़सद शर्मवाले अंगों को ढाँकना ही है । खुदा ने शर्म व हया इनसान की फ़ितरत में पैदा की है । यही वजह है कि जब हज़रत आदम (अलै०) और हज़रत हव्वा (अलै०) से जन्नत का अच्छा लिबास उतरवा लिया गया तो वे जन्नत के पेड़ों के पत्तों से अपने जिस्मों को ढाँपने लगे । इसलिए लिबास में इस मक़सद को सबसे ज़्यादा अपने सामने रखिए और ऐसा लिबास चुनिए जिससे शर्मगाहों को ढकने का मक़सद अच्छी तरह पूरा हो सके । साथ ही, इसका भी एहतिमाग रहे कि लिबास मौसम के असर से जिस्म की हिफाजत करनेवाला भी हो और ऐसा सलीके का लिबास हो जो ज़ीनत व जमाल और तहजीब का भी ज़रिया हो । ऐसा न हो कि उसे पहनकर आप कोई अज़ूबा या खिलौना बन जाएँ और लोगों के लिए हँसी और दिल्लगी का सामान इकट्ठा हो जाए ।

2. लिबास पहनते वक़्त यह सोचिए कि यह वह नेमत है जिससे खुदा ने सिर्फ़ इनसान को नवाज़ा है । दूसरी मखलूक (जीव) इससे महरूम हैं । इस खास बख़शिश व इनाम पर खुदा का शुक्र अदा कीजिए और खुदा की नाशुक्रि और नाफ़रमानी कभी न कीजिए । लिबास खुदा की एक ज़बरदस्त निशानी है । लिबास पहनें तो इस एहसास को ताज़ा कीजिए और शुक्रगुज़ारी के जज़बों को उस दुआ के लफ़्ज़ों

में ज़ाहिर कीजिए जो नबी (सल्ल०) ने मोमिनों को सिखाई है ।

3. बेहतरीन लिबास तक्रवा का लिबास है । तक्रवा के लिबास से बातिनी पाकीजगी भी मुराद है और ज़ाहिरी परहेजगारी का लिबास भी, यानी ऐसा लिबास पहनिए जो शरीअत की नज़र में परहेजगारों का लिबास हो, जिससे घमंड और गुरूर ज़ाहिर न होता हो, जो न औरतों के लिए मर्दों जैसा बनने का ज़रिया हो और न मर्दों के लिए औरतों जैसा बनने का । ऐसा लिबास पहनिए जिसको देखकर महसूस हो सके कि लिबास पहननेवाला कोई शरीफ़ और भला आदमी है । और औरतें लिबास की उन हदों को ध्यान में रखें जो शरीअत ने उनके लिए मुकर्रर कर दी हैं और मर्द उन हदों का खयाल रखें जो शरीअत ने उनके लिए मुकर्रर की हैं ।

4. नया लिबास पहनें तो कपड़े का नाम लेकर खुशी ज़ाहिर कीजिए कि खुदा ने अपने फ़जल व करम से यह कपड़ा दिया और शुक्र के जज़्बों में डूबकर नया लिबास पहनने की वह दुआ पढ़िए जो नबी (सल्ल०) पढ़ा करते थे ।

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जब कोई नया कपड़ा, अमामा, कुरता या चादर पहनते तो उसका नाम लेकर फ़रमाते—

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ، اَسْأَلُكَ خَيْرَهُ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهُ وَاَعُوْذُ  
بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ ०  
(ابوداؤد)

अल्लाहुम-म लकल-हम्दु अन-त कसौ-तनीहि, अस्अलु-क खै-रहू व खै-र मा सुनि-अ लहू व अऊजुबि-क मिन शर्रिहि व शर्रि मा सुनि-अ लहू ।  
(अबू दाऊद)

“ऐ अल्लाह ! तेरा शुक्र है, तूने मुझे यह लिबास पहनाया, मैं तुझसे इसकी भलाई चाहता हूँ और मैं अपने आपको तेरी पनाह में देता हूँ इस लिबास की बुराई से और इसके मक़सद के उस बुरे पहलू से, जिसके लिए यह बनाया गया है ।”

दुआ का मतलब यह है कि ऐ खुदा ! तू मुझे तौफ़ीक़ दे कि तेरा बख़्शा हुआ लिबास उन्हीं मक़सदों में लगाऊँ जो तेरे नज़दीक पाक़-साफ़ मक़सद है । मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं इससे अपनी शर्मगाहों को छिपा सकूँ और बेशर्मी और बेहयाई की बातों से अपने ज़ाहिर व बातिन को बचाए रख सकूँ और शरीअत की हदों में रहते हुए मैं इसके ज़रिए अपने जिस्म की हिफ़ाज़त कर सकूँ और उसको ज़ीनत व ज़माल का ज़रिया बना सकूँ, कपड़े पहनकर न तो दूसरों पर अपनी बड़ाई जताऊँ, न घमंड करूँ और न तेरी इस नेमत को इस्तेमाल करने में शरीअत की उन हदों को तोड़ूँ

जो तुने अपने बन्दों और बन्दियों के लिए मुकर्रर फरमाई हैं ।

हजरत उमर (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“जो आदमी नए कपड़े पहने, अगर वह गुंजाइश रखता हो, तो अपने पुराने कपड़े किसी गरीब को खैरात में दे दे और नए कपड़े पहनते वक़्त यह दुआ पढ़े—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ مَا اُوَارِيْ بِهِ عَوْرَتِيْ وَاتَجَمَّلُ بِهِ فِيْ حَيَاتِيْ

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिहि औ-रती व अ-त-जम्मलु बिहि फ़ी हयाती” (तिरमिज़ी)

“सारी तारीफ़ और हम्द उस खुदा के लिए है, जिसने मुझे ये कपड़े पहनाए जिससे मैं अपनी शर्मगाह ढाँकता हूँ और जो इस ज़िन्दगी में मेरे लिए हुस्न व जमाल का भी ज़रिया है ।”

जो आदमी भी नया कपड़ा पहनते वक़्त यह दुआ पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसको ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी अपनी हिफ़ाज़त और निगरानी में रखेगा ।

5. कपड़े पहनते वक़्त सीधी तरफ़ का खयाल रखिए । कमीज़, कुरता, शेरवानी और कोट वगैरह पहनें तो पहले सीधी आस्तीन पहनिए और इसी तरह पाजामा वगैरह पहनें तो पहले सीधे पैर में पाँचवा डालिए । नबी अकरम (सल्ल०) जब कमीज़ पहनते तो पहले दाएँ हाथ को आस्तीन में डालते और फिर बायाँ हाथ आस्तीन में डालते, इसी तरह जब आप जूता पहनते तो पहले सीधा पाँव सीधे जूते में डालते फिर उल्टा पाँव उल्टे जूते में डालते और जूता उतारते वक़्त पहले उल्टा पाँव जूते में से निकालते, फिर सीधा पाँव निकालते ।

6. कपड़े पहनने से पहले ज़रूर झाड़ लीजिए, हो सकता है कि उसमें कोई तकलीफ़ पहुँचानेवाला जानवर हो और खुदा न करे कोई तकलीफ़ पहुँचाए ।

नबी (सल्ल०) एक बार एक जंगल में अपने मोज़े पहन रहे थे । पहला मोज़ा पहनने के बाद जब आपने दूसरा मोज़ा पहनने का इरादा किया, तो एक कौवा झपटा और मोज़ा उठाकर उड़ गया और काफ़ी ऊपर ले जाकर छोड़ दिया । वह मोज़ा जब ऊँचाई से नीचे गिरा तो गिरने की चोट से उसमें से एक साँप दूर जा पड़ा । यह देखकर नबी (सल्ल०) ने खुदा का शुक्र अदा किया और इरशाद फरमाया—

“हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि जब मोज़ा पहनने का इरादा करे तो उसको झाड़ लिया करे ।” (तबरानी)

7. लिबास सफ़ेद पहनिए । सफ़ेद लिबास मर्दों के लिए पसंदीदा है । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“सफ़ेद कपड़े पहना करो, यह बेहतरीन लिबास है । सफ़ेद कपड़ा ही ज़िन्दगी में पहनना चाहिए और सफ़ेद ही कपड़ों में मुर्दों को दफ़न करना चाहिए ।”  
(तिरमिज़ी)

एक और मौके पर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“सफ़ेद कपड़े पहना करो इसलिए कि सफ़ेद कपड़ा ज़्यादा साफ़-सुथरा रहता है और इसी में अपने मुर्दों को कफ़नाया करो ।” (मुस्लिम)

ज़्यादा साफ़-सुथरा रहने का मतलब यह है कि अगर उसपर ज़रा भी दाग़-धब्बा लगे तो फ़ौरन महसूस हो जाएगा और आदमी फ़ौरन उसे धोकर साफ़ कर लेगा और अगर कोई रंगीन कपड़ा होगा तो उस पर दाग़-धब्बा ज़ल्द नज़र न आ सकेगा और जल्द धोने की ओर तवज्जोह न हो सकेगी ।

सही बुखारी में है कि नबी (सल्ल०) सफ़ेद कपड़ा पहना करते थे, यानी आपने खुद भी सफ़ेद कपड़ा पसन्द किया और उम्मत के मर्दों में भी इसी के पहनने का चाव पैदा किया ।

8. पाजामा और लुंगी वग़ैरह को टखनों से ऊँचा रखिए । जो लोग घमण्ड में अपना पाजामा या लुंगी वग़ैरह लटका लेते हैं, नबी (सल्ल०) की नज़र में वे नाकाम और नामुराद लोग हैं और सख़्त अज़ाब के हक़दार हैं । नबी अकरम (सल्ल०) का इशारा है—

“तीन किस्म के लोग ऐसे हैं कि अल्लाह क्रियामत के दिन न तो उनसे बात करेगा, न उनकी तरफ़ नज़र फ़रमाएगा और न उनको पाक व साफ़ करके जन्नत में दाखिल करेगा, बल्कि उनको इतिहाई दर्दनाक अज़ाब देगा ।”

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) ने पूछा—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! ये नाकाम व नामुराद लोग कौन हैं ?”

नबी (सल्ल०) ने इशारा फ़रमाया—

“पहला— वह जो घमंड में अपना तहबंद टखनों से नीचे लटकाता है,

दूसरा— वह आदमी है जो एहसान जताता है, और

तीसरा— वह आदमी है जो झूठी क़समों के सहारे अपनी तिजारात को चमकाना चाहता है ।”  
(मुस्लिम)

हजरत उबैद बिन खालिद (रज़ि०) अपना एक वाकिआ बयान फ़रमाते हैं—

कि मैं एक बार मदीना मुनव्वरा में जा रहा था कि मैंने अपने पीछे से यह कहते सुना, “अपना तहबन्द ऊपर उठा लो— कि इससे आदमी ज़ाहिरी गन्दगी से भी बचा रहता है और बातिनी गन्दगी से भी ।”

मैंने गर्दन फेरकर जो देखा तो नबी करीम (सल्ल०) थे । मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! यह तो एक मामूली-सी चादर है । भला इसमें क्या घमण्ड हो सकता है ।

नबी करीम (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, “क्या तुम्हारे लिए मेरी पैरवी ज़रूरी नहीं है ?” मैंने नबी (सल्ल०) के लफ़्ज़ सुने तो फ़ौरन मेरी निगाह आपके तहमद पर पड़ी । मैंने देखा कि आप का तहमद आधी पिंडुली तक ऊँचा है ।

नबी (सल्ल०) का यह इरशाद कि ‘टखनों से ऊँचा पाजामा और लुंगी वग़ैरह पहनने से आदमी हर तरह की ज़ाहिरी और बातिनी गंदगियों से बच जाता है’ बड़े ही मानीवाला है । इसका मतलब यह है कि जब कपड़ा नीचे लटकेगा तो रास्ते की गन्दगी से मैला और खराब होगा, पाक-साफ़ न रह सकेगा और यह बात पाकी और सफ़ाई के ज़ौक पर भारी बोझ है । फिर ऐसा करना घमण्ड की वजह से है और घमण्ड बातिनी गन्दगी है और अगर ये मस्लहतें न भी हों तो मोमिन के लिए तो यह फ़रमान ही सब कुछ है कि—

“नबी (सल्ल०) की ज़िन्दगी तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है ।”

(अल-कुरआन)

और अबू दाऊद की हदीस में तो नबी (सल्ल०) ने इसकी बड़ी हिला देनेवाली सज़ा सुनाई है । फ़रमाया—

“मोमिनों का तहमद आधी पिंडुली तक होना चाहिए और उसके नीचे टखनों तक होने में भी कोई हरज नहीं, लेकिन टखनों से नीचे तहमद का जितना हिस्सा लटकेगा, वह आग में जलेगा और जो आदमी घमंड में अपने कपड़े को टखने से नीचे लटकाएगा, क्रियामत के दिन खुदा उसकी तरफ़ नज़र उठाकर भी न देखेगा ।”

9. रेशमी कपड़ा न पहनिए । यह औरतों का पहनावा है और नबी (सल्ल०) ने मर्दों को औरतों जैसा पहनावा पहनने और औरतों जैसी शक्ल व सूरत बनाने से सख़्ती के साथ मना किया है ।

हजरत उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) का इरशाद है—



“रेशमी कपड़े न पहनो कि जो इसको दुनिया में पहनेगा, वह आखिरत में इसको न पहन सकेगा ।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

एक बार नबी (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) से फ़रमाया—

“उस रेशमी कपड़े को फाड़कर और उसके दुपट्टे बनाकर इन फ़ातिमाओं में बाँट दो ।”  
(मुस्लिम)

इससे यह भी मालूम हुआ कि औरतों के लिए रेशमी कपड़े पहनना पसंदीदा है । इसी लिए नबी (सल्ल०) ने हुक्म दिया कि औरतों के दुपट्टे बना दो, वरना कपड़ा तो दूसरे कामों में भी आ सकता है ।

10. औरतें ऐसे बारीक कपड़े न पहनें जिसमें से बदन झलके और न ऐसा चुस्त लिबास पहनें जिसमें से बदन की बनावट और ज़्यादा आकर्षक बनकर ज़ाहिर हो और वे कपड़े पहनकर भी नंगी नज़र आएँ । नबी (सल्ल०) ने ऐसी बेहया औरतों को बुरे अंजाम की खबर दी है—

“वे औरतें भी जहन्नमी हैं जो कपड़े पहनकर भी नंगी रहती हैं, दूसरों को दिखाती हैं और खुद दूसरों पर रीझती हैं । उनके सिर नाज़ से बुख्ती (एक किस्म के बड़े) ऊँटों के कोहानों की तरह टेढ़े हैं । ये औरतें न जन्नत में जाएँगी और न जन्नत की खुशबू जाएँगी, जबकि जन्नत की खुशबू बहुत दूर से आती है ।”  
(रियाज़ुस्सालिहीन)

एक बार हज़रत अस्मा (रज़ि०) बारीक कपड़े पहने हुए नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुईं । वे सामने आईं तो नबी (सल्ल०) ने फ़ौरन मुँह फेर लिया और फ़रमाया—

“अस्मा ! जब औरत जवान हो जाए तो उसके लिए ज़ायज़ नहीं है कि मुँह और हाथ के अलावा उसके जिस्म का कोई हिस्सा नज़र आए ।”

11. तहमद और पाजामा वग़ैरह पहनने के बाद भी ऐसे अन्दाज़ से लेटने और बैठने से बचिए, जिसमें बदन खुल जाने या नुमायाँ हो जाने का अंदेशा हो । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

---

1. यह कपड़ा नबी (सल्ल०) को उक़ैदर, दूमा के हाकिम ने तोहफ़े में भेजा था ।

2. फ़ातिमाओं से मुराद ये तीन इज़्जतदार औरतें हैं—

(i) हज़रत फ़ातिमा, नबी (सल्ल०) की प्यारी बेटी और हज़रत अली (रज़ि०) की बीवी,

(ii) फ़ातिमा बिन असद, हज़रत अली (रज़ि०) की माँ ।

(iii) फ़ातिमा बिन हमज़ा, हज़रत हमज़ा (रज़ि०) की बेटी ।

“एक जूता पहनकर न चला करो और तहमद में एक ज्ञानू उठाकर उकड़ूँ न बैठो और बाएँ हाथ से न खाओ और चादर पूरे बदन पर इस अन्दाज़ से न लपेटो (कि काम-काज करने या नमाज़ वगैरह पढ़ने में हाथ न निकल सकें) और न चित लेटकर एक पाँव को दूसरे पाँव पर रखो (कि इस तरह भी शर्मगाहों के ढकने में बेइहतियाती का अंदेशा है) ।”

12. लिबास में औरतें और मर्द एक-दूसरे जैसा रंग-ढंग न अपनाएँ । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“खुदा ने उन मर्दों पर लानत की है जो औरतों का-सा रंग-ढंग अपनाएँ और उन औरतों पर भी लानत फ़रमाई है जो मर्दों का-सा रंग-ढंग अपनाएँ ।”  
(बुखारी)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

“अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उस मर्द पर लानत फ़रमाई है जो औरतों जैसा लिबास पहने और उस औरत पर लानत फ़रमाई है जो मर्द जैसा पहनावा पहने ।”  
(अबू दाऊद)

एक बार हज़रत आइशा (रज़ि०) से किसी ने ज़िक्र किया कि एक औरत है जो मर्दों जैसे जूते पहनती है तो उन्होंने फ़रमाया, “अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ऐसी औरतों पर लानत फ़रमाई है, जो मर्द बनने की कोशिश करती हैं ।”

13. औरतें दुपट्टा ओढ़े रहने का एहतिमाम रखें और उससे अपने सिर और सीने को छिपाए रखें । दुपट्टा ऐसा बारीक न ओढ़िए जिससे सिर के बाल नज़र आएँ । दुपट्टे का मक़सद ही यह है कि इससे ज़ीनत को छिपाया जाए । क़ुरआन पाक में अल्लाह का इशारा है—

“और अपने सीनों पर अपने दुपट्टों के आँचल डाले रहें ।”

(क़ुरआन, 24:31)

एक बार नबी (सल्ल०) के पास मिन्न की बनी हुई बारीक मलमल आई । आपने उसमें से कुछ हिस्सा फाड़कर देहया कलबी को दिया और फ़रमाया—

“इसमें से एक हिस्सा फाड़कर तुम अपना कुरता बना लो और एक हिस्सा अपनी बीवी को दुपट्टा बनाने के लिए दे दो, पर उनसे कह देना कि इसके नीचे एक और कपड़ा लगा लें, ताकि जिस्म की बनावट अन्दर

से न झलके ।”

(अबू दाऊद)

किताब व सुन्नत की इस खुली हिदायत को सामने रखकर अल्लाह के हुक्मों के मकसद को पूरा कीजिए और चार गिरह की पट्टी को गले का हार बनाकर अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के हुक्मों का मजाक न उड़ाइए ।

हजरत आइशा (रजि०) फरमाती हैं—

“जब यह हुक्म उतरा तो औरतों ने बारीक कपड़े छोड़कर मोटे कपड़े छाँटे और उनके दुपट्टे बनाए ।”

(अबू दाऊद)

14. लिबास हमेशा अपनी ताकत और हैसियत के मुताबिक पहनिए । न ऐसा लिबास पहनिए जिससे घमण्ड और दिखावा ज़ाहिर हो और आप दूसरों को हकीर समझकर इतराएँ और अपनी दौलतमन्दी की बेजा नुमाइश करें और न ऐसा लिबास पहनिए जो आपकी ताकत से ज़्यादा क्रीमती हो और आप फ़िज़ूलखर्ची के गुनाह में पड़ जाएँ, और न ऐसे फटेहाल बने रहें कि हर वक़्त आपकी शक्ल सवाली बनी रहे और सब कुछ होने के बावजूद आप महरूम नज़र आएँ, बल्कि हमेशा अपनी ताकत और हैसियत के लिहाज़ से मुनासिब, सलीकेदार और साफ़-सुथरे कपड़े पहनिए ।

कुछ लोग फटे-पुराने और पैवन्द लगे कपड़े पहनकर फटेहाल बने रहते हैं और इसको दीनदारी समझते हैं, इतना ही नहीं, बल्कि वे उन लोगों को दुनियादार समझते हैं जो साफ़-सुथरे सलीके के पकड़े पहनते हैं, हालाँकि दीनदारी का यह खयाल ही बिल्कुल ग़लत है ।

हजरत अबू हसन अली शाज़ली (रह०) एक बार बहुत अच्छा कपड़ा पहने हुए थे । किसी फटेहाल सूफ़ी ने उनके इस ठाट-बाट पर एतराज़ किया कि भला अल्लाहवालों को ऐसा क्रीमती लिबास पहनने की क्या ज़रूरत ? हजरत शाज़ली ने जवाब दिया—

“भाई ! यह शान व शौकत, सबसे बड़े शानवाले, खुदा की हम्द व शुक्र को ज़ाहिर करने के लिए है और तुम्हारा यह फटेहाल होना हाथ फैलाने जैसा है ।”

असल बात तो यह है कि दीनदारी न फटे-पुराने, पैवन्द लगे, घटिया कपड़ों के पहनने का नाम है और न शानदार कपड़ों के पहनने का नाम है, बल्कि दीनदारी तो आदमी की नीयत और उसकी सही सोच के मुताबिक़ कायम होती है । सही बात यह है कि आदमी हर मामले में अपनी ताकत और हैसियत का खयाल रखते हुए बीच का रास्ता अपनाए, न फटेहाल होकर मन को मोटा होने का मौका दे

और न तड़क-भड़क के कपड़े पहनकर घमंड को जाहिर करे ।

हज़रत अबुल अह्वस (रह०) के बाप अपना एक वाकिआ नक़ल करते हैं कि एक बार मैं नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुआ । उस वक़्त मेरे जिस्म पर निहायत ही घटिया और मामूली कपड़े थे । नबी (सल्ल०) ने पूछा—

“क्या तुम्हारे पास माल व दौलत है ?”

मैंने कहा— “जी हाँ !”

पूछा— “किस तरह का माल है ?”

मैंने कहा— “खुदा ने मुझे हर किस्म का माल दे रखा है । ऊँट भी हैं, गायें भी हैं, बकरियाँ भी हैं, घोड़े भी हैं और नौकर-चाकर भी हैं ।”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जब खुदा ने तुम्हें माल व दौलत दे रखा है, तो उसकी मेहरबानी का असर तुम्हारे जिस्म पर जाहिर होना चाहिए ।” (मिशकात)

मतलब यह है कि जब खुदा ने तुम्हें सब कुछ दे रखा है, तो फिर तुमने ग़रीबों और फ़क़ीरों की तरह अपना हुलिया क्यों बना रखा है ? यह तो खुदा की नाशुक्रि है ।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) का बयान है कि एक बार नबी (सल्ल०) मुलाक़ात की गरज़ से हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए तो आप (सल्ल०) ने एक आदमी को देखा जो गर्द व गुबार में अटा हुआ था और उसके बाल बिखरे हुए थे । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“क्या इस आदमी के पास कोई कंधा नहीं है, जिससे यह अपने बालों को ठीक कर लेता ?”

और आप (सल्ल०) ने एक दूसरे आदमी को देखा, जिसने मैले कपड़े पहन रखे थे । आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“क्या इस आदमी के पास वह चीज़ (यानी साबुन वग़ैरह) नहीं है, जिससे यह अपने कपड़े धो लेता ।” (मिशकात)

एक आदमी ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं चाहता हूँ कि मेरा पहनावा बहुत उम्दा हो, सिर में तेल लगा हुआ हो, जूते भी अच्छे हों, इसी तरह उसने बहुत-सी चीज़ों का ज़िक्र किया, यहाँ तक कि उसने कहा, मेरा जी चाहता है कि

मेरा कोड़ा भी निहायत उम्दा हो ।” नबी (सल्ल०) उसकी बातें सुनते रहे, फिर फ़रमाया, “ये सारी बातें पसंदीदा हैं और खुदा इस अच्छे ज़ौक को अच्छी नज़र से देखता है ।” (मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या यह घमण्ड है कि मैं अच्छे और उम्दा कपड़े पहनूँ ? नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, “नहीं यह तो ख़ूबसूरती है और खुदा इस ख़ूबसूरती को पसन्द करता है ।” (इब्ने माज़ा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“नमाज़ में दोनों कपड़े पहन लिया करो (यानी पूरे लिबास पहन लिया करो ।) खुदा ज़्यादा हक़दार है कि उसकी हुज़ूरी में आदमी अच्छी तरह बन-सँवारकर जाए ।” (मिशकात)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जिसके दिल में ज़रा भी घमण्ड होगा वह जन्नत में न जाएगा ।” एक आदमी ने कहा, “हर आदमी यह चाहता है कि उसके कपड़े अच्छे हों, उसके जूते अच्छे हों ।”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा खुद जमाल (सौन्दर्य) वाला है और जमाल को पसन्द करता है । (यानी अच्छा पहनावा घमण्ड नहीं है) घमण्ड तो असल में यह है कि आदमी हक़ से बेनियाज़ी बरते और लोगों को नीचा और ज़लील समझे ।” (मुस्लिम)

15. पहनने-ओढ़ने और बनाव-श्रृंगार करने में भी ज़ौक और सलीके का पूरा-पूरा खयाल रखिए । गिरेबान खोले-खोले फिरना, उलटे-सीधे बटन लगाना, एक पायँचा चढ़ाना और एक नीचा रखना और एक जूता पहनकर चलना या उलझे हुए बाल रखना— ये सभी बातें ज़ौक और सलीके के खिलाफ़ हैं ।

एक दिन नबी (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे कि इतने में एक आदमी वहाँ आया जिसके सिर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे । नबी (सल्ल०) ने अपने हाथ से उसकी ओर इशारा किया, जिसका मतलब यह था कि जाकर अपने सिर के बाल और दाढ़ी को सँवारो । चुनौचे वह आदमी गया और बालों को बना-सँवारकर आया तो आपने इरशाद फ़रमाया—

“क्या यह ज़ीनत और साज-सज्जा इससे बेहतर नहीं है कि आदमी

के बाल बिखरे हुए हों ? ऐसा मालूम होता है कि गोया वह शैतान है ।”

(मिशकात)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“एक जूता पहनकर कोई न चले, या दोनों पहनकर चलो या दोनों उतारकर चलो ।”

(तिरमिज़ी)

और इसी हदीस की रौशनी में उलेमा ने एक आस्तीन और एक मोज़ा पहनने से भी मना किया है ।

16. लाल और शोख (गहरा या तेज़) रंग, तड़क-भड़क पहनावा और नुमाइशी काले और गेरवे कपड़े पहनने से भी परहेज़ कीजिए । लाल और शोख रंग और तड़क-भड़क लिबास औरतों ही के लिए मुनासिब है और उनको भी हदों का खयाल रखना चाहिए । रहे नुमाइशी लम्बे-चौड़े जुब्बे या काले और गेरवा जोड़े पहनकर दूसरों के मुकाबले में अपनी बरतरी दिखाना और अपना बड़प्पन जताना, तो यह सरासर घमण्ड की निशानी है । इसी तरह ऐसे अजीब व गरीब कपड़े और ऐसे कपड़े जिनका मज़ाक उड़ाया जाए, न पहनिए, जिनके पहनने से आप ख्वाह-मख्वाह अजूबा बन जाएँ और लोग आपको हँसी और दिल्लगी की चीज़ समझ लें ।

17. हमेशा सादा, वक्रारवाला और तहज़ीब का लिबास पहनिए और पहनावे पर हमेशा दरमियाना खर्च कीजिए । लिबास में आरामपसन्दी और ज़रूरत से ज़्यादा नज़ाकत से परहेज़ कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“आरामपसन्दी से दूर रहो, इसलिए कि खुदा के प्यारे बन्दे आराम पसन्द नहीं होते ।”

(मिशकात)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी इरशाद फ़रमाया—

“जिस आदमी ने हैसियत और ताकत के बावजूद खाकसारी और आजिज़ी की गरज़ से लिबास में सादगी अपनाई तो खुदा उसको शराफ़त और बुज़ुर्गी के लिबास से सजाएगा ।”

(अबू दाऊद)

सहाबा किराम (रज़ि०) एक दिन बैठे दुनिया का जिक्र कर रहे थे तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“लिबास की सादगी ईमान की निशानियों में से एक है ।” (अबू दाऊद)

एक बार नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा के बहुत-से बन्दे जिनकी ज़ाहिरी हालत निहायत ही मामूली होती है, बाल परेशान और गुबार में अटे हुए, कपड़े मामूली और सादा

होते हैं, लेकिन खुदा की नज़र में उनका रुत्बा इतना बुलन्द होता है कि अगर वे किसी बात पर क़सम खा बैठें तो खुदा उनकी क़सम को पूरा ही फ़रमा देता है। इस क़िस्म के लोगों में से एक बरा बिन मालिक (रज़ि०) भी हैं।” (तिरमिज़ी)

18. खुदा की इस नेमत का शुक्र अदा करने के लिए उन ग़रीबों को भी पहनाएँ, जिनके पास तन ढाँकने के लिए कुछ न हो। नबी (सल्ल०) का इरश़ाद है—

“जो आदमी किसी ईमानवाले को कपड़े पहनाकर उसकी तनपोशी करेगा तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन जन्नत का हरा कपड़ा पहनाकर उसकी तनपोशी फ़रमाएगा।” (अबू दाऊद)

और प्यारे नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि किसी मुसलमान ने अपने मुसलमान भाई को कपड़े पहनाए तो जब तक वे कपड़े पहननेवाले के बदन पर रहेंगे, पहनानेवाले को खुदा अपनी निगरानी व हिफ़ाज़त में रखेगा। (तिरमिज़ी)

19. अपने उन नौकरों और खादिमों को भी अपनी हैसियत के मुताबिक़ अच्छा कपड़ा पहनाइए जो रात व दिन आपकी ख़िदमत में लगे रहते हैं।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“लौंडी और गुलाम तुम्हारे भाई हैं। खुदा ने उनको तुम्हारे क़ब्ज़े में दे रखा है। पर तुममें से जिस किसी के क़ब्ज़े और इस्तेमाल में खुदा ने किसी को दे रखा है तो उसको चाहिए कि उसको वही खिलाए जो वह खुद खाता है और उसे वैसा ही लिबास पहनाए जो वह खुद पहनता है और उसपर काम का उतना ही बोझ डाले जो उसकी बर्दाश्त से ज़्यादा न हो और अगर वह उस काम को न कर पा रहा हो तो खुद उस काम में उसकी मदद करे।” (बुख़ारी, मुस्लिम)

## 4. खाने-पीने के आदाब

1. खाने से पहले हाथ धो लीजिए । पाकी और सफ़ाई का तकाज़ा है कि खाने में पड़नेवाले हाथों की तरफ़ से तबीयत को इतमीनान हो ।
2. 'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़कर खाना शुरू कीजिए और अगर भूल जाएँ तो याद आने पर 'बिसमिल्लाहि अब्वलुहू व आखिरुहू' कह लीजिए । याद रखिए जिस खाने पर खुदा का नाम नहीं लिया जाता, उसको शैतान अपने लिए जायज़ कर लेता है ।
3. खाने के लिए टेक लगाकर न बैठिए । खाकसारी (नम्रता) के साथ उकड़ूँ या दो जानू होकर या एक घुटना बिछाकर और एक खड़ा करके बैठिए । खुदा के रसूल (सल्ल०) इसी तरह बैठते थे ।
4. हमेशा सीधे हाथ से खाइए । ज़रूरत पड़ने पर बाएँ हाथ से भी मदद ले सकते हैं ।
5. तीन उँगलियों से खाइए और अगर ज़रूरत हो तो सबसे छोटी उँगली छोड़कर चार उँगलियों से काम लीजिए और उँगलियाँ जड़ों तक सानने से परहेज़ कीजिए ।
6. निवाला (लुक्मा) न ज़्यादा बड़ा लीजिए और न ज़्यादा छोटा, और एक निवाला निगलने के बाद ही दूसरा निवाला मुँह में दीजिए ।
7. रोटी से उँगलियाँ हरगिज़ साफ़ न कीजिए । यह बड़ी घिनावनी आदत है ।
8. रोटियों को झाड़ने और पटकने से भी परहेज़ कीजिए ।
9. प्लेट में अपनी ओर के किनारे से खाइए, न बीच में हाथ डालिए और न दूसरों की ओर से खाइए ।
10. निवाला गिर जाए तो उठाकर साफ़ कर लीजिए या धो लीजिए और खा लीजिए ।
11. खाना मिल-जुलकर खाइए । मिल-जुलकर खाने से प्रेम व मुहब्बत भी पैदा होती है और बरकत भी ।
12. खाने में कभी ऐब न निकालिए । पसन्द न हो तो छोड़ दीजिए ।
13. बहुत गर्म जलता हुआ खाना न खाइए ।
14. खाने के दौरान ठट्ठा मारने और बहुत ज़्यादा बातें करने से परहेज़ कीजिए ।
15. बेज़रूरत खाने को न सूँघिए । यह बुरी आदत है । खाने के बीच बार-बार



• इस तरह मुँह न खोलिए कि चबता हुआ खाना नज़र आए और न बार-बार मुँह में उँगली डालकर दाँतों में से कुछ निकालिए । इससे दस्तरख्वान पर बैठनेवालों को घिन आती है ।

16. खाना भी बैठकर खाइए और पानी भी बैठकर पीजिए, अलबत्ता ज़रूरत पड़ने पर फल वगैरह खड़े होकर खा सकते हैं और पानी भी पी सकते हैं ।

17. प्लेट में जो कुछ रह जाए, अगर पतली चीज़ हो तो पी लीजिए, नहीं तो उँगली से चाटकर प्लेट साफ़ कर लीजिए ।

18. खाने-पीने की चीज़ों पर फूँक न मारिए । अन्दर से आनेवाली साँस गंदी और ज़हरीली होती है ।

19. पानी तीन साँस में ठहर-ठहरकर पीजिए । इससे पानी भी ज़रूरत के मुताबिक़ पिया जाता है और दिल भी भर जाता है । एक साथ पूरे बरतन का पानी पेट में उड़ेल लेने से कभी-कभी तकलीफ़ भी हो जाती है ।

20. एक साथ खाते वक़्त, देर तक खानेवालों और धीमे खानेवालों की रियायत कीजिए और सबके साथ उठिए ।

21. खाने से फ़ारिग होकर उँगलियाँ चाट लीजिए और फिर हाथ धो लीजिए ।

22. फल वगैरह खा रहे हों तो एक साथ दो-दो की तादाद में या दो-दो फाँकें न उठाइए ।

23. लोटे की टोंटी या सुराही या इसी तरह की दूसरी चीज़ों से पानी न पीजिए । ऐसे बरतन में पानी लेकर पीजिए, जिसमें पीते वक़्त मुँह में जानेवाला पानी नज़र आए, ताकि कोई गन्दगी या नुक़सानदेह चीज़ पेट में न जाए ।

24. खाने से फ़ारिग होकर यह दुआ पढ़िए—

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ .

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-ना व सक्काना व ज-अ-ल-ना मिनल मुस्लिमीन ।

“हम्द व सना उस खुदा के लिए है, जिसने हमें खिलाया और जिसने हमें पिलाया और जिसने हमें फ़रमाबरदारों में से बनाया ।”

## 5. सोने और जागने के आदाब

1. जब शाम का अँधेरा छाने लगे तो बच्चों को घर में बुला लीजिए और बाहर न खेलने दीजिए। हाँ, जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र जाए तो निकलने की इजाज़त दे सकते हैं। एहतियात इसी में है कि किसी बड़ी ज़रूरत के बग़ैर बच्चों को रात में घर से न निकलने दें। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब शाम हो जाए तो छोटे बच्चों को घर में रोके रखो, इसलिए कि उस वक़्त शैतान (ज़मीन में) फैल जाते हैं। अलबत्ता जब घड़ी भर रात गुज़र जाए तो बच्चों को छोड़ सकते हो।”

(सिहाहे सिता ब हवाला हिस्ने हसीन)

2. जब शाम हो जाए, तो यह दुआ पढ़िए। नबी (सल्ल०) सहाबा किराम (रज़ि०) को यही दुआ पढ़ने को फ़रमाया करते थे—

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَاوَبِكَ اَصْبَحْنَاوَبِكَ نَحْيَاوَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ  
النُّشُوْرُ. (ترمذی)

अल्लाहुम-म बि-क अम्सैना व बि-क अस्बहना व बि-क नह्या व बि-क नमूतु व इलैकन्शूर।  
(तिरमिज़ी)

“ऐ खुदा हम ने तेरी ही तौफ़ीक़ से शाम की और तेरी ही मदद से सुबह की, तेरी ही इनायत से जी रहे हैं और तेरे ही इशारे पर मर जाएँगे और आखिरकार तेरे ही पास उठकर हाज़िर होंगे।”

और मगरिब की अज़ान के वक़्त यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ هَذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِيْ.  
(ابودाؤد-ترمذی)

अल्लाहुम-म हाज़ा इक़बालु लैलि-क व इदबारु नहारि-क व अस्वातु दुआति-क फ़ाग़फ़िरली।  
(तिरमिज़ी, अबूदाऊद)

“ऐ खुदा ! यह वक़्त है तेरी रात के आने का, तेरे दिन के जाने का और तेरे मुअज्जिनों की पुकार का, बस तू मेरी माग़फ़िरत फ़रमा दे।”

3. इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले सोने से परहेज़ कीजिए। इस तरह अकसर

इशा की नामाज़ खतरे में पड़ जाती है। क्या खबर कि नींद की इस मौत के बाद खुदा बन्दे की जान वापस करता है या फिर हमेशा के लिए ले लेता है। नबी (सल्ल०) इशा से पहले कभी न सोते थे।

4. रात होते ही घर में रौशनी ज़रूर कर लीजिए। नबी (सल्ल०) ऐसे घर में सोने से परहेज़ फ़रमाते, जिसमें रौशनी न की गई होती।

5. रात गए तक जागने से परहेज़ कीजिए। रात में जल्द सोने और सुबह में जल्द उठने की आदत डालिए। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“इशा की नमाज़ के बाद या तो अल्लाह के ज़िक्र के लिए जागा जा सकता है या घरवालों से ज़रूरत की बात करने के लिए।” (मुस्लिम)

6. रात को जागने और दिन में नींद पूरी करने से परहेज़ कीजिए। खुदा ने रात को आराम और सुकून के लिए पैदा फ़रमाया है और दिन को सोकर उठने और ज़रूरतों के लिए दौड़-धूप करने का वक़्त करार दिया है। क़ुरआन की सूरा फ़ुरक़ान में है—

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝

“और वह खुदा ही है जिसने रात को तुम्हारे लिए परदापोश बनाया और नींद को राहत व सुकून और दिन उठ खड़े होने को बनाया।”

(क़ुरआन, 25:47)

और सूरा ‘नबा’ में है—

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝

“और हमने नींद को तुम्हारे लिए सुकून व आराम, रात को परदापोश और दिन को रोज़ी की दौड़-धूप का वक़्त बनाया।”

(क़ुरआन, 78:9-11)

और सूरा ‘नम्ल’ में है—

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

“क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि हमने (अँधेरी) रात बनाई कि ये उसमें आराम व सुकून हासिल करें और दिन को रौशन (कि दौड़-धूप

करें) । बेशक इसमें ईमानवालों के लिए सोचने के इशारे हैं ।”

(कुरआन, 27:86)

रात को अँधेरी और सुकून व आराम का वक्त बनाने और दिन को दौड़-धूप और मेहनत के लिए रौशन बनाने में इशारा यह है कि रात को सोने की पाबन्दी की जाए और दिन में अपनी जरूरतों के लिए मेहनत और कोशिश की जाए ।

दिन की रौशनी में अपनी रोज़ी-रोटी और जरूरतों के लिए मेहनत और मशक्कत के साथ लगे रहिए, यहाँ तक कि आपके अंग और कुव्वतें थकन महसूस करने लगें । उस वक्त रात की सुकूनवाली और परदापोश फ़िज़ा में सुकून व राहत के साथ सो जाइए और दिन निकलते ही फिर खुदा का नाम लेते हुए ताज़ा-दम अमल के मैदान में उतर पड़िए । जो लोग आराम-तलबी और सुस्ती की वजह से दिन में खरटि लेते हैं या ऐश करने और खेल-तमाशे में लगे रहने के लिए रात-भर जागते हैं, वे कुदरत की हिकमतों का खून करते हैं और अपनी सेहत व ज़िन्दगी को बरबाद करते हैं । दिन चढ़े तक सोनेवाले अपने दिन के कामों में भी कोताही करते हैं और जिस्म व जान को भी आराम से महरूम रखते हैं, इसलिए कि दिन की नींद रात का बदल नहीं बन पाती । नबी (सल्ल०) ने तो इसको भी पसन्द नहीं फ़रमाया कि आदमी रात-रात भर जागकर खुदा की इबादत करे और अपने को न बरदाश्त करने के क़ाबिल मशक्कत में डाले ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अग्र (रज़ि०) से एक बार नबी (सल्ल०) ने पूछा, “क्या यह बात जो मुझे बताई गई है सही है कि तुम पाबन्दी से दिन में रोजे रखते हो और रात-रात भर नमाज़ें पढ़ते हो ?” हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) ने कहा, “जी हाँ ! बात तो सही है ।” नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, “नहीं, ऐसा न करो, कभी रोज़ा रखो और कभी खाओ-पियो, इसी तरह सोओ भी और उठकर नमाज़ भी पढ़ो, क्योंकि तुम्हारे जिस्म का भी तुमपर हक़ है, तुम्हारी आँख का भी तुमपर हक़ है ।” (बुखारी)

7. ज़्यादा आरामदेह बिस्तर न इस्तेमाल कीजिए । दुनिया में मोमिन को आराम-तलबी और ऐश-पसन्दी से बचना चाहिए । ज़िन्दगानी मोमिन के लिए जिहाद है और मोमिन को बहुत ज़्यादा मेहनती होना चाहिए । हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है—

“नबी (सल्ल०) का बिस्तर चमड़े का था, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी ।” (शमाइले तिरमिज़ी)

हज़रत हफ़सा (रज़ि०) से किसी ने पूछा—

“आपके यहाँ नबी (सल्ल०) का बिस्तर कैसा था ?” फ़रमाया, “एक टाट था, जिसको हम दोहरा करके नबी (सल्ल०) के नीचे बिछा दिया करते थे । एक दिन मुझे खयाल आया कि अगर इसे चौहरा करके बिछा दिया जाए तो ज़रा ज़्यादा नर्म हो जाएगा, इसलिए मैंने उसको चौहरा करके बिछा दिया । सुबह को नबी (सल्ल०) ने मालूम किया, “रात में नीचे क्या चीज़ बिछायी थी ?” मैंने कहा, “वही टाट का बिस्तर था । अलबत्ता रात मैंने उसको चौहरा करके बिछा दिया था कि कुछ नर्म हो जाए ।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “नहीं,” उसको दोहरा ही रहने दिया करो । रात बिस्तर की नरमी तहज्जुद के लिए उठने में रुकावट बनी ।”

(शमाइले तिरमिज़ी)

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि एक बार एक अनसारी औरत आई और उन्होंने नबी (सल्ल०) का बिस्तर देखा । घर जाकर उस औरत ने एक बिस्तर तैयार किया । उसमें ऊन भरकर ख़ूब मुलायम बना दिया और नबी (सल्ल०) के लिए भेजा । नबी (सल्ल०) जब घर आए और नर्म बिस्तर रखा हुआ देखा तो फ़रमाया, “यह क्या है ?” मैंने अर्ज़ किया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! फ़लाँ अनसारी औरत आई थीं और आपका बिस्तर देख गई थीं, अब यह उन्होंने आपके लिए तैयार करके भेजा है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “नहीं, इसको वापस कर दो ।” मुझे वह बिस्तर बहुत-ही पसन्द था, इसलिए वापस करने को जी नहीं चाह रहा था, पर नबी (सल्ल०) ने इतनी बार कहा कि मुझे वापस करना ही पड़ा ।

(शमाइले तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) एक बार चटाई पर सो रहे थे । लेटने से आपके जिस्म पर चटाई के निशान पड़ गए । हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं यह देखकर रोने लगा । नबी (सल्ल०) ने मुझे रोते देखा तो फ़रमाया, क्यों रो रहे हो ?” मैंने अर्ज़ किया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! ये कैसर व किसरा तो रेशम और मखमल के गद्दों पर सोएँ और आप बोरिये पर ।” नबी (सल्ल०) ने इशारा फ़रमाया—

“यह रोने की बात नहीं है । उनके लिए दुनिया है और हमारे लिए आखिरत है ।”

एक बार नबी (सल्ल०) ने इशारा फ़रमाया—

“मैं ऐश व आराम और बेफ़िक्री की ज़िन्दगी कैसे गुज़ार सकता हूँ, जबकि हालत यह है कि इसराफ़ील मुँह में सूर लिए, कान लगाए (हुक़्म

बजा लाने के लिए), सिर झुकाए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब सूर फूँकने का हुक्म होता है ।”  
(तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) की ज़िन्दगी का यह पहलू माँग करता है कि मोमिन इस दुनिया में मुजाहिदों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारे और ऐश करने से बचे ।

8. सोने से पहले वुजू करने का भी एहतिमांम कीजिए और पाक व साफ़ होकर सोइए । अगर हाथों में चिकनाई वगैरह लगी हो तो हाथों को ख़ूब अच्छी तरह धोकर सोइए । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“जिसके हाथ में चिकनाई वगैरह लगी हो और वह उसे धोए बिना सो गया और उसे नुक़सान पहुँचा (यानी किसी जानवर ने काट लिया) तो वह अपने आपकी निंदा करे (कि धोए बग़ैर सो गया था) ।”

नबी (सल्ल०) का तरीक़ा था कि सोने से पहले आप वुजू फ़रमाते और अगर कभी इस हालत में सोने का इरादा फ़रमाते कि गुस्ल की हाज़त होती तो नापाकी की जगह को धोते और फिर वुजू करके सो रहते ।

9. सोने के वक़्त घर का दरवाज़ा बन्द कर लीजिए । खाने-पीने के बरतन को ढाँक दीजिए । चिराग़ या लालटेन वगैरह बुझा दीजिए और अगर आग जल रही हो तो उसको भी बुझा दीजिए । एक बार मदीने में रात के वक़्त किसी के घर में आग लग गई तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“आग तुम्हारी दुश्मन है, जब सोया करो तो आग बुझा दिया करो ।”

और नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जब शाम हो जाए तो छोटे बच्चों को घर से बाहर न निकलने दो, क्योंकि उस वक़्त शैतान (जमीन में) फैल जाते हैं, फिर जब घड़ी भर रात गुज़र जाए तो उन्हें छोड़ दो और ‘बिसमिल्लाह’ कहकर दरवाज़ा बन्द करो, और ‘बिसमिल्लाह’ कहकर ही बत्ती बुझा दो, और ‘बिसमिल्लाह’ कहकर ही पानी के मशक का मुँह बाँध दो, और ‘बिसमिल्लाह’ कहकर ही खाने-पीने के बरतन ढाँक दो और अगर ढाँकने के लिए कोई सरपोश (ढकना) वगैरह मौजूद न हो तो कोई और चीज़ ही बरतन पर रख दो ।”

(सिहाह सित्तः ब हवाला हिस्ने हसीन)

10. सोते वक़्त बिस्तर पर और बिस्तर के करीब ये चीज़ें ज़रूर रख लीजिए । पीने का पानी और गिलास, लोटा, लाठी, रौशनी के लिए माचिस या टार्च, मिस्वाक, तौलिया वगैरह । और अगर आप कहीं मेहमान हों तो घरवालों से बैतुलख़ला (पाखाने)

वगैरह ज़रूर मालूम कर लीजिए । हो सकता है कि रात में किसी वक़्त ज़रूरत पेश आ जाए और परेशानी हो । नबी (सल्ल०) जब आराम फ़रमाते तो आपके सिरहाने सात चीज़ें रखी रहतीं—

तेल की शीशी, कंधा, सुरमेदानी, क़ैची, मिस्वाक, आइना और लकड़ी की एक छोटी-सी सीख जो सर वगैरह खुजाने के काम में आती ।

11. सोते वक़्त अपने जूते और कपड़े वगैरह पास रखिए, क्योंकि जब सोकर उठें, तो तलाश न करने पड़ें । उठते ही जूते में पैर न डालिए । इसी तरह कपड़े भी बगैर झाड़े न पहनिए । हो सकता है कि जूते या कपड़े में कोई तकलीफ़ पहुँचानेवाला जानवर हो और वह खुदा न करे आपको तकलीफ़ पहुँचा दे ।

12. सोने से पहले बिस्तर अच्छी तरह झाड़ लीजिए और अगर कभी सोते से किसी ज़रूरत के लिए उठें और फिर आकर लेटें तब भी बिस्तर अच्छी तरह झाड़ लीजिए । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“और जब कोई रात में बिस्तर से उठे और फिर बिस्तर पर जाए तो अपने लुंगी के किनारे से तीन बार उसे झाड़ दे, इसलिए कि वह नहीं जानता कि उसके पीछे बिस्तर पर क्या चीज़ आ गई है ।” (तिरमिज़ी)

13. जब बिस्तर पर पहुँचें तो यह दुआ पढ़िए । नबी (सल्ल०) के ख़ास ख़ादिम हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जब आप बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो यह दुआ पढ़ते—

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَآوَانَا فَكَمْ مِمَّنْ لَا كَافِيَ لَهُ  
وَلَا مُؤَوِّيَ. (शुक्र तर्ज़ी)

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-ना व सकाना व कफ़ाना व आवाना  
फ़-कम-मिम-मल्-ला काफ़ि-य लहू व ला मुअ-वि-य ।

(शमाइले तिरमिज़ी)

“शुक्र व तारीफ़ खुदा ही के लिए है जिसने हमें खिलाया, पिलाया और जिसने हमारे कामों में भरपूर मदद फ़रमाई और जिसने हमें रहने-बसने को ठिकाना बख़्शा—कितने ही लोग हैं जिनका न कोई मददगार है और न कोई ठिकाना देनेवाला ।”

14. बिस्तर पर पहुँचने पर कुरआन पाक का कुछ हिस्सा ज़रूर पढ़िए । नबी (सल्ल०) सोने से पहले कुरआन पाक का कुछ हिस्सा ज़रूर तिलावत फ़रमाते ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी अपने बिस्तर पर आराम करने के वक़्त अल्लाह की किताब की कोई सूरा पढ़ता है तो अल्लाह तआला उसके पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो हर तकलीफ़ देनेवाली चीज़ से उसके जागने तक उसकी हिफ़ाज़त करता है, चाहे वह किसी भी वक़्त नींद से जगा हो ।”

(अहमद)

और आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जब आदमी सोने के लिए अपने बिस्तर पर पहुँचता है तो उसी वक़्त एक फ़रिश्ता और शैतान उसके पास पहुँचते हैं । फ़रिश्ता उससे कहता है—

‘अपने कामों का ख़ात्मा भलाई पर करो और शैतान कहता है — अपने कामों का ख़ात्मा बुराई पर करो ।’ फिर अगर वह आदमी खुदा का ज़िक्र करके सोया, तो फ़रिश्ता रात भर उसकी हिफ़ाज़त करता है ।

(मुस्लिम)

हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो दोनों हाथ दुआ माँगने की तरह मिलाते और ‘कुल हुवल्लाहु अहद’ और ‘कुल अजूज़ु बिरब्बिल फ़-लक़’ और ‘कुल अजूज़ु बिरब्बिन्नास’ की सूरतें तिलावत फ़रमाकर हाथों पर दम फ़रमाते और फिर जहाँ तक हाथ पहुँचता अपने जिस्म पर फेर लेते । सिर, चेहरे और जिस्म के अगले हिस्से से शुरू फ़रमाते और आप तीन बार यही अमल करते ।

15. जब सोने का इरादा करें तो दायें हाथ अपने दाँएँ गाल के नीचे रखकर दाईं करवट पर लेटिए । हज़रत बरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जब नबी (सल्ल०) आराम फ़रमाते तो अपने दाँएँ हाथ को दाँएँ गाल के नीचे रखते और यह कलिमात पढ़ते—

رَبِّ قَبِيْ عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ .

रब्बि क़िनी अज़ा-ब-क यौ-म तब-असु इबा-द-क ।

“ऐ मेरे रब ! मुझे उस दिन अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को अपने हुज़ूर उठा हाज़िर करेगा ।”

—‘हिस्ने हसीन’ में है कि नबी (सल्ल०) यही कलिमात तीन बार पढ़ते ।



16. पट लेटने और बाई करवट पर सोने से परहेज कीजिए ।

हजरत मुअीश के बाप तफ़ख़तुल-ग़िफ़ारी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में पेट के बल लेटा हुआ था कि किसी साहब ने मुझे अपने पाँव से हिलाया और कहा, “इस तरह लेटने को खुदा नापसन्द फ़रमाता है ।” अब जो मैंने देखा तो वे नबी (सल्ल०) थे ।  
(अबू दाऊद)

17. सोने के लिए ऐसी जगह को चुनिए जहाँ ताज़ा हवा पहुँचती हो । ऐसे बन्द कमरों में सोने से परहेज कीजिए जहाँ ताज़ा हवा का गुज़र न होता हो ।

18. मुँह लपेटकर न सोइए । इस तरह सोने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है । चेहरा खोलकर सोने की आदत डालिए, ताकि आपको ताज़ा हवा मिलती रहे ।

19. ऐसी खुली छतों पर सोने से परहेज कीजिए जहाँ कोई मुँडेर या जंगला वग़ैरह न हो और छत से उतरते वक़्त एहतियात कीजिए और ज़ीने पर पाँव रखने से पहले आप रौशनी का इन्तिज़ाम कर लें, कभी-कभी मामूली ग़लती से काफ़ी तकलीफ़ उठानी पड़ती है ।

20. कैसी ही कड़ी सर्दी पड़ रही हो, कमरे में अंगीठी जलाकर न सोइए और न बंद कमरे में लालटेन जलाकर सोइए । आग जलने से बन्द कमरों में जो गैस पैदा होती है वह सेहत के लिए काफ़ी नुक़सानदेह है, बल्कि कभी-कभी तो इससे जान का ख़तरा भी पैदा हो जाता है और मौत हो जाती है ।

21. सोने से पहले यह दुआ पढ़ लिया कीजिए । हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) सोने से पहले यह दुआ पढ़ लिया करते थे—

بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكَتَ نَفْسِي  
فَارْحَمْهَا، وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ.

बिस्मि-क रब्बी व-जअतू जम्बी व बि-क अरफ़उहू इन अम-सक-त नफ़सी फ़र-हम्हा, व इन अर-सल-तहा फ़ह-फ़ज़हा बिमा तह फ़ज़ु बिहि इबा द-कस्सालिहीन ।  
(बुखारी, मुसलिम)

“ऐ मेरे रब ! तेरे ही नाम से मैंने अपना पहलू बिस्तर पर रखा और तेरे ही सहारे मैं उसको बिस्तर से उठाऊँगा । अगर तू रात ही में मेरी जान कब्ज़ करे तो उसपर रहम फ़रमा और अगर तू उसे छोड़कर और ज़्यादा मोहलत दे तो उसकी हिफ़ाज़त फ़रमा, जिस तरह तू अपने नेक

बन्दों की हिफाजत करता है ।”

अगर यह दुआ याद न हो तो छोटी-सी दुआ यह है—

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوتُ وَاَحْيٰى (بخاری، مسلم)

अल्लाहुम-म बिस्मि-क अमूतु व अह्या । (मुस्लिम, बुखारी)

“ऐ अल्लाह ! मैं तेरे ही नाम से मौत की गोद में जाता हूँ और तेरे ही नाम से ज़िन्दा उठूँगा ।”

22. रात के आखिरी हिस्से में उठने की आदत डालिए । नफ़्स की तरबियत और खुदा से ताल्लुक पैदा करने के लिए आखिरी रात में उठना और खुदा को याद करना ज़रूरी है । खुदा ने अपने महबूब बन्दों की यही खास खूबी बयान फ़रमाई है कि रातों को उठकर खुदा के हुज़ूर में रुकू और सज्दे करते हैं और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं । नबी (सल्ल०) का तरीक़ा था कि आप शुरू रात में आराम फ़रमाते और आखिरी रात में उठकर खुदा की इबादत में लग जाते ।

23. नींद से जागने पर यह दुआ पढ़िए—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَحْيَاْنَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاَلَيْهِ النُّشُوْرُ (بخاری، مسلم)

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअ-द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर ।

(बुखारी, मुसलिम)

“शुक्र व तारीफ़ खुदा ही के लिए है, जिसने हमें मुर्दा कर देने के बाद ज़िन्दगी से नवाज़ा और उसी के हुज़ूर उठकर हाज़िर होना है ।”

24. जब कोई अच्छा सपना देखे तो खुदा का शुक्र अदा कीजिए और उसको अपने हक़ में खुशख़बरी समझिए । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“अब नुबूवत में से खुशख़बरियों (बशारतों) के सिवा कुछ बाक़ी न रहा । लोगों ने पूछा, “बशारत का क्या मतलब है ?” फ़रमाया, “अच्छा सपना ।” (बुखारी)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि तुम में जो ज़्यादा सच्चा है, उसका सपना भी ज़्यादा सच्चा होगा । और आपने यह हिदायत भी फ़रमाई—

“जब कोई अच्छा सपना देखे तो खुदा की हम्द व सना करो और उसको बयान करो और दोस्त से ही बयान करो ।”

नबी (सल्ल०) जब कोई सपना देखते तो सहाबा किराम से बयान फ़रमाते और

सहाबा किराम से भी कहते कि अपना सपना बयान करो, मैं उसकी ताबीर (स्वप्न-फल) दूँगा ।  
(बुखारी)

25. दरूद शरीफ ज्यादा से ज्यादा पढ़िए । उम्मीद है कि अल्लाह तआला नबी (सल्ल०) की ज़ियारत कराए ।

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी (रह०) ने एक बार हज़रत फ़ज़ले रहमान गंज-मुरादाबादी से सवाल किया कि कोई खास दरूद शरीफ़ बताइए, जिससे नबी (सल्ल०) का दीदार हासिल हो, तो फ़रमाया कोई खास दरूद नहीं है, बस खुलूस पैदा करना चाहिए, फिर कुछ रुककर इशारा फ़रमाया, अलबत्ता हज़रत सैयद हसन (रह०) का इस दरूद पर अमल कारगर हुआ—

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَٰثِرَتِهِۦ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ .

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव-व इत-र-तिही बि-अ-ददि कुल्लि मअलूमिल्ल-क ।

“ऐ खुदा ! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद पर और उनकी आल पर, उन तमाम चीज़ों की तादाद के बराबर जो तेरे इल्म में हैं ।”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जिस आदमी ने सपने में मुझे देखा उसने वाकई मुझे ही देखा, इसलिए कि शैतान मेरी शकल में नहीं आ सकता ।” (शमाइले तिरमिज़ी)

हज़रत यज़ीद फ़ारसी (रह०) कुरआन पाक लिखा करते थे । एक बार उनको सपने में नबी (सल्ल०) का दीदार हुआ । हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ज़िन्दा थे । हज़रत यज़ीद ने उनसे ज़िक्र किया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने उनको नबी (सल्ल०) की यह हदीस सुनाई कि जिसने सपने में मुझे देखा उसने वाकई मुझे ही देखा, इसलिए कि शैतान मेरी शकल में नहीं आ सकता । फिर पूछा, “तुमने सपने में जिस ज़ात को देखा उसका हुलिया बयान कर सकते हो ?” हज़रत यज़ीद (रह०) ने कहा, “आपका बदन और आपका डील-डौल बहुत दरमियाना था । आपका रंग गेहूँवेपन के साथ सफ़ेद था । आँखें सुरमा लगी । हँसता, ख़ूबसूरत गोल चेहरा, निहायत भरी हुई दाढ़ी जो पूरे चेहरे पर छाई हुई थी और सीने पर फैली हुई थी ।” हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फ़रमाया, “अगर तुम नबी (सल्ल०) को ज़िन्दगी में देखते, तब भी इससे ज्यादा हुलिया बयान नहीं कर सकते ।” (यानी तुमने जो हुलिया बयान किया, वह वाकई नबी (सल्ल०) ही का हुलिया है ।)

(शमाइले तिरमिज़ी)

26. जब कभी, खुदा न करे, कोई नापसन्दीदा और डरावना सपना देखें तो हरगिज़ किसी से बयान न कीजिए और इस सपने की बुराई से खुदा की पनाह माँगिए । खुदा ने चाहा तो उसकी बुराई से बचे रहेंगे ।

हज़रत अबू सलमा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं बुरे सपनों की वजह से अकसर बीमार पड़ जाया करता था । एक दिन मैंने हज़रत अबू क़तादा (रज़ि०) से शिकायत की तो उन्होंने मुझे नबी (सल्ल०) की यह हदीस सुनाई—

“अच्छा सपना खुदा की ओर से होता है । अगर तुममें से कोई अच्छा सपना देखे तो अपने मुखलिस दोस्त के सिवा किसी और से न बयान करे और कोई बुरा सपना देखे तो कतई तौर पर किसी को न बताए, बल्कि जागते ही— ‘अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर्रजीम’ पढ़कर तीन बार बाईं तरफ़ थुथकार दे और करवट बदल ले तो वह सपने की बुराई से बचा रहेगा ।”  
(रियाज़ुस्सालिहीन, मुस्लिम)

27. अपने जी से गढ़कर झूठे सपने कभी न बयान कीजिए । हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो सपना देखे बिना अपनी ओर से गढ़-गढ़कर बयान करेगा उसको यह सज़ा दी जाएगी कि जौ के दो दानों में गिरह लगाए और वह ऐसा कभी न कर सकेगा ।”  
(मुस्लिम)

और नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया— “यह बहुत बड़ा बुहतान है कि आदमी ऐसी बात कहे, जो उसकी आँखों ने नहीं देखी है ।”  
(बुखारी)

28. जब कभी कोई दोस्त अपना सपना सुनाए तो उसकी अच्छी ताबीर दीजिए और उसके हक़ में दुआ कीजिए । एक बार एक आदमी ने नबी (सल्ल०) से अपना सपना बयान किया तो आपने फ़रमाया—

“बेहतर सपना देखा है और बेहतर ताबीर (स्वप्न-फल) होगी ।”

नबी (सल्ल०) आमतौर पर फ़ज़्र की नमाज़ के बाद पालती मारकर बैठ जाते और लोगों से फ़रमाते कि जिसने जो सपना देखा हो बयान करो और सपना सुनने से पहले ये लफ़्ज़ फ़रमाते—

خَيْرًا تَلَقَّاهُ وَشَرًّا تَوَقَّاهُ وَخَيْرَ النَّاسِ شَرًّا عَلَىٰ أَعْدَائِنَا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ  
رَبِّ الْعَالَمِينَ.

खैरन त-लक्काहु व शरन त-वक्काहु व खैरल-लना व शरन अला

अअ-दाइना वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ।

“उस सपने की भलाई तुम्हें नसीब हो और उसकी बुराई से तुम बचे रहो, हमारे हक में भलाई और हमारे दुश्मनों के लिए वबाल हो और हम्द व शुक्र खुदा ही के लिए है जो तमाम दुनिया का पालनहार है ।”

29. कभी सपने में डर जाँँ या कभी परेशान करनेवाले सपने देखकर परेशान हो जाँँ तो डर और परेशानी दूर करने के लिए यह दुआ पढ़िए और अपने होशियार बच्चों को भी यह दुआ याद कराइए ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) कहते हैं कि जब कोई सपने में डर जाता या परेशान हो जाता तो नबी (सल्ल०) उसकी परेशानी दूर करने के लिए यही दुआ पढ़ने को फ़रमाते—

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمْزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ. (ابوداؤد، ترمذی)

अ'ऊजु बि कलिमातिल्लाहिताम्मति मिन ग-ज़-बिहि व 'इक्काबिहि व शरि इब्बादिहि व मिन ह-म-ज़ातिश शयातीनि व अय्यह-ज़ुरून ।

(अबू दाऊद, तिरमिज़ी)

“मैं खुदा ही के पूरे कलिमों की पनाह माँगता हूँ, उसके ग़ज़ब व गुस्से से, उसकी सज़ा से, उसके बन्दों की बुराई से, शैतानों के वस्वसों से और इस बात से कि वे मेरे पास आएँ ।”

## 6. रास्ते के आदाब

1. रास्ते में दरमियानी चाल चलिए । न इतना झपट कर चलिए कि ख्वाहमख्वाह लोगों के लिए तमाशा बन जाएँ और न इतने सुस्त होकर रेंगने की कोशिश कीजिए कि लोग बीमार समझकर बीमारपुर्सी करने लगें । नबी (सल्ल०) कदम लम्बे-लम्बे रखते और कदम उठाकर रखते, घसीटकर कभी न चलते ।

2. अदब व वक्रार (शिष्टता और गम्भीरता) के साथ नीचे देखते हुए चलिए और रास्ते में इधर-उधर हर चीज़ पर निगाह डालते हुए न चलिए । ऐसा करना संजीदगी और तहज़ीब के खिलाफ़ है । नबी (सल्ल०) चलते वक़्त अपने मुबारक बदन को आगे की तरफ़ झुकाकर चलते, जैसे कोई बुलन्दी से पस्ती (नीचे) की तरफ़ उतर रहा हो । आप (सल्ल०) वक्रार के साथ ज़रा तेज़ चलते और बदन को चुस्त और सिमटा हुआ रखते और चलते हुए दाएँ-बाएँ न देखते ।

3. खाकसारी के साथ दबे पाँव चलिए, अकड़ते हुए न चलिए, न तो आप अपनी ठोकर से ज़मीन को फाड़ सकते हैं और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हैं, फिर भला अकड़ने की क्या ज़रूरत है !

4. हमेशा जूते पहनकर चलिए, नंगे पाँव चलने-फिरने से परहेज़ कीजिए । जूते के ज़रिए पाँव काँटे, कंकड़ और दूसरी तकलीफ़देह चीज़ों से भी बचा रहता है और तकलीफ़ देनेवाले जानवरों से भी । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“अकसर जूते पहने रहा करो । जूता पहननेवाला भी एक तरह का सवार होता है ।”

5. रास्ता चलते में अच्छे ज़ौक और तहज़ीब व वक्रार का भी ध्यान रखिए, या तो दोनों जूते पहनकर चलिए या दोनों जूते उतारकर चलिए । एक पाँव नंगा और एक पाँव में जूता पहनकर चलना बड़ी मज़ाक़वाली हरकत है । अगर वाकई कोई मजबूरी न हो तो इस बदज़ौक़ी और बेतहज़ीबी से सख़्ती के साथ बचने की कोशिश कीजिए । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“एक जूता पहनकर कोई न चले या तो दोनों जूते पहनकर चले या दोनों उतारकर चले ।”  
(शमाइले तिरमिज़ी)

6. चलते वक़्त अपने कपड़ों को समेटकर चलिए, ताकि उलझने का ख़तरा न रहे । नबी (सल्ल०) चलते वक़्त अपना तहबन्द ढ़रा उठाकर समेट लेते ।

7. हमेशा बेतकल्लुफ़ी से अपने साथियों के साथ-साथ चलिए । आगे-आगे

चलकर अपनी खास शान न दिखाइए । कभी-कभी बेतकल्लुफी में अपने साथी का हाथ अपने हाथ में लेकर भी चलिए । नबी अकरम (सल्ल०) साथियों के साथ चलने में कभी अपनी खास शान ज़ाहिर न होने देते । अकसर आप (सल्ल०) महाबा (रज़ि०) के पीछे-पीछे चलते और कभी बेतकल्लुफी में अपने साथी का हाथ पकड़कर भी चलते ।

8. रास्ते का हक अदा करने का भी ध्यान रखिए । रास्ते में रुककर या बैठकर आने-जानेवालों को तकने से परहेज कीजिए और अगर कभी रास्ते में रुकना या बैठना पड़े तो रास्ते का हक अदा करने के लिए छह बातों का खयाल रखिए—

- (i) निगाहें नीची रखिए,
- (ii) तकलीफ़ देनेवाली चीज़ों को रास्ते से हटा दीजिए,
- (iii) सलाम का जवाब दीजिए,
- (iv) नेकी पर उभारिए और बुरी बातों से रोकिए,
- (v) भूले-भटके को रास्ता दिखाइए, और
- (vi) मुसीबत के मारों की मदद कीजिए ।

9. रास्ते में हमेशा अच्छे लोगों का साथ पकड़िए । बुरे लोगों के साथ चलने से परहेज कीजिए ।

10. रास्ते में औरत और मर्द मिल-जुलकर न चलें । औरतों को बीच रास्ते में बचकर किनारे-किनारे चलना चाहिए और मर्दों को चाहिए कि उनसे बचकर चलें ।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“गारे में अटे हुए और बदबूदार सड़ी हुई कीचड़ में लिथड़े हुए सूअर से टकरा जाना तो ग़वारा किया जा सकता है, लेकिन यह ग़वारा करने की बात नहीं है कि किसी मर्द के शाने (कंधे) किसी अजनबी औरत से टकराएँ ।”

11. शरीफ़ औरतें जब किसी ज़रूरत से रास्ते पर चलें तो बुर्के या चादर से अपने जिस्म, लिबास और बनाव-शृंगार को खूब अच्छी तरह छिपा लें और चेहरे पर नकाब डाले रहें ।

12. कोई ऐसा ज़ेवर पहनकर न चलिए जिसमें चलते वक़्त झंकार पैदा हो या फिर दबे पाँव चलिए ताकि उसकी आवाज़ अजनबियों को अपनी तरफ़ मुतवज्जोह न करे ।

13. औरतें फैलनेवाली खुशबू लगाकर रास्ते पर न चलें । ऐसी औरतों के बारे में नबी (सल्ल०) ने सख्त बात कही है ।

14. घर से निकलें तो आसमान की तरफ निगाह उठाकर यह दुआ पढ़िए—

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ نَزَلَ أَوْ نُزِلَ وَأَنْ نُضِلَّ أَوْ نُضَلَّ أَوْ نُظْلِمَ أَوْ يُظْلَمَ عَلَيْنَا أَوْ نَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا. (مسند احمد)

बिसमिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि अल्लाहुम-म इन्नी अऊजु बि-क  
मिन अन-नज़िल-ल अव नुज़ल-ल व अन नज़िल-ल अव नुज़ल-ल अव  
नज़लि-म अव युज़-ल-म अलैना अव नज-ह-ल अव युज-ह-ल अलैना ।  
(मुसन्द अहमद)

“खुदा ही के नाम से (मैंने बाहर कदम रखा) और उसी पर मेरा भरोसा है । ऐ खुदा ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि हम डगमगा जाएँ या कोई दूसरा हमें डगमगा दे, हम खुद भटक जाएँ या कोई हमें भटका दे, हम खुद किसी पर जुल्म कर बैठें या कोई और हम पर ज़्यादती करे, हम खुद नादानी पर उतर आएँ या कोई दूसरा हमारे साथ जिहालत का बरताव करे ।”

15. बाज़ार जाएँ तो यह दुआ पढ़िए—

بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ السُّوقِ وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَصِيبَ بِهَا يَمِينًا فَاجِرَةً أَوْ صَفَقَةً خَاسِرَةً.

बिसमिल्लाहि अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क खै-र हाज़िहिस्सूकि व खै-र मा फ़ीहा व अऊजु बि-क मिन्शरिहा व शरिमा फ़ीहा, अल्लाहुम-म इन्नी अऊजु बि-क अन उसी-ब बिहा यमीनन फ़ाजि-र-तन अव स-फ-क-तन खासिरह ।

“खुदा के नाम से (बाज़ार में दाखिल होता हूँ), ऐ खुदा ! मैं तुझसे इस बाज़ार की भलाई और जो कुछ इसमें है उसकी भलाई चाहता हूँ



और उस बाज़ार की बुराई से और जो कुछ उसमें है, उसकी बुराई से पनाह माँगता हूँ । ऐ खुदा ! तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि यहाँ मैं झूठी क़समें खा बैदूँ या घाटे का कोई सौदा कर बैदूँ ।”

हज़रत उमर बिन ख़ताब (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी बाज़ार में दाखिल होते हुए यह दुआ पढ़ ले तो खुदा उसके हिसाब में दस लाख नेकियाँ लिख देगा, दस लाख ख़ताएँ माफ़ फ़रमा देगा और दस लाख दर्जे बुलन्द फ़रमा देगा—

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ

قَدِيرٌ. (ترمذی)

ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व युमीतु व हु-व हय्युल्ला यमूतु बि-यदिहिल-खैरु व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर । (तिरमिज़ी)

“खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता (अद्वितीय) है, उसका कोई शरीक नहीं, सत्ता उसी की है, वही शुक्र व तारीफ़ का हक़दार है, वही ज़िन्दगी बख़्शता है और वही मौत देता है, वह ज़िन्दा व जावेद है, उसके लिए मौत नहीं, सारी भलाई उसी की कुदरत के क़ब्जे में है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।”

## 7. सफ़र के आदाब

1. सफ़र के लिए ऐसे वक़्त ख़ाना होना चाहिए कि कम से कम वक़्त ख़र्च हो और नमाज़ों के वक़्तों का भी ध्यान रहे ।

नबी (सल्ल०) खुद सफ़र पर जाते या किसी को ख़ाना करते तो आमतौर पर जुमेरात के दिन को मुनासिब ख़याल फ़रमाते ।

2. सफ़र अकेले न कीजिए । मुमकिन हो तो कम से कम तीन आदमी साथ लीजिए । इससे रास्ते में सामान व़ौरह की हिफ़ाज़त और दूसरी ज़रूरतों में भी आसानी रहती है और आदमी बहुत-से ख़तरों से भी बचा रहता है ।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“अगर लोगों को अकेले सफ़र करने की वे ख़राबियाँ मालूम हो जाएँ जो मैं जानता हूँ तो कोई भी सवार कभी रात में अकेले सफ़र न करे ।”

(बुख़ारी)

एक बार एक आदमी काफ़ी दूर का सफ़र करके नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मुसाफ़िर से पूछा—

“तुम्हारे साथ कौन है ?” बोला, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे साथ तो कोई भी आदमी नहीं है । मैं अकेला आया हूँ,” तो आपने फ़रमाया, “अकेला सवार शैतान है और दो सवार शैतान हैं, अलबत्ता तीन सवार सवार हैं ।”

(तिरमिज़ी)

3. औरत को हमेशा किसी महरम के साथ सफ़र करना चाहिए । हाँ, अगर एक-आधे दिन का कोई मामूली सफ़र हो तो कोई हरज नहीं, लेकिन एहतियात यही है कि कभी तन्हा सफ़र न करे । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो औरत खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखती है, उसके लिए जायज़ नहीं कि वह तीन दिन या उससे ज़्यादा का सफ़र अकेले करे । वह इतना बड़ा सफ़र उसी वक़्त कर सकती है, जब उसके साथ उसका बाप हो, भाई हो, शौहर हो या उसका अपना लड़का हो या फिर कोई और महरम हो ।”

(बुख़ारी)

और एक मौक़े पर तो नबी (सल्ल०) ने यहाँ तक फ़रमाया—

“औरत को एक दिन और एक रात की दूरी पर भी अकेली न जाना चाहिए ।”

(मुस्लिम, बुख़ारी)

4. सफ़र को ख़ाना होते वक़्त जब सवारी पर बैठ जाएँ और सवारी हरकत

में आए तो यह दुआ पढ़िए—

سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنْ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى. اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاَطْوِعْنَا بَعْدَهُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصّٰحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيفَةُ فِي الْاَهْلِ ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسَوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ وَالْحَوْرِ بَعْدَ الْكُوْرِ وَدَعْوَةِ الْمَظْلُوْمِ. (ابوداؤد، ترمذی)

सुब्हानल्लजी सख-खर लना हाजा व मा कुन्ना लहू मुकरिनी-न व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्कलिबून । अल्लाहुम-म इन्ना नस-अलु-क फ्री स-फ-रिना हाजलबिर-र वत्तक्वा व मिन्फलअ-मलि मा तर्जा अल्लाहुम-म हव्विन अलैना स-फ-रिना हाजा वत्ति अन्ना बुअ-दहू अल्लाहुम-म अन्तस्साहिबु फिस-स-फरि वल खलीफतु फिल अहलि, अल्लाहुम-म इन्नी अऊजुबि-क मिन वअ-साइस-स-फरि व कअ-बतिल मंजरि, व सूइल मुन-क-ल-बि फिल मालि वल अहलि वल व-लदि वल हौरि बअ-दल कौरि व दअ-वतिल मज्लूम । (मुस्लिम, अबू दाऊद, तिरमिजी)

“पाक व बरतर है वह खुदा जिसने उसको हमारे बस में कर दिया, हालाँकि हम उसको काबू में करनेवाले न थे । यकीनन हम अपने परवरदिगार की ओर लौट जानेवाले हैं । ऐ अल्लाह ! हम तुझसे अपने इस सफर में नेकी और तक्वा की तौफ़ीक चाहते हैं और ऐसे कामों की तौफ़ीक जो तेरी खुशनूदी के हों । ऐ खुदा ! हमपर यह सफर आसान फरमा दे और इसकी दूरी हमारे लिए कम कर दे । ऐ खुदा ! तू ही इस सफर में साथी है और तू ही घरवालों पर खलीफा और निगराँ है । ऐ खुदा ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ सफर की मशक्कतों से, नागवार दृश्यों से और अपने माल, अपने से मुताल्लिक लोगों और अपनी औलाद में बुरी वापसी से, और अच्छाई के बाद बुराई से और मज्लूम की बद-दुआ से ।”

5. रास्ते में दूसरों की सहूलियात और आराम का भी खयाल रखिए । रास्ते

के साथी का भी हक है। कुरआन में है, 'वस्साहिबि बिल जम्बि' (पहलू के साथी के साथ अच्छा बरताव करो)। पहलू के साथी से तात्पर्य हर ऐसा आदमी है जिससे कहीं भी, किसी वक्त आपका साथ हो जाए। सफ़र के बीच के छोटे-से साथी का भी यह हक है कि आप अपने सफ़र के साथी के साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करें और कोशिश करें कि आपकी किसी बात या काम से उसको कोई तकलीफ़ न पहुँचे।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“क्रौम का सरदार उनका सेवक होता है। जो आदमी दूसरों की सेवा करने में बाज़ी ले जाए, उससे नेकी में आगे बढ़नेवाला अगर कोई हो सकता है तो सिर्फ़ वही जो खुदा की राह में शहादत पाए।” (मिशकात)

6. सफ़र के लिए रवाना होते वक्त और वापस आने पर दो रक़अत शुक्राने की नफ़ल पढ़िए। नबी अकरम (सल्ल०) का यही अमल था।

7. जब आपकी गाड़ी, बस या जहाज़ ऊँचाई पर चढ़े या उड़े तो यह दुआ पढ़िए—

اللَّهُمَّ لَكَ الشَّرَفُ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ وَلَكَ الْحَمْدُ عَلَى كُلِّ حَالٍ

अल्लाहुम-म ल-कश-श-र-फु अला कुल्लि श-र-फ़ि-व-व लकल हम्दु अला कुल्लि हाल।

“ऐ खुदा ! तूझे हर बुज़ुर्गी और बुलन्दी पर बढ़ाई हासिल है। हम्द व सना हर हाल में तेरा ही हक है।”

8. रात को कहीं ठहरना पड़े तो हिफ़ाज़तवाली जगह पर ठहरिए, जहाँ चोर-डाकू से आपका जान व माल बचा हुआ हो और तकलीफ़ पहुँचानेवाले जानवरों का भी कोई खटका न हो।

9. सफ़र की ज़रूरत पूरी होने पर घर वापस आने में जल्दी कीजिए। बेज़रूरत घूमने-फिरने से बचिए।

10. सफ़र से वापसी पर यकायक बिना इतिला रात को घर में न आना चाहिए। पहले से इतिला दीजिए, वरना मस्जिद में दोगाना नफ़ल अदा करके घरवालों को मौका दीजिए कि वे अच्छी तरह से आपके स्वागत के लिए तैयार हो सकें।

11. सफ़र में अगर जानवर साथ हों तो उनके सुख और आराम का भी खयाल रखिए और अगर कोई सवार हो तो उसकी ज़रूरतों और हिफ़ाज़त का भी एहतिमाम

कीजिए ।

12. जाड़े के मौसम में जरूरी बिस्तर वगैरह साथ रखिए और मेजबान को बेजा परेशानी में न डालिए ।

13. सफ़र में पानी का बरतन और जा-नमाज़ (वह कपड़ा या चटाई जिस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं) साथ रखिए ताकि इस्तिंजा, वुजू, नमाज़ और पानी पीने की तकलीफ़ न हो ।

14. कुछ आदमी सफ़र कर रहे हों तो एक को अपना अमीर मुक़र्रर कर लीजिए, अलबत्ता हर आदमी अपना टिकट, जरूरत भर रक़म और दूसरे जरूरी सामान अपने कब्ज़े में रखे ।

15. जब सफ़र में कहीं रात हो जाए तो यह दुआ पढ़िए—

يَا اَرْضُ، رَبِّي وَرَبُّكَ اللّٰهُ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّكَ وَشَرِّ مَا خَلَقَ فِيْكَ  
وَشَرِّ مَا يَدِبُّ عَلَيْكَ وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ اَسَدٍ وَّاَسْوَدَ وَمِنْ الْحَيَّةِ  
وَالْعَقْرَبِ وَمِنْ شَرِّ سَاكِنِي الْبَلَدِ وَمِنْ وَاِلَدٍ وَمَا وَلَدَ. (ابوداؤد)

या अरज़ु ! रब्बी व रब्बुकिल्लाहु अऊज़ु बिल्लाहि मिन शर्रिकि व शर्रि  
मा खुलि-क़ फ़्रीकि व शर्रि मा यदिब्बु-अलैकि व अ'ऊज़ु बिल्लाहि मिन-अ-  
स-दिब व अस-व-द व मिनल हय्यिति वल-अक़-रबि व मिन शर्रि साकिनिल  
ब-लदि व मिवै वालिदिवै वमा व लद । (अबू दाऊद)

“ऐ ज़मीन ! मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह है । मैं खुदा की पनाह चाहता हूँ तेरी बुराई से, और उन जीवों की बुराई से जो तुझ में खुदा ने पैदा की है, और उन जीवों की बुराई से जो तुझपर चलते हैं और मैं खुदा की पनाह चाहता हूँ शेर से, काले नाग से और साँप और बिच्छू से, इस शहर के बाशिंदों से और हर बाप और औलाद की बुराई से ।”

16. और जब सफ़र से घर को वापस आएँ तो यह दुआ पढ़िए—

اَوْبًا اَوْبًا لِّرَبِّنَا نَوْبًا لَا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا. (مس-مسिन)

औबन औ-बल्लिन रब्बिना नौबल्ला युगादिरु अलैना हौबा । (हिस्ने हसीन)

“पलटना है, अपने रब की ओर पलटना है और अपने रब ही के

हुज़ूर तौबा है, ऐसी तौबा जो हमपर गुनाह का कोई असर बाक़ी न रहने दे ।”

17. जब किसी को सफ़र पर विदा करें तो कुछ दूर उसके साथ जाइए, रुख़्सत करते वक़्त उससे भी दुआ की दरख़्वास्त कीजिए और उसको यह दुआ देते हुए विदा कीजिए—

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ. (حسن حسين)

अस्तौदि उल्ला-ह दी-न-क व अमा-न-त-क व ख्वाती-म अ-मलिक ।

(हिस्ने हसीन)

“मैं तुम्हारे दीन, अमानत और अमल के ख़ात्मे को खुदा के सुपुर्द करता हूँ ।”

18. जब कोई सफ़र से वापस आए तो उसका स्वागत कीजिए और मुहब्बत ज़ाहिर करनेवाले शब्दों को कहते हुए, ज़रूरत और मौक़े का लिहाज़ करते हुए, हाथ मिलाइए या गले भी मिलिए ।

## 8. रंज व गम के आदाब

1. मुसीबतों को सब्र व सुकून के साथ बरदाश्त कीजिए, कभी हिम्मत न हारिए और रंज व गम को कभी हद से आगे बढ़ने न दीजिए। दुनिया की ज़िन्दगी में कोई भी इनसान रंज व गम, मुसीबत व तकलीफ़, आफ़त व नाकामी और नुक़सान से निडर और बचा हुआ नहीं रह सकता, अलबत्ता मोमिन और काफ़िर के चरित्र में यह फ़र्क़ ज़रूर होता है कि काफ़िर रंज व गम की भीड़ से परेशान होकर होश व हवास खो बैठता है, पायूसी का शिकार होकर हाथ-पैर छोड़ देता है और कभी-कभी गम की ताब (सहन-शक्ति) न लाकर आत्महत्या कर लेता है जबकि मोमिन बड़े से बड़े हादसे पर भी सब्र का दामन हाथ से नहीं छोड़ता और सब्र व मज़बूती का पुतला बनकर चट्टान की तरह जमा रहता है। वह यूँ सोचता है कि यह जो कुछ हुआ तक्रदीर इलाही के मुताबिक़ हुआ। खुदा का कोई हुक्म हिक्मत व मस्लहत से ख़ाली नहीं, और यह सोचकर कि खुदा जो कुछ करता है, अपने बन्दे की बेहतरी के लिए करता है, यकीनन इसमें भला पहलू ही होगा। मोमिन को ऐसा रूहानी सुकून व इतमीनान हासिल होता है कि गम की चोट में मज़ा आने लगता है और तक्रदीर का यह अक़ीदा हर मुश्किल को आसान बना देता है। खुदा का इरशाद है—

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي

كِتَابٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَى

مَا فَاتَكُمْ ۝ (الحديد: २२-२३)

“जो मुसीबतें भी धरती पर आती हैं और जो आफ़तें भी तुमपर आती हैं, वे सब इससे पहले कि हम उन्हें जुजूद में लाएँ, एक किताब में (लिखी हुई) हिफ़ाज़त के साथ तयशुदा) हैं, इसमें कोई शक़ नहीं कि यह बात खुदा के लिए आसान है, ताकि तुम अपनी नाकामी पर ग़म न करते रहो।”

(क़ुरआन, 57:22-23)

यानी तक्रदीर पर ईमान लाने का फ़ायदा यह है कि मोमिन बड़ी से बड़ी मुसीबत को भी तक्रदीर का फ़ैसला समझकर अपने ग़म का इलाज पा लेता है और परेशान नहीं होता। वह हर मामले की निसबत अपने मेहरबान खुदा की तरफ़ करके, भलाई के पहलू पर निगाह जमा लेता है और सब्र व शुक्र से हर बुराई में से अपने लिए भलाई निकालने की कोशिश करता है। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मोमिन का मामला भी खूब ही है, वह जिस हाल में भी होता है भलाई ही समेटता है। अगर वह दुख, बीमारी और गरीबी से दो-चार होता है तो सुकून के साथ बरदाश्त करता है और यह आजमाइश उसके हक में भलाई साबित होती है, और अगर उसको खुशी और खुशहाली नसीब होती है तो शुक्र अदा करता है और यह खुशहाली उसके लिए भलाई की वजह बनती है।” (मुसलिम)

2. जब रंज व गम की कोई खबर सुनें या कोई नुकसान हो जाए या कोई दुख और तकलीफ पहुँचे या किसी अचानक मुसीबत में खुदा न-खास्ता गिरफ्तार हो जाएँ तो तुरन्त ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन’ (यानी हम खुदा ही के हैं और उसी की ओर लौटकर जानेवाले हैं) पढ़िए। मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है, सब खुदा ही का है। उसी ने दिया है और वही लेनेवाला है। हम भी उसी के हैं और उसी की ओर लौटकर जाएँगे। हम हर हाल में खुदा की रज़ा पर राज़ी हैं। उसका हर काम मस्तहत, हिकमत, और इनसाफ़ के मुताबिक़ है। वह जो कुछ करता है, किसी बड़ी भलाई को निगाह में रखकर करता है। वफ़ादार गुलाम का काम यह है कि किसी वक़्त भी उसके माथे पर शिकन न आए। खुदा का इरशाद है—

وَلَبَلُّوْكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ  
وَالْأَنْفُسِ وَالشَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ  
قَالُوا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ  
وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ (154, 155)

“और हम ज़रूर तुम्हे डर, खतरा, भूख, जान व माल के नुकसान और आमदनियों के घाटे में डालकर तुम्हारी आजमाइश करेंगे, और खुशखबरी उन लोगों को दीजिए जो मुसीबत पड़ने पर (सब्र करते हैं और) कहते हैं, ‘हम खुदा ही के हैं और खुदा ही की ओर हमें पलट कर जाना है।’ उनपर उनके रब की ओर से बड़ी इनायत होगी और उसकी रहमत होगी, और ऐसे ही लोग हिदायत के रास्ते पर हैं।” (कुरआन, 2:155-157)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब कोई बन्दा मुसीबत पड़ने पर ‘इन्ना लिल्लाहि...’ पढ़ता है तो



खुदा उसकी मुसीबत को दूर फरमा देता है, उसको अच्छे अंजाम से नवाज़ता है और उसको उसकी पसंदीदा चीज़ उसके बदले में अता फरमा देता है ।”

एक बार नबी (सल्ल०) का चिराग़ बुझ गया तो आप (सल्ल०) ने पढ़ा, ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ।’

किसी ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या चिराग़ का बुझना भी कोई मुसीबत है ?” आप (सल्ल०) ने फरमाया, “जी हाँ ! जिस बात से भी मोमिन को दुख पहुँचे, वह मुसीबत है ।”

और नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जिस मुसलमान को भी कोई दिली तकलीफ़, जिस्मानी तकलीफ़ और बीमारी, कोई रंज व ग़म और दुख़ पहुँचता है, यहाँ तक कि अगर उसे एक काँटा भी चुभ जाता है (और वह इसपर सब्र करता है) तो खुदा उसके गुनाहों को माफ़ फरमा देता है ।” (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि०) फरमाते हैं कि नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जितनी बड़ी आज़माइश और मुसीबत होती है, उतना ही बड़ा उसका बदला होता है, और खुदा जब किसी ग़िरोह से मुहब्बत करता है तो उनको (और ज़्यादा निखारने और कुन्दन बनाने के लिए) आज़माइश में डाल देता है । अतः जो लोग खुदा की रज़ा पर राज़ी रहें, खुदा भी उनसे राज़ी होता है और जो इस आज़माइश में खुदा से नाराज़ हों, खुदा भी उनसे नाराज़ हो जाता है ।” (तिरमिज़ी)

हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“जब किसी बन्दे का कोई बच्चा मरता है, तो खुदा फ़रिश्तों से पूछता है, “क्या तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की जान निकाल ली ?” वे कहते हैं, “हाँ ।” फिर वह उनसे पूछता है, “तुमने उसके ज़िगर के टुकड़े की जान निकाल ली ?” वे कहते हैं, “हाँ ।” फिर वह उनसे पूछता है, “तो मेरे बन्दे ने क्या कहा ?” वे कहते हैं, “इस मुसीबत में उसने तेरी हम्द की और ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन’ पढ़ा”, तो खुदा उनसे फरमाता है, “मेरे इस बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम ‘बैतुल हम्द’ (शुक्र का घर) रखो ।” (तिरमिज़ी)

3. किसी तकलीफ़ और हादसे पर ग़म ज़ाहिर करना एक फ़ितरी (स्वाभाविक) बात है, अलबत्ता इस बात का पूरा-पूरा खयाल रखिए कि ग़म और दुख की बहुत

ज्यादा तक्लीफ में भी ज़बान से कोई नाहक बात न निकले और सब व शुक्र का दामन हाथ से छूटने न पाए ।

नबी (सल्ल०) के बेटे हज़रत इबराहीम (रज़ि०) नबी की गोद में थे और साँस के उखड़ने का वक़्त था । यह रुला देनेवाला मंज़र देखकर नबी (सल्ल०) की आँखों से आँसू टपकने लगे और फ़रमाया— “ऐ इबराहीम ! हम तेरी जुदाई से ग़मगीन हैं, पर ज़बान से वही निकलेगा जो अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ होगा ।” (मुस्लिम)

4. ग़म की ज़्यादती में भी कोई ऐसी हरकत न कीजिए जिससे नाशुकी और शिकायत की बू आए और जो शरीअत/के खिलाफ़ हो । धाड़ें मार-मारकर रोना, ग़िरेबान फाड़ना, गालों पर तमाँचे मारना, चीखना-चिल्लाना और मातम में सिर और सीना पीटना, मोमिन के लिए किसी तरह जायज़ नहीं । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी ग़िरेबान फाड़ता, गालों पर तमाँचे मारता और जाहिलियत की तरह चीखता-चिल्लाता और बैन करता है, वह मेरी उम्मत में से नहीं है ।” (तिरमिज़ी)

हज़रत जाफ़र तैयार (रज़ि०) जब शहीद हुए और उनकी शहादत की ख़बर उनके घर पहुँची तो उनके घर की औरतें चीखने-चिल्लाने लगीं और मातम करने लगीं । नबी (सल्ल०) ने कहला भेजा कि मातम न किया जाए, मगर वे बाज़ न आईं तो आप (सल्ल०) ने दोबारा मना फ़रमाया, फिर भी वे न मानीं तो आप (सल्ल०) ने हुक्म दिया उनके मुँह में खाक भर दो । (बुख़ारी)

एक बार नबी (सल्ल०) एक जनाज़े में शरीक थे । एक औरत अंगीठी लिए हुए आई । आपने उसको इतनी सख्ती से डाँटा कि वह उसी वक़्त भाग गई ।

(सीरतुन्नबी, भाग-6)

और नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया कि जनाज़े के पीछे कोई आग और राग न ले जाए ।

अरब में यह रस्म थी कि लोग जनाज़े के पीछे चलते तो ग़म ज़ाहिर करने के लिए अपनी चादर फेंक देते थे, सिर्फ़ कुरता पहने रहते थे । नबी (सल्ल०) ने इन लोगों को इस हाल में देखा तो फ़रमाया—

“जाहिलियत की रस्म अपना रहे हो ? मेरे जी में आया कि तुम्हारे हक़ में ऐसी बददुआ करूँ कि तुम्हारी शक्लें ही बिगड़ जाएँ ।” लोगों ने उसी वक़्त अपनी-अपनी चादरें ओढ़ लीं और फिर कभी ऐसा न किया ।

(इब्ने माज़ा)

5. बीमारी को बुरा-भला न कहिए और न कोई शिकायत की बात ज़बान पर लाइए, बल्कि निहायत सब्र व ज़ब्त से काम लीजिए और आखिरत के बदले की तमन्ना कीजिए ।

बीमारी झेलने और तकलीफ़ें बरदाश्त करने से मोमिन के गुनाह धुलते हैं, वह साफ़-सुथरा हो जाता है और आखिरत में बड़ा बदला मिलता है । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“मोमिन को जिस्मानी तकलीफ़ या बीमारी या किसी और वजह से जो भी दुख पहुँचता है, अल्लाह तआला उसकी वजह से उसके गुनाहों को इस तरह झाड़ता है जैसे पेड़ अपने पत्तों को झाड़ देता है ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

एक बार नबी (सल्ल०) ने एक औरत को काँपते देखकर पूछा, “ऐ उम्मे साइब (मुसयिब) ! क्या बात है, तुम क्यों काँप रही हो ?” कहने लगीं— “मुझे बुखार ने घेर रखा है, उसको खुदा समझे ।” नबी (सल्ल०) ने हिदायत फ़रमाई—

“नहीं, बुखार को बुरा मत कहो, क्योंकि बुखार इस तरह आदम की औलाद को गुनाहों से पाक कर देता है जिस तरह आग लोहे के मैल को दूर करके साफ़ करती है ।”

(मुस्लिम)

हज़रत अता बिन रिबाह (रह०) अपना एक किस्सा बयान करते हैं कि एक बार काबे के पास हज़रत अब्बास (रज़ि०) मुझसे बोले, “तुम्हें एक ज़न्नती औरत दिखाऊँ ?” मैंने कहा, “ज़रूर दिखाइए ।” कहा, देखो, यह जो काली-कलूटी औरत है, यह एक बार नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुई और बोली, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे मिरगी का ऐसा दौरा पड़ता है कि तन-बदन का होश नहीं रहता और मैं इस हालत में बिल्कुल नंगी हो जाती हूँ । ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे लिए खुदा से दुआ कीजिए ।” नबी (सल्ल०) ने इशारा फ़रमाया, “अगर तुम इस तकलीफ़ को सब्र के साथ बरदाश्त करती रहो तो खुदा तुम्हें ज़न्नत से नवाज़ेगा और अगर चाहो तो मैं दुआ कर दूँ कि खुदा तुम्हें अच्छा कर दे ।” यह सुनकर औरत बोली, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं इस तकलीफ़ को सब्र के साथ बरदाश्त कर लूँगी, अलबत्ता यह दुआ फ़रमा दीजिए कि मैं इस हालत में नंगी न हो जाया करूँ” तो नबी (सल्ल०) ने उसके लिए दुआ फ़रमाई । हज़रत अता कहते हैं कि मैंने इस लम्बे क़द की औरत उम्मे जुफ़र को काबा की सीढ़ियों पर देखा ।

6. किसी की मौत पर तीन दिन से ज़्यादा ग़म न मनाइए । रिश्तेदारों की मौत पर दुखी होना और आँसू बहाना एक फ़ितरी बात है, लेकिन इसकी मुद्त ज़्यादा

से ज्यादा तीन दिन है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“किसी मोमिन के लिए यह जायज़ नहीं कि तीन दिन से ज्यादा किसी का शोक मनाए, अलबत्ता बेवा के शोक की मुद्दत चार महीने दस दिन है । इस मुद्दत में न वह कोई रंगीन कपड़ा पहने, न खुशबू लगाए और न कोई बनाव-शृंगार करे ।” (तिरमिज़ी)

हज़रत ज़ैनब बिनत जहश के भाई का इंतिकाल हुआ तो चौथे दिन पुर्स के लिए कुछ औरतें पहुँचीं । उन्होंने सबके सामने खुशबू लगाई और फ़रमाया—

“मुझे इस वक़्त खुशबू लगाने की कोई ज़रूरत न थी । मैंने यह खुशबू सिर्फ़ इसलिए लगाई कि मैंने नबी (सल्ल०) से सुना है कि किसी मुसलमान औरत को शौहर के सिवा किसी भी रिश्तेदार के लिए तीन दिन से ज्यादा शोक मनाना जायज़ नहीं ।”

7. रंजो व ग़म और मुसीबत में एक-दूसरे को सब्र पर उभारिए । नबी (सल्ल०) जब उहुद की लड़ाई से वापस तशरीफ़ लाए तो औरतें अपने-अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों का हाल मालूम करने के लिए हाज़िर हुईं । जब हज़रत हम्ना बिनत जहश नबी (सल्ल०) के सामने आईं तो आपने उनको सब्र पर उभारा और कहा अपने भाई अब्दुल्लाह पर सब्र करो । उन्होंने ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन’ पढ़ा और मग़फ़िरत की दुआ की । फिर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अपने मामूँ हमज़ा पर भी सब्र करो ।” उन्होंने फिर ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन’ पढ़ा और मग़फ़िरत की दुआ की ।

हज़रत अबू तलहा (रज़ि०) का लड़का बीमार था । वह बच्चे को इस हाल में छोड़कर काम पर चले गए । उनके जाने के बाद बच्चे का इंतिकाल हो गया । बेग़म अबू तलहा ने लोगों से कह दिया कि अबू तलहा को इसकी ख़बर न होने पाए । वे जब शाम को अपने काम से घर वापस आए तो बीबी से पूछा—

“बच्चे का क्या हाल है ?” बोलीं, “पहले से ज्यादा सुकून में है ।”

यह कहकर अबू तलहा के लिए खाना लाईं । उन्होंने इतमीनान से खाना खाया और लेट गए । सुबह हुई तो नेक बीबी ने बड़े हिक्मत भरे अन्दाज़ से पूछा, “अगर कोई किसी को उधार कोई चीज़ दे और फिर वापस माँगे तो क्या उसको यह हक़ हासिल है कि वह उस चीज़ को रोक ले ?” अबू तलहा ने कहा, “भला यह हक़ कैसे हासिल हो जाएगा,” तो सब्र करनेवाली उस बीबी ने कहा, “अपने बेटे पर भी सब्र कीजिए ।” (मुस्लिम)

8. हक़ के रास्ते में आनेवाली मुसीबतों का खुले दिल से स्वागत कीजिए और

इस राह में जो दुख पहुँचे, उनपर दुखी होने के बजाए खुशी महसूस करते हुए खुदा का शुक्र अदा कीजिए कि उसने अपनी राह में आपकी कुरबानी कबूल फरमाई ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) की माँ हज़रत अस्मा (रज़ि०) सख्त बीमार पड़ीं । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) उनका हाल पूछने के लिए आए । माँ ने उनसे कहा, “बेटे ! दिल में यह आरजू है कि दो बातों में से एक जब तक न देख लूँ, खुदा मुझे जिंदा रखे, या तो तू लड़ाई के मैदान में शहीद हो जाए और मैं तेरी शहादत की खबर सुनकर सब्र की सआदत हासिल करूँ या, तू जीते और मैं तुझे जीता हुआ देखकर आँखें ठंडी करूँ ।” खुदा का करना कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) ने उनकी ज़िन्दगी ही में शहादत का दर्जा पाया । शहीद करने के बाद हज्जाज ने उनको सूली पर लटका दिया । हज़रत अस्मा काफ़ी बूढ़ी हो चुकी थीं । लेकिन इतिहाई कमज़ोरी के बाद भी यह रुला देनेवाला मंज़र देखने के लिए तशरीफ़ लाई और अपने जिगर के टुकड़े की लाश को देखकर रोने-पीटने के बजाए हज्जाज से बोलीं, “इस सवार के लिए अभी वक़्त नहीं आया कि घोड़े की पीठ से नीचे उतरे ?”

9. दुख-दर्द में एक-दूसरे का साथ दीजिए । दोस्तों के रंज व ग़म में शरीक होइए और उनका ग़म दूर करने में हर तरह का साथ दीजिए । नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“सारे मुसलमान मिलकर एक आदमी के जिस्म की तरह हैं कि अगर उसकी आँखें भी दुखें तो सारा बदन महसूस करता है और अगर सिर में दर्द हो तो सारा जिस्म तकलीफ़ में होता है ।” (मुस्लिम)

हज़रत जाफ़र तैयार (रज़ि०) जब शहीद हुए तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जाफ़र के घर खाना भिजवा दो, इसलिए कि आज ग़म की ज़्यादाती की वजह से उनके घरवाले खाना न पका सकेंगे ।” (अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जिस आदमी ने किसी ऐसी औरत को तसली दी, जिसका बच्चा मर गया हो, तो उसको जन्नत में दाखिल किया जाएगा और जन्नत की चादर उड़ाई जाएगी ।” (तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जिस आदमी ने किसी मुसीबत में ग्रस्त आदमी को तसल्ली दी तो उसको भी उतना ही बदला मिलेगा, जितना खुद मुसीबत पहुँचे हुए को मिलेगा ।” (तिरमिज़ी)

इसी सिलसिले में नबी (सल्ल०) ने इसकी भी ताकीद फ़रमाई कि जनाज़े में

शिरकत की जाए। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी जनाज़े में शरीक हुआ और जनाज़े की नमाज़ पढ़ी तो उसको एक क़ीरात भर सवाब मिलेगा और नमाज़े जनाज़ा के बाद दफ़न में भी शरीक हुआ तो उसको दो क़ीरात मिलेंगे।”

किसी ने पूछा—“दो क़ीरात कितने बड़े होंगे?”

फ़रमाया—“दो पहाड़ों के बराबर।” (बुखारी)

10. मुसीबतों की मौजूदगी और ग़म की भीड़ में खुदा की तरफ़ रुजू कीजिए और नमाज़ पढ़कर निहायत आजिज़ी के साथ खुदा से दुआ कीजिए। कुरआन में है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ

“मोमिनो ! (मुसीबत और आज़माइश में) सब्र और नमाज़ से मदद लो।” (कुरआन, 2:153)

ग़म की हालत में आँखों से आँसू बहना और दुखी होना फ़ितरी (स्वाभाविक) बात है। लेकिन धाड़ें मार-मारकर ज़ोर-ज़ोर से रोने से परहेज़ कीजिए। नबी (सल्ल०) जब रोते तो रोने में आवाज़ न होती, ठंडी साँसें लेते, आँखों से आँसू जारी होते और सीने से ऐसी आवाज़ आती जैसे कोई हांडी उबल रही हो या चक्की चल रही हो। आप (सल्ल०) ने खुद अपने ग़म और रोने की हालत का नक्श़ा इन शब्दों में बयान किया है—

“आँख आँसू बहाती है, दिल ग़मगीन होता है और हम मुँह से वही बोल निकालते हैं जिससे हमारा पालनहार खुश होता है।”

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) जब फ़िक्रमन्द होते तो आसमान की तरफ़ सिर उठाकर फ़रमाते—

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

सुब्हा-नल्लाहिल अज़ीम।

“पाक व बरतर है बड़ाईवाला खुदा।”

और जब ज्यादा रोने की हालत में होते और दुआ में लगे होते तो फ़रमाते—

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ. (71)

या हय्यु या कय्यूम ।

(तिरमिज़ी)

11. रंज व ग़म की ज़्यादाती, मुसीबतों के आते रहने और परेशानी और बेचैनी के बढ़ जाने में ये दुआएँ पढ़िए—हज़रत साद बिन अबी वक्कास (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इशारा फ़रमाया कि जुन्नून (मछलीवाले यानी हज़रत यूनस अलैहिस्सलाम) ने मछली के पेट में अपने परवरदिगार से जो दुआ की, वह यह है—

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

ला इला-ह इल्ला अन-त सुब-हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन ।

“तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू बेऐब व पाक है, मैं ही अपने ऊपर जुल्म डानेवाला हूँ ।”

अतः जो मुसलमान भी अपनी किसी तकलीफ़ या तंगी में खुदा से यह दुआ माँगता है, खुदा उसे ज़रूर क़बूल फ़रमाता है ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) जब किसी रंज या ग़म में पड़ते तो यह दुआ करते—

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ

وَرَبُّ الْأَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ. (بخاری، مسلم)

ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल अर्शिल अज़ीम, ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्जि रब्बुल अर्शिल करीम । (बुखारी, मुस्लिम)

“खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह बड़े अर्श का मालिक है ।

खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह आसमान व ज़मीन का मालिक है, अर्श बुजुर्ग का मालिक है ।”

हज़रत अबू मूसा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ.

ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि व ला मल-ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैह ।

“गुनाह से रुके रहने की ताक़त और नेक अमल की तौफ़ीक़ बख़्शने की ताक़त सिर्फ़ खुदा ही देनेवाला है और उसकी सज़ा से बचने के लिए कोई पनाहगाह नहीं

सिवाए उसकी ज्ञात के, यानी उसकी सज़ा से वही बच सकता है जो खुद उसकी रहमत के दामन में पनाह ढूँढे ।”

यह बोल 99 बीमारियों की दवा है । सबसे कम बात यह है कि इसका पढ़नेवाला रंज व गम से बचा रहता है ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने कहा कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

जिस बन्दे को भी कोई दुख या तकलीफ़ पहुँचे और वह यह दुआ माँगे, अल्लाह तआला उसके रंज व गम को ज़रूर खुशी में तबदील कर देगा—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمْتِكَ نَاصِیْتِیْ بِیْدِكَ مَاضٍ فِیْ  
حُكْمِكَ، عَدْلٌ فِیْ قَضَاؤِكَ اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اِسْمٍ هُوَ لَكَ سَمِیْتُ بِهِ  
نَفْسِكَ اَوْ اَنْزَلْتَهُ فِیْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهُ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوْ اسْتَاثَرْتُ  
بِهِ فِیْ عِلْمِ الْغَیْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ الْعَظِیْمَ رَبِیْعَ قَلْبِیْ، وَنُوْرَ  
بَصْرِیْ وَجَلَاءَ حُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ.

अल्लाहुम-म इन्नी अब्दु-क वब्नु अब्दि-क वब्नु अ-मति-क नासियती  
बियदि-क, माजिन फिय्य हुक्मु-क, अद-लुन फिय्य क़ज़ाउ-क अस-अलु-क  
बिकुल्लिसमिन हु-व-ल-क सम्मै-त बिही नफ़-स-क अव अन्ज़ल-तहू फ़ी  
किताबि-क अव अल्लम-तहू अ-ह-दम मिन ख़लकि-क अविस्ता-सर-त  
बिहि फ़ी इल्मिल ग़ैबि इन-द-क अन तज-अलल कुरआनल अज़ी-म रबी-अ  
कल्बी, व नू-र ब-सरी व जला-अ हुज़्नी व ज़-हा-ब हम्मी ।

(अहमद, इब्ने हब्बान, हाकिम—हिस्से हसीन के हवाले से)

“ऐ खुदा ! मैं तेरा बन्दा हूँ, मेरा बाप तेरा बन्दा है, मेरी माँ तेरी  
बन्दी है, मेरी चोटी तेरी कुदरत ही के कब्जे में है (यानी मैं पूरी तरह  
तेरे बस में हूँ) । तेरा ही हुक्म मेरे मामले में चलता है । मेरे बारे में  
तेरा ही हुक्म बिलकुल इनसाफ़ के मुताबिक़ है । मैं तेरे इस नाम का  
वास्ता देकर जिससे तूने मेरी ज्ञात को जोड़ा है या अपनी किताब में उतारा  
है या अपनी माख़तूक़ में से किसी को सिखाया या अपने पास ग़ैब के  
खज़ाने ही में उसको छिपा रहने दिया, तुझसे दरखास्त करता हूँ कि तू  
इस अज़ीम कुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरी आँखों का नूर, मेरे



गम का इलाज और मेरे दिल की दवा बनाए ।”

12. अगर कभी खुदा न करे मुसीबतें और तकलीफें इस तरह घेर लें कि ज़िन्दगी कठिन हो जाए और रंज व गम ऐसी भयानक शक्ल अपना लें कि आपको ज़िन्दगी बोझ मालूम होने लगे, तब भी कभी मौत की तमन्ना न कीजिए और न कभी अपने हाथों अपने को हलाक करने की शर्मनाक हरकत के बारे में सोचिए । यह बुजदिली भी है और सबसे बुरी किस्म की खियानत और गुनाह भी । ऐसी बेचैनी में बराबर खुदा से यह दुआ करते रहिए—

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مَا كَانَتْ الْحَيٰوةُ خَيْرًا لِّيْ وَتَوَفَّنِيْ اِذَا كَانَتْ الْوَفَاةُ  
خَيْرًا لِّيْ. (بخاری، مسلم)

अल्लाहुम-म अहयिनी मा का-नतिल हयातु खैरल्ली व त-वफ़फ़नी इज़ा का-नतिल वफ़ातु खैरल्ली ।  
(बुखारी, मुस्लिम)

“ऐ खुदा ! जब तक मेरे हक़ में ज़िन्दा रहना बेहतर हो, मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे हक़ में मौत ही बेहतर हो, तो मुझे मौत दे दे ।”

13. जब किसी को किसी मुसीबत में फँसा देखें तो यह दुआ पढ़िए । हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

जिसने भी किसी को किसी मुसीबत में फँसा देखकर यह दुआ माँगी तो (इन्शाअल्लाह) वह उस मुसीबत से बचा रहेगा—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ عَاقَانِيْ مِمَّا ابْتَلَاكَ اللّٰهُ بِهِ وَفَضَّلَنِيْ عَلٰى كَثِيْرٍ  
مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا. (ترمذی)

अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब-तला-कल्लाहु बिही व फ़ज़-ज-लनी अला कसीरिम मिम्मन ख-ल-क तफ़ज़ीला । (तिरमिज़ी)

“खुदा का शुक्र है जिसने मुझे इस मुसीबत से बचाए रखा जिसमें तुम फँसे हो और अपनी बहुत-सी मखलूकों (रचनाओं और जीवों) पर मुझे बढ़ाई दी ।”

## 9. डर और खौफ़ के आदाब

1. दीन के दुश्मनों की कत्ल व गारतगरी, जुल्म व बर्बरता और फ़ितना व फ़साद का डर हो या कुदरती अज़ाबों की तबाहकारियों का डर हो— हर हाल में मोमिन जैसी सूझबूझ के साथ उसकी असल वजहों का पता लगाएँ और ऊपरी उपायों पर वक्त बरबाद करने के बजाए किताब व सुन्नत के बताए हुए सच्चे उपायों पर अपनी पूरी ताकत लगा दीजिए । कुरआन पाक में है—

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ (الشورى: २०)

“और तुम पर जो मुसीबतें आती हैं, वे तुम्हारी ही करतूतों का नतीजा हैं और खुदा तो बहुत-सी ख़ताओं को माफ़ करता रहता है ।”

—कुरआन, 42:30

और कुरआन पाक ही ने इसका इलाज भी बता दिया है—

وَتَوْبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

“और तुम सब मिलकर खुदा की ओर पलटो, ऐ मोमिनो ! ताकि तुम कामयाब हो जाओ ।”

— कुरआन, 24:31

यहाँ, अरबी में शब्द ‘तौबा’ इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब है ‘पलटना’ ‘रूजू होना’ । जब गुनाहों के भयानक दलदल में फँसी हुई उम्मत अपने गुनाहों पर शर्मिंदा होकर खुदा की ओर बन्दगी के जज़्बे के साथ फिर पलटती है और शर्म के आँसू से अपने गुनाहों की गन्दगी धोकर फिर खुदा से अपना ताल्लुक जोड़ती है, तो इस हाल को कुरआन ‘तौबा’ शब्द से याद करता है और यही तौबा व इसतिग़ाफ़र हर तरह के फ़ितना व फ़साद, डर और आतंक से बचने का सही इलाज है ।

2. दीन के दुश्मनों के फैलाए फ़ितनों और जुल्म व सितम से घबराकर बेहिम्मती दिखाने और बेरहमों से रहम की भीख माँगने की ज़िल्लत से कभी अपनी मिल्ली (सामुदायिक) जिन्दगी को दाग़दार न कीजिए । बल्कि उस कमज़ोरी पर काबू पाने के लिए कमर कसिए जिसकी वजह से आपमें बुजदिली पैदा हो रही है और दीन के दुश्मनों को आपपर जुल्म ढाने और आपको हड़प करने की ज़ुरत पैदा हो रही है । नबी (सल्ल०) ने इसकी दो वजहें बताई हैं—

1. दुनिया से मुहब्बत, और

## 2. मौत से नफ़रत

यह हिम्मत कीजिए कि आप न सिर्फ़ अपने सीने से, बल्कि मिल्लत के सीने से इन रोगों को दूर करके ही दम लेंगे। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मेरी उम्मत पर वह वक़्त आनेवाला है जब दूसरी क़ौमों (तर निवाला समझकर) तुम पर इस तरह टूट पड़ेंगी, जिस तरह खानेवाले दस्तरखान पर टूटते हैं।” किसी ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या उस ज़माने में हमारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि हमें निगल लेने के लिए क़ौमें एकजुट होकर हमपर टूट पड़ेंगी।” इरशाद फ़रमाया, “नहीं ! उस वक़्त तुम्हारी तादाद कम न होगी, अलबत्ता तुम बाढ़ में बहनेवाले तिनकों की तरह बेवज़न होगे और तुम्हारा रौब निकल जाएगा और तुम्हारे दिलों में बुजदिली और पस्त-हिम्मती पैदा हो जाएगी।” इस पर एक आदमी ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! यह बुजदिली क्यों पैदा हो जाएगी ?” फ़रमाया, “इस वजह से कि तुम—

□ दुनिया से मुहब्बत करने लगोगे, और

□ मौत से भागने और नफ़रत करने लगोगे।” (अबू दाऊद)

3. नफ़्सपरस्ती, अय्याशी, औरतों की सरबराही और गुनाहों के काम से अपने समाज को पाक कीजिए और अपनी इज्तिमाइयत (सामूहिकता) को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत बनाकर इज्तिमाई (सामूहिक) ताक़त के ज़रिए फ़ितना व फ़साद को मिटाने और मिल्लत (समुदाय) में बहादुरी, ज़िन्दगी और हौसला पैदा करने की कोशिश कीजिए। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब तुम्हारे हाकिम अच्छे लोग हों, और तुम्हारे खुशहाल लोग सखी-दाता हों और तुम्हारे सामूहिक मामले आपसी मशविरों से तय पाते हों तो यक़ीनन तुम्हारे लिए ज़मीन की पीठ (पर ज़िन्दगी) ज़मीन की गोद (में मौत) से बेहतर है और जब तुम्हारे अमीर और हाकिम बदकार लोग हों और तुम्हारे समाज के मालदार, दौलत के पुजारी और कंजूस हों और तुम्हारे मामले तुम्हारी बेगमों के हाथों में हों तो फिर तुम्हारी ज़मीन की गोद (मौत) ज़मीन की पीठ (ज़िन्दगी) से कहीं बेहतर है।” (तिरमिज़ी)

4. हालात कैसे भी हिला मारनेवाले हों, हक़ की हिमायत में कभी भी कोताही न कीजिए। हक़ की हिमायत में जान दे देना इससे कहीं बेहतर है कि आदमी बेदीनी और बैरौरी की ज़िन्दगी गुज़ारे। कड़ी से कड़ी आजमाइश और बड़े से बड़े डर की हालत में भी हक़ का दामन हरगिज़ न छोड़िए। कोई मौत से डराए

तो मुस्करा दीजिए और शहादत का मौका आए तो शौक व जज़बे के साथ उसका स्वागत कीजिए । नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं—

“इस्लाम की चक्की गर्दिश में है, तो जिधर कुरआन का रख हो, उसी तरफ़ तुम भी घूम जाओ । होशियार रहो ! कुरआन और सत्ता बहुत जल्द अलग-अलग हो जाएँगे । (ख़बरदार) तुम कुरआन को न छोड़ना । आगे ऐसे हाकिम होंगे जो तुम्हारे बारे में फ़ैसला करेंगे । अगर तुम उनकी बात मानोगे तो वे तुम्हें सीधी राह से भटका देंगे और अगर तुम उनकी नाफ़रमानी करोगे तो वे तुम्हें मौत के घाट उतार देंगे ।” सहाबी ने कहा, “तो फिर हम क्या करें, ऐ अल्लाह के रसूल !” नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, “वही करो जो ईसा के साथियों ने किया । वे लोग आरों से चीरे गए और सूलियों पर लटकाए गए । खुदा की नाफ़रमानी में ज़िन्दा रहने से कहीं बेहतर है कि आदमी खुदा के हुक्मों की पैरवी करते हुए जान दे दे ।”

5. उन सामूहिक बाधाओं के खिलाफ़ बराबर ज़िहाद करते रहिए जिनके नतीजों में समाज पर डर व आतंक की घटाएँ छा जाती हैं । ग़रीबी, अकाल, ख़ूँजी आम हो जाती हैं और दुश्मनों के ज़ालिमाना क़ब्ज़े में क़ौम बेबस होकर रह जाती है ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं, “जिस क़ौम में ख़ियानत का बाज़ार गरम हो जाएगा, खुदा उस क़ौम के दिलों में दुश्मनी का डर और आतंक बैठा देगा और जिस समाज में ज़िना (व्यभिचार) की वबा आम हो जाएगी, वह तबाह होकर रहेगा । जिस सोसाइटी में नाप-तौल में बददियानती का रिवाज हो जाएगा वह ज़रूर फ़ाँके का शिकार होगी और जहाँ नाहक़ फ़ैसले होंगे वहाँ लाज़मी तौर पर ख़ूँजी आम होगी । जो क़ौम भी अपने वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगी उस पर बहरहाल दुश्मन का क़ब्ज़ा होकर रहेगा ।” (मिशकात)

6. जब दुश्मनों की ओर से डर पैदा हो तो यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ  
(ابودود, نسائي بحواله حسن حسين)

अल्लाहुम-म इन्ना नज-अलु-क फ़ी नुहूरिहिम व नऊज़ु बि-क मिन शुूरिहिम ।  
(अबू दाऊद, नसई—हिस्ने हसीन के हवाले से)

“ऐ अल्लाह ! हम इन दुश्मनों के मुकाबले में तुझे ही अपनी ढाल

बनाते हैं और उनकी बुराई और बिगाड़ से बचने के लिए तेरी पनाह लेते हैं ।”

7. और जब दुश्मन के घेरे में फँसे हुए हों तो यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَآمِنْ رَوْعَاتِنَا. (امير محمد بن مسلم)

अल्लाहुम-मस्तुर औरातिना व आमिन रौआतिना ।

(अहमद— हिस्ने हसीन के हवाले से)

“ऐ अल्लाह ! तू हमारी इज्जत व आबरू की हिफाजत कर और डर व आतंक से अमन अता कर ।”

8. जब आँधी या घटा उठती देखें तो घबराहट और खौफ महसूस कीजिए । हजरत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैंने नबी (सल्ल०) को इस तरह हँसते नहीं देखा कि आपका पूरा मुँह खुल जाए । आप सिर्फ़ मुसकुराते थे और जब कभी आँधी या घटा आती तो आप घबरा जाते और दुआ करने लगते । खौफ़ की वजह से कभी उठते, कभी बैठते और जब तक पानी न बरस जाता तब तक आपकी यही हालत रहती । मैंने पूछा—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं लोगों को देखती हूँ कि जब वे बदली देखते हैं तो खुश होते हैं कि पानी बरसेगा और आपको देखती हूँ कि जब आप बदली देखते हैं तो आपके चेहरे पर बोझ और पेशानी दिखाई देने लगती है तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“आइशा ! आखिर मैं कैसे बेखौफ़ हो जाऊँ कि इस बदली में अज़ाब न होगा, जबकि क़ौमे आद पर आँधी का अज़ाब आ चुका है । क़ौमे आद ने जब उस बदली को देखा था तो कहा था कि यह हमपर पानी बरसाएगी ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

आँधी के वक़्त यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا رِيًا حَا وَلَا تَجْعَلْهَا رِيْحًا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا رَحْمَةً وَلَا تَجْعَلْهَا عَذَابًا. (बरान)

अल्लाहुम-मज-अलहा रियाहन व ला तजअलहा रीहन  
अल्लाहुम-मज-अलहा रह-मतन व ला तज-अलहा अज़ाबन । (तबरानी)

“ऐ अल्लाह ! तू इसको भलाई की हवा बना दे, बुराई की हवा न बना । खुदा ! तू इसको रहमत बना दे, अज्ञाब न बना ।”

और अगर आँधी के साथ घुप-अँधेरा भी हो तो सूरा ‘कुल अ-ऊजु बिरब्बिल फ़-लक़’ और ‘कुल अऊजुबिरब्बिन्नास’ भी पढ़िए । (अबू दाऊद)

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल०) जब आँधी उठती देखते तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِیْهَا وَخَيْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهِ وَاَعُوْذُ  
بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهِ. (مسلم, ترمذی)

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क खै-रहा व खै-र मा फ़ीहा व खै-र मा उर्सिलत बिही व अऊजु बि-क मिन शरिहा व शरि मा फ़ीहा व शरि मा उर्सिलत बिह । (मुस्लिम, तिरमिज़ी)

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे इस आँधी की भलाई और जो इसमें है, उसकी भलाई चाहता हूँ और जिस मकसद के लिए यह भेजी गई है, उसकी भलाई चाहता हूँ और उस आँधी की बुराई से और जो उसमें है, उसकी बुराई से और जिस गरज के लिए यह भेजी गई है, उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ ।”

9. जब बारिश की ज़्यादाती से तबाही का डर हो तो यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ حَوَالِنَا لَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلٰی الْاَكَامِ وَالطَّرَابِ وَبُطُوْنِ  
الْاَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ. (بخاری, مسلم)

अल्लाहुम-म हवालैना ला अलैना अल्लाहुम-म अ-लल आकामि वज़्ज़िगाबि व बुतूनिल अवदियति व मनाबितिश-शजर । (बुखारी, मुस्लिम)

“ऐ खुदा ! (बारिश) हमारे आस-पास बरसे, हमारे ऊपर न बरसे ।  
ऐ अल्लाह ! पहाड़ियों पर, टीलों पर, वादियों पर और खेत और पेड़  
उगने की जगहों पर बरसे ।”

10. जब बादलों की गरज और बिजली की कड़क सुनें तो बात-चीत बन्द करके कुरआन पाक की यह आयत पढ़ना शुरू कर दीजिए—

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ ۝ (الرعد: 13)

व युसब्बिहुर-रअदु बिहमदिही वल मलाइकतु मिन खी-फ़तिही ।

(क़ुरआन, 13:13)

“और बादलों की गरज खुदा की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करती है और फ़रिश्ते भी उसके डर से काँपते हुए पाकी और बरतरी बयान करते हैं ।”

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) जब बादलों की गरज सुनते तो बातें बन्द कर देते और यही आयत पढ़ते । (अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत काब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जो आदमी गरज के वक़्त तीन बार इस आयत को पढ़ ले, वह गरज की आफ़त से बचा रहेगा । (तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) जब बादलों की गरज और बिजली की कड़क सुनते तो यह दुआ पढ़ते—

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَلِكَ . (الادب المفرد)

अल्लाहुम-म ला तक्रतुलना बि-म-ज़बि-क व ला तुहलिक्ना बि अज़ाबि-क व आफ़िना क़ब-ल ज़ालिक । (अल-अदबुल मुफ़रद)

“ऐ अल्लाह ! हमें अपने ग़ज़ब से हलाक न कर अपने अज़ाब से हमें तबाह न कर, और ऐसा वक़्त आने से पहले ही हमें अपनी पनाह में ले ले ।”

11. जब आग लग जाए तो उसको बुझाने की भरपूर कोशिश के साथ-साथ ‘अल्लाहु अक़बर’ भी कहते जाइए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब आग लगती देखो तो ‘अल्लाहु अक़बर’ कहो, तकबीर आग को बुझा देती है ।”

12. डर और आतंक (खौफ़) के वक़्त यह दुआ पढ़िए । खुदा ने चाहा तो आतंक दूर होगा और इतमीनान नसीब होगा । हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि०) कहते हैं कि एक आदमी ने नबी (सल्ल०) से शिकायत की कि मुझपर खौफ़ छाया रहता है । आपने फ़रमाया, “यह दुआ पढ़ा करो ।” उसने इस दुआ को बार-बार पढ़ा । खुदा ने उसके दिल से खौफ़ दूर फ़रमा दिया । (तबरानी)

سُبْحَانَ اللَّهِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ جَلَّتِ  
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بِالْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوتِ.

सुब्हानल्लाहिल मलिकिल कुददूसि रब्बिल मलाइकति वरूहि  
जल्लल-तस्समावाति वल-अर-ज़ बिल इज्जति वल ज-बरूत ।

“पाक व बरतर है अल्लाह, सच्चा बादशाह, ऐबों से पाक । ऐ फ़रिश्तों  
और जिबरील के परवरदिगार ! तेरा ही इस्तिदार और दबदबा आसमानों  
और ज़मीन पर छाया हुआ है ।”



## 10. खुशी के आदाब

1. खुशी के मौकों पर खुशी जरूर मनाइए। खुशी इनसान का फ़ितरी (स्वाभाविक) तक्राज़ा और जरूरत है। दीन फ़ितरी जरूरतों की अहमियत को महसूस करता है और कुछ फ़ायदेमंद हदों और शर्तों के साथ उन जरूरतों को पूरा करने पर उभारता है। दीन कभी यह पसन्द नहीं करता कि आप बनावटी वक्रार (बड़प्पन), अनचाही संजीदगी, हर वक़्त की मुर्दादिली और दुखी चेहरा बनाए रखने पर अपने किरदार (चरित्र) की कशिश (आकर्षण) को ख़त्म कर दें। वह खुशी के तमाम जायज़ मौकों पर खुशी मनाने का पूरा-पूरा हक़ देता है और यह चाहता है कि आप हमेशा बुलन्द हौसलों, ताज़ा वलवल्लों और नई उमंगों के साथ ताज़ा दम रहें। जायज़ मौकों पर खुशी न ज़ाहिर करना और खुशी मनाने को दीनी वक्रार के खिलाफ़ समझना, दीन की समझ से महरूमी है।

आपको किसी दीनी कर्तव्य को अंजाम देने की तौफ़ीक़ मिले, आप या आपका कोई रिश्तेदार इल्म व फ़ज़ल में ऊँची जगह पा ले, खुदा आपको माल व दौलत या किसी और नेमत से नवाज़े, आप किसी लंबे सफ़र से ख़ैरियत के साथ घर वापस आएँ, आपका कोई रिश्तेदार किसी दूर की जगह के सफ़र से आए आपके यहाँ किसी इज़्ज़तदार मेहमान का आना हो, आपके यहाँ शादी-ब्याह या बच्चे की पैदाइश हो, किसी रिश्तेदार की सेहत या ख़ैरियत की ख़बर मिले या मुसलमानों की कामयाबी की खुशख़बरी सुनें या कोई त्योहार हो, इस तरह के तमाम मौकों पर खुशी मनाना आपका स्वाभाविक हक़ है। इस्लाम न सिर्फ़ खुशी मनाने की इजाज़त देता है, बल्कि उसको दीनदारी भी करार देता है।

हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि०) का बयान है कि जब अल्लाह ने मेरी तौबा क़बूल कर ली और मुझे खुशख़बरी मिली तो मैं तुरन्त नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में पहुँचा। मैंने जाकर सलाम किया। उस वक़्त नबी (सल्ल०) का चेहरा खुशी से जगमगा रहा था और नबी (सल्ल०) को जब भी कोई खुशी हासिल होती तो आपका चेहरा इस तरह चमकता कि जैसे चाँद का कोई टुकड़ा है, और हम आपके चेहरे की रौनक और चमक से समझ जाते कि आप इस वक़्त बहुत खुश हैं।

(रियाज़ुस्सालिहीन)

2. त्योहार के मौक़े पर एहतिमाम के साथ ख़ूब ख़ुलकर खुशी मनाइए और तबीयत को ज़रा आज़ाद छोड़ दीजिए। नबी (सल्ल०) जब मदीने तशरीफ़ ले आए तो फ़रमाया—

“तुम साल में दो दिन खुशियाँ मनाया करते थे। अब खुदा ने तुमको

उससे बेहतर दो दिन दे दिए यानी 'ईदुल फित्र' और 'ईदुल अज्हा' ।”

इस लिए साल के इन दो इस्लामी त्योहारों में पूरी-पूरी खुशी ज़ाहिर कीजिए और मिल-जुलकर कुछ खुली तबीयत से कुछ हँसी-खुशी के काम स्वाभाविक ढंग से अपनाइए । इसी लिए इन त्योहारों में रोज़ा रखने से मना किया गया है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“ये दिन खाने-पीने, आपसी खुशी का मज़ा उठाने और खुदा को याद करने के हैं ।”  
(शरहे मआनिल आसार)

ईद के दिन सफ़ाई-सुथराई और नहाने-धोने का एहतिमाम कीजिए । हैसियत के मुताबिक अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनिए, खुशबू लगाइए, अच्छे खाने खाइए और बच्चों को मौक़ा दीजिए कि वे जायज़ किस्म के सैर-सपाटों और खेलों से मन बहलाएँ और खुलकर खुशी मनाएँ ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है कि ईद का दिन था । कुछ लड़कियाँ बैठी वे गीत गा रही थीं जो बुआस की लड़ाई के मौक़े पर अनसार ने गाए थे कि इसी बीच हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) तशरीफ़ ले आए । बोले, “नबी (सल्ल०) के घर में यह गाना-बजाना ?” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अबू बक्र ! रहने दो । हर क़ौम के लिए त्योहार का दिन होता है और आज हमारी ईद का दिन है ।”

एक बार ईद के दिन कुछ हब्शी बाज़ीगर फ़ौजी करतब दिखा रहे थे । नबी (सल्ल०) ने ये करतब खुद भी देखे और हज़रत आइशा (रज़ि०) को भी अपनी आड़ में लेकर दिखाए । आप इन बाज़ीगरों को शाबाशी भी देते जाते थे । जब आइशा (रज़ि०) देखते-देखते थक गई तो आपने फ़रमाया, “अच्छा अब जाओ ।”  
(बुखारी)

3. खुशी मनाने में इस्लामी ज़ौक़ और इस्लामी हिदायतों और आदाब का ज़रूर खयाल रखिए । जब आपको कोई खुशी मिले तो खुशी देनेवाले परवरदिगार का शुक्रिया अदा कीजिए । उसके हुज़ूर शुक्राने का सज्दा कीजिए । खुशी के बहाव में कोई ऐसा काम या रवैया न अपनाइए जो इस्लामी मिज़ाज से मेल न खाए और इस्लामी तहज़ीब और हिदायतों के खिलाफ़ हो । खुशी ज़रूर ज़ाहिर कीजिए, लेकिन हदों का खयाल ज़रूर रखिए । खुशी ज़ाहिर करने में इतना आगे न बढ़िए कि घमण्ड ज़ाहिर होने लगे और नियाज़मंदी, बन्दगी और आजिज़ी के जज़्बे दबने लगें, कुरआन में है—

وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ (المائدة: २३)

“और उन नेमतों को पाकर इतराने न लगो, जो खुदा ने दी हैं। खुदा इतरानेवाले और बड़ाई जतानेवाले को नापसन्द करता है।”

(कुरआन, 57:23)

और खुशी में इतने फूल न जाइए कि खुदा की याद से गाफिल होने लगे। मोमिन की खुशी यह है कि वह खुशी देनेवाले को और ज्यादा याद करे। उसके हुजूर शुक्र का सज्दा अदा कीजिए और अपने कामों से, बातों से, खुदा के फजल व करम और अजमत व जलाल का और ज्यादा इजहार करें।

रमजान के महीने भर के रोजे रखकर, रात में कुरआन की तिलावत और तरावीह की तौफ़ीक पाकर जब आप ईद का चाँद देखते हैं तो खुशी से झूम उठते हैं कि खुदा ने जो हुक्म दिया था, आप खुदा की मदद से उसे पूरा करने में कामयाब हुए और तुरन्त अपने माल में से अपने गरीब और मुहताज भाइयों का हिस्सा उनको पहुँचा देते हैं कि अगर आप की इबादतों में कोई कोताही हो गई हो और बन्दगी का हक अदा करने में कोई भूल हुई हो, तो उसकी कमी पूरी हो जाए और खुदा के गरीब बन्दे भी ईद की खुशी में शामिल होकर, मिल-जुलकर कर खुशी ज़ाहिर कर सकें और फिर आप खुदा की इस तौफ़ीक पर ईद की सुबह को दोगाना शुक्र अदा करके अपनी खुशी सही-सही ज़ाहिर करते हैं और इसी तरह ईदुल-अज्हा के दिन हज़रत इबराहीम और हज़रत इसमाईल की महान और बेमिसाल कुरबानी की याद मनाकर और कुरबानी के जज़्बों से अपने सीने को भरा पाकर सज्द-ए-शुक्र बजा लाते हैं— और फिर आपकी हर एक बस्ती में, सारे गली-कूचे और सड़क ‘अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द’ की आवाज़ों से गूँज उठते हैं और जब आप खुदा की शरीअत के मुताबिक ईद के दिनों में अच्छा खाते, अच्छा पहनते और खुशी ज़ाहिर करने के लिए जायज तरीक़ों को अपनाते हैं तो आपकी ये सारी सरगर्मियाँ अल्लाह का ज़िक्र बन जाती हैं।

4. अपनी खुशी में दूसरों को भी शामिल कीजिए और इसी तरह दूसरों की खुशी में खुद भी शिरकत करके उनकी खुशियों में बढ़ोत्तरी कीजिए और खुशी के मौक़ों पर मुबारकबाद देने का भी एहतिमाम कीजिए।

हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि०) की तौबा जब क़बूल हुई और मुसलमानों को मालूम हुआ तो लोग जत्थे के जत्थे उनके पास मुबारकबाद देने के लिए पहुँचने लगे और खुशी ज़ाहिर करने लगे, यहाँ तक कि हज़रत तलहा (रज़ि०) की मुबारकबाद और खुशी ज़ाहिर करने से तो हज़रत काब (रज़ि०) पर इतना असर पड़ा कि ज़िन्दगी भर याद करते रहे। हज़रत काब (रज़ि०) ने जब बुढ़ापे के ज़माने में अपने बेटे

अब्दुल्लाह को अपनी आजमाइश और तौबा का वाकिआ सुनाया तो खास तौर पर हजरत तलहा (रजि०) की खुशी का जिक्र किया और फरमाया कि मैं तलहा की मुबारकबाद और उनके खुशी के जज्बों को कभी नहीं भूल सकता ।

खुद नबी (सल्ल०) ने भी जब हजरत काब (रजि०) को तौबा कबूल कर लिए जाने की खुशखबरी सुनाई तो बेहद खुशी जाहिर करते हुए फरमाया—

“काब ! यह तुम्हारी ज़िन्दगी का सबसे ज्यादा खुशी का दिन है ।”

(रियाज़ुस्सालिहीन)

किसी की शादी हो या किसी के यहाँ बच्चा पैदा हो या इसी तरह की कोई खुशी हासिल हो, तो खुशी में शिरकत कीजिए और मुबारकबाद दीजिए ।

हजरत अबू हुरैरा (रजि०) फरमाते हैं कि नबी (सल्ल०) जब किसी के निकाह पर उसको मुबारकबाद देते तो यूँ फरमाते—

بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَمَا وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ . (ترمذی)

बा-र-कल्लाहु ल-क व बा-र-क अलैकुमा व ज-म-अ बै-नकुमा फ़ी खैर ।  
(तिरमिज़ी)

“खुदा तुम्हें खुशहाल रखे और तुम दोनों पर बरकतें उतारें और अच्छे तरीके से तुम दोनों का निबाह करे ।”

एक बार हजरत हुसैन (रजि०) ने किसी बच्चे की पैदाइश पर मुबारकबाद देने का तरीका सिखाते हुए फरमाया कि यूँ कहा करो—

“खुदा तुम्हें अपनी इस देन में खैर व बरकत दे । अपनी शुक्रगुजारी की तुम्हें तौफ़ीक़ बख़्शो, बच्चे को ज़वानी की बहारें दिखाए और उसको तुम्हारा फ़रमाँबरदार उठाए ।”

5. जब आपका कोई रिश्तेदार या जान-पहचान का कोई आदमी किसी दूर के सफ़र से आए तो उसका स्वागत कीजिए और उसके खैरियत के साथ वापस आ जाने और अपने मक़सद में कामयाब होने पर खुशी जाहिर कीजिए और अगर वह खैरियत से वापस होने पर खुशी का कोई जश्न मनाए तो उसमें शिरकत कीजिए और जब आप किसी सफ़र से खैरियत के साथ वतन वापस पहुँचें और इस खुशी में कोई जश्न मनाएँ तो इस खुशी में भी करीबी लोगों को शरीक करें, अलबत्ता ना-मुनासिब खर्च, फ़िज़ूलखर्ची और दिखावे से बचिए और कोई ऐसा खर्च हरगिज़ न कीजिए, जो आपकी ताक़त से ज्यादा हो ।

नबी (सल्ल०) जब तबूक की लड़ाई से वापस तशरीफ लाए, तो मुसलमान मर्द और बच्चे आपके स्वागत के लिए सनीयतुल विदाअ तक पहुँचे । (अबू दाऊद)

और जब आप (सल्ल०) मक्का से हिजरत करके मदीना पहुँचे और दक्षिण की ओर से शहर में दाखिल होने लगे तो मुसलमान मर्द, औरतें, बच्चे, बच्चियाँ सभी आपका स्वागत करने के लिए निकल आए थे और अनसार की बच्चियाँ खुशी से यह गीत गा रही थीं :

त-ल-अल बदरु अलैना  
मिन सनिध्या तिल विदाइ  
व-ज-बश-शुकरु अलैना  
मा दआ लिल्लाहि दाइ  
अय्युहल मब-ऊसु फ्रीना  
जिअ-त बिल अम्रिल मुताइ

—“(आज) हम पर चौदहवी का चाँद निकला (दक्षिणी पहाड़ी) सनीयतुल विदाअ से ।

—हम पर शुक्र वाजिब है उस दावत व तालीम का कि दावत देनेवाले ने हमें खुदा की ओर बुलाया ।

—“ऐ हमारे बीच भेजे जानेवाले रसूल ! आप ऐसा दीन लाए हैं, जिसकी हम पैरवी करेंगे ।”

एक बार नबी (सल्ल०) किसी सफ़र से मदीना पहुँचे तो आपने अपने ऊँट जिब्ह करके लोगों की दावत फ़रमाई । (अबू दाऊद)

6. शादी-ब्याह के मौके पर भी खुशी मनाइए और इस खुशी में अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को भी शरीक कीजिए । इस मौके पर नबी (सल्ल०) ने कुछ अच्छे गीत गाने और दफ़ बजाने की भी इजाज़त दी है । इसका मक़सद खुशी के जज़्बों की तस्कीन भी है और निकाह का आम एलान और शोहरत भी ।

□ हज़रत आइशा (रज़ि०) ने अपने रिश्ते की एक औरत का किसी अनसारी से विवाह किया । जब उसको विदा किया तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“लोगों ने उनके साथ कोई लौंडी क्यों नहीं भेज दी जो दफ़ बजाती और कुछ गीत गाती जाती ?” (बुख़ारी)

□ जब हज़रत रुबैअ बिनत मुअव्वज़ (रज़ि०) का निकाह हुआ तो उनके पास कुछ लड़कियाँ बैठी दफ़ बजा रही थीं और अपने उन बुज़ुर्गों की तारीफ़ में कुछ गीत गा रही थीं जो बद्र की लड़ाई में शहीद हुए

थे । एक लड़की ने एक लड़ी पढ़ी—

“हमारे बीच एक ऐसा नबी है जो कल होनेवाली बात को जानता है ।”

नबी (सल्ल०) ने सुना तो फरमाया, “इसको छोड़ दो और वही गाओ जो पहले गा रही थीं ।” (बुखारी)

7. शादी-ब्याह की खुशी में अपनी हैसियत और ताकत के मुताबिक अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को कुछ खिलाने-पिलाने का भी एहतिमाम कीजिए । नबी (सल्ल०) ने खुद अपनी शादी में भी वलीमे की दावत की और दूसरों को भी इसपर उभारा । आपका इरशाद है—

“और कुछ न हो तो एक बकरी ही जिब्ह करके खिला दो ।” (बुखारी)

शादी में शिरकत का मौका न हो तो कम से कम मुबारकबाद का पैगाम जरूर भेजिए । निकाह, शादी और इसी तरह के दूसरे खुशी के मौकों पर तोहफे देने से ताल्लुकात में ताजगी और मजबूती पैदा होती है और मुहब्बत में गर्मी और बढ़ती है । हाँ, इसे जरूर ध्यान में रखिए कि तोहफा अपनी हैसियत के मुताबिक हो और दिखावे से बचते हुए अपने इखलास की जाँच जरूर करते रहिए ।

# अल्लाह की इबादत

## 11. मस्जिद के आदाब

1. खुदा की नज़र में ज़मीन का सबसे ज़्यादा बेहतर हिस्सा वह है, जिसपर मस्जिद बनाई जाए। खुदा से प्यार रखनेवालों की पहचान यह है कि वे मस्जिद से भी प्यार रखते हैं। क़ियामत के भयानक दिन में जब कहीं कोई साया न होगा, खुदा उस दिन अपने उस बन्दे को अपने अर्श के साए में रखेगा जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता हो। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“और वह आदमी (अर्श के साए में होगा) जिसका दिल मस्जिद में अटका रहता हो।”  
(बुखारी)

2. मस्जिद की खिदमत (सेवा) कीजिए और उसको आबाद रखिए। मस्जिद की खिदमत करना और उसको आबाद रखना ईमान की निशानी है। खुदा का इरशाद है—

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ.

“खुदा की मस्जिदों को वही लोग आबाद रखते हैं जो खुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं।”  
— कुरआन, 9:18

3. फ़र्ज नमाज़ें हमेशा मस्जिद में जमाअत से पढ़िए। मस्जिद में अज़ान और जमाअत का बाकायदा इन्तिज़ाम कीजिए और मस्जिद के निज़ाम से अपनी पूरी ज़िन्दगी का ताल्लुक जोड़िए। मस्जिद एक ऐसा मरकज़ है कि मोमिन की पूरी ज़िन्दगी उसी के चारों ओर गर्दिश करती है। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“मुसलमानों में कुछ लोग वे हैं जो मस्जिदों में जमे रहते हैं और वहाँ से हटते नहीं हैं। फ़रिश्ते ऐसे लोगों के साथ उठते-बैठते हैं। अगर ये लोग ग़ायब हो जाएँ तो फ़रिश्ते उनको खोजते फिरते हैं और अगर बीमार पड़ जाएँ तो फ़रिश्ते उनकी बीमारपुर्सी करते हैं और अगर किसी काम में लगे हों तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं — मस्जिद में बैठनेवाला

खुदा की रहमत का मुन्तज़िर होता है ।”

(मुस्नद अहमद)

4. मस्जिद में नमाज़ के लिए जौक़ व शौक़ से जाइए । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“सुबह व शाम मस्जिद में नमाज़ के लिए जाना ऐसा है, जैसे जिहाद के लिए जाना ।”

“जो लोग सुबह के अँधेरे में मस्जिद की तरफ़ जाते हैं, क़ियामत में उनके साथ पूरी रौशनी होगी ।”

“नमाज़े बाजमाअत के लिए मस्जिद में जानेवाले का हर क़दम एक नेकी को बढ़ाता है और एक गुनाह को मिटाता है ।” (इब्ने हिब्बान)

5. मस्जिद को साफ़-सुथरा रखिए । मस्जिद में झाड़ू दीजिए । कूड़ा-करकट साफ़ कीजिए । खुशबू कीजिए । खासतौर पर जुमा के दिन मस्जिद को खुशबू में बसाने की कोशिश कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मस्जिद में झाड़ू देना, मस्जिद को पाक-साफ़ रखना, मस्जिद का कूड़ा-करकट बाहर फेंकना, मस्जिद में खुशबू करना, खासतौर पर जुमा के दिन मस्जिद को खुशबू में बसाना जन्नत में ले जानेवाले काम हैं ।”

(इब्ने माज़ा)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया है—

“मस्जिद का कूड़ा-करकट साफ़ करना हसीन आँखोंवाली हूरों (स्वर्ग में रहनेवाली सुन्दर स्त्रियों) का महर है ।”

(तबरानी)

6. मस्जिद में डरते-काँपते जाइए । दाखिल होते वक़्त अस्सलामु अलैकुम कहिए और खामोश बैठकर इस तरह जिक़्र कीजिए कि खुदा की बुजुर्गी और उसका जलाल आपके दिल पर छाया हुआ हो । हँसते-बोलते ग़फ़लत के साथ मस्जिद में दाखिल होना ग़ाफ़िलों और बेअदबों का काम है, जिनके दिल खुदा के खौफ़ से खाली हैं । कुछ लोग इमाम के साथ रकू में शामिल होने और रकूअत पाने के लिए मस्जिद में दौड़ते हैं, यह भी मस्जिद के एहतिराम के खिलाफ़ है । रकूअत मिले या न मिले, संजीदगी, वक्रार और आजिज़ी के साथ मस्जिद में चलिए और भाग-दौड़ से परहेज़ कीजिए ।

7. मस्जिद में सुकून से बैठिए और दुनिया की बातें न कीजिए । मस्जिद में शोर मचाना, ठट्ठा-मज़ाक़ करना, बाज़ार के भाव पूछना और बताना, दुनिया के हालात पर चर्चा करना और ख़रीदने व बेचने का बाज़ार गर्म करना मस्जिद की



बेहुरमती (अनादर) है। मस्जिद खुदा की इबादत का घर है, उसमें सिर्फ इबादत कीजिए।

8. मस्जिद में ऐसे छोटे बच्चों को न ले जाइए जो मस्जिद के एहतिराम का शुक्र न रखते हों और मस्जिद में पेशाब-पाखाना करें या थूकें।

9. मस्जिद को गुजरने का रास्ता न बनाइए। मस्जिद के दरवाजे में दाखिल होने के बाद मस्जिद का यह हक है कि आप उसमें नमाज पढ़ें या बैठकर जिक्र और तिलावत करें।

10. अगर आपकी कोई चीज कहीं बाहर गुम हो जाए तो उसका एलान मस्जिद में न कीजिए। नबी (सल्ल०) की मस्जिद में अगर कोई आदमी इस तरह एलान करता तो आप नाराज होते और यह कलिमा फरमाते—

لَا رَدَّ اللَّهُ عَلَيْكَ ضَالَّتَكَ.

ला रद्-दल्लाहु अलै-क ज़ाल्-ल-त-क

“खुदा तुझको तेरी गुम हुई चीज न मिलाए।”

11. मस्जिद में दाखिल होते वक़्त पहले दायीं पाँव रखिए और नबी (सल्ल०) पर दरूद व सलाम भेजिए, फिर यह दुआ पढ़िए। नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि जब तुम में से कोई मस्जिद में आए तो पहले नबी पर दरूद भेजे और फिर यह दुआ पढ़े—

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ. (مسلم)

अल्लाहुम-मफ़्तह ली अब-वा-ब-रहमतिक।

(मुस्लिम)

“ऐ अल्लाह ! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोल दे।”

और मस्जिद में दाखिल होने के बाद दो रक़अत नफ़ल नमाज़ पढ़िए। इस नफ़ल को तहीयतुल मस्जिद कहते हैं। इसी तरह जब कभी सफ़र से वापसी हो तो सबसे पहले मस्जिद पहुँच कर दो रक़अत नफ़ल नमाज़ पढ़िए और इसके बाद अपने घर जाइए। नबी (सल्ल०) जब भी सफ़र से वापस आते तो पहले मस्जिद में जाकर नफ़ल पढ़ते और फिर अपने घर तशरीफ़ ले जाते।

!2. मस्जिद से निकलते वक़्त बायीं पाँव बाहर रखिए और यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ. (مسلم)

अल्लाहुम-म इन्नी असूअलु-क मिन फ़ज़िलक । (मुस्लिम)

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़ल व करम का सवाल करता हूँ ।”

13. मस्जिद में बाकायदा अज़ान और नमाज़ बाजमाअत का नज़्म कायम कीजिए और मुअज़्जिन और इमाम उन लोगों को बनाइए जो अपने दीन व अखलाक में कुल मिलाकर सबसे बेहतर हों । जहाँ तक मुमकिन हो, कोशिश कीजिए कि ऐसे लोग अज़ान और इमामत के कर्तव्य निभाएँ जो मुआवज़ा न लें और खुशी से आखिरत के बदले की तलब में उन कर्तव्यों को निभाएँ ।

14. अज़ान के बाद यह दुआ पढ़िए । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिस आदमी ने अज़ान सुनकर यह दुआ माँगी तो क़ियामत के दिन वह मेरी शफ़ाअत का हक़दार होगा ।” (बुखारी)

اَللّٰهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةُ الثَّامَّةُ وَالصَّلٰوةُ الْقَائِمَةُ اِتِّمَمْتُهَا بِمُحَمَّدٍ الْوَسِيْلَةِ  
وَالْفَضِيْلَةِ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مُّحْمُوْدًا الَّذِي وَعَدْتَهُ (بخاری)

अल्लाहुम-म रब-ब हाज़िहिद्दअ-वतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति  
मुहम-म-द निल-वसी-ल-त वल फ़ज़ी-ल-त वब-असहु मक़ामम  
महमू-द-निल्लज़ी वअत्तहू । (बुखारी)

“ऐ खुदा ! इस कामिल दावत और इस खड़ी होनेवाली नमाज़ के मालिक ! मुहम्मद (सल्ल०) को अपनी नज़दीकी और बुजुर्गी अता फ़रमा और उनको उस मक़ाम महमूद पर ले जा, जिसका तूने उनसे वादा फ़रमाया है ।”

15. मुअज़्जिन जब अज़ान दे रहा हो तो उसके बोलों को सुन-सुनकर आप भी दोहराइए, अलबत्ता जब वह ‘हय-य अलस्सलाह और हय-य अलल फ़लाह’ कहे, तो उसके जवाब में कहिए ‘ला हौ-ल व ला कू-व्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम’ और फ़ज़ की अज़ान में जब मुअज़्जिन ‘अस्सलातु खैरुम मिनन्नौम’ कहे तो जवाब में ये बोल कहिए— ‘स-दक़-त व ब-र-र-त’ (तुमने सच कहा और भलाई की बात कही।)

16. तकबीर कहनेवाला जब ‘क़दक्का मतिस्सलाह’ कहे तो जवाब में ये बोलिए— ‘अक़ाम-हल्लाहु व अदा महा’ (खुदा उसे हमेशा कायम रखे) ।

17. औरतें मस्जिदों में जाने के बजाए घर ही में नमाज़ अदा करें । एक बार हज़रत अबू हुपैद साअदी की बीवी ने नबी (सल्ल०) से अज़ा किया, “अल्लाह

के रसूल ! आपके साथ नमाज़ पढ़ने का बड़ा शौक़ है ।” आपने फ़रमाया, “मुझे तुम्हारा शौक़ मालूम है, लेकिन तुम्हारा कोठरी में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि तुम दालान में नमाज़ पढ़ो और दालान में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि आँगन में पढ़ो ।”

लेकिन औरतों को मस्जिद की ज़रूरतें पूरी करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए । पानी का इन्तिज़ाम, चटाई का इन्तिज़ाम और खुशबू वग़ैरह का सामान भेजें और मस्जिद से दिली ताल्लुक कायम रखें ।

18. होशियार बच्चों को अपने साथ मस्जिद ले जाइए । माओं को चाहिए कि वे बच्चों को उकसाकर और उभारकर मस्जिद भेजें, ताकि बच्चों में शौक़ पैदा हो । मस्जिद में उनके साथ बड़ी नमी, मुहब्बत और प्रेम का व्यवहार कीजिए । वे अगर कोई कोताही करें या कोई शरारत कर बैठें तो डाँटने-फटकारने के बजाए उन्हें प्यार और मुहब्बत से समझाइए और भलाई पर उभारिए ।

## 12. नमाज़ के आदाब

1. नमाज़ के लिए पाकी और सफ़ाई का पूरा-पूरा खयाल रखिए । वुजू करते वक़्त भी मिस्वाक का एहतिमाम कीजिए । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“क्रियामत में मेरी उम्मत की निशानी यह होगी कि उनके माथे और वुजू के अंग नूर से चमक रहे होंगे, इसलिए जो आदमी अपने नूर को बढ़ाना चाहे बढ़ाए ।”

2. साफ़-सुथरे, संजीदा, तहज़ीब और सलीक़े के कपड़े पहनकर नमाज़ अदा कीजिए । कुरआन मजीद में है—

يَبْنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ

“ऐ आदम के बेटो ! हर नमाज़ के मौक़े पर अपनी जीनत से सजा करो ।”

(कुरआन, 7:31)

3. वक़्त की पाबन्दी से नमाज़ अदा कीजिए—

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا

“मोमिनों पर वक़्त की पाबन्दी से नमाज़ फ़र्ज़ की गई है ।” कुरआन, 4:103

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने एक बार नबी (सल्ल०) से पूछा— “ऐ अल्लाह के रसूल ! खुदा के नज़दीक कौन-सा अमल सबसे ज़्यादा पसन्दीदा है ?”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया— “नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना ।”

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“खुदा ने पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं । जिस आदमी ने इन नमाज़ों को उनके तयशुदा (निश्चित) वक़्त पर अच्छी तह वुजू करके और मन लगाकर अदा किया तो खुदा पर उसका यह हक़ है कि वह उसको बख़्श दे और जिसने इन नमाज़ों में कोताही की तो खुदा पर उसकी माफ़िरत व निजात की कोई ज़िम्मेदारी नहीं, चाहे ता अज़ाब दे और चाहे तो माफ़ कर दे ।”

(मालिक)

4. नमाज़ हमेशा जमाअत से पढ़िए । अगर कभी जमाअत न मिले तब भी फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद ही में पढ़ने की कोशिश कीजिए, अलबत्ता सुन्नतें घर पर पढ़ना भी अच्छा है ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी चालीस दिन तक तकबीर उला (नमाज़ की पहली तकबीर) के साथ नमाज़ बाजमाअत पढ़े, वह दोज़ख और निफ़ाक़ दोनों से बचा लिया जाता है।” (तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“अगर लोगों को नमाज़ बाजमाअत का अज़्र व सवाब मालूम हो जाए तो वे हज़ार मजबूरियों के बावजूद भी जमाअत के लिए दौड़-दौड़कर आएँ— जमाअत की पहली सफ़्र ऐसी है जैसे फ़रिश्तों की। अकेले नमाज़ पढ़ने से दो आदमियों की जमाअत बेहतर है, फिर जितने आदमी ज़्यादा हों उतनी ही यह जमाअत खुदा को ज़्यादा प्रिय होती है।” (अबू दाऊद)

5. नमाज़ सुकून के साथ पढ़िए और रुकू व सुजूद (सज्दे) इतमीनान के साथ अदा कीजिए। रुकू से उठने के बाद इतमीनान के साथ सीधे खड़े हो जाइए। फिर सज्दे में जाइए। इसी तरह दोनों सज्दों के दरमियान भी मुनासिब वक़्त दीजिए और दोनों सज्दों के बीच यह दुआ भी पढ़ लिया कीजिए—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَعَافِنِيْ وَارْزُقْنِيْ. (ابو داؤد)

अल्लाहुम्माफ़िर ली वरहम्नी वह्दिनी वज्बुरनी व आफ़िनी वर्जुक्नी।

(अबू दाऊद)

“ऐ खुदा ! तू मेरी माफ़िगत फ़रमा, मुझपर रहम कर, मुझे सीधी राह पर चला, मेरी पस्तहाली दूर फ़रमा, मुझे सलामती दे और मुझे रोज़ी दे।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी नमाज़ को अच्छी तरह अदा करता है, नमाज़ उसको दुआएँ देती है कि खुदा उसी तरह तेरी भी हिफ़ाज़त करे, जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की।”

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“सबसे बुरी चोरी नमाज़ की चोरी है।” लोगों ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! नमाज़ में कोई चोरी कैसे करता है ?” फ़रमाया, “रुकू और सज्दे अधूरे-अधूरे करके।”

6. अज़ान की आवाज़ सुनते ही नमाज़ की तैयारी शुरू कर दीजिए और वुज़ू करके पहले से मस्जिद में पहुँच जाइए और खामोशी के साथ सफ़ में बैठकर जमाअत

का इन्तिज़ार कीजिए । अज्ञान सुनने के बाद सुस्ती और देर करना और कसमसाते हुए नमाज़ के लिए जाना मुनाफ़िक्कों की निशानी है ।

7. अज्ञान भी ज़ौक व शौक से पढ़ा कीजिए । नबी (सल्ल०) से एक आदमी ने पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे कोई ऐसा काम बता दीजिए जो मुझे जन्नत में ले जाए ।”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“नमाज़ के लिए अज्ञान दिया करो ।”

आपने यह भी फ़रमाया—“मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहाँ तक पहुँचती है और जो उसकी अज्ञान सुनता है, वह क्रियामत में मुअज़्ज़िन के हक़ में गवाही देगा । जो आदमी जंगल में अपनी बकरियाँ चराता हो और अज्ञान का वक़्त आने पर ऊँची आवाज़ से अज्ञान कहे तो जहाँ तक उसकी आवाज़ जाएगी, क्रियामत के दिन वे सारी चीज़ें उसके हक़ में गवाही देंगी ।”

(बुखारी)

8. अगर आप इमाम हैं तो इमाम के आदाब और शर्तों का एहतिमाम करते हुए नमाज़ पढ़ाइए और मुक्तदियों की आसानी को ध्यान में रखकर अच्छी तरह इमामत कीजिए । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो इमाम अपने मुक्तदियों को अच्छी तरह नमाज़ पढ़ाते हैं और यह समझकर पढ़ाते हैं कि हम अपने मुक्तदियों की नमाज़ की ज़मानत लेते हैं, उनको अपने मुक्तदियों की नमाज़ का भी सवाब मिलता है । जितना सवाब मुक्तदियों को मिलता है उतना ही इमाम को भी मिलता है और मुक्तदियों के अज़्र व सवाब में कोई कमी नहीं की जाती ।”

(तबरानी)

9. नमाज़ उसी तरह दिल लगाकर पढ़िए कि दिल पर खुदा की बड़ाई और जलाल का रौब छा जाए और आप खौफ़ और सुकून से घिरे हुए हों । नमाज़ में बेवजह हाथ-पैर हिलाना, बदन खुजाना, दाढ़ी में खिलाल करना, नाक में उँगली देना, कपड़े संभालना बड़ी बेअदबी की हरकतें हैं । इनसे सज़्ज़ी के साथ परहेज़ करना चाहिए ।

10. नमाज़ के ज़रिए खुदा से करीब होने की कोशिश कीजिए । नमाज़ इस तरह पढ़िए कि जैसे आप खुदा को देख रहे हैं या कम से कम यह एहसास रखिए कि खुदा आपको देख रहा है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“बन्दा अपने रब से सबसे ज्यादा करीब उस वक़्त होता है जब वह उसके हुज़ूर सज्दा करता है। इसलिए जब तुम सज्दा करो तो सज्दे में खूब दुआ किया करो।” (मुस्लिम)

11. नमाज़ ज़ौक व शौक के साथ पढ़िए। मारे-बाँधे व दिखावे की रस्मी नमाज़ हक़ीक़त में नमाज़ नहीं है। एक वक़्त की नमाज़ के पढ़ने के बाद दूसरी नमाज़ का बेचैनी और शौक से इन्तिज़ार कीजिए।

एक दिन मग़रिब की नमाज़ के बाद कुछ लोग इशा की नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहे थे। नबी (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और आप इतने तेज़-तेज़ चलकर आए कि आपकी साँस चढ़ गई थी। आप ने फ़रमाया—

“लोगो ! खुश हो जाओ। तुम्हारे पालनहार ने आसमान का एक दरवाज़ा खोलकर तुम्हें फ़रिश्तों के सामने किया और फ़ख़ करते हुए फ़रमाया : देखो ! मेरे बन्दे एक नमाज़ अदाकर चुके और दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं।” (इब्ने माज़ा)

12. ग़ाफ़िल और लापरवाहों की तरह जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़कर सिर से बोझ न उतारिए, बल्कि दिल की गहराई के साथ खुदा को याद कीजिए और दिल, दिमाग़, एहसास, ज़ब्बा और खयाल हर चीज़ से पूरी तरह खुदा की तरफ़ रूजू होकर पूरी यकसूई और ध्यान के साथ नमाज़ पढ़िए। नमाज़, वही नमाज़ है जिसमें खुदा की याद हो, मुनाफ़िक़ों की नमाज़ खुदा की याद से ख़ाली होती है।

13. नमाज़ के बाहर भी नमाज़ का हक़ अदा कीजिए और पूरी ज़िन्दगी को नमाज़ का आइना बनाइए। कुरआन में है—

“नमाज़ बेहयाई और नाफ़रमानी से रोकती है।”

नबी (सल्ल०) ने एक बहुत ज़्यादा असरदार मिसाल में इस तरह उसको पेश फ़रमाया—आपने एक सूखी टहनी को ज़ोर-ज़ोर से हिलाया। टहनी में लगे हुए पत्ते हिलाने से झड़ गए, फिर आपने फ़रमाया—

“नमाज़ पढ़नेवालों के गुनाह इसी तरह झड़ जाते हैं जिस तरह इस सूखी टहनी के पत्ते झड़ गए।”

इसके बाद नबी (सल्ल०) ने कुरआन की यह आयत पढ़ी—

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا مِّنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ  
السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ

व अकिमिस्सला-त त-र-फ-यिन्नहारि व जु-लफ़म-मिनल्लैलि,  
इन्नल-ह-स-नाति युज़्जिब-नस्सय्यिआति, ज़ालि-क ज़िक्का लिज़्ज़ाकिरीन ।

“और नमाज़ कायम करो दिन के दोनों किनारों पर (यानी फ़ज़ और मारिब) और कुछ रात गए पर । बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं । यह नसीहत है नसीहत हासिल करनेवालों के लिए ।”

(कुरआन, 11:114)

14. नमाज़ में ठहर-ठहरकर कुरआन शरीफ़ पढ़िए और नमाज़ के दूसरे ज़िक्र भी ठहर-ठहरकर पूरी तबज्जोह, दिल और दिमाग की हाज़िरी के साथ पढ़िए । समझ-समझकर पढ़ने से शौक में बढ़ोत्तरी होती है और नमाज़ वाकई नमाज़ बन जाती है ।

15. नमाज़ पाबन्दी से पढ़िए, कभी नागा न कीजिए । मोमिनों की बुनियादी खूबी ही यह है कि वे पाबन्दी के साथ बिना नागा नमाज़ पढ़ते हैं ।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ

“मगर नमाज़ी लोग वे हैं जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं ।”

(कुरआन, 70:22-23)

16. फ़र्ज नमाज़ों की पाबन्दी के साथ-साथ नफ़ल नमाज़ों का भी एहतिमाम कीजिए और ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ल नमाज़ पढ़ने की कोशिश कीजिए ।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी फ़र्ज नमाज़ों के अलावा दिन-रात में बारह रक़अतें<sup>1</sup> पढ़ता है, उसके लिए एक घर जन्नत में बना दिया जाता है ।” (मुस्लिम)

17. सुन्नत और नफ़ल कभी-कभी घर में भी पढ़ा कीजिए । नबी (सल्ल०)

का इरशाद है—

“मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बाद कुछ नमाज़ घर में पढ़ा करो । खुदा उस नमाज़ के तुफ़ैल तुम्हारे घरों में भलाई अता फ़रमाएगा ।” (मुस्लिम)

नबी (सल्ल०) खुद भी सुन्नत और नफ़ल अक्सर घर में पढ़ा करते थे ।

18. फ़ज़ की नमाज़ के लिए जब घर से निकलें तो यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّ فِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّ فِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّعَنْ

1. इससे मुराद वे सुन्नतें हैं जो फ़र्ज नमाज़ों के साथ पढ़ी जाती हैं—2 रक़अत फ़ज़ में, 6 रक़अत जुहर में, 2 रक़अत मारिब और 2 रक़अत इशा में ।



يَمِينِي نُورًا وَعَنْ شِمَالِي نُورًا وَمِنْ خَلْفِي نُورًا وَمِنْ أَمَامِي نُورًا  
وَأَجْعَلْ لِي نُورًا وَفِي عَصَبِي نُورًا وَفِي لَحْمِي نُورًا وَفِي دَمِي نُورًا  
وَفِي شَعْرِي نُورًا وَفِي جِلْدِي نُورًا وَفِي لِسَانِي نُورًا وَأَجْعَلْ فِي  
نَفْسِي نُورًا وَأَعْظِمْ لِي نُورًا وَأَجْعَلْنِي نُورًا وَأَجْعَلْ مِنْ فَوْقِي نُورًا  
وَمِنْ تَحْتِي نُورًا اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِي نُورًا. (حسن حسین)

अल्लाहुम-मज-अल फ़ी क़ल्बी नूरव-व फ़ी ब-स-री नूरव-व फ़ी  
सम-ई नूरव-व अन यमीनी नूरव-व अन शिमाली नूरव-व मिन खल्फ़ी  
नूरव-व मिन अमामी नूरव-वज-अल-ली नूरव-व फ़ी अ-स-बी नूरव-व फ़ी  
लहमी नूरव-व फ़ी दमी नूरव-व फ़ी शअरी नूरव-व फ़ी जिल्दी नूरव-व फ़ी  
लिसानी नूरव-वज-अल फ़ी नफ़सी नूरव-व अअ-ज़िमली नूरव-वजअलनी  
नूरव-वजअल मिन फ़ौक़ी नूरव-व मिन तहती नूरन, अल्लाहुम-म अअतिनी  
नूरा । (हिस्ने हसीन)

“ऐ खुदा ! तू पैदा फ़रमा दे मेरे दिल में नूर, मेरी आँखों में नूर, मेरी  
शुनवाई (तवज्जोह) में नूर, मेरे दाँएँ नूर, मेरे बाएँ नूर, मेरे पीछे नूर, मेरे  
आगे नूर और मेरे लिए नूर ही नूर कर दे । मेरे पुट्टों में नूर कर दे और  
मेरे गोश्त में नूर, मेरे खून में नूर और, मेरे बाल में नूर पैदा फ़रमा दे  
और मेरी खाल में नूर और मेरी ज़बान में नूर और मेरे नफ़स में नूर पैदा  
कर दे और मुझे अज़ीम (महान) नूर दे और मुझे सिर से पैर तक नूर  
बना दे और पैदा कर मेरे ऊपर नूर, मेरे नीचे नूर, ऐ खुदा ! मुझे नूर  
अता कर ।”

19. फ़ज़्र और मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर किसी से बातें करने से पहले  
ही सात बार यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِي مِنَ النَّارِ.

अल्लाहुम-म अजिरनी मिननार ।

“ऐ अल्लाह ! मुझे जहन्नम की आग से पनाह दे ।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“फ़ज़्र और मग़रिब की नमाज़ के बाद किसी से बात करने से पहले

सात बार यह दुआ पढ़ लिया करो, अगर उस दिन या उस रात में मर जाओगे तो तुम जहन्नम से जरूर निजात पाओगे ।” (मिशकात)

20. हर नमाज़ के बाद तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह (मैं अल्लाह से बख़्शिश चाहता हूँ) कहिए और फिर यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ. (مسلم)

अल्लाहुम-म अन्तस्सलामु व मिनकस्सलामु तबारक-त या ज़ल-जलालि वल इकराम । (मुस्लिम)

“ऐ खुदा ! तू सरासर सलामती है, सलामती का सोता तेरी ही ओर से है, तू खैर व बरकतवाला है, ऐ बुजुर्गीवाले और करमवाले !”

हज़रत सौबान (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) जब नमाज़ से सलाम फेर लेते तो तीन बार ‘अस्तग़फ़िरुल्लाह’ कहते और फिर इस दुआ को पढ़ते । (मुस्लिम)

21. जमाअत की नमाज़ में सफ़ों के ठीक रखने का पूरा-पूरा ध्यान दीजिए । सफ़ें अच्छी तरह सीधी रखिए और खड़े होने में इस तरह कंधे से कंधा मिलाइए कि बीच में खाली जगह न रहे और जब तक आगे की सफ़ें न भर जाएँ, पीछे दूसरी सफ़ें न बनाइए । एक बार जमाअत की नमाज़ में एक आदमी इस तरह खड़ा हुआ था कि उसका सीना बाहर निकला हुआ था । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने देखा तो तंबीह फ़रमाई—

“खुदा के बन्दो ! अपनी सफ़ों को सीधी और ठीक रखने का जरूर एहतिमाम करो, वरना खुदा तुम्हारे रुख एक दूसरे के खिलाफ़ कर देगा ।” (मुस्लिम)

एक मौक़े पर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी नमाज़ की किसी सफ़ को जोड़ेगा, उसे खुदा जोड़ेगा और जो किसी सफ़ को काटेगा, खुदा उसे काटेगा ।” (अबू दाऊद)

22. बच्चों की सफ़ मर्दों के पीछे बनाइए और बड़ों के साथ खड़ा न कीजिए, अलबत्ता ईदगाहों में या जहाँ अलग करने में परेशानियाँ हों या बच्चों के गुम होने का डर हो तो वहाँ बच्चों को पीछे भेजने की जरूरत नहीं, अपने साथ रखिए और औरतों की सफ़ें या तो सबसे पीछे हों या अलग हों, अगर मस्जिद में उनके लिए अलग जगह बनी हुई हो । इसी तरह ईदगाह में औरतों के लिए अलग जगह का इन्तिज़ाम कीजिए ।

### 13. कुरआन की तिलावत के आदाब

1. कुरआन मजीद की तिलावत जौक व शौक के साथ दिल लगाकर कीजिए और यकीन रखिए कि कुरआन मजीद से लगाव खुदा से लगाव है। नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“मेरी उम्मत के लिए सबसे बेहतर इबादत कुरआन की तिलावत है।”

2. ज्यादा से ज्यादा वक्त तिलावत में लगे रहिए और कभी तिलावत से न उकताइए। नबी (सल्ल०) ने फरमाया कि खुदा का इश्राद है—

“जो बन्दा कुरआन की तिलावत में इतना लगा हुआ हो कि वह मुझसे दुआ माँगने का मौक़ा न पा सके तो मैं उसको बग़ैर माँगे ही माँगनेवालों से ज्यादा दूँगा।” (तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“बन्दा कुरआन की तिलावत के जरिए ही खुदा के सबसे ज्यादा करीब हो पाता है।” (तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) ने कुरआन की तिलावत पर उभारते हुए यह भी फरमाया—

“जिस आदमी ने कुरआन पढ़ा और वह हर दिन उसकी तिलावत करता रहता है, उसकी मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क (कस्तूरी) से भरी हुई ज़ंबील (थैली) कि उसकी खुश्बू हर ओर महक रही है। और जिस आदमी ने कुरआन पढ़ा लेकिन वह उसकी तिलावत नहीं करता तो उसकी मिसाल ऐसी है जैसे मुश्क से भरी हुई बोतल कि उसको डाट लगाकर बन्द कर दिया गया हो।” (तिरमिज़ी)

3. कुरआन पाक की तिलावत सिर्फ़ हिदायत तलब करने के लिए कीजिए। लोगों को अपना गिर्वीदा बनाने, अपने राग का सिक्का जमाने और उनमें अपनी दीनदारी की धाक बिठाने से सख्ती के साथ परहेज़ कीजिए। ये बड़े घटिया मक़सद हैं और इन मक़सदों से कुरआन की तिलावत करनेवाला कुरआन की हिदायत से महरूम रहता है।

4. तिलावत से पहले पाकी और सफ़ाई पर पूरा ध्यान दीजिए। बग़ैर वुजू कुरआन मजीद छूने से परहेज़ कीजिए और पाक-साफ़ जगह पर बैठकर तिलावत कीजिए।

5. तिलावत के वक्त किबला रख दो ज़ानू होकर बैठिए और गरदन झुकाकर बड़ी तवज्जोह, यकसूई, दिल की आमादगी और सलीके से तिलावत कीजिए।

खुदा का इरशाद है—

كِتَابُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرُوا أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

“किताब जो हमने आपकी तरफ़ भेजी बरकतवाली है, ताकि वे उसमें सोच-विचार करें और अक़लवाले उससे नसीहत हासिल करें।”

(कुरआन, 38:29)

6. तज्वीद (उच्चारण) और तरतील (ठहर-ठहरकर पढ़ने) का भी जहाँ तक हो सके, खयाल रखिए। हर्फ़ (अक्षर) को ठीक-ठीक अदा कीजिए और ठहर-ठहरकर पढ़िए। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“अपनी आवाज़ और अपने स्वर से कुरआन को सजाओ।” (अबू दाऊद)

नबी (सल्ल०) एक-एक हर्फ़ (अक्षर) खोलकर और एक-एक आयत को अलग-अलग करके पढ़ा करते थे। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“कुरआन पढ़नेवाले से क्रियामत के दिन कहा जाएगा कि जिस ठहराव और अच्छी आवाज़ के साथ तुम दुनिया में बना-सँवारकर कुरआन पढ़ा करते थे, उसी तरह कुरआन पढ़ो और हर आयत के बदले में एक दर्जा बुलन्द होते जाओ। तुम्हारा ठिकाना तुम्हारी तिलावत की आखिरी आयत के करीब है।”

(तिरमिज़ी)

7. कुरआन न ज़्यादा ज़ोर से पढ़िए और न बिल्कुल ही धीमे, बल्कि बीच की आवाज़ में पढ़िए। खुदा की हिदायत है—

وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتُ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

“और अपनी नमाज़ें न तो ज़्यादा ज़ोर से पढ़िए और न बिल्कुल ही धीरे-धीरे, बल्कि दोनों के दरमियान का तरीका अपनाइए।”

(कुरआन, 17:110)

8. यूँ तो जब भी मौका मिले तिलावत कीजिए, लेकिन भोर में, तहज्जुद की नमाज़ में भी कुरआन पढ़ने की कोशिश कीजिए। यह कुरआन की तिलावत की बड़ाई का सबसे ऊँचा दर्जा है और हर मोमिन की यह तमन्ना होनी चाहिए कि वह तिलावत का ऊँचे से ऊँचा दर्जा हासिल करे।

9. तीन दिन से कम में कुरआन शरीफ़ ख़त्म करने की कोशिश न कीजिए। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जिसने तीन दिन से कम में कुरआन पढ़ा, उसने क़तई तौर पर कुरआन को नहीं समझा ।”

10. कुरआन की बड़ाई और हैसियत का एहसास रखिए और जिस तरह ज़ाहिरी पाकी और सफ़ाई का खयाल रखा है उसी तरह दिल को भी गन्दे खयालों, बुरे जज़्बों और नापाक इरादों से पाक कीजिए । जो दिल गन्दे और नापाक खयालों और जज़्बों से सने हैं, उनमें न कुरआन पाक की बड़ाई और ऊँची हैसियत बैठ सकती है और न वे कुरआन की बातों और सच्चाइयों को समझ सकते हैं । हज़रत इक्रिमा (रज़ि०) जब कुरआन शरीफ़ खोलते तो ज़्यादातर बेहोश हो जाते और फ़रमाते, “यह मेरे जलाल और बड़ाईवाले परवरदिगार का कलाम है ।”

11. यह समझकर तिलावत कीजिए कि धरती पर इनसान को अगर हिदायत मिल सकती है, तो सिर्फ़ इसी किताब से और इसी खयाल को लिए हुए इसकी गहराई में उतरकर सोचिए और इसकी सच्चाइयों को समझने की कोशिश कीजिए । फ़र-फ़र तिलावत न कीजिए, बल्कि समझ-समझकर पढ़ने की आदत डालिए और उसमें गौर व फ़िक्र करने की कोशिश कीजिए ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) फ़रमाया करते थे कि मैं अल-कारिअह और अल-क़द्र जैसी छोटी-छोटी सूरतों को सोच-समझकर पढ़ना इससे ज़्यादा बेहतर समझता हूँ कि अल-बक़रह और आले इमरान जैसे बड़ी-बड़ी सूरतें फ़र-फ़र पढ़ जाऊँ और कुछ न समझूँ ।

नबी (सल्ल०) एक बार सारी रात एक ही आयत को दोहराते रहे—

إِنْ تُعَذِّبُهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرَ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

इन तु-अज़्ज़िब-हुम फ़-इन्नहुम इबादु-क, व इन तग़िफ़र लहुम फ़-इन्न-क  
अन्तल अज़ीज़ुल हकीम । (कुरआन, 5:118)

“ऐ खुदा ! अगर तू इनको अज़ाब दे, तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर तू इनको बख़्श दे, तो तू इतिहाई ज़बरदस्त हिक्मतवाला है ।”

12. इस इरादे के साथ तिलावत कीजिए कि मुझे उसके हुक्मों के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी बदलनी है और उसकी हिदायतों की रौशनी में अपनी ज़िन्दगी बनानी है । और फिर जो हिदायतें मिलें, उसके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी को ढालने और कोताहियों से ज़िन्दगी को पाक करने की लगातार कोशिश कीजिए । कुरआन आइने की तरह आपका हर-हर दागा और हर-हर धब्बा आपके सामने साफ़-साफ़ रख देगा । अब यह आपका काम है कि आप इन दागा-धब्बों से अपनी ज़िन्दगी को

साफ़ करें ।

13. तिलावत के दौरान कुरआन की आयतों से असर लेने की भी कोशिश कीजिए । जब रहमत, माफ़िरत और जन्नत की न खत्म होनेवाली नेमतों का जिक्र पढ़ें तो खुशी से झूम उठिए और जब खुदा के ग़ज़ब, गुस्से और जहन्नम के अज़ाब की तबाहियों को पढ़ें तो बदन काँपने लगे, आँखें बेइखतियार बह पड़ें और दिल तौबा और शर्मिंदगी की हालत में होने की वजह से रोने लगे । जब नेक ईमानवालों की कामयाबियों का हाल पढ़ें तो चेहरा दमकने लगे और जब कौमों की तबाही का हाल पढ़ें तो ग़म से निढाल नज़र आएँ । धमकी और डरावे की आयत पढ़कर काँप उठें और खुशखबरी की आयतें पढ़कर रूह शुक्र के जज़्बों से भर उठे ।

14. तिलावत के बाद दुआ फ़रमाइए । हज़रत उमर (रज़ि०) की एक दुआ के अलफ़ाज़ ये हैं—

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي التَّفَكُّرَ وَالتَّدَبُّرَ بِمَا يَتَلَوُهُ لِسَانِي مِنْ كِتَابِكَ وَالْفَهْمَ لَهُ  
وَالْمَعْرِفَةَ بِمَعَانِيهِ وَالنَّظَرَ فِيْ عَجَائِبِهِ وَالْعَمَلَ بِذَلِكَ مَا بَقِيْتُ، اِنَّكَ  
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

अल्लाहुम्मर्जुक्नित त-फक्कु-र वत्तदब्बु-र बिमा यत्लूहु लिसानी मिन  
किताबि-क वल-फ़ह-म लहू वल मअरि-फ़-त बि-मआ-नीहि वन-नज़-र  
फ़ी अज़ाइबिहि वल अ-म-ल- बिज़ालि-क मा बक़ीतु, इन्न-क अला कुल्लि  
शैइन कदीर ।

“ऐ अल्लाह ! मेरी ज़बान तेरी किताब में से जो कुछ तिलावत करे,  
मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं सोच-विचार करूँ । ऐ अल्लाह ! मुझे इनकी समझ  
दे, इसका मतलब और मानी समझने की मारफ़त बख़्श और इसकी अजीब  
व अनोखी चीज़ें पाने की नज़र अता कर और जब तक ज़िन्दा रहूँ, मुझे  
तौफ़ीक़ दे कि मैं उसपर अमल करता रहूँ । बेशक, तू हर चीज़ पर कुदरत  
रखता है ।”

## 14. जुमा के दिन के आदाब

1. जुमा के दिन सफ़ाई-सुथराई, नहाने-धोने और सजने-सँवरने का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जब कोई जुमा की नमाज़ पढ़ने आए तो उसे गुस्ल करके आना चाहिए ।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“हर मुसलमान पर खुदा का यह हक़ है कि वह हर हफ़्ते (जुमा) को गुस्ल करे, सिर और बदन को धोए ।”

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जुमा के दिन हर बालिग और जवान के लिए गुस्ल करना ज़रूरी है और मिस्वाक करना और खुशबू लगाना भी अगर मयस्सर हो ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत सलमान (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“जो आदमी जुमा के दिन नहाया, धोया और अपनी ताक़त भर उसने पाकी व सफ़ाई का पूरा-पूरा एहतिमाम किया, फिर उसने तेल लगाया, खुशबू मली, फिर दोपहर ढले मस्जिद में जा पहुँचा और (मस्जिद में जाकर सफ़ में बैठा) दो आदमियों को एक-दूसरे से नहीं हटाया, फिर उसने नमाज़ पढ़ी जो उसके लिए मुक़र्रर थी, फिर जब इमाम मिम्बर की तरफ़ निकला वह चुपचाप बैठे ख़ुतबा सुनता रहा तो उस आदमी के वे सारे गुनाह बर्हश दिए गए जो एक जुमा से दूसरे जुमा तक उससे हुए थे ।”  
(बुखारी)

2. जुमा के दिन ज़्यादा से ज़्यादा ज़िक्र व तसबीह, कुरआन की तिलावत और दुआ, सदक्का व ख़ैरात, रोगियों का पूछना, जनाज़े की शिरकत, क़ब्रिस्तान की सैर और दूसरे नेक काम करने का एहतिमाम कीजिए ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“सबसे बेहतर दिन, जिसपर सूरज उगा, वह जुमा का दिन है । इसी दिन आदम पैदा हुए थे और इसी दिन वह जन्मत में दाखिल किए गए और इसी दिन वहाँ से निकाले गए (और खुदा के खलीफ़ा बनाए गए)

और इसी दिन क्रियामत कायम होगी ।”

(मुस्लिम)

हजरत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“पाँच अमल ऐसे हैं कि जो आदमी उनको एक दिन में करेगा, खुदा उसको जन्नतवालों में लिख देगा—

1. बीमार का हाल पूछना,
2. जनाज़े में शरीक होना,
3. रोज़ा रखना,
4. जुमे की नमाज़ पढ़ना, और
5. गुलाम को आज़ाद करना ।”

(इब्ने हिब्बान)

ज़ाहिर है पाँचों अमल का करना उसी वक़्त मुमकिन है जब जुमा का दिन हो ।

हजरत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) ही की एक रिवायत और है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी जुमा के दिन सूरा कहफ़ पढ़ेगा तो उसके लिए दोनों जुमों के दरमियान एक नूर चमकता रहेगा ।”

(नसई)

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी जुमा की रात में सूरा दुखान की तिलावत करे तो उसके लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिफ़ार करते हैं और उसके सारे गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं ।”

(तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

जुमा के दिन में एक ऐसी मुबारक साअत (घड़ी) है कि बन्दा उसमें जो भी माँगता है, वह क़बूल होता है ।”

(बुखारी)

यह साअत कौन-सी है, इसमें उलेमा के बीच मतभेद है, इसलिए कि रिवायतों में अलग-अलग वक़्तों का ज़िक्र है । अलबत्ता उलेमा के दो क़ौल इनमें बहुत सही हैं :

पहला : जिस वक़्त ख़तीब (ख़ुतबा देनेवाला) ख़ुतबे के लिए मिम्बर पर आता है, उस वक़्त से लेकर नमाज़ ख़त्म होने तक का वक़्त है ।

दूसरा : वह घड़ी जुमा के दिन की आखिरी घड़ी है जब सूरज डूबने लगे ।



मुनासिब यह है कि आप दोनों ही वक्त निहायत अदब व आजिजी के साथ दुआ व फरियाद में गुजरें। अपनी दुआओं के साथ यह दुआ माँगिए तो अच्छा है—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلَىٰ عَهْدِكَ  
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذُنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ  
فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ ۝ (بخاری، نسائی)

अल्लाहुम-म अन-त रब्बी ला इला-ह इल्ला अन-त खलक-तनी व अना  
अब्दु-क व अना अला अह-दि-क व वअदि-क मस-त-तअतु अबूउ ल-क  
बिनिअ-मति-क अलय-य व अबूउ बिज्जम्बी फागफिरली क-इन्हा ला  
यागफिररज्जुनु-ब इल्ला अन-त अऊजुबि-क मिन शरि मा स-नअतु ।

(बुखारी, नसई)

“ऐ अल्लाह ! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तूने मुझे पैदा फरमाया । मैं तेरा बन्दा हूँ और अपनी ताकत भर तुझसे किए हुए वादों पर कायम हूँ । मैं तेरी नेमतों और तेरे एहसानों का इक्करा करता हूँ जो तूने मुझपर किए हैं और अपने गुनाहों को मानता हूँ, पर तू मेरी माफ़िरत फरमा, क्योंकि तेरे सिवा कोई नहीं जो गुनाहों का बरख़्शनेवाला हो, और मैं अपने करतूत की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ ।”

3. जुमा की नमाज़ का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए । जुमा की नमाज़ हर बालिग, सेहतमन्द, ठहरे हुए और होशमंद मुसलमान मर्द पर फ़र्ज है । अगर किसी जगह इमाम के अलावा दो आदमी भी हों तो जुमा की नमाज़ ज़रूर पढ़ें । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“लोगों को चाहिए कि जुमा की नमाज़ हरगिज़ न छोड़ें, वरना खुदा उनके दिलों पर मुहर लगा देगा, फिर (हिदायत से महरूम होकर) वे गाफ़िलों में से हो जाएँगे ।” (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“जो आदमी नहा-धोकर जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद में आया फिर उसने सुन्नत अदा की जो उसके लिए खुदा ने तय की थी, फिर खामोश बैठा (ख़ुतबा सुनता) रहा, यहाँ तककि ख़ुतबा पूरा हुआ, फिर इमाम के साथ फ़र्ज अदा किए तो उसके एक जुमा से लेकर दूसरे जुमा

तक के गुनाह माफ हो जाते हैं और तीन दिन के और ज्यादा ।”

हज़रत यज़ीद बिन मरयम (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं जुमे की नमाज़ के लिए जा रहा था कि रास्ते में हज़रत इबाया बिन रिफ़ाआ (रज़ि०) से मुलाकात हो गई । उन्होंने मुझसे पूछा, “कहाँ जा रहे हो ?” मैंने कहा, “जुमा की नमाज़ पढ़ने जा रहा हूँ ।” फ़रमाया, “मुबारक हो, तुम्हारा यह चलना खुदा की राह में चलना है ।”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जिस बन्दे के पाँव खुदा की राह में गर्द में सने, उसपर आग़ हाराम है ।”

4. जुमा की अज़ान सुनते ही मस्जिद की तरफ़ दौड़ पड़िए । कारोबार और दूसरे काम बन्द कर दीजिए और पूरी यकसूई के साथ ख़ुतबा सुनने और नमाज़ अदा करने में लग जाइए । और जुमा से फ़ारिग़ हो जाएँ तो फिर कारोबार में लग जाइए । कुरआन में है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ، ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

(الجمعة- 10)

“मोमिनो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दे दी जाए तो जल्द खुदा के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और खरीदना-बेचना छोड़ दो । अगर तुम्हारी समझ में आ जाए तो तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है । फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में (अपने-अपने कामों के लिए) फैल जाओ और खुदा के फ़ज़ल में से अपना हिस्सा ढूँढ़ लेने में लग जाओ और खुदा को खूब याद करो, ताकि तुम्हें कामयाबी पाओ ।”

(कुरआन, 62:9-10)

इन आयतों से मोमिन को जो हिदायतें मिलती हैं वे इस तरह हैं—

(i) मोमिन को पूरी सोच और और समझ के साथ जुमा की नमाज़ का एहतिमाम करना चाहिए और अज़ान की आवाज़ सुनते ही सब कुछ छोड़कर मस्जिद की

तरफ दौड़ पड़ना चाहिए ।

(ii) जुमा की अज्ञान सुनने के बाद मोमिन के लिए यह जायज़ नहीं कि वह कारोबार करे या किसी और दुनियावी कारोबार में फँसा रहे और खुदा से ग़ाफ़िल दुनियादार बन जाए ।

(iii) मोमिन की भलाई का राज़ यह है कि वह दुनिया में खुदा का बन्दा और गुलाम बनकर रहे और जब भी खुदा की तरफ़ से पुकार आए, तो वह एक वफ़ादार और बात माननेवाले गुलाम की तरह, अपनी सारी दिलचस्पियों से मुँह मोड़कर और दुनिया के तमाम फ़ायदों को ठुकराकर, खुदा की पुकार पर दौड़ पड़े और अपने अमल से यह एलान करे कि तबाही और नाकामी यह नहीं कि दीन के तक्काज़ों पर दुनिया के फ़ायदों को कुरबान कर दे, बल्कि नाकामी और तबाही यह है कि आदमी दुनिया बनाने की धुन में दीन को तबाह कर डाले ।

(iv) दुनिया के बारे में सोचने का यह अन्दाज़ सही नहीं है कि आदमी उसकी तरफ़ से आँखें बन्द कर ले और ऐसा दीनदार बन जाए कि दुनिया के लिए बिल्कुल नाकारा साबित हो, बल्कि कुरआन हिदायत देता है कि नमाज़ से फ़ारिग होते ही खुदा की ज़मीन में फैल जाओ और खुदा ने अपनी ज़मीन में रोज़ी पहुँचाने के लिए जो भी ज़रिए और वसीले जुटा रखे हैं, उनसे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाओ और अपनी काबिलियतों को पूरी तरह खपाकर अपने हिस्से की रोज़ी खोजो । इसलिए कि मोमिन के लिए न यह सही है कि वह अपनी ज़रूरतों के लिए दूसरों का मुहताज रहे और न यह सही है कि वह अपने से मुताल्लिक लोगों की ज़रूरतें पूरी करने में कोताही करे और वे परेशानी और मायूसी के शिकार हों ।

(v) आखिरी अहम हिदायत यह है कि मोमिन दुनिया के धंधों और कामों में इस तरह न फँस जाए कि वह अपने खुदा से ग़ाफ़िल हो जाए । उसे हर हाल में यह याद रखना चाहिए कि उसकी ज़िन्दगी की असल पूँजी और सही जौहर खुदा का ज़िक्र है । हज़रत सईद बिन जुबैर (रज़ि०) फ़रमाते हैं, “खुदा का ज़िक्र सिर्फ़ यह नहीं है कि ज़बान से तसबीह<sup>1</sup> व तहमीद<sup>2</sup> और तकबीर<sup>3</sup> व तहलील<sup>4</sup> के बोल अदा किए जाएँ बल्कि हर वह आदमी अल्लाह के ज़िक्र में लगा हुआ है जो खुदा की इताअत के तहत अपनी ज़िन्दगी का निज़ाम तामीर करने पर लगा हुआ हो ।”

---

1. सुब्कानल्लाह कहना,

2. अल-हम्दु लिल्लाह कहना,

3. अल्लाहु अकबर कहना,

4. ला इला-ह इल्लल्लाह कहना ।

5. जुमा की नमाज़ के लिए जल्द से जल्द मस्जिद-में पहुँचने की कोशिश कीजिए और शुरू वक़्त में जाकर पहली सफ़ में जगह हासिल करने का एहतिमाम कीजिए ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी जुमा के दिन बड़े एहतिमाम के साथ इस तरह नहाया जैसे पाकी हासिल करने के लिए नहाते हैं (यानी एहतिमाम के साथ पूरे जिस्म पर पानी पहुँचाकर ख़ूब अच्छी तरह बदन को साफ़ किया), फिर शुरू वक़्त में मस्जिद जा पहुँचा तो गोया कि उसने एक ऊँट की कुरबानी की और उसके बाद दूसरी साअत में पहुँचा तो गोया गाय (या भैंस) की कुरबानी की और उसके बाद तीसरी साअत में पहुँचा तो गोया उसने सींगवाला मेंढा (दुंबा) कुरबान किया और उसके बाद चौथी साअत में पहुँचा तो गोया उसने खुदा की राह में एक अंडा सदका दिया । फिर जब ख़तीब ख़ुतबा देने निकल आया तो फ़रिश्ते मस्जिद का दरवाज़ा छोड़कर ख़ुतबा सुनने और नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद में आ बैठते हैं ।

(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत इरबाज़ बिन सारिया (रज़ि०) बयान करते हैं—

“नबी (सल्ल०) पहली सफ़वालों के लिए तीन बार इसतिग़फ़ार फ़रमाते थे और दूसरी सफ़वालों के लिए एक बार ।” (इब्ने माजा, नसई)

और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं—

“लोगों को पहली सफ़ का अज़्र व सवाब मालूम नहीं है । अगर पहली सफ़वालों का अज़्र व सवाब मालूम हो जाए तो लोग पहली सफ़ के लिए कुरआ (पर्ची) डालने लगे ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

6. जुमा की नमाज़ जामा-मस्जिद में पढ़िए और जहाँ जगह मिल जाए वहीं बैठ जाइए । लोगों के सिरों और कंधों पर से फाँद-फाँदकर जाने की कोशिश न कीजिए, इससे लोगों को जिस्मानी तकलीफ़ भी होती है और दिली कोफ़्त (तकलीफ़) भी, और उनके सुकून, यकसूई और तवज्जोह में भी ख़लल पड़ता है ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) बयान फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी पहली सफ़ को छोड़कर दूसरी सफ़ में इसलिए खड़ा हो कि उसके भाई (मुसलमान) को कोई तकलीफ़ न पहुँचे, तो अल्लाह तआला उसको पहली सफ़वालों से दो गुना अज़्र व सवाब अता फ़रमाएगा ।”

(तबरानी)

हज़रत सलमान (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“जो आदमी जुमा के दिन नहाया-धोया और अपने बस-भर उसने पाकी-सफ़ाई का भी एहतिमाम किया, फिर तेल लगाया, खुशबू लगाई और दोपहर ढलते ही मस्जिद में जा पहुँचा और दो आदमियों को एक-दूसरे से नहीं हटाया यानी उसने उनके सिरों और कंधों पर से फ़ाँदने, सफ़ों को चीरकर गुज़रने या दो बैठे हुए नमाज़ियों के बीच में जा बैठने की ग़लती नहीं की, बल्कि जहाँ जगह मिली, वहीं ख़ामोशी से सुन्नत नमाज़ वग़ैरह अदा की, जो भी ख़ुदा ने उसके हिस्से में लिख दी थी, फिर जब ख़तीब मिम्बर पर आए तो ख़ामोश (बैठा ख़ुतबा सुनता) रहा हो तो ऐसे आदमी के वे सारे गुनाह बर्रखा दिए गए जो एक जुमा से लेकर दूसरे जुमा तक उससे हुए ।” (बुख़ारी)

7. ख़ुतबा नमाज़ के मुकाबले में हमेशा छोटा पढ़िए, इसलिए कि ख़ुतबा असल में सिर्फ़ याद देहानी है जिसमें आप लोगों को ख़ुदा की बन्दगी और इबादत पर उभारते हैं । और नमाज़ न सिर्फ़ इबादत है, बल्कि सबसे अहम इबादत है, इसलिए यह किसी तरह सही नहीं कि ख़ुतबा तो लम्बा-चौड़ा दिया जाए और नमाज़ जल्दी-जल्दी छोटी-सी पढ़ ली जाए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“नमाज़ को लम्बा करना और ख़ुतबे को छोटा करना इस बात की निशानी है कि ख़ुतबा देनेवाला सूझ-बूझ रखता है । अतः तुम नमाज़ लम्बी पढ़ो और ख़ुतबा छोटा दो । (मुस्लिम)

8. ख़ुतबा निहायत ख़ामोशी, तबज्जोह, यकसूई, आपादगी और क़बूल किए जाने के ज़ब्बे के साथ सुनिए और ख़ुदा और रसूल के जो हुक्म मालूम हों, उनपर सच्चे दिल से अमल करने का इरादा कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जिस आदमी ने गुस्ल किया, फिर जुमा की नमाज़ पढ़ने आया और आकर अपने मुक़द्दर की नमाज़ पढ़ी, फिर ख़ामोश (बैठकर निहायत तबज्जोह और यकसूई के साथ) ख़ुतबा सुनता रहा यहाँ तक कि ख़ुतबा देनेवाला ख़ुतबे से फ़ारिग़ हुआ, फिर उसने इमाम के साथ फ़र्ज़ नमाज़ अदा की, तो उसके वे सारे गुनाह बर्रखा दिए गए जो उससे एक जुमा से दूसरे जुमा तक हुए, बल्कि तीन दिन के ज़्यादा गुनाह भी बर्रखा दिए गए ।” (मुस्लिम)

एक दूसरी रिवायत यह है कि जब ख़ुतबा देनेवाला ख़ुतबा देने के लिए निकल आए, तो फिर न कोई नमाज़ पढ़ना सही है और न बात करना सही है ।

9. दूसरा ख़ुतबा अरबी में पढ़िए, अलबत्ता पहले ख़ुतबे में मुक़तदियों को कुछ

खुदा व रसूल के हुक्म, ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ नसीहत व हिदायत और याददेहानी का एहतिमाम अपनी भाषा में भी कीजिए । नबी (सल्ल०) ने जुमा में जो खुतबे दिए हैं उनसे यही मालूम होता है कि खुतबा देनेवाला हालात के मुताबिक़ मुसलमानों को कुछ नसीहत व हिदायत दे और यह मक़सद उसी वक़्त पूरा हो सकता है जब खुतबा देनेवाला सुननेवालों की भाषा में उनसे बात करे ।

10. जुमा के फ़र्जों में सूरा अल-आला और सूरा गाशियह पढ़ना या सूरा मुनाफ़िक़ून और सूरा जुमुआ पढ़ना बेहतर और मस्नून है । नबी (सल्ल०) अकसर यही सूरतें जुमा में पढ़ा करते थे ।

11. जुमा के दिन ज़्यादा से ज़्यादा नबी (सल्ल०) पर दरूद व सलाम भेजने का खुसूसी एहतिमाम कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जुमा के दिन मुझपर ज़्यादा से ज़्यादा दरूद भेजा करो । उस दिन दरूद में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और यह दरूद मेरे हुज़ूर में पेश किया जाता है ।” (इब्ने माज़ा)

## 15. जनाजे की नमाज़ के आदाब

1. जनाजे की नमाज़ में शिरकत का एहतिमाम कीजिए । जनाजे की नमाज़ मुर्दे के लिए माफ़िरत की दुआ है और यह मैयत का एक अहम हक़ है । अगर डर हो कि वुजू करते-करते जनाजे की नमाज़ ख़त्म हो जाएगी तो तयम्मुम करके खड़े हो जाइए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जनाजे की नमाज़ पढ़ा करो, शायद कि इस नमाज़ से तुमपर ग़म छा जाए । ग़मगीन आदमी खुदा के साए में रहता है और ग़मगीन आदमी हर नेक आदमी का स्वागत करता है ।” (हाकिम)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जिस मैयत पर मुसलमानों की तीन सफ़ें जनाजे की नमाज़ पढ़ती हैं, उसके लिए ज़न्त वाजिब हो जाती है ।” (अबू दाऊद)

2. जनाजे की नमाज़ के लिए मैयत की चारपाई इस तरह रखिए कि सिर उत्तर की ओर हो और पाँव दक्षिण की ओर और मैयत का रुख़ क़िबले की ओर रखिए ।

3. अगर आप जनाजे की नमाज़ पढ़ा रहे हों तो इस तरह खड़े हों कि आप मैयत के सीने के मुक़ाबले में रहें ।

4. जनाजे की नमाज़ में सफ़ों की तादाद हमेशा ताक़ (Odd Numbers) रखिए । अगर थोड़े लोग हों तो एक सफ़ बनाइए, वरना तीन, पाँच, सात या लोग ज़्यादा हो जाएँ तो ज़्यादा सफ़ें बनाते जाइए, लेकिन तादाद ताक़ रहे ।<sup>1</sup>

5. जनाजे की नमाज़ शुरू करें तो यह नीयत कीजिए कि हम इस मैयत के वास्ते सबसे रहम करनेवाले खुदा से माफ़िरत चाहने के लिए इसकी जनाजे की नमाज़ पढ़ते हैं । इमाम भी यही नीयत करे और मुक़तदी भी यही नीयत करें ।

6. जनाजे की नमाज़ में जो इमाम पढ़े, वही मुक़तदी भी पढ़ें । मुक़तदी ख़ामोश न रहें, अलबत्ता इमाम तकबीरों ऊँची आवाज़ से कहे और मुक़तदी धीरे-धीरे कहें ।

7. जनाजे की नमाज़ में चार तकबीरें पढ़िए । पहली तकबीर कहते हुए हाथ कानों तक ले जाइए और फिर हाथ बाँध लीजिए और सना पढ़िए :

---

1. इमाम के अलावा अगर छः आदमी हों तब भी मुस्तहब यह है कि तीन सफ़ें बनाई जाएँ । पहली सफ़ में तीन लोग रहें, दूसरी में दो और तीसरी में एक ।

سُبْحَنكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ  
وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ.

सुब्हा-न-क अल्लाहुम-म व बिहम्दि-क व तबा-र-कस्सु-क व तआला  
जदुद-क व जल-ल सनाउ-क व ला इला-ह गैरु-क ।

“ऐ अल्लाह ! तू पाक है और बरतर, अपनी हम्द व सना के साथ  
तेरा नाम खैर व बरकतवाला है और तेरी बुजुर्गी और बड़ाई बहुत बुलन्द  
है और तेरी तारीफ़ बड़ी अजमतवाली है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं ।”

अब दूसरी तकबीर पढ़िए, लेकिन तकबीर में न हाथ उठाइए और न सिर से  
कोई इशारा कीजिए । दूसरी तकबीर के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़िए—

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ  
وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ  
وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ  
حَمِيدٌ مَّجِيدٌ.

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा  
सल्लै-त अला इबराहीम-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम मजीद ।  
अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त  
अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम मजीद ।

“ऐ खुदा ! तू मुहम्मद पर रहमत फ़रमा और उनकी आल पर रहमत  
फ़रमा, जैसे तूने रहमत फ़रमाई इबराहीम पर और इबराहीम की आल पर ।  
बेशक तू बड़ी खूबियोंवाला और बुजुर्गीवाला है । ऐ खुदा ! तू बरकत  
नाज़िल फ़रमा मुहम्मद पर और उनकी आल पर, जिस तरह तूने बरकत  
नाज़िल फ़रमाई इबराहीम पर और उनकी आल पर । बेशक तू बड़ी  
खूबियोंवाला और बुजुर्गीवाला है ।”

अब बग़ैर हाथ उठाए तीसरी तकबीर कहिए और मैयत के लिए मसनून दुआ  
पढ़िए । फिर चौथी बार तकबीर कहिए और दोनों तरफ़ सलाम फेर दीजिए ।



8. अगर मैयत बालिग मर्द या बालिग औरत की है तो तीसरी तकबीर के बाद यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا وَذَكَرِنَا  
وَأُنْشَأَ، اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاحْيِهِ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ  
عَلَى الْاِيْمَانِ.

अल्लाहुम्मगफिर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व गाइबिना व सगीरिना व कबीरिना व ज-करिना व उनसाना, अल्लाहुम-म मन अह्यै-तहू मिन्ना फ अह्यिही अलल इस्लामि व मन त-वफ्रैतहू मिन्ना फ-त-वफ्रहू अलल-ईमान ।

“ऐ खुदा ! हमारे ज़िन्दों, हमारे मुर्दों, हमारे हाज़िरों, हमारे गाइबों, हमारे छोटों, हमारे बड़ों, हमारे मर्दों, हमारी औरतों की तू माफ़िरत फ़रमा दे । ऐ खुदा ! हममें से जिसको तू ज़िन्दा रखे, तू उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख और जिसको तू मौत दे, तू उसको ईमान के साथ मौत दे ।”

और अगर मैयत नाबालिग लड़के की हो तो यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا قَرِطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا  
وَمُشَفَّعًا.

अल्लाहुम्मज-अलहु लना फ-र-तैव वज-अलहु लना अज-रैव व जुख-रैव वज अलहु लना शाफ़िअैव-व मुशफ़फ़आ ।

“ऐ अल्लाह ! तू इस लड़के को हमारे लिए माफ़िरत का ज़रिया बना और इसको हमारे लिए अज़ और आखिरत का ज़खीरा बना और ऐसा सिफ़ारिशी बना, जिसकी सिफ़ारिश क़बूल कर ली जाए ।”

और अगर मैयत नाबालिग लड़की की है तो यह दुआ पढ़िए । इस दुआ का मतलब भी वही है जो लड़के के लिए पढ़ी जानेवाली दुआ का है ।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا قَرِطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً.

अल्लाहुम्मज अलहा लना फ़-र-तैव वज-अलहा लना अजरवै व  
जुखरवै-वज अलहा लना शाफ़ि-अ-तवै व मुशफ़-फ़-अह ।

9. जनाजे के लिए जाते हुए अपने अंजाम को सोचते रहिए और यह गौर कीजिए कि जिस तरह आप दूसरे को ज़मीन के हवाले करने जा रहे हैं, ठीक उसी तरह एक दिन दूसरे लोग आपको ले जाएँगे । इस ग़ाम और फ़िक्र के नतीजे में आप कम से कम इतने वक़्त के लिए आखिरत की फ़िक्र में घुलने की सआदत पाएँगे और दुनिया की उलझनों और बातों से बचे रहेंगे ।

## 16. मैयत के आदाब

1. जब किसी ऐसे आदमी के पास जाएँ जो मरने के करीब हो तो ज़रा ऊँची आवाज़ से कलिमा 'ला इला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' पढ़ते रहें। रोगी से पढ़ने के लिए न कहें। नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“जब मरनेवालों के पास बैठो तो कलिमा का ज़िक्र करते रहो।”

(मुस्लिम)

2. किसी की साँस उखड़ते वक़्त सूरा यासीन की तिलावत कीजिए। नबी (सल्ल०) का इशारा है कि मरनेवालों के पास सूरा यासीन पढ़ा करो। (आलमगीरी, पृ० 100 भाग-1) हाँ, दम निकलने के बाद जब तक मुर्दे को गुस्ल न दे दिया जाए, उसके पास बैठकर क़ुरआन शरीफ़ न पढ़िए और वह आदमी जिसको नहाने की ज़रूरत हो और हैज़ व निफ़ासवाली औरतें भी मुर्दे के पास न जाएँ।

3. मौत की ख़बर सुनकर 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़िए। नबी (सल्ल०) का इशारा है कि जो आदमी किसी मुसीबत के मौक़े पर 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ता है, उसके लिए तीन बदले होते हैं—

—पहला यह कि उसपर अल्लाह की ओर से रहमत और सलामती उतरती है।

—दूसरा यह कि उसको हक़ की तलाश व जुस्तजू का बदला मिलता है।

—तीसरा यह कि उसके नुक़सान को पूरा किया जाता है और उसको फ़ौत होनेवाली चीज़ का उससे अच्छा बदला दिया जाता है। (तबरानी)

4. मैयत के ग़म में चीखने-चिल्लाने और बैन करने से बचिए, अलबत्ता ग़म में आँसू निकल पड़ें तो यह फ़ितरी बात है। नबी (सल्ल०) के बेटे हज़रत इबराहीम (रज़ि०) का इंतिकाल हुआ तो आपकी आँखों से आँसू बह पड़े। इसी तरह आपके नवासे इब्ने ज़ैनब (रज़ि०) का इंतिकाल हुआ तो आपकी आँखों से आँसू जारी हो गए। पूछा गया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! यह क्या ?” फ़रमाया—

“यह रहमत है, जो खुदा ने अपने बन्दों के दिल में रख दी है और खुदा अपने बन्दों में से उन्हीं बन्दों पर रहम फ़रमाता है जो रहम करनेवाले हैं।”

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि जो मुँह पर तमाँचे मारे, गिरीबान फाड़े, जाहिलियत की तरह बैन करे, उसका हमसे कोई ताल्लुक नहीं।

5. जान निकलने के बाद मैयत के हाथ-पैर सीधे कर दीजिए, आँखे बन्द कर दीजिए और एक चौड़ी-सी पट्टी ठोढ़ी के नीचे से निकालकर सिर के ऊपर बाँध दीजिए और पाँव के दोनों अंगूठे मिलाकर धज्जी से बाँध दीजिए और चादर से ढक दीजिए और यह पढ़ते रहिए—बिसमिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाह (खुदा के नाम से और रसूलुल्लाह की मिल्लत पर)। लोगों को वफ़ात की सूचना दे दीजिए और क़ब्र में उतारते वक़्त भी यही दुआ पढ़िए ।

6. मैयत की खूबियाँ बयान कीजिए और बुराइयों का ज़िक्र न कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“अपने मुद्दों की खूबियाँ बयान करो और उनकी बुराइयों से ज़बान को बन्द करो ।”  
(अबू दाऊद)

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जब कोई आदमी मरता है तो उसके चार पड़ोसी उसके भला होने की गवाही देते हैं तो खुदा फ़रमाता है, मैंने तुम्हारी गवाही मान ली और जिन बातों का तुम्हें इल्म न था, वे मैंने माफ़ कर दीं । (इब्ने हिब्बान)

एक बार नबी (सल्ल०) के हुज़ूर में सहाबा (रज़ि०) ने एक जनाज़े की तारीफ़ की । आपने फ़रमाया—

“इसके लिए ज़न्त वाजिब हो गई । लोगो ! तुम ज़मीन पर खुदा के गवाह हो, तुम जिसको अच्छा कहते हो खुदा उसको ज़न्त में दाखिल कर देता है और तुम जिसको बुरा कहते हो खुदा उसको दोज़ख में भेज देता है ।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जब किसी रोगी का हाल पूछने जाओ या किसी के जनाज़े में शिरकत करो तो हमेशा ज़बान से भलाई के बोल बोलो, क्योंकि फ़रिश्ते तुम्हारी बातों पर आमीन कहते जाते हैं ।”  
(मुस्लिम)

7. हमेशा मौत पर सन्न और जमाव ज़ाहिर कीजिए । कभी ज़बान से कोई नाशुक्ऱी का कलिमा न निकालिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब कोई आदमी अपने बच्चे के मरने पर सन्न करता है तो खुदा अपने फ़रिश्ते से फ़रमाता है, ‘क्या तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह कब्ज़ कर ली ? फ़रिश्ते जवाब देते हैं : पालनहार ! हमने तेरा हुक्म पूरा किया । फिर खुदा पूछता है : तुमने मेरे बन्दे के जिगर के टुकड़े की जान कब्ज़

कर ली ? वे कहते हैं: 'जी हाँ !' फिर वह पूछता है: तो मेरे बन्दे ने क्या कहा ? वे कहते हैं: पालनहार ! उसने तेरी हम्द की और 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा। तो खुदा फ़रिश्तों से कहता है कि मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल हम्द (शुक्र का घर) रखो।" (तिरमिज़ी)

8. मुर्दे को नहलाने धुलाने में देर न कीजिए। गुस्ल के लिए पानी में बेरी के पत्ते डालकर हल्का गर्म कर लीजिए तो अच्छा है। मुर्दे को पाक-साफ़ तख्ते पर लिटाइए, कपड़े उतारकर तहबन्द डाल दीजिए। हाथ पर कपड़ा लपेटकर पहले छोटा-बड़ा इस्तिज़ा कराइए और खयाल रखिए कि तहबन्द ढका रहे, फिर वुजू कराइए। वुजू में कुल्ली करने और नाक में पानी डालने की ज़रूरत नहीं। गुस्ल कराते वक़्त कान और नाक में रुई रख दीजिए ताकि पानी अन्दर न जाए। फिर सिर को साबुन या किसी और चीज़ से अच्छी तरह धोकर साफ़ कर दीजिए, फिर बाएँ करवट लिटाकर दाईं तरफ़ सिर से पाँव तक पानी डालिए, फिर इसी तरह बाईं तरफ़ यानी सिर से पाँव तक डालिए। अब भीगा हुआ तहबन्द हटा दीजिए और सूखा तहबन्द डाल दीजिए और फिर उठाकर चारपाई पर कफ़न में लिटा दीजिए।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जिसने किसी मय़त को गुस्ल दिया और उसके ऐब को छिपाया, खुदा ऐसे बन्दे के चालीस बड़े गुनाह बर्ख़्श देता है और जिसने किसी मय़त को क़ब्र में उतारा, तो गोया उसने मय़त को क़ियामत तक के लिए रहने का मकान जुटाया।” (तबरानी)

9. कफ़न औसत दर्जे के उजले कपड़े का बनाइए, न ज़्यादा क़ीमती बनाइए और न बिलकुल ही घटिया बनाइए। मर्दों के लिए कफ़न में तीन पकड़े रखिए—एक चादर, एक तहबन्द और एक कफ़नी या कुरता। चादर की लम्बाई मय़त के क़द से ज़्यादा रखिए, ताकि सिर और पाँव दोनों ओर बाँधा जा सके और चौड़ाई इतनी रखिए कि मुर्दे को अच्छी तरह लपेटा जा सके। औरतों के लिए इन कपड़ों के अलावा एक सरबन्द रखिए जो एक गज़ से कुछ कम चौड़ा और एक गज़ से ज़्यादा लम्बा हो और बग़ाल से लेकर घुटने तक का सीनाबन्द भी रखिए। नबी (सल्ल०) का इशाराद है—

“जिसने किसी मय़त को कफ़न पहनाया तो खुदा उसको जन्नत में सुन्दस और इस्तबरक़ का लिबास पहनाएगा।” (हाकिम)

10. जनाज़ा क़ब्रिस्तान की तरफ़ ज़रा तेज़ क़दमों से ले जाइए। नबी (सल्ल०) ने

फरमाया, “जनाजे में जल्दी करो।”

हजरत इब्ने मसऊद (रज़ि०) ने नबी (सल्ल०) से पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! जनाजे को किस रफ्तार से ले जाया करें ?” फरमाया—

“जल्दी-जल्दी दौड़ने की रफ्तार से कुछ कम. अगर मुर्दा भला है तो उसको भले अंजाम तक जल्दी पहुँचाओ और अगर बुरा है तो इस बुराई को जल्दी अपने से दूर करो।”

11. जनाजे के साथ पैदल जाइए। नबी (सल्ल०) एक जनाजे के साथ चले और आपने देखा कि कुछ आदमी सवार हैं। आपने उनसे कहा—

“तुम लोगों को शर्म नहीं आती कि खुदा के फ़रिश्ते पैदल चल रहे हैं और तुम जानवरों की पीठ पर हो।”

अलबत्ता जनाजे से वापसी पर सवारी पर आ सकते हैं। नबी अकरम (सल्ल०) अबू वाहिदी के जनाजे में पैदल गए और वापसी में घोड़े पर सवार होकर आए।

12. जब आप जनाजा आते देखें तो खड़े हो जाइए। फिर अगर उसके साथ चलने का इरादा न हो तो ठहर जाइए कि जनाजा कुछ आगे निकल जाए। नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“जब तुम जनाजे को आते देखो तो खड़े हो जाओ और जो लोग जनाजे के साथ जाएँ, वे उस वक़्त तक न बैठें, जब तक जनाजा न रखा जाए।”

13. जनाजे की नमाज़ पढ़ने का भी एहतिमाम कीजिए और जनाजे के साथ जाने और कंधा देने का भी एहतिमाम कीजिए। नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“मुसलमान का मुसलमान पर यह भी हक़ है कि वह जनाजे के साथ जाए।” और आपने यह भी फरमाया कि— “जो आदमी जनाजे में शरीक हुआ और जनाजे की नमाज़ पढ़ी तो उसको एक क़ीरात के बराबर सवाब मिलता है। नमाज़ के बाद जो दफ़न में भी शरीक हो, उसको दो क़ीरात के बराबर सवाब दिया जाता है। किसी ने पूछा : दो क़ीरात कितने बड़े होंगे ? फरमाया : दो पहाड़ों के बराबर।” (बुखारी, मुस्लिम)

14. मुर्दे की कब्र उत्तर-दक्षिण लम्बाई में खुदवाइए और मुर्दे को कब्र में उतारते वक़्त क़िबले की तरफ़ रखकर उतारिए। अगर मुर्दा हल्का हो तो दो आदमी उतारने के काफ़ी हैं, वरना ज़रूरत के मुताबिक़ तीन या चार आदमी भी उतारें। उतारते वक़्त मैयत का रुख़ क़िबले की ओर कर दीजिए और कफ़न की गिरहें खोल दीजिए।

15. औरत को कब्र में उतारते वक़्त परदे का एहतिमाम कीजिए।

16. क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त सिरहाने की ओर से शुरू कीजिए और दोनों हाथों में मिट्टी भरकर तीन बार क़ब्र पर डालिए। पहली बार मिट्टी डालते वक़्त पढ़िए—

‘मिनहा ख़-लक़-नाकुम (इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया)

दूसरी बार मिट्टी डालते वक़्त पढ़िए—

व फ़्रीहा नु ईदुकुम (और इसी में हम तुम्हें लौटा रहे हैं)

और तीसरी बार जब मिट्टी डालें तो पढ़िए—

व मिन्हा नुखरिजुकुम ता-र-तन उख़रा (और इसी से हम तुम्हें दोबारा उठाएँगे।)

17. मैयत की क़ब्र को न ज़्यादा ऊँचा कीजिए और न चौकोर बनाइए। बस उतनी ही मिट्टी क़ब्र पर डालिए जो उसके अन्दर से निकली है और मिट्टी डालने के बाद थोड़ा-सा पानी छिड़क दीजिए।

18. दफ़न करने के बाद कुछ देर क़ब्र के पास ठहरिए। मैयत के लिए माफ़िरत की दुआ कीजिए। कुछ क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर उसका सवाब मैयत को पहुँचाइए और लोगों को भी तवज्जोह दिलाइए कि इसतिगाफ़र करें। नबी अकरम (सल्ल०) दफ़न के बाद खुद भी इसतिगाफ़र फ़रमाते और लोगों से भी फ़रमाते—

“यह वक़्त हिसाब का है, अपने भाई के लिए साबित-क़दमी की दुआ माँगो और माफ़िरत तलब करो।”  
(अबू दाऊद)

19. अज़ीज़ों, रिश्तेदारों या पास-पड़ोस में किसी के यहाँ मैयत हो जाए तो उसके यहाँ दो-एक वक़्त का खाना भिजवा दीजिए, इसलिए कि वे ग़म से परेशान होंगे। जामेअ तिरमिज़ी में है कि जब हज़रत जाफ़र (रज़ि०) के शहीद होने की ख़बर आई तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जाफ़र के घरवालों के लिए खाना तैयार कर दो, वे आज मशगूल हैं।”

20. तीन दिन से ज़्यादा मैयत का शोक न कीजिए। अलबत्ता किसी औरत का शौहर पर जाए तो उसके शोक की मुद्दत चार महीने दस दिन है। जब उम्मुल मुमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि०) के बाप अबू सुफ़ियान (रज़ि०) का इतिफ़ाल हुआ तो बीबी ज़ैनब (रज़ि०) उनके पास मातमपुर्सी के लिए गईं। हज़रत उम्मे हबीबा ने खुशबू मँगवाई। उसमें ज़ाफ़रान की ज़र्दी वग़ैरह मिली हुई थी। उम्मुल मुमिनीन ने वह खुशबू अपनी बांदी को मली और फिर कुछ अपने मुँह पर मली और फिर फ़रमाने लगीं—

“ख़ुदा गवाह है, मुझे खुशबू की कोई ज़रूरत नहीं थी, मगर मैंने नबी

(सल्ल०) को यह फ़रमाते सुना है कि जो औरत खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखती है, वह किसी मुर्दे का शोक तीन दिन से ज्यादा न मनाए. अलबत्ता शौहर के शोक की मुद्दत चार महीने और दस दिन है।”  
(अबू दाऊद)

20. मैयत की तरफ़ से हैसियत के मुताबिक़ सदका और ख़ैरात भी कीजिए। अलबत्ता इस मामले में ग़ैर-इस्लामी रस्मों से सख्ती के साथ बचने की कोशिश कीजिए।



## 17. कब्रिस्तान के आदाब

1. जनाजे के साथ कब्रिस्तान भी जाइए और मैयत के दफनाने में शरीक रहिए और कभी वैसे भी कब्रिस्तान जाया कीजिए, इससे आखिरत की याद ताजा होती है और मौत के बाद की जिन्दगी के लिए तैयारी का जज्बा पैदा होता है।

नबी (सल्ल०) एक जनाजे के साथ कब्रिस्तान तशरीफ ले गए और वहाँ एक कब्र के किनारे पर बैठकर आप इतना रोए कि ज़मीन तर हो गई, फिर सहाबा (रजि०) को खिताब करते हुए फरमाया—

“भाइयो! इस दिन की तैयारी करो।”

(इब्ने माजा)

एक बार कब्र के पास बैठकर नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“कब्र हर दिन बड़ी भयानक आवाज़ में पुकारती है कि ऐ आदम की औलाद! क्या तू मुझे भूल गई, मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं अनजानेपन और वहशत की जगह हूँ, मैं कीड़े-मकोड़े का मकान हूँ, मैं तंगी और मुसीबत की जगह हूँ। उन खुशनसीबों के अलावा, जिनके लिए खुदा मुझको कुशादा फरमा दे, मैं सारे इंसानों के लिए ऐसी ही तकलीफ़देह हूँ।” और नबी (सल्ल०) ने फरमाया, “कब्र या तो जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।”

(तबरानी)

2. कब्रिस्तान जाकर सबक लीजिए और सोच की तमाम ताकतें समेटकर मौत के बाद की जिन्दगी पर सोच-विचार की आदत डालिए। एक बार हज़रत अली (रजि०) कब्रिस्तान में तशरीफ़ ले गए। उनके साथ हज़रत कुमैल (रजि०) भी थे। कब्रिस्तान पहुँचकर अली (रजि०) ने एक नज़र कब्रों पर डाली और फिर कब्रवालों से खिताब करते हुए फरमाया—

“ऐ कब्र के बसनेवालो! ऐ खंडहरों में रहनेवालो! ऐ वहशत और तन्हाई में रहनेवालो! कहो, तुम्हारी क्या ख़ैर व ख़बर है? हमारा हाल तो यह है कि माल बाँट लिए गए, औलादें यतीम हो गईं। बीवियों ने दूसरे शौहर कर लिए, यह तो हमारा हाल है। अब तुम भी तो अपनी कुछ ख़ैर-ख़बर सुनाओ।”

फिर अली (रजि०) कुछ देर खामोश रहे। इसके बाद हज़रत कुमैल (रजि०) की ओर देखा और फरमाया—

“कुमैल! अगर इन कब्रों में रहनेवालों को बोलने की इजाज़त होती तो यह कहते : बेहतरीन तोशा (सामाने सफ़र) परहेज़गारी है।”

यह फरमाया और रोने लगे, देर तक रोते रहे फिर बोले—

“कुमैल! कब्र अमल का सन्दूक है और मौत के वक़्त ही यह बात मालूम हो जाती है।”

3. कब्रिस्तान में दाखिल होते वक़्त यह दुआ पढ़िए—

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ  
لَا حِقُونَ أَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمْ الْعَافِيَةَ ۝

अस्सलामु अलैकुम अह्लदियारि मिनल मुमिनी-न वल मुस्लिमी-न व इन्ना  
इनशा-अल्लाहु बिकुम लाहिकू-न अस-अलुल्ला-ह लना व लकुमुल  
आफ़ियह।

“सलामती हो तुमपर ऐ इस बस्ती के रहनेवालो! इताअत गुज़ार मोमिनो!  
इनशाअल्लाह हम भी बहुत जल्द तुमसे आ मिलनेवाले हैं। हम अपने  
और तुम्हारे लिए खुदा से दुआ करते हैं कि वह अपने अज़ाब और ग़ज़ब  
से बचाए।”

4. कब्रिस्तान में गाफ़िल और लापरवाह लोगों की तरह हँसी-मज़ाक़ और दुनिया  
की बातें न कीजिए। कब्र आखिरत का दरवाज़ा है। इस दरवाज़े को देखकर वहाँ  
की चिन्ता अपने ऊपर ग़ालिब करके रोने की कोशिश कीजिए।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“मैंने तुम्हें कब्रिस्तान जाने से रोक दिया था (कि तौहीद का अक़ीदा  
तुम्हारे दिलों में पूरी तरह घर कर जाए) लेकिन अब अगर तुम चाहो  
तो जाओ, क्योंकि कब्र आखिरत की याद ताज़ा करती हैं।” (मुस्लिम)

5. कब्रों को पक्की बनाने और सजाने से बचिए। नबी (सल्ल०) का जब आखिरी  
वक़्त आ गया, दर्द की तकलीफ़ से आप बेइन्तिहा बेचैन थे। कभी आप (सल्ल०)  
चादर मुँह पर डालते और कभी उलट देते। इसी ग़ैर मामूली बेचैनी में हज़रत आइशा  
(रज़ि०) ने कान लगाकर सुना तो मुबारक ज़बान पर ये शब्द थे—

“यहूदियों और ईसाइयों पर खुदा की लानत! इन्होंने अपने पैग़म्बरों की  
कब्रों को इबादतगाह बना लिया।”

6. कब्रिस्तान जाकर मुर्दों के लिए ईसाले सवाब कीजिए और खुदा से माग़फ़िरत  
की दुआ कीजिए।

हजरत सुफियान (रजि०) फरमाते हैं कि जिस तरह ज़िन्दा इनसान खाने-पीने के मुहताज होते हैं, उसी तरह मुर्दे दुआ के बहुत ज्यादा मुहताज होते हैं।

तबरानी की एक रिवायत में है कि खुदा जन्नत में एक नेक बन्दे का दर्जा ऊँचा करता है तो वह पूछता है : पालनहार ! मुझे यह दर्जा कहाँ से मिला ? खुदा फरमाता है कि तेरे लड़के की वजह से कि वह तेरे लिए इसतिगफार करता रहा।

## 18. सूरज व चाँद गरहन (ग्रहण) के आदाब

1. सूरज या चाँद में गरहन लगे तो खुदा की याद में लग जाइए, उससे दुआएँ कीजिए. तकबीर<sup>1</sup> व तहलील<sup>2</sup> और सदक्का व खैरात कीजिए। इन भले कामों की बरकत से खुदा मुसीबतों और आफतों को टाल देता है।

हजरत मुगीरह बिन शोबा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“सूरज और चाँद खुदा की दो निशानियाँ हैं। किसी के मरने या पैदा होने से उनमें गरहन नहीं लगता। जब तुम देखो कि उनमें गरहन लग गया है तो खुदा को पुकारो, उससे दुआएँ करो और नमाज़ पढ़ो, यहाँ तक कि सूरज या चाँद साफ़ हो जाए।” (बुखारी, मुस्लिम)

2. जब सूरज में गरहन लगे तो मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़िए, लेकिन उस नमाज़ के लिए अज्ञान और इक़ामत न कहिए, यूँ ही लोगों को दूसरे साधनों से जमा कर लीजिए और जब चाँद गरहन लगे तो अपने तौर पर नफ़्लें पढ़िए, जमाअत न कीजिए।

3. सूरज गरहन में जब जमाअत के साथ दो रक़अत नफ़्ल पढ़ें, तो उसमें लम्बी क़िरात कीजिए और उस वक़्त तक नमाज़ में लगे रहिए, जब तक कि सूरज साफ़ न हो जाए और क़िरात बुलन्द आवाज़ में कीजिए।

नबी (सल्ल०) के दौर में एक बार सूरज गरहन पड़ा। इतिफ़ाक़ से उसी दिन आपके एक दूध पीते बच्चे हज़रत इबराहीम (रज़ि०) का भी इंतिकाल हुआ। लोगों ने कहना शुरू किया चूँकि हज़रत इबराहीम बिन मुहम्मद (सल्ल०) का इंतिकाल हुआ है, इसलिए यह सूरज गरहन पड़ा है तो नबी (सल्ल०) ने लोगों को जमा किया, दो रक़अत नमाज़ पढ़ाई। इस नमाज़ में आपने निहायत लम्बी क़िरात की। सूर बक्रा के जितना कुरआन पढ़ा, लम्बे रुकू और सज्दे किए। नमाज़ से फ़ारिग हुए तो सूरज गरहन साफ़ हो चुका था। इसके बाद आपने लोगों को बताया—

“सूरज और चाँद खुदा की दो निशानियाँ हैं। इनमें किसी के मरने या पैदा होने से गरहन नहीं लगता। लोगो! जब तुम्हें कोई ऐसा मौक़ा पेश आए तो खुदा के ज़िक्र में लग जाओ, उसी से दुआएँ माँगो, तकबीर<sup>1</sup> व तहलील<sup>2</sup> में लगे रहो, नमाज़ पढ़ो और सदक्का व खैरात करो।”

(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत अब्दुर्हमान बिन समुरह (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) के मुबाशक

1. अल्लाहु अकबर कहना,

2. ला इला—ह इल्लल्लाह कहना।

अमाने में एक बार सूरज गरहन लगा । मैं मदीने के बाहर तीर अंदाजी कर रहा था । मैंने तुरन्त तीरों को फेंक दिया कि देखूँ आज इस हादसे में नबी (सल्ल०) क्या अमल करते हैं ? चुनाँचे मैं नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुआ । आपने अपने हाथ उठाए खुदा की हम्द व तस्बीह, तक्वीर व तहलील और दुआ व फरियाद में लगे हुए थे । फिर आपने दो रक़अत नमाज़ पढ़ी और उसमें दो लम्बी-लम्बी सूरतें पढ़ीं और उस वक़्त तक लगे रहे, जब तक कि सूरज साफ़ न हो गया ।

सहाबा किराम (रज़ि०) भी चाँद गरहन और सूरज गरहन में नमाज़ पढ़ते । एक बार मदीने में गरहन लगा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) ने नमाज़ पढ़ी । एक और मौक़े पर गरहन लगा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने लोगों को जमा किया और जमाअत से नमाज़ पढ़ाई ।

4. सूरज गरहन की नमाज़ में पहली रक़अत में सूरा फ़ातिहा के बाद सूरा अनक़बूत पढ़िए और दूसरी रक़अत में सूरा रूम पढ़िए । इन सूरतों का पढ़ना मस्नून है, अलबत्ता ज़रूरी नहीं है, दूसरी सूरतें भी पढ़ी जा सकती हैं ।

5. सूरज गरहन की बाजमाअत नमाज़ में अगर औरतें शरीक होना चाहें और शरीक करने की आसानी हो तो ज़रूर शरीक कीजिए और बच्चों को भी उभारिए, ताकि शुरु ही से उनके दिलों पर तौहीद का नक्शा बैठे और तौहीद के खिलाफ़ कोई विचार पनपने न पाए ।

6. जिन वक़्तों में नमाज़ पढ़ने को शरीअत मना करती है यानी सूरज निकलने के वक़्त, सूरज डूबने के वक़्त और ज़वाल के वक़्तों में अगर सूरज गरहन हो तो नमाज़ न पढ़िए, लेकिन ज़िक्र व तस्बीह ज़रूर कीजिए । ग़रीबों और फ़क़ीरों को सदाका व ख़ैरात दीजिए और अगर सूरज के निकलने के वक़्त और ज़वाल के वक़्त के निकल जाने के बाद भी गरहन बाक़ी रहे तो फिर नमाज़ भी पढ़िए ।

## 19. रमज़ान मुबारक के आदाब

1. रमज़ान मुबारक का उसकी शान के मुताबिक स्वागत करने के लिए शाबान ही से ज़ेहन को तैयार कीजिए और शाबान की पन्द्रह तारीख से पहले-पहले ज़्यादा से ज़्यादा रोज़े रखिए । हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) सभी महीनों से ज़्यादा शाबान के महीने में रोज़ा रखा करते थे ।

2. पूरे एहतिमाम और शौक के साथ रमज़ान मुबारक का चाँद देखने की कोशिश कीजिए और चाँद देखकर यह दुआ पढ़िए—

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُمَّ أَهْلُهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ وَ  
التَّوْفِيقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى. رَبُّنَا وَرَبُّكَ اللَّهُ.

अल्लाहु अकबर अल्लाहुम-म अहिल्लहू अलैना बिल अमिन वल ईमानी वस्सलामति वल इस्लामि वतौफ़ीक़ि लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा । रब्बुना व रब्बु-कल्लाह ।

“खुदा सबसे बड़ा है । ऐ खुदा ! यह चाँद हमारे लिए अमन व ईमान व सलामती और इस्लाम का चाँद बनाकर निकाल और उन कामों की तौफ़ीक़ के साथ जो तुझे महबूब और पसन्द हैं । ऐ चाँद ! हमारा रब और तेरा रब अल्लाह है ।” (तिरमिज़ी, इब्ने हिब्बान वगैरह)

और हर महीने का नया चाँद देखकर भी यही दुआ पढ़िए ।

3. रमज़ान में इबादतों से खास लगाव पैदा कीजिए । फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा नफ़ल नमाज़ों का खास एहतिमाम कीजिए और ज़्यादा से ज़्यादा नेकी कमाने के लिए तैयार हो जाइए । यह बड़ाई और बरकतवाला महीना खुदा की खास इनायत और रहमत का महीना है । शाबान की आखिरी तारीख को नबी (सल्ल०) ने रमज़ान की बड़ाई का जिक्र करते हुए फ़रमाया—

“लोगो ! तुमपर एक बहुत बड़ाई और बरकत का महीना साया करनेवाला है । यह वह महीना है जिसमें एक रात हजार महीनों से ज़्यादा बेहतर है । खुदा ने इस महीने के रोज़े फ़र्ज़ करार दिए हैं और क्रियामे लैल (मसून तरावीह) को नफ़ल करार दिया है । जो आदमी इस महीने में दिल की खुशी से अपने आप कोई एक नेक काम करेगा, वह दूसरे महीनों के फ़र्ज़ के बराबर बदला पाएगा और जो आदमी इस महीने में एक फ़र्ज़ अदा करेगा, खुदा उसको दूसरे महीनों के सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर सवाब

बख्शोगा ।”

4. पूरे महीने के रोजे बड़े ज़ौक व शौक और एहतिमाम के साथ रखिए और अगर कभी रोग की तेज़ी या शरई उज़्र की वजह से रोजे न रख सकें तब भी रमज़ान के एहतिराम में खुल्लमखुल्ला खाने से सख्ती के साथ परहेज़ कीजिए और इस तरह रहिए कि गोया आप रोजे से हैं ।

5. कुरआन की तिलावत का खास एहतिमाम कीजिए । इस महीने को कुरआन पाक से खास ताल्लुक है । कुरआन पाक इसी महीने में उतरा और दूसरी आसमानी किताबें भी इसी महीने में उतरीं । हज़रत इबराहीम (अलै०) को इसी महीने की पहली या तीसरी तारीख को सहीफ़े (किताबें) दिए गए । हज़रत दाऊद को इसी महीने की 12 या 18 को ज़बूर दी गई । हज़रत मूसा (अलै०) पर इसी मुबारक महीने की 6 तारीख को तौरात उतरी और हज़रत ईसा (अलै०) को भी इसी मुबारक महीने की 12 या 13 तारीख को इंज़ील दी गई । इसलिए इस महीने में ज़्यादा से ज़्यादा कुरआन पाक पढ़ने की कोशिश कीजिए । हज़रत ज़िबरील (अलै०) हर साल रमज़ान में नबी (सल्ल०) को पूरा कुरआन सुनाते और सुनते थे और आखिरी साल उन्होंने दो बार रमज़ान में नबी (सल्ल०) के साथ दौर फ़रमाया ।

6. कुरआन पाक ठहर-ठहरकर और समझ-समझकर पढ़ने की कोशिश कीजिए । तिलावत की ज़्यादती के साथ-साथ समझने और असर लेने का भी खास खयाल रखिए ।

7. तरावीह में पूरा कुरआन सुनने का एहतिमाम कीजिए । एक बार रमज़ान में पूरा कुरआन पाक सुनना मस्नून है ।

8. तरावीह की नमाज़ दिल लगाकर और ज़ौक व शौक के साथ पढ़िए और ज़्यों-त्यों बीस रक़अत की गिनती पूरी न कीजिए, बल्कि नमाज़ को नमाज़ की तरह पढ़िए, ताकि आपकी ज़िन्दगी पर इसका असर पड़े और खुदा से ताल्लुक मजबूत हो और खुदा तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद का भी एहतिमाम कीजिए ।

9. सदका और ख़ैरात कीजिए । ग़रीबों, बेवाओं और यतीमों की खबरगरीरी कीजिए और मजबूरों की सहरी और इफ़्तार का एहतिमाम कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“यह मुवासात<sup>1</sup> का महीना है ।”

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) सखी-दाता तो

---

1. यानी ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के साथ हमदर्दी का महीना है । हमदर्दी से मुआद माली हमदर्दी भी है और ज़बानी हमदर्दी भी । इनके साथ बातों और व्यवहार में नमी बरतिए । नीक़ों को आसानियाँ दीजिए और माली मदद भी कीजिए ।

थे ही, लेकिन रमजान में तो आपका दान बहुत ही बढ़ जाता था । जब हज़रत ज़िबरील (अलै०) हर रात को आपके पास आते और कुरआन पाक पढ़ते और सुनते थे तो इन दिनों नबी (सल्ल०) तेज़ चलनेवाली हवा से भी ज़्यादा सखी होते थे ।

10. शबे क़द्र में ज़्यादा से ज़्यादा नज़लों का एहतिमाम कीजिए और कुरआन की तिलावत कीजिए । इस रात की अहमियत यह है कि इस रात में कुरआन उतरा । कुरआन में है—

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۝ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

“हमने इस कुरआन को शबे क़द्र में उतारा और तुम क्या जानो कि शबे क़द्र क्या है ? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है । इसमें फ़रिश्ते और ज़िबरील अपने पालनहार के हुक्म से हर काम के इंतज़ाम के लिए उतरते हैं । सलामती ही सलामती, यहाँ तक कि सुबह हो जाए ।”

(कुरआन, 97:1-5)

हदीस में है कि शबे क़द्र रमजान की आखिरी दहाई की ताक़ रातों में से कोई रात होती है । इस रात को यह दुआ पढ़िए—

اللَّهُمَّ إِنَّكَ غَفُورٌ تَحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي. (حسن صين)

अल्लाहुम-म इन्न-क अफुव्वुन तुहिब्बुल अफ़-व फ़अ-फु अन्नी ।

(हिस्ने हसीन)

ऐ खुदा ! तू बहुत ही ज़्यादा माफ़ फ़रमानेवाला है, क्योंकि माफ़ करना तुझे पसन्द है । इसलिए तू मुझे माफ़ फ़रमा दे ।”

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक साल रमजान आया तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“तुम लोगों पर एक महीना आया है, जिसमें एक रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है । जो आदमी इस रात से महरूम रह गया वह सारे के सारे ख़ैर से महरूम रह गया और इस रात की ख़ैर व बरकत से महरूम



वही रहता है जो वाकई महरूम है ।

(इब्ने माजा)

11. रमजान की आखिरी दहाई में एतिकाफ कीजिए । नबी (सल्ल०) रातों को ज्यादा से ज्यादा जागकर इबादत फरमाते और घरवालों को भी जगाने का एहतिमाम करते और पूरे जोश और चाव के साथ खुदा की बन्दगी में लग जाते ।

12. रमजान में लोगों के साथ निहायत नमी और मुहब्बत का व्यवहार कीजिए । नौकरो को ज्यादा से ज्यादा आसानियाँ दीजिए और खुले दिल के साथ उनकी जरूरतें पूरी कीजिए और घरवालों के साथ भी रहमत और क्रैयाजी का बरताव कीजिए ।

13. बड़ी आजिजी और जौक व शौक के साथ ज्यादा दुआएँ कीजिए । दुर्गे-मंसूर में है कि जब रमजान का मुबारक महीना आता तो नबी (सल्ल०) का रंग बदल जाता था और नमाज में ज्यादाती हो जाती थी और दुआ में बहुत आजिजी फरमाते थे और डर बहुत ज्यादा छाया रहता था ।

हदीस में है—

“खुदा रमजान में अर्श उठानेवाले फरिश्तों को हुक्म देता है कि अपनी इबादत छोड़ दो और रोजा रखनेवालों की दुआओं पर आमीन कहो ।”

14. फितरा दिल के चाव के साथ पूरे एहतिमाम से अदा कीजिए और ईद की नमाज से पहले अदा कर दीजिए, बल्कि इतना पहले अदा कीजिए कि जरूरतमन्द और गरीब लोग आसानी के साथ ईद की जरूरतें पूरी कर सकें और वे भी सबके साथ ईदगाह जा सकें और ईद की खुशियों में शरीक हो सकें ।

हदीस में है कि नबी (सल्ल०) ने फितरा उम्मत के लिए इसलिए जरूरी करार दिया ताकि वे उन बेहूदा और बेहयाई की बातों का जो रोजे में रोजेदार से हो गई हों, कफ़ारा बने और गरीबों और मिसकीनों के खाने का इन्तिज़ाम हो जाए ।

(अबू दाऊद)

15. रमजान के मुबारक दिनों में खुद ज्यादा से ज्यादा नेकी कमाने के साथ-साथ दूसरों को भी बड़े ही सोज, तड़प, नमी और हिकमत के साथ नेकी और भलाई के काम करने पर उभारिए, ताकि पूरी फ़िज़ा पर खुदातरसी, खैर पसन्दी और भलाई के जज़्बे छाए रहें और समाज ज्यादा से ज्यादा रमजान की क़ीमती बरकतों से फ़ायदा उठा सके ।

## 20. रोजे के आदाब

1. रोजे के बड़े अन्न और फ्रायदों को निगाह में रखकर पूरे जौक व शौक के साथ रोजे रखने का एहतिमाम कीजिए। यह एक ऐसी इबादत है जिसका बदला कोई दूसरी इबादत नहीं हो सकती। यही वजह है कि रोजा हर उम्मत पर फर्ज रहा है। अल्लाह तआला का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ  
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

“ऐ ईमानवालो ! तुमपर रोजे फर्ज किए गए, जिस तरह तुमसे पहले के लोगों पर फर्ज किए गए थे, ताकि तुम मुत्तकी-परहेज़गार बन जाओ।”  
— कुरआन, 2:183  
नबी (सल्ल०) ने रोजे के इस बड़े मक़सद को यूँ बयान फ़रमाया—

“जिस आदमी ने रोजा रखकर भी झूठ बोलना और झूठ पर अमल करना न छोड़ा, तो खुदा को इससे कोई दिलचस्पी नहीं कि वह भूखा और प्यासा रहता है।”  
(बुखारी)

और नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“जिस आदमी ने ईमान, जज़्बे और एहतिसाब<sup>1</sup> के साथ रमज़ान का रोजा रखा तो खुदा उसके उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा जो पहले हो चुके होंगे।”  
(बुखारी)

2. रमज़ान के रोजे पूरे एहतिमाम के साथ रखिए और किसी बड़ी बीमारी या शरई उज्र के बग़ैर कभी रोजा न छोड़िए। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जिस आदमी ने किसी बीमारी या शरई उज्र के बग़ैर रमज़ान का एक रोजा भी छोड़ा तो उम्र भर के रोजे रखने से भी एक रोजे की पूर्ति न हो सकेगी।”  
(तिरमिज़ी)

3. रोजे में दिखावे से बचने के लिए हमेशा की तरह खुश व ख़ुरम और मुस्तैद होकर अपने कामों में लगे रहिए और अपने तौर-तरीकों से रोजे की कमज़ोरी और सुस्ती को ज़ाहिर न कीजिए। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का इरशाद है—

---

1. एहतिसाब से मुपद यह है कि रोजा सिर्फ़ खुदा की खुशी और आखिरत में बदले के लिए रखा जाए और उन तमाम बेकार बातों से बचा जाए जो रोजे को बेज़ान कर देती हैं।

“आदमी जब रोजे रखे तो चाहिए कि हमेशा की तरह तेल लगाए कि उस पर रोजे का असर न दिखाई दे ।”

4. रोजे में बड़े एहतिराम के साथ हर बुराई से दूर रहने की भरपूर कोशिश कीजिए इसलिए कि रोजे का मकसद ही ज़िन्दगी को पाकीज़ा बनाना है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“रोज़ा ढाल है और जब तुममें से कोई रोजे से हो तो अपनी ज़बान से कोई बेशर्मी की बात न निकाले और न शोर व हंगामा करे और अगर कोई उससे गाली-गलौच करने लगे या लड़ाई पर उतर आए, तो उस रोज़ेदार को सोचना चाहिए कि मैं तो रोज़ेदार हूँ । (भला मैं कैसे गाली का जवाब दे सकता या लड़ सकता हूँ) ।” (बुखारी व मुस्लिम)

5. हदीसों में रोजे का जो बड़ा बदला बयान किया गया है, उसकी आरजू कीजिए और खास तौरपर इफ्तार के करीब खुदा से दुआ कीजिए कि ऐ अल्लाह ! मेरे रोजे को क़बूल फ़रमा और मुझे वह अज़्र व सवाब दे जिसका तूने वादा किया है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“रोज़ेदार जन्त में एक खास दरवाज़े से दाखिल होंगे । इस दरवाज़े का नाम रय्यान<sup>1</sup> है । जब रोज़ेदार दाखिल हो चुकेंगे तो यह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, फिर कोई उस दरवाज़े से न जा सकेगा ।” (बुखारी)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि क्रियामत के दिन रोज़ा सिफ़ारिश करेगा और कहेगा कि पालनहार ! मैंने इस आदमी को दिन में खाने-पीने और दूसरी लज़्ज़तों से रोके रखा । ऐ खुदा ! तू इस आदमी के हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा और खुदा उसकी सिफ़ारिश को क़बूल फ़रमाएगा । (मिशकात)

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि इफ्तार के वक़्त रोज़ेदार जो दुआ माँगे, उसकी दुआ क़बूल की जाती है, रद्द नहीं की जाती । (तिरमिज़ी)

6. रोजे की तकलीफ़ों को हँसी-ख़ुशी से बरदाश्त कीजिए और भूख और प्यास की ज़्यादती या कमज़ोरी की शिकायत कर-करके रोजे की नाक़द्री न कीजिए ।

7. सफ़र के दौरान या रोग की ज़्यादती में रोज़ा न रख सकते हों तो छोड़ दीजिए और दूसरे दिनों में उसकी क़ज़ा कीजिए । क़ुरआन में है—

---

1. रय्यान का मतलब है सींचनेवाला । नबी (सल्ल०) का इरशाद है रय्यान के दरवाज़े से दाखिल होनेवालों को कभी प्यास न सताएगी । (तिरमिज़ी)

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۝ (البقرة)

“जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में रोज़ों की तादाद पूरी कर ले ।”  
— कुरआन, 2:184

हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं, “जब हम लोग नबी (सल्ल०) के साथ रमज़ान में सफ़र पर होते तो कुछ लोग रोज़ा रखते और कुछ लोग न रखते, फिर न तो रोज़ेदार रोज़ा छोड़नेवालों पर कोई एतिराज़ करता और न रोज़ा छोड़नेवाला रोज़ेदार पर एतिराज़ करता ।” (बुखारी)

8. रोज़े में ग़ीबत और बदनिगाही से बचने का खास तौर पर एहतिमाम कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“रोज़ेदार सुबह से शाम तक खुदा की इबादत में है, जब तक कि वह किसी की ग़ीबत न करे और जब वह किसी की ग़ीबत कर बैठता है तो उसके रोज़े में दरार पड़ जाती है ।” (अद-दैलमी)

9. हलाल रोज़ी का एहतिमाम कीजिए । हराम कमाई से पलनेवाले जिस्म की कोई इबादत क़बूल नहीं होती । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“हराम कमाई से जो बदन पला हो वह जहन्नम ही के लायक है ।”  
(बुखारी)

10. सहरी ज़रूर खाइए । इससे रोज़ा रखने में आसानी होगी और कमज़ोरी और सुस्ती पैदा न होगी । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“सहरी खा लिया करो इसलिए कि सहरी खाने में बरकत है ।”  
(बुखारी)

11. सूरज डूब जाने के बाद इफ़्तार में देर न कीजिए, इसलिए कि रोज़े का असल मक़सद फ़रमाँबरदारी का ज़ज्बा पैदा करना है, न कि भूखा-प्यासा रहना । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मुसलमान अच्छी हालत में रहेंगे जब तक इफ़्तार करने में जल्दी करेंगे ।” (बुखारी)

12. इफ़्तार के वक़्त यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ. (مسلم)

अल्लाहुम-म ल-क सुम्तु व अला रिज़्कि-क अफ़्तर-तु । (मुस्लिम)

“ऐ अल्लाह ! मेने तेरे ही लिए रोज़ा रखा और तेरी ही रोज़ी से इफ़्तार किया ।”

और जब रोज़ा इफ़्तार कर लें तो यह दुआ पढ़िए—

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِن شَاءَ اللَّهُ. (ابودाؤد)

ज-ह-बज-जम-उ वब तल्लतिल उरूकु व स-ब-तल अजर  
इन्शाअल्लाह । (अबू दाऊद)

“ध्यास जाती रही, रंगें तर व ताज़ा हो गई और बदला भी जरूर मिलेगा, अगर खुदा ने चाहा ।”

13. किसी के यहाँ रोज़ा इफ़्तार करें तो यह दुआ पढ़िए—

أَفْطَرَ عِنْدَكُمْ الصَّائِمُونَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمْ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمْ  
الْمَلَائِكَةُ. (ابودाؤद)

अफ़-त-र इन-द-कुमुस्साइमू-न व अ-क-ल तआ-मकुमुल अबरा-रु व  
सल्लत अलैकुमुल मलाइकह । (अबू दाऊद)

“(खुदा करे) तुम्हारे यहाँ रोज़ेदार रोज़े इफ़्तार करें और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआएँ करें ।”

14. रोज़े इफ़्तार कराने का भी एहतिमाम कीजिए, इसका बड़ा अज़्र है । नबी (सल्ल०) का इश़ाद है—

“जो आदमी रमज़ान में किसी का रोज़ा खुलवाए तो उसके बदले में खुदा उसके गुनाह को बर्ख़्श देगा और उसको जहन्नम की आग से निजात देगा और इस इफ़्तार करानेवाले को रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलेगा और रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी न होगी ।” लोगों ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! हम सबके पास इतना कहाँ है कि रोज़ेदार को इफ़्तार कराएँ और उसको खाना खिलाएँ ।”

नबी (सल्ल०) ने इश़ाद फ़रमाया, “सिर्फ़ एक खजूर से या दूध और पानी के एक घूँट से इफ़्तार करा देना भी काफ़ी है ।” (इब्ने खुज़ैमा)

## 21. जकात और सदके के आदाब

1. खुदा की राह में जो भी दें, सिर्फ खुदा की खुशी हासिल करने के लिए दीजिए । किसी और गरज की नीयत से अपने काम को कभी खराब न कीजिए । यह आरजू हरगिज़ न रखिए कि जिनको आपने दिया है वे आपका एहसान मानें, आपका शुक्रिया अदा करें और आपकी बड़ाई को तस्लीम करें । मोमिन अपने अमल का बदला सिर्फ अपने खुदा से चाहता है । कुरआन पाक में मोमिनों के जज़्बे को इस तरह ज़ाहिर किया गया है—

إِنَّمَا نَطْعُمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا (المر)

“हम तुमको अल्लाह की खुशनूदी के लिए खिला रहे हैं, न तुम से बदला तलब करते हैं और न शुक्रगुजारी की तलब है ।”

(कुरआन, 76:9)

2. धोखादेही और दिखावे से परहेज़ कीजिए । दिखावा अच्छे से अच्छे अमल को तबाह कर देता है ।

3. जकात खुल्लम खुल्ला दीजिए, ताकि दूसरों में भी फ़र्ज अदा करने का जज़्बा उभरे । अलबत्ता दूसरे सदके छिपाकर दीजिए, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा इखलास (निष्ठा) पैदा हो । खुदा की नज़र में उसी अमल की कीमत है जो इखलास के साथ किया गया हो । क़ियामत के डरावने मैदान में जबकि कहीं साया न होगा, खुदा अपने उस बन्दे को अर्श के साए में रखेगा जिसने इतिहाई छिपे तरीकों से खुदा की राह में खर्च किया होगा । यहाँ तक कि बाएँ हाथ को यह खबर न होगी कि दाहिने हाथ ने क्या खर्च किया । (बुखारी)

4. खुदा की राह में खर्च करने के बाद न एहसान जताइए और न उन लोगों को दुख दीजिए जिनको आप दे रहे हों । देने के बाद मुहताजों और ग़रीबों के साथ हिकारत का मुलूक करना, उनके स्वाभिमान को ठेस लगाना, उनपर एहसान जता-जताकर उनके दृष्टे हुए दिलों को दुखाना और यह सोचना कि वे आपका एहसान मानें, आपके सामने झुके रहें, आपके बड़े होने को स्वीकार करें, इतिहाई धिनौने जज़्बे हैं । मोमिन का दिल इन जज़्बों से पाक होना चाहिए । खुदा का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُفْئِقُ مَالَهُ رِثَاءَ النَّاسِ ۝

“मोमिनो ! अपने सदकों व खैरात को एहसान जता-जताकर और गरीबों का दिल दुखाकर उस आदमी की तरह धूल में न मिला दो जो सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए खर्च करता है ।” (कुरआन, 2:264)

5. खुदा की राह में देने के बाद घमण्ड न कीजिए, लोगों पर अपनी बड़ाई न जताइए, बल्कि यह सोच-सोचकर काँपते रहिए कि मालूम नहीं खुदा के यहाँ मेरा यह सदका कबूल भी हुआ या नहीं । खुदा का इरशाद है—

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝ (المؤمنون: १०)

“और वे लोग देते हैं (खुदा की राह में), जो भी देते हैं और उनके दिल इस विचार से काँपते हैं कि हमें खुदा की ओर पलटना है ।”

(कुरआन, 23:60)

6. फ़कीरों और मुहताजों के साथ नमी का सुलूक कीजिए, न उनको डाँटिए, न उनपर रौब जमाइए, न उनपर अपनी बड़ाई जाहिर कीजिए । माँगनेवाले को देने के लिए अगर कुछ न हो तब भी बड़ी नमी और अच्छे अखलाक से माफ़ी माँग लीजिए, ताकि वह कुछ न पाने के बावजूद खामोशी से दुआ देता हुआ विदा हो जाए । कुरआन में है—

وَأَمَّا تَعْرِضْنَ عَنْهُمْ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مِّسُورًا ۝ (نبي اسرائيل)

“अगर तुम इनसे मुख मोड़ने पर मजबूर हो जाओ अपने पालनहार की मेहरबानी की उम्मीद रखते हुए, तो उनसे नमी की बात कह दिया करो ।”

(कुरआन, 17:28)

और खुदा का इरशाद यह भी है—

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝

“और माँगनेवाले को झिड़की न दो ।” (कुरआन, 93:10)

7. खुदा की राह में खुले-दिल और शौक के साथ खर्च कीजिए । तंगदिली, कुढ़न और ज़बरदस्ती का जुर्माना समझकर न खर्च कीजिए । कामयाबी के हक़दार वही लोग होते हैं जो कंजूसी, तंगदिली और तंगी जैसी भावनाओं से अपने दिल को पाक रखते हैं ।

8. खुदा की राह में हलाल माल खर्च कीजिए । खुदा सिर्फ वही माल कबूल फ़रमाता है जो पाक और हलाल हो । जो मोमिन खुदा की राह में देने की तड़प रखता है, वह भला यह कैसे गवारा कर सकता है कि उसकी कमाई में हaram माल शामिल हो । कुरआन में खुदा का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ

“ईमानवालो ! खुदा की राह में अपनी पाक कमाई खर्च करो ।”

9. खुदा की राह में बेहतरीन माल खर्च कीजिए । कुरआन में है—<sup>2:267</sup>

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ (آل عمران)

“तुम हरगिज़ नेकी हासिल न कर सकोगे जब तक कि वह माल खुदा की राह में न दो, जो तुम्हें प्यारा है ।” —कुरआन, 3:92

सदके में दिया हुआ माल आखिरत की हमेशा की ज़िन्दगी के लिए जमा हो रहा है । भला मोमिन यह कैसे सोच सकता है कि वह अपनी हमेशा की ज़िन्दगी के लिए खराब और नाकारा माल जमा कराए ।

10. ज़कात वाजिब होने पर देर न लगाइए, तुरन्त अदा करने की कोशिश कीजिए और अच्छी तरह हिसाब लगाकर दीजिए कि खुदा-न-खास्ता आपके ज़िम्मे कुछ रह न जाए ।

11. ज़कात मिल-जुलकर अदा कीजिए और उसके खर्च का इतिज़ाम भी मिल-जुलकर कीजिए । जहाँ मुसलमानों की हुकूमत नहीं है, वहाँ मुसलमानों की जमाअतें, बैतुलमाल कायम करके उसका इतिज़ाम करें ।



## 22. हज के आदाब

1. हज करने में देर न कीजिए और टाल-मटोल हरगिज़ न कीजिए । जब भी खुदा इतना दे कि आप इस अच्छे कर्तव्य को निभा सकें, तो पहली फुरसत में खाना हो जाइए । जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं है कि आप इस कर्तव्य को एक साल से दूसरे साल पर टालते रहें । कुरआन में है—

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا وَمَنْ  
كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِيْنَ

“और लोगों पर खुदा का यह हक़ है कि जो उसके घर तक पहुँचने की ताकत रखता हो वह उसका हज करे । और जो उस हुक्म की पैरवी से इनकार करे, तो उसे मालूम होना चाहिए कि खुदा सारे जहानवालों से बेनियाज़ है ।” (कुरआन, 3:97)

इनसान की इससे बड़ी तबाही और महरूमी और क्या होगी कि खुदा उससे बेनियाज़ी (उपेक्षा) और बेताल्लुकी का एलान फरमाए । हदीस में है—

“जो आदमी हज का इरादा करे उसे हज करने में जल्दी करनी चाहिए, क्योंकि मुमकिन है वह बीमार पड़ जाए, मुमकिन है ऊँटनी खो जाए और मुमकिन है कोई और ऐसी ज़रूरत पेश आ जाए कि हज नामुमकिन हो जाए ।” (इब्ने माजा)

मतलब यह है कि साधन होने के बाद खामखाह टाल-मटोल न करनी चाहिए । मालूम नहीं आगे ये साधन और कुशादगी बाक़ी रहें या न रहें और फिर खुदा-न-खास्ता आदमी बैतुल्लाह के हज से महरूम हो जाए । खुदा इस महरूमी से हर मोमिन बन्दे को बचाए रखे । नबी (सल्ल०) ने ऐसे लोगों को बड़े कड़े अंदाज़ में तंबीह फरमाई है । हदीस में है—

“जिस आदमी को किसी बीमारी ने या वाक़ई ज़रूरत ने या किसी ज़ालिम व जाबिर हाकिम ने न रोक रख हो और फिर भी वह हज न करे तो चाहे वह यहूदी मरे, चाहे ईसाई ।” (सुनने कुबरा, भाग-4)

और हज़रत उमर (रज़ि०) को यह कहते सुना गया—

“जो लोग कुदरत रखने के बावजूद हज नहीं करते तो मेरा जी चाहता है कि उनपर जिज़या लगा दूँ, वे मुसलमान नहीं हैं, वे मुसलमान नहीं

हैं ।”

(अल-मुंतका)

2. खुदा के घर की जियारत और हज सिर्फ अपने खुदा को खुश करने के लिए कीजिए । किसी और दुनिया की गरज से इस पाकीजा मकसद को गन्दा न कीजिए । कुरआन पाक में है—

وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَتَّغُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا (المائدة)

“और न उन लोगों को छोड़ो, जो अपने पालनहार की दया और उसकी खुशी की खोज में इज्जतवाले घर की तरफ जा रहे हैं ।” (कुरआन, 5:2)

وَاتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ (البقرة: 196)

“हज और उमरा को सिर्फ खुदा की खुशी के लिए पूरा करो ।”

(कुरआन, 2:196)

नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“हज्जे मबरूर<sup>1</sup> का बदला तो जन्नत से कम है ही नहीं ।”

(मुस्लिम : किताबुल हज)

3. हज के लिए जाने की चर्चा न कीजिए । खामोशी से जाइए और आइए और हर उस रस्म और तरीके से सख्ती के साथ बचिए जिसमें धोखा और दिखावे का हिस्सा हो । यूँ तो हर काम के भले काम होने और मकबूल काम होने का आश्रय इसपर है कि वह सिर्फ खुदा के लिए हो और किसी दूसरी खाहिश की उसमें थोड़ी-सी मिलावट भी न हो, लेकिन खास तौर पर हज में इसका और ज्यादा ध्यान रखना इसलिए जरूरी है कि यह रूहानी इनकिलाब (आध्यात्मिक क्रान्ति) और मन और चरित्र को पाक करने का एक आखिरी उपाय है और जो रूहानी रोगी इस कामयाब इलाज से भी सेहत न पाए, फिर उसके सेहत पाने की उम्मीद किसी दूसरे इलाज से बहुत ही कम रह जाती है ।

4. हज को जाने की ताकत न हो तब भी खुदा के घर को देखने की तमन्ना, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के रौजे पर सलाम पढ़ने की आरजू और हज से पैदा होनेवाले इबराहीमी जज़्बों से अपने सीने को आबाद और मुनव्वर रखिए । इन भावनाओं के बिना कोई सीना मोमिन का सीना नहीं, बल्कि एक वीरान खंडहर है । नबी

1. हज्जे मबरूर वह हज है जो सिर्फ खुदा की खुशी हासिल करने के लिए पूरे आदाब और शर्तों के साथ किया गया हो ।

(सल्ल०) का इरशाद है—

“हज और उमरा के लिए जानेवाले खुदा के खास मेहमान हैं। वे खुदा से दुआ करें तो खुदा कबूल फरमाता है और माफ़िरत तलब करें तो बर्र्शा देता है।” (तबरानी)

5. हज के लिए रास्ते का बेहतरीन खर्च साथ लीजिए। रास्ते का बेहतरीन खर्च तक़्वा है। इस पाकीज़ा सफ़र के दौरान खुदा की नाफ़रमानियों से बचने और बैतुल्लाह के हज की बरकतों से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठानेवाला बन्दा वही है जो हर हाल में खुदा से डरता है और उसकी खुशी हासिल करने का ज़ोरदार ज़ब्बा रखे। कुरआन में है—

وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ

“और सफ़र के लिए रास्ते का खर्च साथ लो और सबसे बेहतर रास्ते का खर्च खुदा का तक़्वा है।” (कुरआन, 2:197)

6. हज का इरादा करते ही हज के लिए ज़ेहनी यकसूई और तैयारी शुरू कर दीजिए। हज की तारीख़ को ताज़ा कीजिए और हज के एक-एक काम की हक़ीक़त पर गौर कीजिए और खुदा का दीन, हज के इन अरकान के ज़रिए मोमिन बन्दे के दिल में जो ज़ब्बे पैदा करना चाहता है उन्हें समझने की कोशिश कीजिए और फिर एक चेतना रखनेवाले मोमिन की तरह पूरी चेतना के साथ हज के कामों को करके इन सच्चाइयों को अपने भीतर समाने और उनके मुताबिक़ ज़िन्दगी में सालेह इनक़िलाब लाने की कोशिश कीजिए जिसके लिए खुदा ने मोमिनों पर हज फ़र्ज़ किया है। खुदा का इरशाद है—

وَادْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ (198)

“और खुदा को याद करो जिस तरह याद करने की उसने तुम्हें हिदायत की है और यह हक़ीक़त है कि तुम लोग इससे पहले इन हक़ीक़तों से भटके हुए थे।” (कुरआन, 2:198)

इस मक़सद के लिए कुरआन पाक के उन हिस्सों को गहराई में उतरकर पढ़िए जिनमें हज की हक़ीक़त व अहमियत और हज से पैदा होनेवाली भावनाओं को ज़ाहिर किया गया है और उसके लिए रसूल (सल्ल०) की हदीसों और उन किताबों का पढ़ना भी फ़ायदेमंद रहेगा जिनमें हज के इतिहास और हज के अरकान की हक़ीक़त पर चर्चा की गई है।

7. हज के दौरान जो मस्जद दुआएँ हदीस की किताबों में मिलती हैं, उन्हें याद कीजिए और नबी (सल्ल०) के लफ्जों में खुदा से वही माँगिए जो खुदा के रसूल (सल्ल०) ने माँगा था ।

8. अपने हज की पूरी-पूरी हिफाजत कीजिए और ध्यान रखिए कि आपका हज कहीं उन दुनिया-परस्तों का हज न बन जाए जिनका आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है, इसलिए कि वे आखिरत से आँखें बन्द करके सब कुछ दुनिया ही में चाहते हैं । वे जब बैतुल्लाह पहुँचते हैं तो उनकी दुआ यह होती है—

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَالَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ (البقرة)

रब्बना आतिना फ़िद-दुन्या वमा लहू फ़िल आखिरति मिन ख़लाक ।

(कुरआन, 2:200)

“ऐ अल्लाह ! हमें जो कुछ देना है बस इसी दुनिया में दे दे । ऐसे (दुनियापरस्त) लोगों का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है ।”

आप हज के ज़रिए से दोनों दुनिया की कामयाबी तलब कीजिए और खुदा से दुआ कीजिए कि पालनहार ! मैं तेरे हुज़ूर इसलिए आया हूँ कि तू दोनों ज़िन्दगियों में मुझे कामयाब और बामुराद बना और यह दुआ करते रहिए—

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (البقرة)

रब्बना आतिना फ़िद-दुन्या ह-स-न-तव्वं वफ़िल आखिरति ह-स-न-तव्वं-वफ़िना 'अज़ाबन्नार ।

(कुरआन, 2:201)

“ऐ अल्लाह ! हमें इस दुनिया में भी भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ।”

9. हज के दौरान खुदा की नाफ़रमानी से बचने के एहसास को बराबर ज़िन्दा रखिए । हज का सफ़र खुदा के घर का सफ़र है । आप खुदा के मेहमान बनकर आए हैं, उससे बन्दगी का वचन ताज़ा करने गए हैं । हज़्रे अस्वद (काले पत्थर) पर हाथ रखकर आप गोया खुदा के हाथ में हाथ देकर वचन देते हैं, इत्तार करते हैं और उसको बोसा देकर खुदा के आस्ताने पर बोसा देते हैं, बार-बार तकबीर व तहलील की आवाज़ें बुलन्द करके अपनी वफ़ादारी ज़ाहिर करते हैं । ऐसी फ़िज़ा में सोचिए, किसी मामूली गुनाह और ख़ता की गन्दगी भी कितनी घिनौनी है । खुदा ने अपने दरबार में हाज़िर होनेवाले बन्दों को होशियार फ़रमाया है—

## وَلَا لُفُوقَ

बला फुसू-क

“खुदा की नाफरमानी की बातें न होनी चाहिएँ ।” — कुरआन, 2:197

10. हज के दौरान लड़ाई-झगड़े की बातों से पूरी तरह बचे रहिए । सफ़र के दौरान जब जगह-जगह भीड़ हो, परेशानियाँ हों, कदम-कदम पर स्वार्थ टकराएँ, कदम-कदम पर भावनाओं को ठेस लगे तो खुदा के मेहमान का काम यह है कि खुले दिल और त्याग से काम ले और हर एक के साथ माफ़ी और उदारता का बरताव करे, यहाँ तक कि नौकर को डाँटने से भी बचे । खुदा का इरशाद है—

## وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ

बला जिदा-ल फ़िल हज्ज ।

— कुरआन, 2:197

“और हज में लड़ाई-झगड़े की बातें न हों ।”

11. हज के दौरान शहवानी (वासनापूर्ण) बातों से भी बचने और बचे रहने का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए । सफ़र के दौरान जब भावनाओं के भड़कने और निगाह के आज़ाद हो जाने का अंदेशा कुछ ज्यादा होता है इसलिए आप भी ज्यादा चौकन्ने हो जाएँ और नफ़्स और शैतान की चालों से खुद को बचाए रखने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश करें । और अगर आपका जोड़ा आपके साथ हो तो न सिर्फ़ यह कि उससे ख़ास ताल्लुक कायम न कीजिए, बल्कि ऐसी बातों से भी सोच-समझकर बचे रहिए जो शहवानी भावनाओं के भड़कने की वजह बन सकती हों । खुदा ने होशियार करते हुए फ़रमाया है—

## الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَاتٌ ۖ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

“हज के महीने सबको मालूम हैं । जो आदमी इन मुक़रर महीनों में हज की नीयत करे, उसे ख़बरदार रहना चाहिए कि हज के दौरान शहवानी बातें न हों ।”  
(कुरआन, 2:197)

और नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी खुदा के इस घर की ज़ियारत के लिए यहाँ आया और वह बेहयाई और शहवानी बातों से दूचा रहा और फ़िस्क व फुजूर में नहीं पड़ा तो वह पाक व साफ़ होकर इस तरह लौटता है, जिस तरह

वह मौ के पेट से पाक व साफ पैदा हुआ था ।” (बुखारी, मुस्लिम)

12. अल्लाह की निशानियों का पूरा-पूरा एहतिराम कीजिए । किसी ज़ाहिरी और बातिनी सच्चाई के महसूस कराने और याद दिलाने के लिए खुदा ने जो चीज़ निशानी के तौरपर मुकर्रर फ़रमाई है उसको अरबी में ‘शअीरा’ कहते हैं ‘शआइर’ उसका बहुवचन है । हज के सिलसिले की सारी ही चीज़ें खुदापरस्ती की किसी न किसी हकीकत को महसूस कराने के लिए निशानी के तौरपर मुकर्रर की गई हैं, इन सबका आदर कीजिए । कुरआन में खुदा का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَتَتَوَّعُونَ فِضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا

“और ऐ ईमानवालो ! खुदापरस्ती की इन निशानियों की बेहुर्मती (अनादर) न करो, न हुर्मत के इन महीनों की बेहुर्मती करो, न कुरबानी के जानवरों पर हाथ डालो, न उन जानवरों पर हाथ डालो जिनकी गरदनों में खुदा की नज़ के तौरपर पट्टे पड़े हैं और न उन लोगों की राह में रुकावट डालो, जो अपने परवरदिगार की मेहरबानी और उसकी खुशी की तलाश में मकाने मोहतरम (काबा) की तरफ़ जा रहे हों ।”

(कुरआन, 5:2)

और सूरा हज में है—

وَمَنْ يُعْظِمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ

“और जो खुदापरस्ती की इन निशानियों का एहतिराम करे, जो खुदा ने मुकर्रर की हैं, तो यह दिलों के तक्वे की बात है ।”

(कुरआन, 22:32)

13. हज के कामों को पूरा करते हुए बड़ी आजिज़ी, बेकसी और बेबसी ज़ाहिर कीजिए कि खुदा को बन्दे की आजिज़ी और बेचारगी ही सबसे ज़्यादा पसन्द है ।

14. एहराम बाँधने के बाद, हर नमाज़ के बाद, हर बुलन्दी पर चढ़ते वक़्त, हर पस्ती की तरफ़ उतरते वक़्त, हर काफ़िले से मिलते वक़्त और हर सुबह को नींद से जागकर ऊँची आवाज़ से तलबिया पढ़िए । तलबिया यह है—

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنَّعْمَةَ لَكَ

## وَالْمُلْكُ لَا شَرِيكَ لَكَ. (مَعْلُومَةٌ)

लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक लब्बैक ला-शरी-क ल-क लब्बैक इन्नल  
हम-द वन-निअ-म-त ल-क वल मुल-क ला-शरी-क ल-क (मिशकात)

“मैं हाज़िर हूँ ऐ खुदा ! मैं हाज़िर हूँ ! तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ । बेशक तारीफ़ तेरे ही लिए है । नेमत सब तेरी ही है । सारी बादशाही तेरी ही है, तेरा कोई शरीक नहीं ।”

15. अरफ़ात के मैदान में हाज़िर होकर ज़्यादा से ज़्यादा तौबा व इसतिफ़ार कीजिए । कुरआन की हिदायत है—

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (البقرة)

“फिर तुम (मक्कावाले) भी वहीं से पलटो, जहाँ से और सारे लोग पलटते हैं, और खुदा से माफ़िरत चाहो ! बेशक खुदा बहुत ज़्यादा माफ़ करनेवाला और बहुत ज़्यादा रहम फ़रमानेवाला है । (कुरआन, 2:199)  
नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“खुदा के नज़दीक अरफ़े का दिन तमाम दिनों से ज़्यादा बेहतर है । उस दिन अल्लाह दुनिया के आसमान पर खास तवज्जोह फ़रमाकर फ़रिश्तों के सामने अपने हाज़ी बन्दों की आजिज़ी की हालत पर फ़ख़्र करता है । फ़रिश्तों से फ़रमाता है, ‘फ़रिश्तो ! देखो, मेरे बन्दे परेशान, धूप-में मेरे सामने खड़े हैं । ये लोग दूर-दूर से यहाँ आए हैं । मेरी रहमत की उम्मीद उन्हें यहाँ लाई है, हालाँकि उन्होंने मेरे अज़ाब को नहीं देखा ।’ इस फ़ख़्र के बाद लोगों को जहन्नम के अज़ाब से आज़ाद करने का हुक्म दिया जाता है ! अरफ़ा के दिन इतने लोग बर्ख़ो जाते हैं कि इतने किसी दिन भी नहीं बर्ख़ो जाते ।” (इब्ने हिब्बान)

16. मिना में पहुँचकर उन्हीं भावनाओं के साथ कुरबानी कीजिए, जिन भावनाओं के साथ खुदा के दोस्त हज़रत इबराहीम (अलै०) ने अपने प्यारे बेटे हज़रत इसमाईल (अलै०) की गरदन पर छुरी रखी थी और कुरबानी की इन भावनाओं को अपने दिल व दिमाग़ पर इस तरह छा जाने दीजिए कि ज़िन्दगी के हर मैदान में आप कुरबानी पेश करने के लिए तैयार रहें और ज़िन्दगी वाकई इस वचन की असली

तस्वीर बन जाए कि—

إِنْ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ.

“बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत एक अल्लाह के लिए है जो सारे आलमों का पालनहार है, जिसका कोई शरीक नहीं।”  
(कुरआन, 6:162-163)

17. हज के दिनों में बराबर खुदा की याद में लगे रहिए और किसी वक्त भी दिल को इस ज़िक्र से गाफ़िल न होने दीजिए। खुदा की याद ही तमाम इबादतों का असल जौहर है। खुदा का इरशाद है—

وَادْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۖ (البقرة)

“और खुदा की याद में लगे रहो, गिनती के इन कुछ दिनों में।” (कुरआन, 2:202)  
और फरमाया—

فَإِذَا قُضِيَتْ مَنَاسِكُكُمْ فَادْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَائَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۚ

“फिर जब तुम हज के तमाम अरकान पूरे कर चुको तो जिस तरह पहले अपने बाप-दादों का ज़िक्र करते थे उसी तरह अब खुदा का ज़िक्र करो, बल्कि उससे भी बढ़कर।”  
(कुरआन, 2:200)

हज के कामों का मक़सद ही यह है कि आप इन दिनों में लगातार खुदा की याद में डूबे रहें और इन दिनों में उसकी याद इस तरह दिल में रच-बस जाए कि फिर ज़िन्दगी की चहल-पहल और संघर्ष में कोई चीज़ उसकी याद से आपको गाफ़िल न कर सके। जाहिलियत के ज़माने में लोग हज के कामों को पूरा न करने के बाद अपने बाप-दादा की बड़ाई करते और डींगे मारते थे। खुदा ने हिदायत दी कि ये दिन खुदा की याद में गुज़ारो और उसी की बड़ाई बयान करो, जो वाकई बड़ा है।

18. खुदा के घर का परवानावार तवाफ़ कीजिए। खुदा का इरशाद है—

“और चाहिए कि अल्लाह के घर का तवाफ़ करें।”

नबी करीम (सल्ल०) का इरशाद है—

“खुदा हर दिन अपने हाज़ी बन्दों के लिए एक सौ बीस रहमतें उतारता है, जिसमें साठ रहमतें उनके लिए होती हैं जो बैतुल्लाह का तवाफ़ करते



हैं, चालीस उनके लिए जो वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं और बीस उन लोगों के लिए जो सिर्फ़ काबे को देखते रहते हैं ।” (बैहक्की)

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जिसने पचास बार अल्लाह के घर का तवाफ़ किया वह अपने गुनाहों से ऐसे पाक हो गया जैसे उसकी माँ ने उसको आज ही जन्म दिया है ।” (तिरमिज़ी)

## बेहतर समाज

### 23. माँ-बाप से व्यवहार के आदाब

1. माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार कीजिए और इस अच्छे-व्यवहार की जो तौफ़ीक़ आपको मिली है उसे दोनों दुनिया की सआदत समझिए। खुदा के बाद इनसान पर सबसे ज्यादा हक़ माँ-बाप का ही है। माँ-बाप के हक़ की अहमियत और बढ़ाई का अन्दाज़ा इससे कीजिए कि क़ुरआन पाक ने जगह-जगह माँ-बाप के हक़ को खुदा के हक़ के साथ बयान किया है और खुदा की शुक्रगुजारी की ताकीद के साथ-साथ माँ-बाप की शुक्रगुजारी की ताकीद भी की है—

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ (نبي اسرائيل)

“और तुम्हारे पालनहार ने फैसला फ़रमा दिया है कि तुम खुदा के सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो।”  
(क़ुरआन, 17:23)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल०) से पूछा— “कौन-सा अमल खुदा को सबसे ज्यादा प्यारा है?” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया— “वह नमाज़ जो वक़्त पर पढ़ी जाए।” मैंने फिर पूछा— “इसके बाद कौन-सा काम खुदा को सबसे ज्यादा पसन्द है?” फ़रमाया— माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार। मैंने पूछा, “इसके बाद?” फ़रमाया— “खुदा की राह में जिहाद करना।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा—

“मैं आपके हाथ पर हिज़रत और जिहाद के लिए बैअत करता हूँ और खुदा से उसका बदला चाहता हूँ।” नबी (सल्ल०) ने पूछा— “क्या तुम्हारे माँ-बाप में से कोई एक ज़िन्दा है?” उन्होंने कहा— “जी हाँ! बल्कि (खुदा का शुक्र है) दोनों ज़िन्दा हैं।” आपने फ़रमाया— “तो क्या वाकई तुम खुदा से अपनी हिज़रत और जिहाद का बदला चाहते

हो ?” उन्होंने कहा, “जी हाँ !” (मैं खुदा से बदला चाहता हूँ) । नबी (सल्ल०) ने इशारा फरमाया— “तो जाओ, अपने माँ-बाप की खिदमत में रहकर उनके साथ अच्छा बरताव करो ।” (मुस्लिम)

हजरत अबू उमामा (रज़ि०) फरमाते हैं कि एक आदमी ने नबी (सल्ल०) से पूछा—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! माँ-बाप का औलाद पर क्या हक है ?”  
आपने फरमाया, “माँ-बाप ही तुम्हारी जन्त हैं और माँ-बाप ही दोख़्ख ।”

(इब्ने माजा)

यानी उनके साथ नेक सुलूक करके तुम जन्त के हक़दार होगे और उनके हक़ों को मारकर तुम जहन्नम के ईधन बनोगे ।

2. माँ-बाप के शुक्रगुज़ार रहिए । मुहसिन की शुक्रगुज़ारी और एहसानमंदी शराफ़त का पहला तकाज़ा है, और सच यह है कि हमारे वुजूद का नज़र आनेवाला सबब माँ-बाप हैं, फिर माँ-बाप ही की परवरिश और निगरानी में हम पलते-बढ़ते और चेतना को पहुँचते हैं और वे जिस ग़ैर मामूली क़ुरबानी, बेमिसाल ज़ौफ़िशानी और बड़ी ही मुहब्बत के साथ हमारी सरपरस्ती फरमाते हैं, उसका तकाज़ा है कि हमारा सीना उनकी अक़ीदत व एहसानमन्दी और बड़प्पन और मुहब्बत से भरा हुआ हो और हमारे दिल की नस-नस उनकी शुक्रगुज़ार हो, यही वजह है कि खुदा ने अपनी शुक्रगुज़ारी के साथ-साथ उनकी शुक्रगुज़ारी की ताकीद फरमाई है—

اِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ  
وَإِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لِلْكَافِرِينَ

“(हमने वसीयत की कि) मेरा शुक्र अदा करो और अपने माँ-बाप के शुक्रगुज़ार रहो ।”  
(कुरआन, 31:14)

3. माँ-बाप को हमेशा खुश रखने की कोशिश कीजिए और उनकी मरज़ी और मिज़ाज के खिलाफ़ कभी कोई ऐसी बात न कहिए जो उनको नागवार हो, खास तौर पर बुढ़ापे में जब मिज़ाज कुछ चिड़चिड़ा और खुरा हो जाता है और माँ-बाप कुछ ऐसे तकाज़े और माँगें करने लगते हैं जो उम्मीद के खिलाफ़ होते हैं, उस वक़्त भी हर बात को खुशी-खुशी सहन कीजिए और उनकी किसी बात से उकताकर जवाब में कोई ऐसी बात हरगिज़ न कीजिए जो उनको नागवार हो और उनकी भावनाओं को ठेस लगे ।

إِمَّا يَنْفَرَنَّ مِنْكَ الْكَبِيرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرُهُمَا

“अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे की उम्र को पहुँच जाएँ तो तुम उनको उफ़ तक न कहो, न उन्हें झिड़कियाँ दो ।”

(कुरआन, 17:23)

असल में बुढ़ापे की उम्र में बात को बरदाश्त करने की ताकत नहीं रहती और कमजोरी की वजह से अपनी अहमियत का एहसास बढ़ जाता है । इसलिए ज़रा-ज़रा सी बात भी महसूस होने लगती है । इसलिए इस नज़ाकत का ध्यान रखते हुए अपने किसी काम और बात से माँ-बाप को नाराज़ होने का मौक़ा न दीजिए ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“ख़ुदा की खुशनूदी बाप की खुशनूदी में है और ख़ुदा की नाराज़ी बाप की नाराज़ी में है ।”  
(तिरमिज़ी, इब्ने हिब्बान, हाकिम)

यानी अगर कोई अपने ख़ुदा को खुश रखना चाहे तो वह अपने बाप को खुश रखे, बाप को नाराज़ करके वह ख़ुदा के ग़ज़ब को भड़काएगा ।

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) ही का बयान है कि एक आदमी अपने माँ-बाप को रोता हुआ छोड़कर नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में हिज़रत पर बैअत करने के लिए हाज़िर हुआ तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जाओ, अपने माँ-बाप के पास वापस जाओ और उनको उसी तरह खुश करके आओ जिस तरह उनको रुलाकर आए हो ।” (अबू दाऊद)

4. दिलो जान से माँ-बाप की ख़िदमत कीजिए । अगर आपको ख़ुदा ने इसका मौक़ा दिया है तो असल में यह इस बात की तौफ़ीक़ है कि आप ख़ुद को ज़न्नत का हक़दार बना सकें और ख़ुदा की खुशनूदी हासिल कर सकें । माँ-बाप की ख़िदमत से ही दोनों ज़हान की भलाई, सआदत और बड़ाई हासिल होती है और आदमी दोनों ज़हान की आफ़तों से बचा रहता है ।

हज़रत अनस (रज़ि०) का बयान है कि नबी अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जो आदमी यह चाहता है कि उसकी उम्र लम्बी की जाए और उसकी रोज़ी में फैलाव हो, उसको चाहिए कि अपने माँ-बाप के साथ भलाई करे और रिश्ते-नातों को जोड़े रहे ।”  
(अत्तारिब वत्तर्हीब)

नबी (सल्ल०) का इश़ाद है—

“वह आदमी ज़लील हो, फिर ज़लील हो और फिर ज़लील हो ।”  
लोगों ने पूछा— “ऐ ख़ुदा के रसूल कौन आदमी ?” आपने फ़रमाया,  
“वह आदमी जिसने अपने माँ-बाप को, बुढ़ापे की हालत में पाया—

दोनों को पाया या किसी एक को और फिर (उनकी खिदमत करके) जन्नत में दाखिल न हुआ ।” (मुस्लिम)

एक मौके पर तो आपने माँ-बाप की खिदमत को जिहाद जैसी अहम इबादत पर भी तरजीह दी और एक सहाबी को जिहाद में जाने से रोककर माँ-बाप की खिदमत की ताकीद फरमाई ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी नबी (सल्ल०) के पास जिहाद में शरीक होने की ग़रज़ से हाज़िर हुआ । नबी (सल्ल०) ने उससे पूछा—

“तुम्हारे माँ-बाप ज़िन्दा हैं ?” उसने कहा, “जी हाँ, ज़िन्दा हैं ।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जाओ उनकी खिदमत करते रहो, यही जिहाद है ।” (बुख़ारी, मुस्लिम)

5. माँ-बाप का अदब व एहतिराम कीजिए और कोई भी ऐसी बात या हरकत न कीजिए जो उनके एहतिराम के खिलाफ़ हो । क़ुरआन में है—

وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝ (نساء: 36)

“और उनसे एहतिराम से बात कीजिए ।” (क़ुरआन, 17:23)

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से पूछा, “क्या आप यह चाहते हैं कि जहन्नम से दूर रहें और जन्नत में दाखिल हों ?” इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने कहा, “क्यों नहीं ? खुदा की क़सम ! यही चाहता हूँ ।” हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) ने पूछा, “आपके माँ-बाप ज़िन्दा हैं ?” इब्ने अब्बास ने कहा, “जी हाँ, मेरी माँ ज़िन्दा हैं ।” इब्ने उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया, “अगर तुम उनके साथ नर्मी के साथ बातें करो, उनके खाने-पीने का खयाल रखो तो ज़रूर जन्नत में जाओगे, बशर्ते कि तुम बड़े गुनाहों से बचते रहो ।”

(अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने एक बार दो आदमियों को देखा । एक से पूछा, “यह दूसरे तुम्हारे कौन हैं ?” उसने कहा “ये मेरे बाप हैं ।” उन्होंने फ़रमाया, “देखो, न उनका नाम लेना, न कभी उनसे आगे चलना और न कभी उनसे पहले बैठना ।” (अल-अदबुल मुफ़रद)

6. माँ-बाप के साथ आजिज़ी और इनकिसारी से पेश आइए—

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ ۝

“और आजिजी और नमी से उनके सामने बिछे रहो ।” (कुरआन. 17:24)

आजिजी से बिछे रहने का मतलब यह है कि हर वक्त उनके रुतबे को ध्यान में रखो और कभी उनके सामने अपनी बड़ाई न जताओ और न उनकी शान में गुस्ताखी करो ।

7. माँ-बाप से मुहब्बत कीजिए और इसको अपने लिए सआदत और आखिरत के अच्छे बदले की वजह समझिए । हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं—

“जो भी नेक औलाद माँ-बाप पर मुहब्बत भरी एक नज़र डालती है, उसके बदले में खुदा उसको एक मक़बूल हज़ का सवाब बरूशता है ।” लोगों ने पूछा, “ऐ खुदा के रसूल ! अगर कोई एक दिन में सौ बार इसी तरह रहमत व मुहब्बत की नज़र डाले ।” आपने फ़रमाया, “जी हाँ ! अगर कोई सौ बार ऐसा करे तब भी । खुदा (तुम्हारे खयाल से) बहुत बड़ा और (तंगदिली जैसे ऐबों से) बिलकुल पाक है ।”

(मुस्लिम)

8. माँ-बाप की दिलोजान से इताअत कीजिए । अगर वे कुछ ज़्यादती भी कर रहे हों तब भी खुशदिली से इताअत कीजिए और उनके बड़े एहसानों को नज़र के सामने रखकर उनकी वे माँगें भी खुशी-खुशी पूरी कीजिए जो आपके ज़ौक और मिजाज पर बोझ हों, बशर्ते कि वे दीन के खिलाफ़ न हों । हज़रत अबू सईद (रज़ि०) का बयान है कि यमन का एक आदमी नबी (सल्ल०) के पास आया । नबी (सल्ल०) ने उससे पूछा—

“यमन में तुम्हारा कोई है ?” उसने कहा, (जी हाँ ! ) मेरे माँ-बाप हैं । आपने पूछा, उन्होंने तुम्हें इजाज़त दे दी है ?” उसने कहा, “नहीं तो (मैंने उनसे इजाज़त तो नहीं ली है) ।” आपने फ़रमाया, “अच्छा तो तुम वापस जाओ और माँ-बाप से इजाज़त लो । अगर वे इजाज़त दे दें, तब तो जिहाद में शिरकत करो, वरना (उनकी खिदमत में रहकर) उनके साथ अच्छा सुलूक करते रहो ।”

(अबू दाऊद)

माँ-बाप की बात मानने की अहमियत का अन्दाज़ा इस बात से कीजिए कि एक आदमी मीलों दूर से आता है और चाहता है कि नबी (सल्ल०) के साथ दीन की सरबुलन्दी के लिए जिहाद में शरीक हो, लेकिन नबी (सल्ल०) उसको लौटा देते हैं और फ़रमाते हैं कि जिहाद में शिरकत भी तुम उसी शक़ल में कर सकते हो जब तुम्हारे माँ-बाप दोनों तुम्हें इजाज़त दें ।

हजरत इब्ने अब्बास (रजि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“जिस आदमी ने इस हाल में सुबह की कि वह उन हिदायतों और हुक्मों में खुदा की बात माननेवाला रहा जो उसने माँ-बाप के हक्क में उतारे हैं, तो उसने इस हाल में सुबह की कि उसके लिए जन्नत के दो दरवाजे खुले हुए हैं और अगर माँ-बाप में से कोई एक हो तो जन्नत का एक दरवाजा खुला हुआ है और जिस आदमी ने इस हाल में सुबह की कि माँ-बाप के बारे में खुदा के भेजे हुए हुक्मों और हिदायतों से मुँह मोड़े हुए है तो उसने इस हाल में सुबह की कि उसके लिए दो ज़ख के दो दरवाजे खुले हुए हैं और माँ-बाप में से कोई एक है तो दो ज़ख का एक दरवाजा खुला हुआ है।” उस आदमी ने पूछा, “ऐ खुदा के रसूल (सल्ल०) ! अगर माँ-बाप उसके साथ ज़्यादती कर रहे हों तब भी ?” फरमाया, “हाँ अगर ज़्यादती कर रहे हों तब भी ! अगर ज़्यादती कर रहे हों तब भी ! अगर ज़्यादती कर रहे हों तब भी।” (मिशकात)

9. माँ-बाप को अपने माल का मालिक समझिए और उनपर दिल खोलकर खर्च कीजिए। कुरआन में है—

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ خَيْرٍ فَلِلَّوَالِدَيْنِ (البقرة)

“लोग आपसे पूछते हैं, हम क्या खर्च करें ? जवाब दीजिए कि जो भी माल तुम खर्च करो, उसके पहले हक्कदार माँ-बाप हैं।”

(कुरआन, 2:215)

एक बार नबी (सल्ल०) के पास एक आदमी आया और अपने बाप की शिकायत करने लगा कि जब चाहते हैं मेरा माल ले लेते हैं। नबी (सल्ल०) ने उस आदमी के बाप को बुलवाया, लाठी टेकता हुआ एक बूढ़ा कमज़ोर आदमी हाज़िर हुआ। आपने उस बूढ़े आदमी से पूछा तो उसने कहना शुरू किया—

“खुदा के रसूल ! एक ज़माना था जब यह कमज़ोर और बेबस था और मुझमें ताक़त थी, मैं मालदार था और यह खाली हाथ था। मैंने कभी इसको अपनी चीज़ लेने से नहीं रोका, आज मैं कमज़ोर हूँ और यह तन्दुरुस्त और ताक़तवर है, मैं खाली हाथ हूँ और यह मालदार है। अब यह अपना माल मुझसे बचा-बचाकर रखता है।”

बूढ़े की ये बातें सुनकर प्यारे नबी (सल्ल०) रो पड़े और (बूढ़े के लड़के की ओर खिताब करके) फरमाया, “तू और तेरा माल, तेरे बाप का है।”

10. माँ-बाप अगर ग़ैर मुस्लिम हों तब भी उनके साथ अच्छा सुलूक कीजिए । उनका अदब व एहतियार और उनकी खिदमत बराबर करते रहिए । अलबत्ता अगर वे शिर्क व गुनाह का हुक्म दें तो उनकी इताअत से इनकार कर दीजिए और उनका कहा हरगिज़ न मानिए ।

وَأَنْ جَاهِدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا  
وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا

“और अगर माँ-बाप दबाव डालें कि मेरे साथ किसी को शरीक बनाओ, जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं है, तो हरगिज़ उनका कहना न मानो और दुनिया में उनके साथ नेक बरताव करते रहो ।” (कुरआन, 31:15)

हज़रत अस्मा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल०) के मुबारक दौर में मेरी माँ आई और उस वक़्त वह मुशरिक (शिर्क करनेवाली) थीं । मैंने नबी (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि मेरे पास मेरी माँ आई हैं और वह इस्लाम से नफ़रत करती हैं । क्या मैं उनके साथ अच्छा व्यवहार करूँ ? आपने फ़रमाया, “हाँ तुम अपनी माँ के साथ अच्छा-व्यवहार करती रहो ।” (बुख़ारी)

11. माँ-बाप के लिए बराबर दुआ भी करते रहिए और उनके एहसानों को याद कर-करके खुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाइए और बहुत ही ज़्यादा दिल लगाकर और दिल की गहराइयों के साथ उनके लिए रहम व करम की दरखास्त कीजिए ।

खुदा का इरशाद है—

وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا

“और दुआ करो कि पालनहार ! इन दोनों पर रहम फ़रमा, जिन दोनों ने बचपन में मुझे पाला-पोसा था ।” (कुरआन, 17:24)

यानी, ऐ परवरदिगार ! बचपन की बेबसी में जिस रहमत, मेहनत और मुहब्बत से उन्होंने मुझे पाला-पोसा और मेरे लिए अपने ऐश को कुरबान किया, पालनहार ! अब ये बुढ़ापे की कमज़ोरी और बेबसी में मुझसे ज़्यादा खुद रहमत व मुहब्बत के मुहताज हैं । ऐ खुदा ! मैं उनका कोई बदला नहीं दे सकता । तू ही उनकी सरपरस्ती फ़रमा और उनकी इस हालत पर रहम की नज़र कर ।

12. माँ की खिदमत का ख़ास खयाल रखिए । माँ फ़ितरी तौर पर ज़्यादा कमज़ोर होती है, ज़्यादा महसूस करती है और आपकी खिदमत व सुलूक की ज़्यादा ज़रूरतमंद



भी होती है। फिर उसके एहसान व कुरबानियाँ भी बाप के मुक्काबले में कहीं ज्यादा हैं, इसलिए इस्लाम ने माँ का हक ज्यादा बताया है और माँ के साथ अच्छे व्यवहार को खास तौर से कहा है। कुरआन पाक का इशारा है—

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا  
وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۝ (الاحقاف)

“और हमने इनसान को माँ-बाप के साथ भलाई करने की ताकीद की। उसकी माँ तकलीफ़ उठा-उठाकर उसको पेट में लिए-लिए फिरी और तकलीफ़ ही से जना और पेट में उठाने और दूध पिलाने की यह (तकलीफ़ देनेवाली) मुद्त ढाई साल है।” (कुरआन, 46:15)

कुरआन ने माँ-बाप दोनों के साथ अच्छे सुलूक की ताकीद करते हुए खास तौरपर माँ के लगातार दुख उठाने और कठिनाइयाँ झेलने का नक़शा बड़े ही असर भरे अन्दाज़ में खींचा है और बड़ी ही खूबी के साथ मन को छूनेवाले अन्दाज़ में इस सच्चाई की ओर इशारा किया है कि बाप के मुक्काबले में जाँ-निसार माँ तुम्हारी खिदमत व सुलूक की ज्यादा हक़दार है और फिर इसी हक़ीक़त को खुदा के रसूल (सल्ल०) ने भी खोल-खोलकर बयान फ़रमाया है।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी नबी (सल्ल०) की खिदमत में आया और पूछा—

“ऐ खुदा के रसूल ! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज्यादा हक़दार कौन है ?”

आपने फ़रमाया, “तेरी माँ !”

उसने पूछा, “फिर कौन है ?”

आपने फ़रमाया, “तेरी माँ !”

उसने पूछा, “फिर कौन है ?”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तेरी माँ !”

उसने कहा, “फिर कौन ?”

तो आपने फ़रमाया, “तेरा बाप !”

(अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत जाहमा (रज़ि०) नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुए और कहा—

“ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मेरा इरादा है कि मैं आपके साथ जिहाद

में शिरकत करूँ और इसी लिए आया हूँ कि आपसे इस मामले में मशविरा लूँ ।  
(फ़रमाइए, आपका क्या हुक्म है ?) ”

“तुम्हारी माँ (ज़िन्दा) है ?”

जाहमा ने कहा, “जी हाँ ! (ज़िन्दा हैं)”

नबी (सल्ल०) ने इशारा फ़रमाया—

“तो जाओ और उन्हीं की खिदमत में लगे रहो, क्योंकि जन्नत उन्हीं  
के क़दमों में है ।” (इब्ने माजा, नसई)

हज़रत उवैस करनी (रह०) नबी (सल्ल०) के दौर में मौजूद थे पर उनसे मुलाक़ात का शरफ़ हासिल न कर सके । उनकी एक बूढ़ी माँ थीं । दिन-रात उन्हीं की खिदमत में लगे रहते । नबी (सल्ल०) के दीदार की बड़ी आरज़ू थी और कौन मोमिन होगा जो इस तमन्ना में न तड़पता हो कि उसकी आँखें रसूल (सल्ल०) के दीदार से रौशन हों । चुनाँचे हज़रत उवैस (रह०) ने आना भी चाहा, लेकिन नबी (सल्ल०) ने मना फ़रमाया । हज़ का फ़र्ज़ अदा करने की भी उनके दिल में बड़ी आरज़ू थी, लेकिन जब तक उनकी माँ ज़िन्दा रहीं, उनकी तनहाई के खयाल से हज़ नहीं किया और उनकी वफ़ात के बाद ही यह आरज़ू पूरी हो सकी ।

13. दूध शरीक माँ के साथ भी अच्छा व्यवहार कीजिए, उनकी खिदमत कीजिए और अदब व एहतिराम से पेश आइए । हज़रत अबू तुफ़ैल (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने ज़ाराना नामी जगह पर नबी (सल्ल०) को देखा कि आप गोश्त बाँट रहे हैं, इतने में एक औरत आई और नबी (सल्ल०) के बिलकुल ही करीब पहुँच गई । आपने (सल्ल०) उनके लिए अपनी चादर बिछा दी । वह उसपर बैठ गई । मैंने लोगों से पूछा, “यह कौन साहिबा हैं ?”

लोगों ने बताया कि यह नबी (सल्ल०) की माँ हैं । जिन्होंने आपको दूध पिलाया था । (अबू दाऊद)

14. माँ-बाप के मरने के बाद भी उनका खयाल रखिए और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए नीचे की बातों पर अमल कीजिए—

(i) माँ-बाप के लिए माग़फ़िरत की दुआएँ बराबर करते रहिए । कुरआन पाक ने ईमानवालों को यह दुआ सिखाई है—

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

“रब्बनग़फ़िर ली वलि वालिदय-य व लिल मुमिनी-न यौ-म

“पालनहार ! मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मेरे माँ-बाप को और सब ईमानवालों को उस दिन माफ़ फ़रमा दे, जबकि हिसाब कायम होगा ।”

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि मरने के बाद जब मय़ित के दर्जे बुलन्द होते हैं तो वह हैरत से पूछता है कि यह कैसे हुआ ! खुदा की तरफ़ से उसे बताया जाता है कि तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की दुआ करती रही (और खुदा ने उसको क़बूल फ़रमा लिया) ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ही का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जब कोई आदमी इंतिकाल कर जाता है तो उसके अमल की मोहलत ख़त्म हो जाती है, सिर्फ़ तीन चीज़ें ऐसी हैं जो मरने के बाद भी फ़ायदा पहुँचाती रहती हैं—

पहली, सद्क-ए-जारिया,

दूसरी, उसका (फैलाया हुआ वह) इल्म जिससे लोग फ़ायदा उठाएँ ।

तीसरी, वह नेक औलाद, जो उसके लिए मग़फ़िरत की दुआ करती रहे ।

(ii) माँ-बाप के किए हुए वादे और वसीयत को पूरा कीजिए । माँ-बाप ने अपनी ज़िन्दगी में बहुत-से लोगों से कुछ वायदे किए होंगे । अपने खुदा से कुछ अहद किया होगा, कोई नज़्र मानी होगी, किसी को कुछ माल देने का वादा किया होगा, उनके ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ा रह गया होगा और अदा करने का मौक़ा न पा सके होंगे, मरते वक़्त कुछ वसीयतों की होंगी, आप अपनी हद तक इन सारे कामों को पूरा कीजिए ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) का बयान है कि हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि०) ने नबी (सल्ल०) से अर्ज़ किया—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरी माँ ने नज़्र मानी थी, लेकिन वह नज़्र पूरी करने से पहले ही वफ़ात पा गई, क्या मैं उनकी तरफ़ से यह नज़्र पूरी कर सकता हूँ ?” नबी (सल्ल०) ने इश़ाद फ़रमाया, “क्यों नहीं ! तुम ज़रूर उनकी तरफ़ से नज़्र पूरी कर दो ।”

(iii) बाप के दोस्तों और माँ की सहेलियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करते रहिए । उनका एहतिराम कीजिए । उनको अपने मशविरो में अपने बुज़ुर्गों की तरह शरीक रखिए । उनकी राय और मशविरो की इज़ज़त कीजिए ।

एक मौक़े पर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“सबसे अच्छा व्यवहार यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्तों और साथियों के साथ भलाई करे ।”

एक बार हज़रत अबूबर्दा (रज़ि०) बीमार हुए और मर्ज़ बढ़ता ही गया । यहाँ तक कि बचने की कोई उम्मीद न रही तो हज़रत यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) बहुत दूर से सफ़र करके उनका हाल मालूम करने के लिए तशरीफ़ लाए । हज़रत अबूबर्दा (रज़ि०) ने उन्हें देखा तो ताज्जुब से पूछा, “तुम यहाँ कहाँ ?”

यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह ने कहा, “मैं यहाँ सिर्फ़ इसलिए आया हूँ कि आपका हाल मालूम करूँ क्योंकि वालिद से आपके ताल्लुकात बड़े गहरे थे ।”

हज़रत अबूबर्दा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जब मैं मदीने आया तो मेरे पास अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) तशरीफ़ लाए और कहने लगे, “अबूबर्दा तुम जानते हो, मैं तुम्हारे पास क्यों आया हूँ ?” मैंने कहा, “मैं तो नहीं जानता कि आप क्यों तशरीफ़ लाए हैं ।” इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया—

“मैंने नबी (सल्ल०) को फ़रमाते सुना है कि जो आदमी कब्र में अपने बाप के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहता हो, उसको चाहिए कि बाप के मरने के बाद बाप के दोस्त-साथी के साथ अच्छा व्यवहार करे और फिर फ़रमाया कि भाई ! मेरे बाप हज़रत उमर और आपके बाप में गहरी दोस्ती थी । मैं चाहता हूँ कि इस दोस्ती को निभाऊँ और उसके हकों को अदा करूँ ।” (इब्ने हिब्बान)

(iv) माँ-बाप के रिश्तेदारों के साथ भी बराबर अच्छा व्यवहार करते रहिए और रिश्तेदारों का पूरी तरह ख़याल रखिए । इन रिश्तेदारों से बेनियाज़ी और बेपरवाही असल में माँ-बाप से बेनियाज़ी है ।

नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“तुम अपने बाप-दादा से हरगिज़ बेपरवाई न बरतों, माँ-बाप से बेपरवाई बरतना खुदा की नाशुक्री है ।”

15. अगर ज़िन्दगी में, खुदा न करे, माँ-बाप के साथ व्यवहार करने और उनके हकों को अदा करने में कोताही हो गई है तो फिर भी खुदा की रहमत से मायूस न हों । मरने के बाद उनके हक़ में बराबर माफ़िरत की दुआ करते रहिए । उम्मीद है कि खुदा आपकी कोताही को दरगुज़र फ़रमाए और आपकी गिनती अपने नेक बन्दों में फ़रमा दे ।

हज़रत अनस (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“अगर खुदा का कोई बन्दा ज़िन्दगी में माँ-बाप का नाफ़रमान रहा और माँ-बाप में से किसी एक का या दोनों का इसी हाल में इंतिक़ाल हो गया, तो अब उसको चाहिए कि वह अपने माँ-बाप के लिए बराबर दुआ करता रहे और खुदा से उनकी बख़्शिश की दरखास्त करता रहे, यहाँ तक कि खुदा उसको अपनी रहमत से नेक लोगों में लिख दे ।”

## 24. शौहर और बीवी के आदाब

इस्लाम जिस ऊँची तहज़ीब और रहन-सहन की दावत देता है, वह उसी वक़्त वुज़ूद में आ सकता है जब हम एक साफ़-सुथरा समाज कायम करने में कामयाब हों और साफ़-सुथरे समाज की तामीर के लिए ज़रूरी है कि आप खानदानी व्यवस्था को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत और कामयाब बनाएँ। खानदानी ज़िन्दगी की शुरूआत शौहर और बीवी के पाक-साफ़ ताल्लुक से होती है और इस ताल्लुक की खुशगवारी और मज़बूती उसी वक़्त मुमकिन है जब शौहर और बीवी दोनों ही साथ मिलकर गुज़ारनेवाली ज़िन्दगी के आदाब और फ़र्ज़ों को ख़ूब अच्छी तरह जानते हों और उन आदाब और फ़र्ज़ों को पूरा करने के लिए पूरा दिल लगाकर खुलूस और यकसूई के साथ मुस्तैद और सरगर्म हों।

नीचे हम पहले उन आदाब और फ़र्ज़ों को बयान करते हैं जिनका ताल्लुक शौहर से है और फिर उन आदाब और फ़र्ज़ों का ज़िक्र करना है जिनका ताल्लुक बीवी से है।

### शौहर की जिम्मेदारियाँ

1. बीवी के साथ अच्छे व्यवहार की ज़िन्दगी गुज़ारिए। उसके हकों को दिल खोलकर अदा कीजिए और हर मामले में एहसान और ईसार का ख़वैया अपनाइए। खुदा का इरशाद है—

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۝

“और उनके साथ भले तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारो।” (क़ुरआन, 4:19)

नबी (सल्ल०) ने विदाई हज़ के मौक़े पर एक बड़े इज्तिमा (सभा) को खिताब करते हुए हिदायत फ़रमाई—

“लोगो सुनो ! औरतों से अच्छे व्यवहार के साथ पेश आओ क्योंकि वे तुम्हारे पास कैदियों की तरह हैं। तुम्हें उनके साथ सख्ती का बरताव करने का कोई हक़ नहीं, सिवाए उस हालत में कि जब उनकी तरफ़ से कोई खुली हुई नाफ़रमानी सामने आए। अगर वे ऐसा कर बैठें तो फिर खाबग़ाहों में उनसे अलग रहो और उन्हें मारो तो ऐसा न मारना कि कोई भारी चोट आए और फिर जब वे तुम्हारे कहने पर चलने लगें तो उनको खाहमखाह सताने के बहाने न ढूँढो। देखो, सुनो ! तुम्हारे कुछ हक़ तुम्हारी बीवियों पर हैं और तुम्हारी बीवियों के कुछ हक़ तुम्हारे ऊपर हैं। उनपर

तुम्हारा हक यह है कि वे तुम्हारे बिस्तरों को उन लोगों से न रौंदवाएँ जिनको तुम नापसन्द करते हो और तुम्हारे घरों में ऐसे लोगों को हरगिज़ न घुसने दें जिनका आना तुम्हें नागवार हो । और सुनो, उनका तुमपर यह हक है कि तुम उन्हें अच्छा खिलाओ और अच्छा पहनाओ ।”

(रियाज़ुस्सालिहीन)

यानी उनके खिलाने-पिलाने का ऐसा इन्तिज़ाम कीजिए जो मियाँ-बीवी के बेमिसाल क़रीबी, दिली ताल्लुकात और साथ रहने के ज़ब्जे की शान के मुताबिक़ हो ।

2. जहाँ तक हो सके बीवी से खुशगुमान रहिए और उसी के साथ निबाह करने में बरदाश्त करने और ऊँचा हौसला दिखानेवाले रवैए को अपनाइए । अगर उसमें शक़ल व रसूरत या आदत व अख़लाक़ या सलीक़ा और हुनर के एतिबार से कोई कमज़ोरी भी हो तो सब्र के साथ उसे पी जाइए और उसकी ख़ूबियों पर निगाह रखते हुए खुले दिल और ऊँचे हौसले के साथ त्याग और सुलह से काम लीजिए । खुदा का इरशाद है—

وَالصُّلْحُ خَيْرٌ .

“और सुलह भलाई ही है ।”

और ईमानवालों को हिदायत की गई है—

فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا

كَثِيرًا (النساء: 19)

“फिर अगर वे तुम्हें (किसी वजह से) नापसन्द हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो, पर खुदा ने उसमें (तुम्हारे लिए) बहुत कुछ भलाई रख दी हो ।” (क़ुरआन, 4:19)

इसी बात को नबी (सल्ल०) ने एक हदीस में यूँ कहा है—

“कोई ईमानवाला मर्द अपनी ईमानवाली बीवी से नफ़रत न करे । अगर बीवी की कोई आदत उसको नापसन्द है तो हो सकता है दूसरी आदत उसको पसन्द आ जाए ।”

सच तो यह है कि हर औरत में किसी न किसी पहलू से कोई न कोई कमज़ोरी ज़रूर होगी और अगर शौहर किसी ऐब को देखते ही उसकी ओर से निगाहें फेर ले और दिल बुरा कर ले तो फिर किसी ख़ानदान में धरेलू खुशगवारी मिल ही

न सकेगी। हिकमत का तक्काज़ा तो यही है कि आदमी दरगुज़र से काम ले और खुदा पर भरोसा रखते हुए औरत के साथ खुशदिली से निबाह करने की कोशिश करे। हो सकता है कि खुदा उस औरत के वास्ते से मर्द को कुछ ऐसी भलाइयाँ दे दे, जिन तक मर्द की कोताह नज़र न पहुँच रही हो, जैसे औरत में दीन व ईमान और अमल की कुछ ऐसी खुली खूबियाँ हों जिनकी वजह से वह पूरे खानदान के लिए रहमत साबित हो या उसकी ज़ात से कोई ऐसी नेक रूह तुजूद में आए जो एक बड़ी आबादी को फ़ायदा पहुँचाए और रहती ज़िन्दगी के लिए बाप के हक़ में सदक़-ए-ज़ारिया (जारी रहनेवाली नेकी) बने या औरत मर्द में सुधार लाने का ज़रिया बने और उसको जन्नत से करीब करने में मददगार साबित हो या फिर उसकी किस्मत से दुनिया में खुदा उस मर्द को बहुत-सी रोज़ी और खुशहाली दे। बहरहाल औरत के किसी ज़ाहिरी ऐब को देखकर बेसब्री के साथ मियाँ-बीवी के ताल्लुक को बरबाद न कीजिए, बल्कि हिकमत के साथ-साथ धीरे-धीरे घर के माहौल को ज़्यादा से ज़्यादा खुशगवार बनाने की कोशिश कीजिए।

3. माफ़ करने और मेहरबानी करने का रवैया अपनाइए और बीवी की कोताहियों, नादानियों और सरकशियों से आँखें चुरा जाइए। औरत सूझ-बूझ और अक्ल के एतिबार से कमज़ोर और बहुत-ही ज़ब्बाती होती है। इसलिए सब्र व सुकून, रहमत व मुहब्बत और दिल के खुलूस के साथ उसको सुधारने की कोशिश कीजिए और सब्र व ज़ब्त से काम लेते हुए निबाह कीजिए।

खुदा का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوَّالَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ  
وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (النساء)

“ईमानवालो ! तुम्हारी कुछ बीवियाँ और कुछ औलादें तुम्हारी दुश्मन हैं, सो उनसे बचते रहो। अगर तुम माफ़ी, मेहरबानी, खुलूस और दिल की गहराई से काम लो तो यत्नीन रखो कि खुदा बहुत-ही ज़्यादा रहम करनेवाला है।”

(कुरआन, 64:14)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“आरतों के साथ अच्छा व्यवहार करो। औरत पसली से पैदा की गई है और पसलियों में सबसे ज़्यादा ऊपर का हिस्सा टेढ़ा है, उसको सीधा करोगे तो टूट जाएगी और अगर उसको छोड़े रहो तो टेढ़ी ही रहेगी, अतः औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करो।” (मुस्लिम, बुखारी)



4. बीवी के साथ अच्छे अखलाक़ का बरताव कीजिए और प्यार व मुहब्बत से पेश आइए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“पूरे ईमानवाले मोमिन वही हैं जो अपने अखलाक़ में सबसे अच्छे हों और तुममें सबसे अच्छे लोग वे हैं जो अपनी बीवियों के हक़ में सबसे अच्छे हों ।”  
(तिरमिज़ी)

अपने अच्छे अखलाक़ और नर्म मिजाज को जाँचने का असल मैदान घरेलू ज़िन्दगी है । घरवालों से ही हर वक़्त का वास्ता रहता है और घर की बेतकल्लुफ़ ज़िन्दगी में ही मिजाज व अखलाक़ का हर रुख़ सामने आता है और यह हकीक़त है कि वही मोमिन अपने ईमान में पूरा है जो घरवालों के साथ अच्छे अखलाक़, खुले दिल और मेहरबानी का बरताव करे, घरवालों का दिल रखे और प्यार व मुहब्बत से पेश आए ।

एक बार हज़ के मौक़े पर हज़रत सफ़िया (रज़ि०) का ऊँट बैठ गया और वह सबसे पीछे रह गई । नबी अकरम (सल्ल०) ने देखा कि वह फूट-फूटकर रो रही हैं । आप रुक गए और अपने मुबारक हाथों से चादर का पल्लू लेकर उनके आँसू पोंछे । आप आँसू पोंछते जाते और वह बेइख़तियार रोती जाती थीं ।

5. पूरे खुले दिल से अपनी ज़िन्दगी की साथी की ज़रूरतें पूरी कीजिए और खर्च में कभी तंगी न कीजिए, अपनी मेहनत की कमाई घरवालों पर खर्च करके सुकून और खुशी महसूस कीजिए । खाना-कपड़ा बीवी का हक़ है और इस हक़ को हाथ खोलकर और दिल की गहराइयों के साथ अदा करने के लिए दौड़-धूप करना शौहर की बड़ी खुशगवार ज़िम्मेदारी है । इस ज़िम्मेदारी को खुले दिल से अंजाम देने से न सिर्फ़ दुनिया में मियाँ-बीवी को भली ज़िन्दगीवाली नेमत मिलती है, बल्कि ईमानवाला आख़िरत में भी अज़्र और इनाम का हक़दार बनता है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“एक दीनार तो वह है जो तुमने खुदा की राह में खर्च किया । एक दीनार वह है जो तुमने किसी गुलाम को आज़ाद करने में लगाया । एक दीनार वह है जो तुमने किसी फ़क़ीर को सदक़े में दिया और एक दीनार वह है जो तुमने अपने घरवालों पर लगाया । इनमें सबसे ज़्यादा अज़्र व सवाब उस दीनार के खर्च करने का है जो तुमने अपने घरवालों पर लगाया है ।”  
(मुस्लिम)

6. बीवी को दीनी हुक़म और तहज़ीब सिखाइए, दीन की तालीम दीजिए, इस्लामी अखलाक़ से सजाइए और उसकी तरबियत और सुधार के लिए हर मुमकिन कोशिश

कीजिए ताकि वह एक अच्छी बीवी, अच्छी माँ और खुदा की नेक बन्दी बन सके और अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह अदा कर सके । खुदा का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

“ईमानवालो ! अपने आपको और अपने घरवालों को जहन्नम की आग से बचाओ ।” (कुरआन, 66:6)

नबी (सल्ल०) जिस तरह तबलीग व तालीम में लगे रहते थे, उसी तरह घर में भी इस ज़िम्मेदारी को अदा करते रहते । इसी की तरफ़ इशारा करते हुए कुरआन ने नबी (सल्ल०) की बीवियों को खिताब किया है—

“और तुम्हारे घरों में जो खुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिकमत की बातें सुनाई जाती हैं, उनको याद रखो ।”

कुरआन में नबी (सल्ल०) के वास्ते से ईमानवालों को हिदायत की गई है—

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا

“और अपने घरवालों को नमाज़ की ताकीद कीजिए और खुद भी उसके पूरे पाबन्द रहिए ।” (कुरआन, 20:132)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब कोई मर्द रात में अपनी बीवी को जगाता है और वे दोनों मिलकर दो रक़अत नमाज़ पढ़ते हैं तो शौहर का नाम ज़िक्र करनेवालों में और बीवी का नाम ज़िक्र करनेवालियों में लिखा जाता है ।” (अबू दाऊद)

दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि०) रात में खुदा के हुज़ूर खड़े इबादत करते रहते, फिर सहर का वक़्त आता तो अपनी बीवी को जगाते और कहते, उठो-उठो नमाज़ पढ़ो और फिर यह आयत भी पढ़ते—

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا

वञ्-मुरअह-ल-क बिस्सलाति वस-तबिर अलैहा । (कुरआन, 20:132)

“और अपने घरवालों को नमाज़ की ताकीद करो और उसपर ज़मे रहो ।”

7. अगर कई बीवियाँ हों तो सबके साथ बराबरी का व्यवहार कीजिए । नबी (सल्ल०) बीवियों के साथ बरताव में बराबरी का बड़ा एहतिमाम करते । सफ़र

पर जाते तो कुरआ (पर्ची) डालते और कुरआ में जिस बीवी का नाम आता उसी को साथ ले जाते ।

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“अगर किसी आदमी की दो बीवियाँ हों और उसने उनके साथ इनसाफ़ और बराबरी का व्यवहार न किया तो क्रियामत के दिन वह आदमी इस हाल में आएगा कि उसका आधा धड़ गिर गया होगा ।” (तिमिरज़ी)

इनसाफ़ और बराबरी से मतलब—मामलों और बरतावों में बराबरी करनी है । रही यह बात कि किसी एक बीवी की ओर दिल का झुकाव और मुहब्बत के जज़्बे ज़्यादा हों तो यह इनसान के बस में नहीं है और उसपर खुदा के यहाँ कोई पकड़ न होगी ।

## बीवी की जिम्मेदारियाँ

1. बड़ी खुशी-खुशी अपने शौहर की इताअत कीजिए और इस इताअत में खुशी और सुकून महसूस कीजिए, इसलिए कि यह खुदा का हुक्म है और जो बन्दी खुदा के हुक्म को पूरा करती है, वह अपने खुदा को खुश करती है । कुरआन में है—

فَالصَّالِحَتُ قَانِتَاتٌ ۖ

“नेक बीवियाँ (शौहर की) इताअत करनेवाली होती हैं ।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“कोई औरत शौहर की इजाज़त के बिना रोज़ा न रखे ।” (अबू दाऊद)

शौहर की इताअत और फ़रमाँबरदारी की अहमियत बताते हुए नबी (सल्ल०) ने औरत को तंबीह की है—

“दो क्रिस्म के आदमी हैं जिनकी नमाज़ें उनके सिरों से ऊँची नहीं उठती—उस गुलाम की नमाज़ जो अपने आक्का से फ़रार हो जाए, जब तक वह लौट न आए और उस औरत की नमाज़ जो शौहर की नाफ़रमानी करे, जब तक कि शौहर की नाफ़रमानी से बाज़ न आ जाए ।”

(अत-तर्हीब वत-तर्हीब)

2. अपनी आबरू और पाकदामनी की हिफ़ाज़त का एहतिमाम कीजिए और उन तमाम बातों और कामों से भी दूर रहिए जिनसे इज़्ज़त के दामन पर धब्बे का

डर भी हो । खुदा की हिदायत का तकाज़ा भी यही है और मियाँ-बीवीवाली ज़िन्दगी को बेहतर बनाए रखने के लिए भी यह इतिहाई ज़रूरी है, इसलिए कि अगर शौहर के दिल में इस तरह का कोई शक पैदा हो जाए तो फिर औरत की कोई खिदमत व इताअत और कोई भलाई शौहर को अपनी ओर प्रायल नहीं कर सकती और इस मामले में मामूली-सी कोताही से भी शौहर के दिल में शैतान शक डालने में कामयाब हो जाता है । इसलिए इन्सानी कमज़ोरी को निगाह में रखते हुए इतिहाई एहतियात कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“औरत जब पाँचों वक्त की नमाज़ पढ़े, अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करे, अपने शौहर की फ़रमाँबरदार रहे तो वह जन्नत में जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए ।” (अत-तर्ग़िब वत-तर्हीब)

3. शौहर की इजाज़त और मरज़ी के बग़ैर घर से बाहर न जाइए और न ऐसे घरों में जाइए जहाँ शौहर आपका जाना पसन्द न करे और न ऐसे लोगों को अपने घरों में आने की इजाज़त दीजिए जिनका आना शौहर को नागवार हो ।

हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“खुदा पर ईमान रखनेवाली औरत के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह अपने शौहर के घर में किसी ऐसे आदमी को आने की इजाज़त दे जिसका आना शौहर को नागवार हो और वह घर से ऐसी हालत में निकले जबकि उसका निकलना शौहर को नागवार हो और औरत शौहर के मामले में किसी दूसरे का कहा न माने ।” (अत-तर्ग़िब वत-तर्हीब)

यानी शौहर के मामले में शौहर की मरज़ी और इशारे पर ही अमल कीजिए और उसके खिलाफ़ हरगिज़ दूसरों के मशविरे को न अपनाइए ।

4. हमेशा अपनी बातों, कामों और तौर-तरीकों से शौहर को खुश रखने की कोशिश कीजिए । मियाँ-बीवी की कामयाब ज़िन्दगी का राज़ भी यही है और खुदा की रिज़ा और जन्नत के हासिल करने का रास्ता भी यही है ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जिस औरत ने भी इस हाल में इन्तिकाल किया कि उसका शौहर उससे राज़ी और खुश था तो वह जन्नत में दाख़िल होगी ।” (तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जब कोई आदमी अपनी बीवी को वासना पूर्ति के लिए बुलाए और

वह न आए और इस कारण शौहर रात भर उससे खफा रहे तो ऐसी औरत पर सुबह तक फरिश्ते लानत करते रहते हैं ।” (बुखारी, मुस्लिम)

5. अपने शौहर से मुहब्बत कीजिए और उसका साथ पाने की कद्र कीजिए । यह ज़िन्दगी की ज़िन्दगी का सहारा और बड़ा मददगार है । खुदा की इस बेड़ी नेमत पर खुदा का भी शुक्र अदा कीजिए और इस नेमत की भी दिल व जान से कद्र कीजिए । नबी (सल्ल०) ने एक मौक़े पर फ़रमाया—

“निकाह से बेहतर कोई चीज़ दो मुहब्बत करनेवालों के लिए नहीं पाई गई ।”

हज़रत सफ़िया (रज़ि०) को नबी (सल्ल०) से बेइतिहा मुहब्बत थी । चुनौचे जब आप बीमार हुए तो बड़ी खुशी के साथ बोलीं, “काश ! आपके बजाए मैं बीमार होती ।”

नबी (सल्ल०) की दूसरी बीवियों ने मुहब्बत के इस तरह ज़ाहिर करने पर ताज़्जुब से उनकी ओर देखा तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“दिखावा नहीं है, बल्कि सच कह रही हैं ।”

6. शौहर का एहसान मानिए । उसकी शुक्र गुज़ार रहिए । आपका सबसे बड़ा हमदर्द आपका शौहर ही तो है जो हर तरह आपको खुश करने में लगा रहता है । आपकी हर ज़रूरत को पूरा करता है और आप को हर तरह का आराम पहुँचाकर आराम महसूस करता है ।

हज़रत अस्मा (रज़ि०) कहती हैं कि एक बार नबी (सल्ल०) मेरे पास से गुज़रे । मैं अपनी पड़ोसी सहेलियों के साथ थी । आपने हमें सलाम किया और इरशाद फ़रमाया—

“तुमपर जिसका एहसान है उनकी नाशुक्रि से बचो । तुममें की एक अपने माँ-बाप के यहाँ काफ़ी दिनों तक बिन ब्याही बैठी रहती है, फिर खुदा उसको शौहर अता फ़रमाता है, फिर खुदा उसको औलाद देता है । (इन तमाम एहसानों के बावजूद) अगर कभी किसी बात पर शौहर से खफ़ा होती है तो कह उठती है : मैंने तो कभी तुम्हारी तरफ़ से भलाई देखी ही नहीं ।”

(अल-अदबुल मुफ़द)

नाशुक्रगुज़ार और एहसान भूल जानेवाली बीवी को तंबीह करते हुए नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“खुदा क्रियामत के दिन उस औरत की ओर नज़र उठाकर भी न

देखेगा जो शौहर की नाशुक्रगुजार होगी, हालाँकि औरत किसी वक्त भी शौहर से बेनियाज नहीं हो सकती ।” (नसई)

7. शौहर की खिदमत करके खुशी महसूस कीजिए और जहाँ तक हो सके खुद तकलीफ उठाकर शौहर को आराम पहुँचाइए और हर तरह उसकी खिदमत करके उसका दिल अपने हाथ में ले लेने को कोशिश कीजिए ।

हजरत आइशा (रजि०) अपने हाथ से नबी (सल्ल०) के कपड़े धोतीं, सिर में तेल लगातीं, कंधा करतीं, खुशबू लगातीं और यही हाल अपने शौहरों के साथ दूसरी सहाबिया औरतों का भी था ।

एक बार नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“किसी इनसान के लिए यह जायज नहीं कि वह किसी दूसरे इनसान को सज्दा करे । अगर इसकी इजाजत होती तो बीवी को हुक्म दिया जाता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे । शौहर का अपनी बीवी पर भारी हक है, इतना भारी हक कि अगर शौहर का सारा जिस्म घायल हो और बीवी शौहर के घायल जिस्म को ज़बान से चाटे, तब भी शौहर का हक अदा नहीं हो सकता ।” (मुस्नद अहमद)

8. शौहर के घर-बार और माल व अस्बाब की हिफाजत कीजिए । शादी के बाद शौहर के घर को ही अपना घर समझिए और शौहर के माल को शौहर के घर की रौनक बढ़ाने, शौहर की इज़्जत बनाने और उसके बच्चों का भविष्य सँवारने में हिकमत, किरायात और सलीके से खर्च कीजिए । शौहर की तरक्की और खुशहाली को अपनी तरक्की और खुशहाली समझिए । कुरैश की औरतों की तारीफ करते हुए नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“कुरैश की औरतें क्या ही खूब औरतें हैं, बच्चों पर निहायत मेहरबान हैं और शौहर के घरबार की इतिहाई हिफाजत करनेवाली हैं ।” (बुखारी)

और नबी (सल्ल०) ने नेक बीवियों की खूबियाँ बयान करते हुए फरमाया—

“मोमिन के लिए अल्लाह के डर के बाद सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद और भलाई से भरी नेमत नेक बीवी है कि जब वह उससे किसी काम को कहे तो वह खुशदिली से अंजाम दे और जब वह उसपर निगाह डाले तो वह उसको (अपनी अदा से) खुश कर दे और जब वह उसके भरोसे पर क़सम खा बैठे तो वह उसकी क़सम पूरी कर दे और जब वह कहीं चला जाए तो वह उसके पीछे अपनी इज़्जत व आबरू की हिफाजत

करे और शौहर के माल और सामान की निगरानी में शौहर की भलाई चाहनेवाली और वफादार रहे ।” (इब्ने माजा)

9. सफाई, सलीका और साज-सज्जा का भी पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए । घर को भी साफ-सुथरा रखिए और हर चीज को सलीके से सजाइए और सलीके से इस्तेमाल कीजिए । साफ-सुथरा घर, करीने से सजे हुए साफ-सुथरे कमरे, घरेलू कामों में सलीका और सुघड़पन, बनाव-सिंगार की हुई बीवी की पाकीजा मुस्कराहट से न सिर्फ घरेलू जिन्दगी प्यार व मुहब्बत और खैर व बरकत से मालामाल होती है, बल्कि एक बीवी के लिए अपनी आखिरत बनाने और खुदा को खुश करने का भी यही जरिया है ।

एक बार बेगम उसमान बिन मजऊन (रजि०) से हजरत आइशा (रजि०) की मुलाकात हुई तो उन्होंने देखा कि बेगम उसमान बड़े सादा कपड़ों में हैं और कोई बनाव-सिंगार भी नहीं किया है तो हजरत आइशा (रजि.) को बहुत ताज्जुब हुआ और उनसे पूछा—

“बहन ! क्या उसमान कहीं बाहर सफर पर गए हुए हैं ?”

इस ताज्जुब से अंदाजा कीजिए कि सुहागनों का अपने शौहरों के लिए बनाव-सिंगार करना कैसा पसंदीदा काम है ।

## 25. औलाद की परवरिश के आदाब

1. औलाद को खुदा का इनाम समझिए । उनके पैदा होने पर खुशी मनाइए । खैर व बरकत की दुआओं के साथ स्वागत कीजिए और खुदा का शुक्र अदा कीजिए कि उसने आपको अपने एक बन्दे की परवरिश की तौफ़ीक़ बख़्शी और यह मौका दिया कि आप अपने पीछे अपने दीन व दुनिया का जानशीन छोड़ जाएँ ।

2. औलाद न हो तो खुदा से नेक औलाद के लिए दुआ कीजिए, जिस तरह खुदा के बुजुर्ग पैग़म्बर हज़रत ज़करिया (अलै०) ने नेक औलाद के लिए दुआ फ़रमाई—

رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ (آل عمران)

“मेरे पालनहार ! तू अपने पास से मुझे पाकबाज़ औलाद दे, बेशक तू दुआ का सुननेवाला है ।” (कुरआन, 3:38)

3. औलाद की पैदाइश पर कभी दिल तंग न हो । खाने-पीने की तंगी या सेहत की खराबी या किसी और वजह से औलाद की पैदाइश पर कुढ़ने या उसको अपने हक़ में एक मुसीबत समझने से सख्ती से परहेज़ कीजिए ।

4. औलाद को कभी बरबाद न कीजिए । पैदा होने से पहले या पैदा होने के बाद औलाद को बरबाद करना बदतरीन संगदिली, भयानक जुल्म, भारी बुज़दिली और दोनों दुनिया की तबाही है । खुदा का इरशाद है—

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝ (الانعام)

“वे लोग इतिहाई घाटे में हैं, जिन्होंने अपनी औलाद को नासमझी में अपनी मूर्खता से मौत के घाट उतार दिया ।” (कुरआन, 6:140)

और खुदा ने इनसानी कोताह नज़री का मनभावन जवाब देते हुए साफ़-साफ़ मना फ़रमाया है कि अपनी औलाद को क़त्ल न करो ।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا

(بنی اسرائیل)

كَبِيرًا ۝

“और अपनी औलाद को फ़ड़क व फ़ाँके के डर से क़त्ल न करो । हम उनको भी रोज़ी देंगे और हम ही तुम्हें भी रोज़ी दे रहे हैं । सच



तो यह है कि औलाद का क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है ।”

(क़ुरआन, 17:31)

एक बार एक सहाबी ने पूछा—“ऐ अल्लाह के रसूल ! सबसे बड़ा गुनाह क्या है ?” फ़रमाया—“शिरक !” पूछा, “इसके बाद ?” फ़रमाया—“माँ-बाप की नाफ़रमानी !” फिर पूछा, “इसके बाद ?” फ़रमाया, “तुम अपनी औलाद को इस डर से मार डालो कि वह तुम्हारे साथ खाएगी ।”

5. जन्म के वक़्त जन्म देनेवाली औरत के पास आयतुल कुर्सी और सूरा आराफ़ की नीचे लिखी हुई दो आयतों की तिलावत कीजिए और सूरा फ़लक़ और सूरा नास पढ़-पढ़कर दम कीजिए ।

اللّٰهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖ اِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔودُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ  
(البقرة: 255)

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुव अल हय्युल कय्यूम, ला ताखुजुहू सि-न तुव व ला नौम, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल अर्ज, मन ज़ल्लज़ी यशफ़ु इन-दहू इल्ला बिइज़्ज़िही यअ-लमु मा बै-न ऐदीहिम व मा खल-फ़हुम, वला युहीतू-न बिशैइम मिन इल्मिही इल्ला बिमाशा-अ, वसि-अ कुर्सीयुहुस्समावाति वल अर-ज़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ु हुमा व हुवल अलीयुल अज़ीम ।  
(क़ुरआन, 2:255)

“ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह ज़िन्दा-ए-जावेद, कायनात (दुनिया) के निज़ाम को सम्भाले हुए है, न वह सोता है, न उसे नींद आती है । आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसी का है, कौन है जो उसके हुज़ूर उसकी इज़ाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके । जो कुछ बन्दों के सामने है, उसे भी वह जानता है और जो कुछ उससे ओझल है, उसे भी वह जानता है और इनसान उसके इल्म में से किसी बात को भी धेरे में नहीं ले सकता सिवाए उसके कि जितना इल्म वह ख़ुद इनसान को देना चाहे, उसकी हुकूमत आसमान और ज़मीन पर छाई हुई है और उसकी हिफ़ाज़त व निगहबानी उसके लिए कोई थका देनेवाला

काम नहीं । वह बड़ा ही ऊँचे रुखेवाला और बुजुर्गीवाला है ।”

सूरा आराफ़ की दो आयतें ये हैं—

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ (الأعراف: ५३-५५)

इन-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख-ल-क़स्समावाति वल अर-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन सुम्मस-तवा अलल अर्श, युगशिल-लैलन्नहा-र यतलुबुहू हसीसँव वशम-स वल क-म-र वन्नुजू-म मुसख़्ख़रातिम बिअमरिही, अला लहुल खल्लु वल अम्र, तबारकल्लाहु रब्बुल आ-लमीन । उद-ऊ रब्बकुम त-ज़र्रु अव-व ख़ुफ़यः, इन्नहू ला युहिब्बुल मुअ-तदीन । (कुरआन, 7 : 54:55)

“हकीकत यह है कि खुदा ही तुम्हारा परवरदिगार है, जिसने आसमानों और ज़मीनों को छः दिन में पैदा किया, फिर अपने सिंहासन पर आसीन हुआ । वही रात को दिन पर ढाँप देता है और फिर दिन-रात के पीछे दौड़ा चला आता है । उसी ने सूरज चाँद और तारे पैदा किए जो उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं । सुन रखो, उसी का काम है पैदा करना और उसी का हक्क है हुक्म देना । पर क्या ही बरकतवाला है खुदा, सारे जहानों का मालिक और परवरदिगार ! अपने पालनहार को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके । बेशक, वह हद से गुज़रनेवालों को पसन्द नहीं करता ।”

6. जन्म के बाद नहला-धुलाकर दाहिने कान में अज़ान और बाएँ कान में इक्कामत कहिए । जब हज़रत हुसैन (रज़ि०) का जन्म हुआ तो नबी (सल्ल०) ने अज़ान व इक्कामत फ़रमाई । (तबरानी)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि जिसके यहाँ बच्चे का जन्म हो और वह उस बच्चे के दाहिने कान में अज़ान और बाएँ कान में इक्कामत कहे तो बच्चा ‘उम्मुस्सिबयान’ (इस मर्ज़ में बच्चे बेहोश हो जाते हैं) की तकलीफ़ से बचा रहेगा । (अबू यअला इब्ने सुन्नी)

पैदा होते ही बच्चे के कान में खुदा और रसूल का नाम पहुँचाने में बड़ी हिकमत है । अल्लामा इब्ने क़थीर अपनी किताब 'तोहफ़तुल वदूद' में फ़रमाते हैं—

“इसका मतलब यह है कि इनसान के कान में सबसे पहले अल्लाह की बड़ाई की आवाज़ पहुँचे और जिस गवाही को वह सोच-समझकर अदा करने के बाद इस्लाम में दाखिल होगा, उसकी हिदायत पैदाइश के दिन ही से की जाए, जिस तरह मरने के वक़्त उसको तौहीद के कलिमों की ताकीद की जाती है । अज़ान और इक़ामत का दूसरा फ़ायदा यह भी है कि शैतान जो घात में बैठा होता है और चाहता है कि पैदा होते ही इनसान को आज़माइश में डाले, अज़ान सुनते ही भाग जाता है और शैतान की दावत से पहले बच्चे को इस्लाम और अल्लाह की इबादत की दावत दे दी जाती है ।”

7. अज़ान व इक़ामत के बाद किसी नेक मर्द या औरत से तहनीक कीजिए यानी खजूर वग़ैरह चबवाकर बच्चे के तालू में लगावाइए और बच्चे के लिए ख़ैर व बरक़त की दुआ कीजिए और कराइए । हज़रत अस्मा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) जब पैदा हुए तो मैंने उनको नबी की गोद में दिया । आपने ख़ुरमा मँगवाया और चबाकर मुबारक लुआब अब्दुल्लाह बिन जुबैर के मुँह में लगा दिया और ख़ुरमा उनके तालू में मला और ख़ैर व बरक़त की दुआ फ़रमाई ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) के यहाँ बच्चे लाए जाते थे । आप तहनीक फ़रमाते और उनके हक़ में ख़ैर व बरक़त की दुआ करते ।  
(मुस्लिम)

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल (रह०) के यहाँ बच्चे का जन्म हुआ तो उन्होंने उनकी तहनीक के लिए मक्के की खजूर मँगवाई जो आपके घर में मौजूद थी और एक नेक बीवी उम्मे अली (रह०) से तहनीक की दरखास्त की ।

8. बच्चे के लिए अच्छा-सा नाम तजवीज़ कीजिए जो या तो पैग़म्बरों के नाम पर हो या खुदा के नाम से पहले अब्द लगाकर बनाया गया हो, जैसे अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान वग़ैरह ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“क्रियामत के दिन तुम्हें अपने-अपने नामों से पुकारा जाएगा । इसलिए बेहतर नाम रखा करो ।”  
(अबू दाऊद)

नबी (सल्ल०) का यह भी इरशाद है कि खुदा को तुम्हारे नामों में से अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान सबसे ज़्यादा पसन्द है और आपने यह भी फ़रमाया है कि नबियों

के नामों पर नाम रखो ।

बुखारी में है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“मेरे नाम पर नाम रखो, मेरी कुन्नियत पर मत रखो ।”

9. अगर कभी अनजाने में गलत नाम रख दिया हो तो उसको बदलकर अच्छा नाम रख दीजिए । नबी (सल्ल०) गलत नाम को बदल दिया करते थे । हजरत उमर (रज़ि०) की एक साहबज़ादी का नाम आसिया था, आपने बदलकर जमीला रख दिया । (मुस्लिम)

हजरत ज़ैनब अबू सलमा की बेटी थीं । उनका नाम बिरा था । बिरा का अर्थ है ‘पाकबाज़’ । नबी (सल्ल०) ने यह सुना तो फरमाया—

“खुद ही अपनी पाकबाज़ी का दम भरती हो ?” लोगों ने कहा,

“फिर क्या नाम रखें ?” आपने फरमाया, ‘ज़ैनब’ नाम रखो ।”

(अबू दाऊद)

10. सातवें दिन अक्रीका कीजिए । लड़के की तरफ़ से दो बकरे और लड़की की तरफ़ से एक बकरा कीजिए, लेकिन लड़के की तरफ़ से दो बकरे करना ज़रूरी नहीं है, एक बकरा भी कर सकते हैं और बच्चे के बाल मुंडवाकर उसके बराबर सोना या चाँदी भी ख़ैरात कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“सातवें दिन बच्चे का नाम तज्वीज़ किया जाए और उसके बाल वग़ैरह उतरवाकर उसकी ओर से अक्रीका किया जाए ।” (तिर्मिज़ी)

(अक्रीके की दुआ आगे देखिए)

11. सातवें दिन खतना भी करा दीजिए, लेकिन किसी वजह से न कराएँ तो सात साल की उम्र के अन्दर-अन्दर ज़रूर करा दें । खतना इस्लामी पहचान है और सफ़ाई व सेहत के लिहाज़ से भी बेहतर है ।

12. जब बच्चा बोलने लगे तो सबसे पहले उसको ‘ला इला-ह-इल्लल्लाह’ सिखाइए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब तुम्हारी औलाद बोलने लगे तो उसको ‘ला इला-ह-इल्लल्लाह’ सिखा दो, फिर मत परवाह करो कि कब मरे, और जब दूध के दाँत गिर जाएँ तो नमाज़ का हुक्म दो ।” (इब्ने सुन्नी)

हदीस में यह भी है कि हुज़ूर (सल्ल०) के खानदान में जब किसी बच्चे की ज़बान खुल जाती तो आप उसको सूरा फुरक़ान की दूसरी आयत सिखाते, जिसमें

तौहीद की पूरी तालीम को बड़ी खूबी के साथ समेट दिया गया है—

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ  
فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ تَقْدِيرًا ۝

अल-लजी लहू मुल्कुस्समावाति वल अर्ज़ि व लम यत-तखिज व  
ल-दवै-व लम यकुल्लहू शरीकुन फ़िल मुल्कि व ख-ल-क कुल-ल शैइन  
फ़-क़द-द-रहू तकदीरा । (कुरआन, 25:2)

“वह खुदा जो आसमानों और ज़मीन की बादशाही का मालिक है,  
जिसने किसी को बेटा नहीं बनाया है, जिसके साथ बादशाही में कोई  
शरीक नहीं है, जिसने हर चीज़ पैदा की और फिर उसकी मुनासिब तकदीर  
मुक़र्रर फ़रमाई ।”

13. बच्चे को अपना दूध भी पिलाइए । माँ पर बच्चे का यह हक़ है । कुरआन  
ने औलाद को माँ का यही एहसान याद दिलाकर माँ के साथ ग़ैर-मामूली अच्छा  
बरताव करने की ताकीद की है । माँ का फ़र्ज़ यह है कि वह बच्चे को अपने  
दूध के एक-एक क़तरे के साथ तौहीद का सबक़, रसूल (सल्ल०) का इश्क़ और  
दीन की मुहब्बत भी पिलाए और इस मुहब्बत को उसके क़ल्ब व रूह में बसाने  
की कोशिश करे । परवारिश की जिम्मेदारी आया (दाई) पर डालकर अपना बोझ  
न हल्का कीजिए, बल्कि इस बेहतर दीनी फ़रीजे को खुद अंजाम देकर रूहानी  
सुकून और खुशी महसूस कीजिए ।

14. बच्चों को डराने से बचिए । बचपन का यह डर सारी उम्र ज़ेहन व दिमाग़  
पर छाया रहता है और ऐसे बच्चे आम तौर से ज़िन्दगी में कोई बड़ा कारनामा  
अंजाम देने के लायक नहीं रहते ।

15. औलाद को बात-बात पर डाँटने, झिड़कने और बुरा-भला कहने से सख्ती  
से परहेज़ कीजिए और उनकी कोताहियों पर बेज़ार होने और नफ़रत ज़ाहिर करने  
के बजाए पूरी हिकमत के साथ उनकी तरबियत करने की मुहब्बत भरी कोशिश  
कीजिए और अपने कामों से बच्चों के ज़ेहन पर यह डर बहरहाल ग़ालिब रखिए  
कि उनकी कोई शरीअत के खिलाफ़ बात आप हरगिज़ बरदाश्त न करेंगे ।

16. औलाद के साथ हमेशा प्यार, मुहब्बत और नमी का बरताव कीजिए और  
ज़रूरत और हैसियत के मुताबिक़ उनकी ज़रूरतें पूरी करके उनको खुश रखिए और  
इताअत और फ़रमाँबरदारी के ज़ब्बे उभारिए ।

एक बार हजरत मुआविया (रजि०) ने अहनफ बिन कैस (रजि०) से पूछा—  
 “कहिए, औलाद के सिलसिले में क्या सुलूक होना चाहिए ?” अहनफ बिन कैस ने कहा—

“अमीरुल मोमिनीन ! औलाद हमारे दिलों का फल है; कमर की टेक है, हमारी हैसियत उनके लिए ज़मीन की तरह है; जो निहायत नर्म और गैर नुकसानदेह है, और हमारा वुजूद उनके लिए फैले हुए आसमान की तरह है और हम इन्हीं के ज़रिए बड़े-बड़े काम अंजाम देने की हिम्मत करते हैं; अतः अगर ये आपसे कुछ माँगें तो उनको खूब दीजिए और अगर कभी दिल बुझ जाए तो उनके दिलों का गम दूर कीजिए । नतीजे में वे आपसे मुहब्बत करेंगे; आपकी बापवाली कोशिशों को पसन्द करेंगे और कभी उनपर न सहने के क़ाबिल बोझ न बनिए कि वे आपकी ज़िन्दगी से उकता जाएँ और आपकी मौत चाहने लगें; आपके करीब आने से नफ़रत करें ।”

हजरत मुआविया (रजि०) पर इन हिक्मत भरी बातों का बड़ा असर हुआ और फ़रमाया—

“अहनफ ! खुदा की क़सम ! जिस वक़्त आप मेरे पास आकर बैठे, मैं यज़ीद के खिलाफ़ गुस्से में भरा बैठा था ।”

फिर जब हज़रत अहनश तशरीफ़ ले गए तो हज़रत मुआविया का गुस्सा ठंडा हो गया और यज़ीद से राज़ी हो गए और उसी वक़्त यज़ीद को दो सौ दिरहम और दो सौ जोड़े भिजवाए । यज़ीद के पास जब ये तोहफ़े पहुँचे तो यज़ीद ने ये तोहफ़े दो बराबर-बराबर हिस्सों में बाँट कर सौ दिरहम और सौ जोड़े हज़रत अहनफ़ बिन कैस (रजि०) की ख़िदमत में भिजवा दिए ।

17. छोटे बच्चों के सिर पर मुहब्बत से हाथ फेरिए, बच्चों को गोद में लीजिए, प्यार कीजिए और उनके साथ खेलिए । हर वक़्त सख़्त और खुर्रें मिज़ाज हाकिम न बने रहिए कि इस तरह बच्चों के दिल में माँ-बाप के लिए मुहब्बत का बेपनाह ज़ज़्बा पैदा नहीं होता । उनके भीतर अपने पर भरोसा भी नहीं पैदा होता और उनके स्वाभाविक लालन-पालन पर भी अच्छा असर नहीं पड़ता ।

एक बार हज़रत अक़रा बिन हाबिस (रजि०) नबी (सल्ल०) के पास आए । हुज़ूर (सल्ल०) उस वक़्त हज़रत हसन (रजि०) को प्यार कर रहे थे । अक़रा को देखकर ताज़्जुब हुआ और बोले—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! आप भी बच्चों को प्यार करते हैं ? मेरे

तो दस बच्चे हैं, लेकिन मैंने तो कभी किसी को प्यार नहीं किया।" नबी (सल्ल०) ने अक़रा (रज़ि०) की ओर नज़र उठाई और फ़रमाया, "अगर खुदा ने तुम्हारे दिल से रहमत और मुहब्बत को निकाल दिया है तो मैं क्या कर सकता हूँ।"

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के दौर में हज़रत आमिर (रज़ि०) किसी अहम ओहदे (पद) पर थे। एक बार हज़रत उमर (रज़ि०) से मिलने के लिए उनके घर पहुँचे। क्या देखते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) लेटे हुए हैं और बच्चे सीने पर चढ़े हुए खेल रहे हैं। हज़रत आमिर (रज़ि०) को यह बात कुछ बोझ मालूम हुई। अमीरुल मोमिनीन ने पेशानी के उतार-चढ़ाव से उनकी नागवारी को भाँप लिया और हज़रत आमिर (रज़ि०) से बोले, "कहिए। आपका अपने बच्चों के साथ कैसा बरताव रहता है?"

आमिर को मौक़ा मिल गया। बोले, "अमीरुल मोमिनीन! जब मैं घर में दाख़िल होता हूँ तो घरवालों पर ख़ामोशी छा जाती है। सब अपनी-अपनी जगह दम साधकर चुप हो जाते हैं।" हज़रत उमर (रज़ि०) ने बड़े सोज़ के साथ कहा—

"आमिर! आप उम्मत मुहम्मदिया के बेटे होते हुए भी यह नहीं जानते कि मुसलमान को अपने घरवालों के साथ किस तरह नमी और मुहब्बत का सुलूक करना चाहिए।"

18. औलाद को पाकीज़ा तालीम व तरबियत से सजाने के लिए अपनी सारी कोशिश बज़्रफ़ कर दीज़िए और इस राह में बड़ी से बड़ी क़ुरबानी से भी झिझकिए नहीं। यह आपकी दीनी ज़िम्मेदारी भी है, औलाद के साथ भारी एहसान भी और अपनी ज़ात के साथ सबसे बड़ी भलाई भी।

क़ुरआन में है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا.

"ईमानवालों! बचाओ अपने आपको और अपने घरवालों को जहन्नम की आग से।"

(क़ुरआन, 66:6)

और जहन्नम की आग से बचने का एक मात्र रास्ता यह है कि आदमी दीन का ज़रूरी इल्म रखता हो और उसकी ज़िन्दगी खुदा और रसूल (सल्ल०) की इताअत व फ़रमाँबरदारी में गुज़र रही हो।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

"बाप अपनी औलाद को जो कुछ दे सकता है उसमें सबसे बेहतर भेंट औलाद

की अच्छी तालीम व तरबियत है ।”

(मिशकात)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फरमाया कि जब इनसान मर जाता है तो उसका अमल खत्म हो जाता है, लेकिन तीन क्रिस्म के अमल ऐसे हैं कि उनका अज्र व सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है—

एक यह कि वह सदक-ए-जारिया कर जाए,

दूसरे यह कि वह ऐसा इल्म छोड़ जाए जिससे लोग फायदा उठाएँ,

तीसरे नेक औलाद जो बाप के लिए दुआ करती रहे ।

(मुस्लिम)

असल में औलाद ही आपके बाद आपकी तहजीबी रिवायतों, दीनी तालीम और तौहीद के पैगाम को ज़िन्दा रखने का ज़रिया है और मोमिन नेक औलाद की आरजूएँ इसलिए करता है ताकि वह उसके बाद उसके पैगाम को ज़िन्दा रख सके ।

19. बच्चे जब सात साल के हो जाएँ तो उनको नमाज़ सिखाइए, नमाज़ पढ़ने की ताकीद कीजिए और अपने साथ मस्जिद ले जाकर शौक़ पैदा कीजिए और जब वे दस साल के हो जाएँ और नमाज़ में कोताही करें तो उन्हें मुनासिब सज़ा भी दीजिए और अपने क़ौल व अमल से उनपर खोल दीजिए कि नमाज़ में कोताही को आप सहन न करेंगे ।

20. बच्चे जब दस साल के हो जाएँ तो उनके बिस्तर अलग कर दीजिए और हर एक को अलग-अलग चारपाई पर सुलाइए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“अपनी औलाद को नमाज़ पढ़ने की ताकीद करो जब वे सात साल के हो जाएँ, और नमाज़ के लिए उनको सज़ा दो जब वे दस साल के हो जाएँ और इस उम्र में पहुँचने के बाद उनके बिस्तर अलग कर दो ।”

21. बच्चों को हमेशा साफ़-सुथरा रखिए । उनकी पाकी, सफ़ाई और नहाने व ग़ैरह का खयाल रखिए । कपड़े भी पाक-साफ़ रखिए, लेकिन ज़्यादा बनाव-सिंगार और दिखावे से खुद बचिए और बच्चों को भी बचाइए । लड़की के कपड़े बहुत सादा रखिए और तड़क-भड़क कपड़े पहनाकर बच्चों के मिज़ाज खराब न कीजिए ।

22. दूसरों के सामने बच्चों के ऐब न बयान कीजिए और किसी के सामने उनको शर्मिन्दा करने और उनकी ग़ैरत (स्वाभिमान) को ठेस लगाने से भी सख्ती के साथ परहेज़ कीजिए ।

23. बच्चों के सामने कभी बच्चों के सुधार से निराशा न ज़ाहिर कीजिए बल्कि उनकी हिम्मत बढ़ाने के लिए उनकी मामूली अच्छाइयों की भी दिल खोलकर तारीफ़ कीजिए । हमेशा उनका दिल बढ़ाने और उनमें अपने आप में यक़ीन और हौसला



पैदा करने की कोशिश कीजिए, ताकि ये ज़िन्दगी के मैदान में ऊँची से ऊँची जगह हासिल कर सकें ।

24. बच्चों को नबियों के किस्से, नेक लोगों की कहानियाँ और सहाबा किराम (रज़ि०) के मुजाहिदाना कारनामे ज़रूर सुनाते रहें । तरबियत व तहज़ीब के लिए, चरित्र बनाने के लिए और दीन से लगाव पैदा करने के लिए इसको बहुत ज़रूरी समझिए और हज़ार कामों के बावजूद इसके लिए वक़्त निकालिए । बार-बार उनको कुरआन पाक भी अच्छी आवाज़ में पढ़कर सुनाइए और मौक़ा-मौक़ा से नबी (सल्ल०) की असरदार बातें भी बताइए और शुरू ही से उनके दिलों में रसूल (सल्ल०) की तड़प पैदा करने की कोशिश कीजिए ।

25. कभी-कभी बच्चों के हाथ से गरीबों को कुछ खाना या पैसा वगैरह भी दिलवाइए, ताकि उनमें गरीबों के साथ सुलूक और खैर-ख़ैरात का जज़्बा पैदा हो और कभी-कभी यह मौक़ा भी जुटाइए कि खाने-पीने की चीज़ें बहन-भाई में खुद ही बाँटें, ताकि एक-दूसरे के हक़ों का एहसान और इनसाफ़ की आदत पैदा हो ।

26. बच्चों की हर सही-ग़लत ज़िद पूरी न कीजिए बल्कि हिकमत के साथ उनकी यह आदत छुड़ाने की कोशिश कीजिए । कभी-कभी मुनासिब सख्ती भी कीजिए, बेजा लाड़-प्यार से उनको ज़िददी और सरकश न बनाइए ।

27. कड़ी आवाज़ से बोलने और गला फ़ाड़कर चीखने-चिल्लाने से खुद भी बचिए और उनको भी ताकीद कीजिए कि दरमियानी आवाज़ में नर्मी के साथ बातें करें और आपस में भी एक-दूसरे पर चीखने-चिल्लाने से सख्ती के साथ बचें ।

28. बच्चों को आदत डालिए कि अपना काम अपने हाथ से करें । हर काम में नौकरों का सहारा न लें । इससे बच्चे सुस्त, काहिल और अपंग बन जाते हैं । बच्चों को जफ़ाकश, मेहनती और सख्त कोशिश करनेवाला बनाइए ।

29. बच्चों में आपसी लड़ाई हो जाए तो अपने बच्चे की बेजा हिमायत न कीजिए । यह खयाल रखिए कि अपने बच्चे के लिए आपके सीने में जो भावनाएँ हैं वही भावनाएँ दूसरों के सीने में अपने बच्चों के लिए भी हैं । आप हमेशा अपने बच्चे की ग़लतियों पर निगाह रखिए और हर पेश आनेवाली अनचाही घटना में अपने बच्चे की कोताही और ग़लती की खोज लगाकर हिकमत और बराबर तवज्जोह से उसको दूर करने की ज़ोरदार कोशिश कीजिए ।

30. औलाद के साथ हमेशा बराबरी का सुलूक कीजिए और इस मामले में बीच का रास्ता अपनाने की पूरी-पूरी कोशिश कीजिए । अगर कुदरती तौरपर किसी एक बच्चे की ओर ज़्यादा झुकाव हो तो मजबूरी है, लेकिन सुलूक व बरताव और

लेन-देन में हमेशा इनसाफ़ और बराबरी पर ध्यान दीजिए और कभी भी किसी एक के साथ ऐसा फर्क करनेवाला बरताव न कीजिए जिसको दूसरे बच्चे महसूस करें। इससे दूसरे बच्चों में हीन-भाव, नफ़रत, निराशा और आखिरकार बगावत पैदा होगी और ये बुरी भावनाएँ फ़ितरी सलाहियतों के परवान चढ़ने में ज़बरदस्त रुकावट और अख़लाकी और रूहानी तरक्की को हलाक कर देनेवाले ज़हर हैं।

एक बार हज़रत नोमान (रज़ि०) के बाप हज़रत बशीर (रज़ि०) अपने बेटे को साथ लिए हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मेरे पास एक गुलाम था। वह मैंने अपने लड़के को बख़्श दिया।” नबी (सल्ल०) ने पूछा, “क्या तुमने अपने हर लड़के को एक-एक गुलाम बख़्शा है।” बशीर बोले, “नहीं।” यह सुनकर हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस गुलाम को वापस ले लो। और फ़रमाया, “ख़ुदा से डरो और अपनी औलाद के साथ बराबरी का सुलूक करो।” अब हज़रत बशीर (रज़ि०) घर वापस आए और नोमान से अपना दिया हुआ गुलाम वापस ले लिया।

एक रिवायत में यह है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“तो फिर मुझे गुनाह पर गवाह न बनाओ क्योंकि मैं जुल्म का गवाह न बनूँगा।”

और एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने पूछा, “क्या तुम यह पसन्द करते हो कि सब लड़के तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करें।” हज़रत बशीर (रज़ि०) ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! क्यों नहीं।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “फिर ऐसा मत करो।” (बुखारी, मुस्लिम)

31. बच्चों के सामने हमेशा अच्छा अमली नमूना पेश कीजिए। आपकी ज़िन्दगी बच्चों के लिए हर वक़्त का एक ख़ामोश उस्ताद है जिससे बच्चे हर वक़्त पढ़ते और सीखते रहते हैं। बच्चों के सामने कभी मज़ाक़ में भी झूठ न बोलिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़ि०) अपना एक किस्सा बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर (सल्ल०) हमारे घर तशरीफ़ रखते थे। मेरी माँ ने मुझे बुलाया और कहा, “यहाँ आ, मैं तुझे एक चीज़ दूँगी।”

हुज़ूर (सल्ल०) ने सुन लिया और पूछा, “तुम बच्चे को क्या देना चाहती हो ?” माँ बोली, “मैं इसको ख़जूर देना चाहती हूँ।”

नबी (सल्ल०) ने माँ से फ़रमाया—

अगर तुम देने का बहाना करके बुलार्ती और बच्चे के आने पर कुछ न देतीं

तो तुम्हारे आमालनामे में झूठ लिख दिया जाता ।

(अबू दाऊद)

32. लड़की के पैदा होने पर उसी तरह खुशी मनाइए जिस तरह लड़के की पैदाइश पर मनाते हैं । लड़की हो या लड़का, दोनों ही खुदा की देन हैं और खुदा ही बेहतर जानता है कि आपके हक में लड़की अच्छी है या लड़का । लड़की की पैदाइश पर नाक-भों चढ़ाना और दिल का टूटना सच्चे मोमिन के लिए कतई मुनासिब नहीं है । यह नाशुकी भी है और मेहरबान खुदा की तौहीन भी ।

हदीस में है—

“जब किसी के यहाँ लड़की पैदा होती है तो खुदा उसके यहाँ फ़रिश्ते भेजता है जो आकर कहते हैं, ऐ घरवालो ! तुमपर सलामती हो, वह लड़की को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं कि यह कमज़ोर जान है जो एक कमज़ोर जान से पैदा हुई है, जो इस बच्ची की निगरानी और परवरिश करेगा क़ियामत तक खुदा की मदद उसके शामिले हाल रहेगी ।” (तबरानी)

33. लड़कियों की तरबियत व परवरिश बड़ी खुशदिली, रूहानी खुशी और दीनी एहसास के साथ कीजिए और उसके बदले में खुदा से जन्नत की आरजू कीजिए । नबी (सल्ल०) का इशारा है कि—

“जिस आदमी ने तीन लड़कियों या तीन बहनों की सरपरस्ती की, उन्हें तहज़ीब व तालीम सिखाई और उनके साथ दया का व्यवहार किया, यहाँ तक कि खुदा उनको बेनियाज़ कर दे तो ऐसे आदमी के लिए खुदा ने जन्नत वाज़िब फ़रमा दी, उसपर एक आदमी बोला, ‘अगर दो ही हों, तो ?’ नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया— ‘दो लड़कियों की परवरिश का भी यही बदला है ।’ हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि अगर लोग एक के बारे में पूछते तो आप एक की परवरिश पर भी यही खुशख़बरी देते ।” (मिशकात)

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि एक दिन एक औरत अपनी दो बच्चियों को लिए हुए मेरे पास आई और उसने कुछ माँगा । मेरे पास सिर्फ़ एक ही खंज़ूर थी, वह मैंने उसके हाथ पर रख दी । उस औरत ने खंज़ूर के दो टुकड़े किए और आधी-आधी दोनों बच्चियों में बाँट दी और खुद न खाई । इसके बाद वह उठ खड़ी हुई और बाहर निकल गई । उसी वक़्त नबी (सल्ल०) घर तशरीफ़ लाए । मैंने आपको यह सारा माज़रा कह सुनाया । आपने सुनकर फ़रमाया—

“जो आदमी भी लड़कियों की पैदाइश के ज़रिए आज्ञाया जाए और वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करके आज्ञाया में कामयाब हो तो ये

लड़कियाँ उसके लिए क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से ढाल बन जाएँगी ।”  
(मिशकात)

34. लड़की को हीन न समझिए, न लड़के को उसपर किसी मामले में तरजीह दीजिए । दोनों के साथ एक जैसी मुहब्बत ज़ाहिर कीजिए और एक जैसा बरताव कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जिसके यहाँ लड़की पैदा हुई और उसने जाहिलियत के तरीक़ों पर उसे (ज़िन्दा) दफ़न नहीं किया और न उसको हीन जाना और न लड़के को उसके मुक़ाबले में तरजीह दी और ज़्यादा समझा, तो ऐसे आदमी को खुदा जन्नत में दाख़िल करेगा ।”  
(अबू दाऊद)

35. जायदाद में लड़की का मुक़रर हिस्सा पूरी खुशदिली और एहतिमाम के साथ दीजिए । यह खुदा का फ़र्ज किया हुआ हिस्सा है, इसमें कमी-बेशी करने का कोई इख़्तियार नहीं । लड़की का हिस्सा देने में हीले करना या अपने हिस्से से कुछ दे-दिलाकर इतमीनान कर लेना सच्चे मोमिन का काम नहीं है । ऐसा करना ख़ियानत भी है और खुदा के दीन की तौहीन भी ।

36. उन तमाम अमली तदबीरों के साथ-साथ दिल के इतमीनान और उसकी लगन के साथ औलाद के हक़ में दुआ भी करते रहिए । अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि वह माँ-बाप के दिल की गहराइयों से निकली हुई दर्द भरी दुआएँ बरबाद न फ़रमाएगा ।

## 26. दोस्ती के आदाब

1. दोस्तों से मुहब्बत कीजिए और दोस्तों के लिए प्रेम का केन्द्र बन जाइए। वह आदमी बड़ा ही खुशकिस्मत है जिसको उसके दोस्त प्रिय रखते हों और वह दोस्तों को प्रिय रखता हो और वह आदमी बहुत महरूम है जिससे लोग बेजार रहते हों और वह लोगों से दूर भागता हो। गरीब वह नहीं है जिसके पास दौलत न हो, बल्कि हकीकत में सबसे बड़ा गरीब वह है जिसका कोई दोस्त न हो। दोस्त जिन्दगी की ज़ीनत, जिन्दगी के सफ़र का सहारा और खुदा का इनाम है। दोस्त बनाइए और दोस्त बनिए। नबी (सल्ल०) का इश़ाद है—

“मोमिन सिर से पैर तक मुहब्बत ही मुहब्बत है और उस आदमी में सिर से कोई ख़ैर व ख़ूबी नहीं है जो न तो दूसरों से मुहब्बत करे और न दूसरे ही उससे मुहब्बत करें।” (मिशकात)

कुरआन पाक में है—

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ (التوبة)

“मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में एक-दूसरे के मददगार हैं।”

(कुरआन, 9:71)

नबी (सल्ल०) अपने साथियों से बड़ी मुहब्बत फ़रमाते थे और हर एक यह महसूस करता था कि नबी (सल्ल०) सबसे ज़्यादा उसी को चाहते हैं।

हज़रत अग्र बिन आस (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) इस तवज्जोह और खुलूस के साथ मुझे बातें फ़रमाते और इतना खयाल रखते थे कि मुझे यह खयाल होने लगा कि शायद मैं अपनी क़ौम का सबसे बेहतर आदमी हूँ। एक दिन मैं नबी (सल्ल०) से पूछ बैठा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अफ़ज़ल हूँ या अबू बक्र ? नबी (सल्ल०) ने इश़ाद फ़रमाया, “अबू बक्र अफ़ज़ल हैं।” फिर मैंने पूछा, “मैं अफ़ज़ल हूँ या उमर ?” फ़रमाया, “उमर !” मैंने फिर पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं अफ़ज़ल हूँ या उसमान ?” इश़ाद फ़रमाया, “उसमान।” फिर मैंने नबी (सल्ल०) से खुलकर हकीकत मालूम की और आपने बे-रू-रियायत साफ़-साफ़ बात कह दी तब मुझे अपनी इस हरकत पर बड़ी ही शर्म आई और मैं दिल में खयाल करने लगा कि भला ऐसी बात पूछने की मुझे क्या ज़रूरत थी।

2. दोस्तों के साथ मिल-जुलकर मेल-मुहब्बत की जिन्दगी गुज़ारिए और खुलूस भरे ताल्लुकात कायम करने और कायम रखने की कोशिश कीजिए। दोस्तों से

नफ़रत, बेजारी और लिए-दिए रहने का ख़ैया छोड़ दीजिए । जब आदमी दोस्तों में मिल-जुलकर रहता है और हर मामले में उनका शरीक रहता है तो उसके नतीजे में उसको तरह-तरह की तकलीफ़ें पहुँचती हैं, कभी उसकी भावनाओं को ठेस लगती है, कभी उसके वक़ार को सदमा पहुँचता है, कभी उसके आराम में खलल पड़ता है, कभी उसके रोज़ के प्रोग्रामों पर असर पड़ता है, कभी उसकी ख़ाहिश और रुझान के खिलाफ़ कुछ बातें सामने आती हैं, कभी उसके सब्र व बरदाश्त की आजमाइश होती है, कभी उसको माली नुक़सान पहुँचता है । गरज़ अलग-अलग किस्म की तकलीफ़ें और परेशानियाँ उसको पहुँचती हैं, लेकिन जब यह आदमी इन तकलीफ़ों को बरदाश्त करता है तो उसके दिल में इससे रौशनी पैदा होती है, अच्छे अख़लाक़ परवरिश पाते हैं और वह तरबियत व तज़क़िए की फ़ितरी मंजिलों से गुज़रता हुआ रूहानी और अख़लाक़ी तरक्की करता है, उनमें सहने, बरदाश्त करने, ईसार (त्याग) और मुहब्बत, हमदर्दी और एक दूसरे का साथ देने, मुहब्बत व वफ़ादारी, भला चाहने और मदद करने, खुलूस, बहादुरी और रहम व मुहब्बत के ऊँचे से ऊँचे जज़्बात पैदा होते हैं और वह इनसानी समाज के लिए बिलकुल ही ख़ैर व बरक़त बन जाता है । हर दिल में उसके लिए क़द्र का जज़्बा पैदा होता है और हर इनसान उसके वुजूद को अपने हक़ में रहमत का साया समझता है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो मुसलमान लोगों के साथ मिल जुलकर रहता है और उनकी ओर से पहुँचनेवाली तकलीफ़ों को सहन करता है, वह कहीं बेहतर है उस आदमी से जो लोगों से अलग-थलग रहता है और उनकी ओर से पहुँचनेवाली तकलीफ़ों पर दिल टूटा हुआ होता है ।”  
(तिरमिज़ी)

3. हमेशा नेक और भले लोगों से दोस्ती कीजिए । दोस्ती के चुनाव में इस बात को ज़रूर ध्यान में रखिए कि जिन लोगों से आप दिली ताल्लुक़-बढ़ा रहे हैं, वे दीन व अख़लाक़ के पहलू से आपके लिए किस हद तक फ़ायदेमंद हो सकते हैं । एक मशहूर कहावत है कि ‘अगर किसी की अख़लाक़ी हालत मालूम करना चाहो तो उसके दोस्तों की अख़लाक़ी हालत मालूम करो’ और नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है । इसलिए हर आदमी को ग़ौर कर लेना चाहिए कि वह किससे दोस्ती कर रहा है ।”

(मुस्नद अहमद, मिश्कात)

दोस्त के दीन पर होने का मतलब यह है कि जब वह दोस्त की सोहबत (संगत) में बैठेगा तो वही जज़्बे व ख़याल और वही ज़ौक़ व रुझान उसमें पैदा होगा जो

दोस्त में है और पसन्द व नापसन्द का वही मेयार उसका भी बनेगा जो उसके दोस्त का है, इसलिए हर आदमी को दोस्त के चुनाव में बड़े सोच-विचार से काम लेना चाहिए और दिली ताल्लुक उसी से बढ़ाना चाहिए जिसका ज़ौक व रुझान, सोच-विचार और दौड़-धूप दीन व ईमान के तक्काज़ों के मुताबिक हो। नबी (सल्ल०) ने ताकीद फ़रमाई कि मोमिन ही से प्रेम का रिश्ता मज़बूत करो और उसी के साथ अपना खाना-पीना रखो। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“मोमिन ही की सोहबत में रहो और तुम्हारे दस्तरखान पर परहेज़गार ही खाना खाएँ।”

एक दस्तरखान (वह कपड़ा जिसपर रखकर खाना खाते हैं) पर बैठकर खाना-पीना दिली ताल्लुक और मुहब्बत को फ़ितरी तौर पर पैदा करता है और यह ताल्लुक व मुहब्बत उसी मोमिन से होना चाहिए जो तकवेवाला और परहेज़गार हो। खुदा मे गाफ़िल (लापरवाह), ग़ैर-ज़िम्मेदार, बेअमल और बदअखलाक लोगों से हमेशा दूर रहिए। नबी (सल्ल०) ने अच्छे और बुरे दोस्त से ताल्लुक की हालत को एक अच्छी मिसाल में यूँ बयान फ़रमाया है—

“अच्छे और बुरे दोस्त की मिसाल मुश्क (कस्तूरी) बेचनेवाले और भट्ठी धौंकनेवाले (लोहार) की तरह है। मुश्क बेचनेवाले की सोहबत से तुमको कुछ फ़ायदा ज़रूर पहुँचेगा या मुश्क खरीदोगे या मुश्क की खुशबू पाओगे, लेकिन लोहार की भट्ठी तुम्हारा घर या कपड़ा जलाएगी या तुम्हारे दिमाग में उसकी बदबू पहुँचेगी।” (बुखारी, मुस्लिम)

अबू दाऊद में हदीस के अलफ़ाज़ इस तरह हैं—

“नेक दोस्त की मिसाल ऐसी है जैसे ‘मुश्क बेचनेवाले की दुकान’ कि और कुछ फ़ायदा न भी हो तो खुशबू ज़रूर आएगी और बुरा दोस्त ऐसा है जैसे भट्ठी कि उस से आग न लगे तब भी धुएँ से कपड़े तो ज़रूर काले हो जाएँगे।”

4. दोस्तों से सिर्फ़ खुदा के लिए मुहब्बत कीजिए। खुदा के महबूब बंदे वही हैं जो खुदा के दीन की बुनियाद पर आपस में जुड़ते हैं और कंधे से कंधा और दिल से दिल मिलाकर इस तरह खुदा के दीन को कायम करने और उसकी हिफ़ाज़त करने की ज़िम्मेदारी निभाते हैं कि वे सीसा पिलाई हुई दीवार मालूम होते हैं।

कुरआन पाक में है—

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَانَهُمْ بَيَانٌ

“हकीकत में खुदा के प्रिय वे लोग हैं जो खुदा की राह में इस तरह पैर जमाकर लड़ते हैं गोया कि सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।”

(कुरआन, 61:4)

“क्रियामत में खुदा फरमाएगा कि वे लोग कहाँ हैं जो सिर्फ मेरे लिए मुहब्बत किया करते थे। आज मैं उनको अपने साए में जगह दूँगा।”

(मुस्लिम)

और क्रियामत के दिन ऐसे लोगों को जो काबिले रश्क शान व शौकत हासिल होगा, उसका जिक्र करते हुए नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“खुदा के बन्दों में कुछ ऐसे (सआदतमंद) हैं जो नबी और शहीद तो नहीं हैं लेकिन क्रियामत के दिन खुदा उनको ऐसे रुतबों से नवाजेगा कि नबी और शहीद भी उनके रुतबों पर रश्क करेंगे।” सहाबी (रजि०) ने पूछा, “ये कौन खुशनसीब होंगे ऐ अल्लाह के रसूल !” इरशाद फरमाया—

“ये वे लोग हैं जो आपस में एक दूसरे से सिर्फ खुदा के दीन की बुनियाद पर मुहब्बत करते थे। न ये आपस में रिश्तेदार थे न उनके बीच माली लेन-देन का ताल्लुक था। खुदा की कसम ! क्रियामत के दिन उनके चेहरे नूर से जगमगा रहे होंगे, बल्कि ये सिर से पैर तक नूर ही नूर होंगे और जब सारे लोग डर से काँप रहे होंगे तो उन्हें कोई डर न होगा और जब सारे ग़म में पड़े होंगे, उस वक़्त उन्हें कतई तौर पर कोई ग़म न होगा।”

और नबी (सल्ल०) ने कुरआन पाक की यह आयत तिलावत फरमाई—

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

“सुनो, अल्लाह के चाहनेवालों के लिए न किसी बात का कोई डर होगा और न (गुज़री हुई ज़िन्दगी के बारे में) किसी किसिम का ग़म।”

(कुरआन, 10:62)

हज़रत अबुहर्दा (रजि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“क्रियामत के दिन कुछ लोग अपनी क़ब्रों से आएँगे और उनके चेहरे नूर से जगमगा रहे होंगे। वे मोतियों के मिम्बर पर बिठाए जाएँगे। लोग



उनकी शान पर रश्क करेंगे । ये लोग न नबी होंगे, न शहीद ।” एक बद् ने सवाल किया, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! ये कौन लोग हैं, हमें इनकी पहचान बता दीजिए ?” फरमाया, “ये वे लोग हैं जो आपस में खुदा के लिए मुहब्बत करते हैं ।” (तबरानी)

5. नेक लोगों से मुहब्बत को आखिरत की निजात और खुदा की खुशी का जरिया समझिए और खुदा से दुआ कीजिए कि ऐ खुदा ! नेक लोगों की मुहब्बत अता कर और नेक लोगों में शामिल फरमा । हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) बयान करते हैं कि एक आदमी नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! एक आदमी किसी नेक आदमी से उसकी नेकी की वजह से मुहब्बत करता है, पर खुद उस आदमी जैसे अच्छे अमल नहीं करता ?” नबी (सल्ल०) ने फरमाया, “कोई हरज नहीं ! आदमी क्रियामत के दिन उसी के साथ होगा जिससे वह मुहब्बत करेगा ।” (बुखारी)

एक रात नबी (सल्ल०) को खुदा का दीदार हुआ । खुदा ने नबी (सल्ल०) से कहा, माँगिए । तो नबी (सल्ल०) ने यह दुआ माँगी—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ  
الْمَسَاكِیْنِ وَاَنْ تَغْفِرَ لِّیْ وَتَرْحَمَنِّیْ وَاِذَا اَرَدْتَ فِتْنَةً فِیْ قَوْمٍ فَتَوَفَّنِیْ  
غَيْرَ مَفْتُوْنٍ وَّاَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّكَ وَحُبَّ عَمَلٍ یُّقَرِّبُنِیْ  
اِلَیْ حُبِّكَ. (مسند احمد)

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क फ़िअ-लल खैराति व तर्कल मुन-कराति  
व हुब्बल मसाकी-न व अन तग़फ़ि-र-ली व तर-ह-म-नी व इज़ा अ-र-त  
फ़ित-न-तन फ़ी क़ौमिन फ़-त-वज़फ़नी ग़ै-र मफ़्तूनिन व अस-अलु-क  
हुब्ब-क व हुब-ब मैंयुहिब्बु-क व हुब-ब अ-मलियै-युकारिबुनी इला हुब्बिक ।  
(मुस्नद अहमद)

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे नेक कामों की तौफ़ीक़ चाहता हूँ और बुरे  
कामों से बचने की ताक़त चाहता हूँ और मिस्कीनों की मुहब्बत चाहता  
हूँ और यह कि तू मेरी माग़फ़िरत फ़रमा दे और मुझपर रहम फ़रमाए और  
जब तू किसी क़ौम को अज़ाब में डालना चाहे तो मुझे इस हाल में उठा  
ले कि मैं उससे बचा रहूँ और मैं तुझसे तेरी मुहब्बत का सवाल करता

हूँ और उस आदमी की मुहब्बत का सवाल करता हूँ जो तुझसे मुहब्बत करता है और उस अमल की तौफ़ीक़ चाहता हूँ जो तेरे कुर्ब (सामीप्य) का ज़रिया हो ।”

और हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“अल्लाह तआला का इश़ाद है कि मुझपर वाज़िब है कि मैं उन लोगों से मुहब्बत करूँ जो लोग मेरे लिए आपस में मुहब्बत और दोस्ती करते हैं और मेरा ज़िक्क़ करने के लिए एक जगह जमा होकर बैठते हैं और मेरी मुहब्बत की वजह से एक दूसरे से मुलाकात करते हैं और मेरी खुशी चाहने के लिए एक दूसरे के साथ नेक सुलूक करते हैं ।”

(अहमद, तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) दो दोस्तों की मुलाकात का ईमान भरा नक्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं—

“एक आदमी अपने दोस्त से, जो किसी दूसरी बस्ती में था, मुलाकात के लिए चला । खुदा ने उसके रास्ते पर एक फ़रिश्ते को बैठा दिया ।” फ़रिश्ते ने उससे पूछा, “कहाँ का इरादा है ?” उसने जवाब दिया, “उस गाँव में अपने भाई से मिलने जा रहा हूँ ।” फ़रिश्ते ने कहा, “क्या तुम्हारा उसपर हक्क़ है जो तुम वसूल करने जा रहे हो ?” उसने कहा, “नहीं, बस इस गरज़ से उसके पास जा रहा हूँ कि मैं उससे खुदा के लिए मुहब्बत करता हूँ । फ़रिश्ता बोला, “तो सुनो ! मुझे खुदा ने तुम्हारे पास भेजा है और यह खुशख़बरी दी है कि वह भी तुझसे ऐसी ही मुहब्बत रखता है, जैसी तू उसके लिए अपने दोस्त से रखता है ।” (मुस्लिम)

6. दोस्ती ऐसे लोगों से कीजिए जो इस्लामी नज़र से दोस्ती के लायक हों और फिर ज़िन्दगी भर इस दोस्ती को निभाने की कोशिश भी कीजिए । जिस तरह यह ज़रूरी है कि दोस्ती के लिए अच्छे लोगों को चुना जाए, उसी तरह यह भी ज़रूरी है कि दोस्ती को हमेशा-हमेशा निभाने और कायम रखने की भी कोशिश की जाए ।

नबी (सल्ल०) का इश़ाद है कि क़ियामत के दिन जब अर्शे इलाही के सिवा कहीं कोई साया न होगा, उस दिन सात किस्म के आदमी अर्शे इलाही के साए में होंगे । उनमें से एक किस्म के लोग वे दो आदमी होंगे जो खुदा के लिए एक दूसरे के दोस्त होंगे । खुदा की मुहब्बत ही ने उन्हें आपस में जोड़ा होगा और इसी बुनियाद पर वे एक दूसरे से जुदा हुए होंगे । यानी उनकी दोस्ती खुदा के

लिए होगी और ज़िंदगी भर वे दोस्ती को कायम रखने की कोशिश करेंगे और जब उनमें से कोई एक-दूसरे से जुदा होकर दुनिया से विदा हो रहा होगा तो इसी हाल में उनकी यह दोस्ती कायम होगी और इसी दोस्ती की हालत में वे एक-दूसरे से अलग होंगे ।

7. दोस्तों पर भरोसा कीजिए । उनके बीच हँसते-बोलते रहिए । गम में डूबे रहने और दोस्तों को गम में डुबाए रखने से बचिए । दोस्तों की सोहबत में बेतकल्लुफ और खुशमिजाज रहिए । तयारी चढ़ाने और लिए-दिए रहने से बचिए । दोस्तों के साथ एक बेतकल्लुफ साथी, हँसते रहनेवाला दोस्त और हमेशा खुश रहनेवाला दोस्त बनने की कोशिश कीजिए । आपकी सोहबत से दोस्त उकताएँ नहीं, बल्कि खुशी, ज़िन्दगी और आकर्षण महसूस करें ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

“मैंने नबी (सल्ल०) से ज़्यादा किसी को मुस्क्राते हुए नहीं देखा ।”

(तिरमिज़ी)

हज़रत जाबिर बिन समुरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं— “नबी (सल्ल०) की सोहबत में सौ मज्लिसों से भी ज़्यादा मैं बैठा हूँ । इन मज्लिसों में सहाबा किराम शेर भी पढ़ते थे और जाहिलियत के ज़माने के क्रिस्से-कहानियाँ भी सुनाते थे । नबी (सल्ल०) यह सब सुनते रहते थे, बल्कि कभी-कभी खुद भी उनके साथ हँसने में शरीक हो जाया करते थे ।

(तिरमिज़ी)

हज़रत शरीद (रज़ि०) कहते हैं कि मैं एक बार नबी (सल्ल०) के साथ सवारी पर आपके पीछे बैठा हुआ था । सवारी पर बैठे-बैठे मैं नबी (सल्ल०) को उमैया बिन सल्ल के सौ शेर (पद) सुनाए । हर शेर (पद) पर आप फ़रमाते कि कुछ और सुनाओ, और मैं सुनाता ।

(तिरमिज़ी)

इसी तरह नबी (सल्ल०) अपनी मज्लिस में खुद भी कभी-कभी क्रिस्से सुनाते । हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि एक बार आपने घरवालों को एक क्रिस्सा सुनाया । एक औरत ने कहा कि यह अजीब व गरीब क्रिस्सा तो बिलकुल खुराफ़ा के क्रिस्सों की तरह है । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम्हें खुराफ़ा का सही क्रिस्सा भी मालूम है और फिर खुद ही आपने खुराफ़ा का असल क्रिस्सा तफ़सील से सुनाया ।

इसी तरह एक बार हज़रत आइशा (रज़ि०) को ग्यारह औरतों की एक बहुत ही दिलचस्प कहानी सुनाई ।

हज़रत बिक्र बिन अब्दुल्लाह, सहाबा किराम (रज़ि०) की बेतकल्लुफी और

हँसी-मजाक का हाल बयान करते हुए फ़रमाते हैं—

“सहाबा किराम (रज़ि०) हँसी और दिल बहलाने के तौर पर एक-दूसरे की ओर तरबूज के छिलके फेंका करते थे, लेकिन जब लड़ने और हिफ़ाज़त करने का वक़्त आता था तो इस मैदान के सिपाही भी सहाबा (रज़ि०) ही हुआ करते थे ।”

(अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत मुहम्मद बिन ज़ियाद (रह०) फ़रमाते हैं—

“मेने बुज़ुर्गों को देखा है कि उनके कई-कई कुंबे एक ही हवेली में रहते थे । कई बार ऐसा होता कि उनमें से किसी एक के यहाँ मेहमान आता और किसी दूसरे के यहाँ चूल्हे पर हांडी चढ़ी होती, तो मेहमानवाला दोस्त अपने मेहमान के लिए दोस्त की हांडी उतार ले जाता । बाद में हांडीवाला अपनी हांडी को ढूँढता फिरता और लोगों से पूछता कि मेरी हांडी कौन ले गया ? वह मेज़बान दोस्त बताता कि भाई ! अपने मेहमान के लिए हम ले गए थे । उस वक़्त हांडीवाला कहता कि खुदा तुम्हारे लिए इसमें बरकत दे ।”

मुहम्मद बिन ज़ियाद (रह०) फ़रमाते हैं कि ये लोग जब रोटी पकाते तब भी यही शक़्ल पेश आती ।

(अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत अली (रज़ि०) का कथन है—

“दिल को आज़ाद भी छोड़ दिया करो, खुश कर देनेवाली बातें भी सोचा करो, क्योंकि जिस्म की तरह दिल भी थक जाता है ।”

8. रूखे-सूखे और मुर्दा दिल न बनिए । खुश रहिए और हँसते-बोलते रहिए । लेकिन इस बात की एहतियात ज़रूर कीजिए कि आपका खुश रहना और हँसना-बोलना हद से बढ़ने न पाए । खुश मिज़ाजी और तफ़रीह के साथ-साथ दीनी संजीदगी, ग़ैरत और सन्तुलन का भी ध्यान रखिए ।

नबी (सल्ल०) के सहाबी हज़रत अब्दुर्हमान (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी के सहाबी न रूखे-सूखे थे और न मुर्दों की-सी चाल चलते थे । वे अपनी मज़्लिसों में शेर व शायरी भी करते थे और जाहिलियत के दौर के खिलाफ़ किसी बात की माँग होती तो उनकी आँखों की पुतलियाँ गुस्से में इस तरह फिर जातीं कि जैसे उनपर जुनून छा गया है ।

(अल अदबुल मुफ़रद)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना (रह०) से किसी ने कहा कि मज़ाक़ भी एक आफ़त है । उन्होंने जवाब दिया कि नहीं, बल्कि सुन्नत है, पर उस आदमी के लिए जो उसके मौक़ों को जानता हो और अच्छा मज़ाक़ कर सकता हो ।

(शरह शिमाइले तिरमिज़ी)

9. आप जिस आदमी से मुहब्बत रखते हैं उससे अपनी मुहब्बत को जरूर जाहिर कीजिए । उसके मन पर यह असर पड़ेगा और उसको भी करीब होने का एहसास होगा और दोनों तरफ के जज्बात व एहसासात के तबादले से मुहब्बत व खुलूस में गैर-मामूली इजाफा होगा और फिर मुहब्बत सिर्फ दिल की हालत का नाम नहीं रहेगी, बल्कि उसके तकाजे अमली ज़िन्दगी पर असर डालेंगे और इस तरह निजी मामलों में दिलचस्पी लेने और ज्यादा से ज्यादा एक दूसरे से करीब होने का मौका मिलेगा ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब किसी आदमी के दिल में अपने भाई के लिए खुलूस व मुहब्बत की भावनाएँ हों तो उसे चाहिए कि वह अपने दोस्त को भी उन भावनाओं से आगाह कर दे और उसे बता दे कि वह उससे मुहब्बत रखता है ।”

(अबू दाऊद)

एक बार आपके सामने से एक आदमी गुज़रा । कुछ लोग आपके पास बैठे हुए थे । उनमें से एक ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे उस आदमी से सिर्फ़ खुदा के लिए मुहब्बत है ।” यह सुनकर नबी (सल्ल०) ने पूछा, “तो क्या तुमने उस आदमी को यह बात बता दी है ?” वह बोला, “नहीं तो !” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जाओ और उसपर जाहिर करो कि तुम खुदा के लिए उससे मुहब्बत करते हो, वह आदमी फ़ौरन उठा और जाकर उस जानेवाले से अपनी भावनाएँ जाहिर कीं । उसके जवाब में उसने कहा, “तुझसे वह ज़ात मुहब्बत करे, जिसके लिए तू मुझसे मुहब्बत करता है ।”

(तिरमिज़ी, अबू दाऊद)

दोस्ताना ताल्लुक़ात को ज्यादा से ज्यादा मज़बूत करने और दोस्तों से करीब होने के लिए जरूरी है कि आप दोस्तों के निजी मामलों में एक हद तक दिलचस्पी लें और अपना करीब होना और खास ताल्लुक़ होना जाहिर करें ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब एक आदमी दूसरे से दोस्ती और भाईचारे का रिश्ता जोड़े तो उससे उसका नाम, उसके बाप का नाम और उसके ख़ानदान के हालात मालूम कर ले कि इससे आपसी मुहब्बत की जड़ें मज़बूत होती हैं ।”

(तिरमिज़ी)

10. मुहब्बत के जाहिर करने और ताल्लुक़ पैदा करने में हमेशा बीच का रास्ता अपनाइए । न तो ऐसे ठंडेपन को जाहिर कीजिए कि आपकी मुहब्बत और ताल्लुक़ में शक़ नज़र आए और न मुहब्बत के जोश में इतना आगे बढ़िए कि आपकी

मुहब्बत और दोस्ती जुनून की शक्ल अपना ले और खुदा न करे कि किसी वक्त्त पछताना पड़े । सन्तुलन का हमेशा खयाल रखिए और पूरे जमाव के साथ ऐसा बीच का रास्ता अपनाइए जिसको आप बराबर निभा सकें । हज़रत असलम (रज़ि०) का बयान है कि—

“हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया कि तुम्हारी मुहब्बत जुनून की शक्ल न अपनाने पाए और तुम्हारी दुश्मनी तकलीफ़ पहुँचाने की वजह न बनने पाए ।” मैंने कहा, “हज़रत ! वह कैसे ?” आपने फ़रमाया, “(वह ऐसे कि) जब मुहब्बत करने लगे तो बच्चों की तरह चिमटने और बचकानी हरकत करने लगे और जब किसी से नाराज़ हो तो उसके जान व माल तक की तबाही और बरबादी पर उतर आओ ।” (अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत उबैद किन्दी (रह०) फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अली (रज़ि०) से सुना, फ़रमा रहे थे—

“अपने दोस्त से दोस्ती में नर्मि और बीच का रास्ता अपनाओ, हो सकता है कि वह किसी वक्त्त तुम्हारा दुश्मन बन जाए । इसी तरह दुश्मन से दुश्मनी में नर्मि और बीच का रास्ता अपनाओ, हो सकता है वह किसी वक्त्त तुम्हारा दोस्त बन जाए ।” (अल-अदबुल मुफ़रद)

11. दोस्तों के साथ वफ़ादारी और भला चाहनेवाला व्यवहार कीजिए । दोस्त के साथ सबसे बड़ी भलाई यह है कि आप उसको अख़लाक़ी एतबार से ज़्यादा से ज़्यादा ऊँचा उठाने की कोशिश करें और उसकी दुनिया बनाने से ज़्यादा उसकी आख़िरत बनाने की चिंता करें । नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, ‘दीन पूरे का पूरा भला चाहता है ।’ हाँ भला चाहने से असल मुराद यह है कि आप अपने दोस्त के लिए भी वही पसन्द करें जो अपने लिए पसन्द करते हों, इसलिए कि आदमी अपना बुरा कभी नहीं चाहता ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, कोई बन्दा मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि वह भाई के लिए वही पसन्द न करे जो वह अपने लिए करता है ।”

मुसलमान पर मुसलमान के छः हक़ बयान करते हुए नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“और यह कि वह अपने भाई का भला चाहे, चाहे वह ग़ायब हो या मौजूद ।”

आपने यह भी फ़रमाया—

“बेशक खुदा ने उस आदमी पर अग को वाजिब कर दिया है और जन्नत हराम कर दी है जिसने कसम खाकर किसी मुसलमान का हक मारा ।” (सहाबा में से किसी ने पूछा) “अगरचे वह कोई मामूली-सी चीज़ हो ?” आपने फ़रमाया, “हाँ, अगरचे वह पीलू की मामूली-सी डाल ही क्यों न हो ।”

12. दोस्तों के दुख-दर्द में शरीक रहिए और इसी तरह उनकी खुशियों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लीजिए । उनके ग़म में शरीक होकर ग़म ग़लत करने की कोशिश कीजिए और उनकी खुशियों में शरीक होकर खुशियाँ बढ़ाने की कोशिश कीजिए । हर दोस्त अपने मुखलिस दोस्तों से यही उम्मीद रखता है कि वे मुसीबत में भी उसका साथ देंगे और वक़्त पड़ने पर उसका साथ न छोड़ेंगे । इसी तरह वह यह भी उम्मीद रखता है कि उसके दोस्त उसकी खुशियों में बढ़ोत्तरी करें और उसके सामूहिक ज़रनों की ज़ीनत और रौनक बढ़ाएँ ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिए एक इमारत की तरह है कि एक दूसरे को ताक़त पहुँचाता और सहारा देता है, जैसे इमारत की एक ईंट दूसरी ईंट का सहारा बनती है और ताक़त पहुँचाती है । इसके बाद आपने एक हाथ की उँगलियाँ दूसरे हाथ की उँगलियों में डाल दीं (और इस तरह मुसलमानों के आपसी ताल्लुक और नज़दीकी को वाज़ेह फ़रमाया)।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“तुम मुसलमानों को आपसी रहमदिली, आपसी मुहब्बत और आपसी तकलीफ़ के एहसास में ऐसा पाओगे जैसे एक जिस्म का अगर एक अंग बीमार पड़ जाए तो सारा जिस्म बुखार और बेखाबी में उसका शरीक रहता है ।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

13. दोस्तों से खुशदिली, नर्मी, खुशी और इख़लास (निष्कपटता) से मिलिए और बड़ी तवज्जोह और खुले दिल से उनका स्वागत कीजिए । लापरवाही, बेनियाज़ी (उपेक्षा) और रूखेपन से बचिए । ये दिलों को फाड़नेवाली बुराइयाँ हैं । मुलाक़ात के वक़्त हमेशा खुशी इतमीनान और शुक्र व हम्द के कलिमे कहिए । मायूसी और मुर्दा दिली के कलिमे हरगिज़ ज़बान पर न लाइए । मुलाक़ात के वक़्त ऐसा अन्दाज़ अपनाइए कि आपके दोस्त खुशी और ज़िन्दगी महसूस करें । ऐसे बुझे चेहरे से उनका स्वागत न कीजिए कि उनका दिल बुझ जाए और वे आपकी मुलाक़ात को

बोझ समझने लगे ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“नेकियों में किसी नेकी को मामूली न जानो, चाहे वह इतनी ही हो कि तुम अपने भाई से खुले दिल से मिलो ।” (मुस्लिम)

और एक मौके पर नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“अपने भाई को देखकर तुम्हारा मुस्करा देना भी सदका है ।”

(तिरमिजी)

नमी, अच्छा अखलाक और मीठी बातों से ही दिलों में मुहब्बत पैदा होती है और इन्ही खूबियों की वजह से अच्छा समाज वुजूद में आता है ।

नबी (सल्ल०) फरमाते हैं—

“में तुम्हें उस आदमी की पहचान बताता हूँ जिसपर जहन्नम की आग हराम है और वह आग पर हराम है । यह वह आदमी है जो नर्म मिजाज हो, नर्म तबीयत हो और नर्म आदतोंवाला हो ।” (तिरमिजी)

सहाबा (रजि०) फरमाते हैं कि नबी (सल्ल०) जब मुलाकात के वक्त किसी की ओर मुतवज्जोह होते तो पूरे जिस्म से मुतवज्जोह होते और जब कोई आपसे बात करता तो आप पूरी तरह मुतवज्जोह होकर उसकी बात सुनते ।

एक बार आप (सल्ल०) मस्जिद में बैठे हुए थे । एक आदमी आया तो आपने अपने जिस्म को हरकत दी और तनिक सिमटे । उस आदमी ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! जगह तो काफ़ी फैली हुई है ।” नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“मुसलमान का यह हक़ है कि जब उसका भाई उसे देखे तो वह उसके लिए तनिक अपने जिस्म को हरकत दे ।” (बैहकी)

ईमानवालों की तारीफ़ में कुरआन में इरशाद है—

اذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

“वे ईमानवालों के लिए बड़ी नर्म आदतोंवाले होते हैं ।”

नबी (सल्ल०) ने इस हकीकत को यूँ बयान किया है—

“ईमानवाले, बुर्दबार (सहनशील) और नर्म दिल होते हैं उस ऊँट की तरह जिसकी नाक में नकेल पड़ी हो, उसको खींचा जाए तो वह खिंचता चला आए और पत्थर पर बिठाया जाए तो पत्थर पर बैठ जाए ।”

(तिरमिजी)



14. अगर कभी किसी बात पर मतभेद हो जाए तो तुरन्त सुलह-सफाई कर लीजिए और हमेशा माफ़ी तलब करने और अपनी गलतियों को मान लेने में पहल कीजिए ।

हज़रत अबुहर्दा (रज़ि०) बयान करते हैं कि एक बार हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) और हज़रत उमर (रज़ि०) में किसी मामले पर सख्त कलामी हो गई । बाद में हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को बहुत एहसास हुआ और वे बड़े गमगीन हुए और नबी (सल्ल०) की खिदमत में पहुँचे और फ़रमाया, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मेरे और उमर के बीच कुछ मतभेद हो गया, मुझे गुस्सा आ गया और कुछ सख्त बातें हो गईं । मुझे बाद में बड़ी शर्मिंदगी हुई और मैंने उमर (रज़ि०) से माफ़ी चाही, लेकिन ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! वे माफ़ करने को तैयार न हुए । मैं परेशान होकर आपकी खिदमत में आया ।” नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “खुदा तुम्हें माफ़ फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा ।” इसी बीच हज़रत उमर (रज़ि०) को भी अपनी ग़लती का एहसास हुआ और वे दौड़े-दौड़े हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के घर पहुँचे । वहाँ मालूम हुआ कि अबू बक्र नबी (सल्ल०) की खिदमत में गए हैं तो वे भी उसी वक़्त हुज़ूर (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुए । हज़रत उमर (रज़ि०) को देखकर नबी (सल्ल०) के चेहरे पर नाराज़गी फैल गई । यह देखकर हज़रत अबू बक्र बहुत डरे और बड़ी आजिज़ी के साथ घुटनों के बल होकर नबी (सल्ल०) से अर्ज़ किया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! उमर (रज़ि०) का कोई कुसूर नहीं, कुसूर सारा मेरा ही है, मैंने ही ज़्यादाती की है । मैंने ही उन्हें सख्त-सुस्त कहा है ।” यह देखकर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा ने मुझे तुम्हारे पास पैग़म्बर बनाकर भेजा और जब शुरू में तुमलोग झुठला रहे थे, उस वक़्त अबू बक्र (रज़ि०) ने मेरी तसदीक़ की और जान व माल से, मेरा हर तरह से साथ दिया, तो क्या अब तुम मेरे साथी को रंजीदा करके छोड़ोगे ?”

सुलह-सफ़ाई की कोशिश में कभी देर न कीजिए क्योंकि जितनी देर होती जाती है उतनी ही ख़राबी जड़ पकड़ती जाती है और दिलों में दूरियाँ पैदा होती जाती हैं । इंज़ील में हज़रत ईसा (अलै०) की यह नसीहत बहुत ज़्यादा ईमान को बढ़ानेवाली है—

“अतः अगर तू कुरबानगाह पर अपनी नज़्र गुज़ारता हाँ और वहाँ तुझे याद आए कि भाई को मुझसे शिकायत है तो वहीं कुरबानगाह के आगे ही अपनी नज़्र छोड़ दे और जाकर अपने भाई से मिलाप कर, तब अपनी नज़्र गुज़ारना ।” (इंज़ील)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“लोगों के काम हर सोमवार और बृहस्पतिवार को सप्ताह में दो दिन (खुदा के सामने) पेश होते हैं और हर मोमिन को बख्श दिया जाता है सिवाए उसके, जिसके दिल में अपने मोमिन भाई से कोई दुश्मनी हो। कहा जाता है कि उनको छोड़ दो ताकि ये आपस में सुलह कर लें।”

किसे मालूम कि अगला लम्हा (क्षण) ज़िन्दगी का है या मौत का, और कौन जानता है कि उसे सोमवार या बृहस्पतिवार का दिन ज़िन्दगी में देखना नसीब होगा या नहीं, तो फिर दिल की सफ़ाई और दोस्तों की शिकायत दूर करने में देर क्यों और किस उम्मीद पर ? क्या आखिरत के दिन पर यत्नीन रखनेवाला होशमंद इसके लिए तैयार है कि वह खोट-कपट से भरा हुआ काला और धिनौना दिल लेकर खुदा के हुज़ूर पहुँचे ?

इसी के साथ-साथ इसका भी खयाल रखिए कि जब आपका दोस्त अपनी ग़लती मान ले और माफ़ी चाहे तो उसका उज़्र क़बूल कीजिए और उसको माफ़ कर दीजिए।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जिसने किसी मुसलमान भाई से अपनी ग़लती पर उज़्र किया और उसने इसको माज़ूर न समझा या उसके उज़्र को क़बूल न किया, उसपर इतना गुनाह होगा, जितना एक नाजायज़ महसूल वसूल करनेवाले पर उसके जुल्म व ज़्यादती का गुनाह होता है।”

15. दोस्तों की ओर से अगर कोई बात तबीअत और जौक़ के खिलाफ़ भी हो जाए तो आप अपनी ज़बान पर काबू रखिए और जवाब में कभी सख़्त कलामी या बदज़बानी न कीजिए, बल्कि हिकमत और नमी के साथ बात को टाल जाइए।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

हज़रत मूसा (अलै०) ने खुदा से पूछा, “ऐ मेरे पालनहार ! आपके नज़दीक आपके बन्दों में कौन सबसे प्यारा है ?” खुदा ने जवाब दिया, “वह जो बदले की ताक़त रखने के बावजूद माफ़ कर देगा।”

(मिशकात)

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया है—

“मोमिन की तराज़ू में क्रियामत के दिन जो सबसे ज़्यादा वज़नी चीज़ रखी जाएगी वह उसका अच्छा अखलाक़ होगा और खुदा को वह आदमी

बड़ा ही नापसन्द है जो ज़बान से बेहयाई की बात निकालता और बदज़बानी करता है ।”

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह०) ने अच्छे अखलाक की तारीफ़ तीन बातों से फ़रमाई है—

- (i) जब आदमी किसी से मिले तो हँसते-मुस्कुराते चेहरे से मिले,
- (ii) खुदा के मुहताज और ज़रूरतमंद बन्दों पर खर्च करे, और
- (iii) किसी को तकलीफ़ न पहुँचाए ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“खुदा की नज़र में सबसे बुरा आदमी क्रियामत के दिन वह होगा जिसकी बुरी और गन्दी ज़बान की वजह से लोग उससे मिलना छोड़ दें ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

16. अपने दोस्तों की इस्लाह व तरबियत से कभी ग़ाफलत न कीजिए और अपने दोस्तों में वह बीमारी कभी पैदा न होने दीजिए जो इस्लाह व तरबियत की राह में सबसे बड़ी रुकावट है यानी— खुदपसन्दी और घमण्ड । दोस्तों को हमेशा तैयार करते रहिए कि वे अपनी कोताहियों और ग़लतियों को महसूस करें, अपनी ख़ताओं को मानने में हिम्मत से काम लें और इस सच्चाई को हर वक़्त निगाह में रखें कि अपनी कोताही को महसूस न करने और अपने अलगाव पर ज़िद बाँधने से नफ़्स को सबसे बुरा भोजन मिलता है ।

असल में नुमाइशी आजिज़ी (दिखावे की विनम्रता) दिखाना, लफ़्ज़ों में अपने को हक़ीर कहना और चाल-ढाल में नमी ज़ाहिर करना, बहुत आसान है, लेकिन अपने नफ़्स पर चोट सहना, अपनी कोताहियों को ठंडे दिमाग़ से सुनना और मानना और अपने नफ़्स के खिलाफ़ दोस्तों की आलोचनाएँ सह जाना बहुत मुश्किल काम है, लेकिन सच्चे दोस्त वही हैं जो खुले ज़ेहन के साथ एक-दूसरे की ज़िन्दगी पर निगाह रखें और इस पहलू से एक-दूसरे की तरबियत व इस्लाह करते हुए घमण्ड और खुदपसन्दी से बचे रहें ।

नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं—

“तीन बातें हलाकत में डालनेवाली हैं—

- (i) ऐसी खाहिश कि इनसान उसका अधीन और गुलाम बनकर रह जाए,
- (ii) ऐसा लालच जिसको पेशवा मानकर आदमी उसकी पैरवी करने लगे, और
- (iii) खुदपसन्दी— यह बीमारी इन तीनों में सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है ।”

(बैहक्की, मिशकात)

आलोचना और जाँच-पड़ताल एक ऐसी छुरी है जो अखलाक़ी (नैतिक) वुजूद के तमाम गंदे तत्वों को बाहर निकाल फेंकती है और अखलाक़ी ताक़तों को बढ़ाकर व्यक्ति और समाज में नई ज़िन्दगी की रूह फूँक देती है। दोस्तों की आलोचना और जाँच-पड़ताल पर बिफरना (गुस्सा करना), नाक-भौं चढ़ाना और खुद को उससे बेनियाज़ समझना भी हलाक़त है और इस अप्रिय ज़िम्मेदारी को अदा करने में कोताही बरतना भी हलाक़त है।

दोस्तों के दामन पर घिनौने धब्बे नज़र आएँ तो बेचेनी महसूस कीजिए और उन्हें साफ़ करने के हिक़मत भरे उपाय कीजिए और इस तरह खुद भी खुले दिल और राज़ी-खुशी से दोस्तों को हर वक़्त यह मौक़ा दीजिए कि वे अपने दाग़-धब्बों को आप पर नुमाय़ाँ करें और जब वे यह कड़वी ज़िम्मेदारी निभाएँ तो अपने नफ़्स को फुलाने के बजाए बड़े हौसले, खुशी और एहसानमंदी के ज़ब्बे से उनकी आलोचना का स्वागत कीजिए और उनके खुलूस और मेहरबानी का शुक्रिया अदा कीजिए। नबी (सल्ल०) ने आदर्श दोस्ती की इस हालत को एक अच्छी मिसाल से इस तरह ज़ाहिर किया है—

“तुममें से हर एक अपने भाई का आईना है, इसलिए अगर वह अपने भाई में कोई खराबी देखे तो उसे दूर कर दे।” (तिरमिज़ी)

इसी मिसाल में पाँच ऐसे रौशन इशारे मिलते हैं जिनको नज़र में रखकर आप अपनी दोस्ती को वाक़ई आदर्श दोस्ती बना सकते हैं।

(i) आईना आपके दाग़-धब्बे उसी वक़्त ज़ाहिर करता है जब आप अपने दाग़-धब्बे देखने के इरादे से उसके सामने जा खड़े होते हैं और जब आप उसके सामने से हट जाते हैं तो वह भी पूरी चुप्पी साध लेता है।

इसी तरह आप भी अपने दोस्त के ऐब उसी वक़्त बताएँ जब वह खुद को आलोचना के लिए आपके सामने पेश करे और खुले दिल से आलोचना करने का मौक़ा दे और आप भी महसूस करें कि इस वक़्त उसका ज़ेहन आलोचना सुनने के लिए तैयार है और मन में सुधार अपनाने के लिए भावनाओं में उथल-पुथल हो रही है और अगर आप यह हालत न पाएँ तो हिक़मत के साथ अपनी बात को किसी और मौक़े के लिए उठा रखें और ख़ामोशी अपना लें और उसकी ग़ैर मौजूदगी में तो इतनी एहतियात करें कि आपकी ज़बान पर कोई ऐसा शब्द आए ही न, जिससे उसके ऐब की ओर इशारा होता हो, इसलिए कि यह ग़ीबत है और ग़ीबत से दिल जुड़ते नहीं, बल्कि फटते हैं।

(ii) आईना चेहरे के उन्हीं दाग़-धब्बों की सही-सही तस्वीर पेश करता है जो

सच में चेहरे पर मौजूद होते हैं, न वह कम बताता है और न वह उनकी तादाद बढ़ाकर पेश करता है। फिर वह चेहरे के सिर्फ़ उन्हीं ऐबों को जाहिर करता है जो-उसके सामने होता है। वह छिपे हुए ऐबों को कुरेदता नहीं और न कुरेद-कुरेद कर ऐबों की कोई खयाली तस्वीर पेश करता है। इसी तरह आप भी अपने दोस्त के ऐब बिना कमी-बेशी किए बयान करें, न तो बेजा मुरव्वत और खुशामद में ऐब छिपाएँ और न अपनी तक़रीर और बयान के जोर से इसमें बढ़ौतरी करें और फिर सिर्फ़ वही ऐब बयान करें जो आम ज़िन्दगी में आपके सामने आएँ। कुरेद और टोह में न लगेँ, छिपे ऐबों को कुरेदना कोई अखलाकी खिदमत नहीं, बल्कि एक बहुत बुरा ऐब है।

नबी (सल्ल०) एक बार मिम्बर पर चढ़े और काफ़ी ऊँची आवाज़ में लोगों को तंबीह फ़रमाई—

“मुसलमानों के ऐबों के पीछे न पड़ो। जो आदमी अपने मुसलमान भाइयों के छिपे ऐबों को खोलता है, तो फिर खुदा उसके छिपे ऐबों को खोलने पर तुल जाता है, और जिसके ऐब खुदा खोलने पर तुल जाए तो वह उसको रुसवा करके ही छोड़ता है, अगरचे वह अपने घर के भीतर घुसकर ही क्यों न बैठ जाए।”

(तिरमिज़ी)

(iii) आईना हर गरज़ से पाक होकर बेलाग अन्दाज़ में अपनी ज़िम्मेदारी निभाता है और जो आदमी भी उसके सामने अपना चेहरा पेश करता है, वह बग़ैर किसी गरज़ के उसका सही-सही नक़शा उसके सामने रख देता है। न वह किसी से कीना (द्वेष) रखता है और न ही किसी से बदला लेता है। आप भी निजी गरज़, बदले की भावना, कीना और हर तरह की बदनीयती से साफ़ होकर बेलाग पकड़ कीजिए और इसलिए कीजिए कि आपका दोस्त अपने को सँवार ले, जिस तरह आईने को देखकर आदमी अपने को बना-सँवार लेता है।

(iv) आईने में अपनी सही तस्वीर देखकर न कोई झुंझलाता है और न गुस्से से बेक्राबू होकर आईना तोड़ देने की बेवकूफी करता है, बल्कि तुरन्त अपने को बनाने और सँवारने में लग जाता है और दिल ही दिल में आईने की क़द्र व क़ीमत महसूस करते हुए उसका शुक्रिया अदा करता है और कहता है कि वाकई आईने ने मेरे बनने-सँवरने में मेरी बड़ी मदद की और फ़ितरी ज़िम्मेदारी पूरी की और फिर बड़े एहतिमाम के साथ दूसरे वक़्त के लिए उसको हिफ़ाज़त से रख देता है। इसी तरह जब आपका दोस्त अपने लफ़्ज़ों के आईने में आपके सामने आपकी सही तस्वीर रखे तो आप झुंझलाकर दोस्त पर जवाबी हमला न करें, बल्कि उसके शुक्रगुज़ार हों कि उसने अपनी दोस्ती का हक़ अदा किया और न सिर्फ़ ज़बान से बल्कि

दिल से उसका शुक्रिया अदा करते हुए उसी लम्हे से अपनी इस्लाह व तरबियत के लिए चिन्तित रहें और खुले दिल और एहसानमंदी के साथ दोस्त की अहमियत महसूस करते हुए उससे दरख्वास्त करें कि आगे भी वह अपने क़ीमती मशविरों से नवाज़ता रहे ।

(v) और आखिरी इशारा यह है कि मुसलमानों में से हर एक 'अपने भाई का आईना' है और भाई-भाई के लिए इखलास व मुहब्बत की मूर्ति होता है, वफ़ादार और भला चाहनेवाला होता है, हमदर्द और दोस्त होता है, भाई को मुसीबत में देखकर तड़प उठता है और खुश देखकर बाग़-बाग़ हो जाता है, इसलिए भाई और दोस्त जो आलोचना करेंगे उसमें इतिहाई खुलूस होगा, मुहब्बत होगी, दर्दमंदी होगी और एक-एक शब्द भला चाहने के ज़ब्बे से भरा होगा और ऐसी ही आलोचना से दिलों को जोड़ने और ज़िन्दगियों के बनने की उम्मीद की जा सकती है ।

17. दोस्तों से खुलूस व मुहब्बत करने और मुहब्बत को और ज़्यादा बढ़ाने के लिए उपहारों और तोहफ़ों की अदला-बदली भी कीजिए । उपहारों के लेने-देने से दिल भी जुड़ते हैं और मुहब्बत में बढ़ोत्तरी भी होती है । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“एक दूसरे को उपहार भेजा करो, इससे आपस में मुहब्बत पैदा होगी और दिलों की कटुता (द्वेष) जाती रहेगी ।” (मिशकात)

नबी करीम (सल्ल०) खुद अपने साथियों को ज़्यादा से ज़्यादा उपहार देते थे और आपके सहाबा (रज़ि०) भी आपस में ज़्यादा से ज़्यादा एक-दूसरे को उपहार और तोहफ़े देते रहते थे ।

उपहार देते समय अपनी हैसियत को सामने रखिए और यह न सोचिए कि आप जिसको उपहार दें, क़ीमती उपहार दें । जो कुछ भी मिले दीजिए । उपहार का क़ीमती होना, न होना आपके इखलास और ज़ब्बे पर टिका हुआ है और यही खुलूस और ज़ब्बा दिलों को जोड़ता है, उपहार की क़ीमत नहीं जोड़ती । इसी तरह दोस्त के उपहार को भी कभी मामूली न समझिए, उसके इखलास व मुहब्बत पर निगाह रखिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“अगर मुझे उपहार में कोई बकरी का एक पाया भी पेश करे तो मैं ज़रूर क़बूल करूँगा । अगर कोई दावत में एक पाया ही खिलाए तो मैं ज़रूर उस दावत में जाऊँगा ।” (तिरमिज़ी)

उपहार के बदले में उपहार ज़रूर दीजिए । नबी (सल्ल०) इसका एहतिमाम

फरमाते थे । आपके नज़दीक पसन्दीदा तोहफ़ा, खुशबू का तोहफ़ा था । आप भी इस तोहफ़े को पसन्दीदा समझिए और आज के हालात में किताब भी बेहतरीन तोहफ़ा है ।

इसी सिलसिले में कभी-कभी साथ मिलकर खाने-पीने का एहतिमाम कीजिए । दोस्तों को अपने यहाँ खाने पर बुलाइए । दोस्त-अहबाब दावत करें तो बड़ी खुशी से उनके यहाँ जाइए । इससे भी मुहब्बत व खुलूस के जज़्बे और मज़बूत होते हैं । अलबत्ता इस तरह के मौकों पर ग़ैर मामूली ताल्लुक बरतने और खाने-पीने के सामान में ज़्यादती दिखाने के बजाए आप इखलास व मुहब्बत के जज़्बों की मात्रा बढ़ाने पर ज़्यादा तवज्जोह दीजिए ।

18. दोस्तों की खबर रखा कीजिए । ज़रूरतों में उनके काम आइए और हर तरह जान व माल से उनकी मदद कीजिए ।

इस्बहानी की एक रिवायत में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) के पास एक आदमी आया और पूछा कि लोगों में खुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब कौन है ? उन्होंने जवाब दिया—

“तमाम लोगों में खुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा प्यारा वह आदमी है जो इनसानों को सबसे ज़्यादा नफ़ा पहुँचानेवाला हो और अमल में खुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा यह है कि किसी मुसलमान को खुश कर दे, इस तरह कि उसकी मुसीबत व मुश्किल दूर करे या उसकी भूख मिटा दे और यह बात कि मैं किसी भाई के साथ उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए जाऊँ, मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि मैं नबी (सल्ल०) की इस मस्जिद में एतिकाफ करूँ और जिस आदमी ने अपना गुस्सा इस हाल में पी लिया कि अगर वह चाहता तो अपने गुस्से को पूरा कर लेता, तो क्रियामत के दिन खुदा उसके दिल को अपनी खुश्नूदी से भर देगा और जो अपने भाई के साथ उसकी ज़रूरत पूरी करने के लिए चला और उसकी वह ज़रूरत पूरी कर दी तो खुदा उसके दोनों क़दमों को उस दिन मज़बूती देगा, जब क़दम लड़खड़ा रहे होंगे ।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी अपने भाई की ज़रूरत पूरी करेगा तो खुदा उसकी ज़रूरत पूरी करने में लगा रहेगा और जो किसी मुसलमान की कोई मुसीबत दूर करेगा तो खुदा क्रियामत की मुसीबत में से किसी मुसीबत को उससे दूर फरमाएगा ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फरमाया—

“खुदा अपने बन्दे की मदद में उस वक़्त तक लगा रहता है, जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।” (तिरमिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया—

“किसी मुसलमान की ज़रूरत पूरी करने का अज़्र व सवाब दस साल के एतिकाफ़ से भी ज़्यादा है।” (तबरानी)

और हज़रत अनस (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इश़ाद फ़रमाया—

“जो आदमी अपने मुसलमान भाई के पास खुशी की बात लेकर पहुँचता है और उस बात से उसको खुश कर देता है तो खुदा क़ियामत के दिन उस बन्दे को खुश कर देगा।” (तबरानी)

19. बेहतरीन राज़दार बनिए। दोस्त अगर आप पर भरोसा करके आपसे दिल की बात कह दे, तो उसकी हिफ़ाज़त कीजिए और कभी दोस्त के विश्वास को ठेस न लगाइए। अपने सीने को राज़ों का भण्डार बनाइए ताकि दोस्त बिना किसी झिज़क के हर मामले में मशविरा ले सके और आप दोस्त को अच्छे मशविरे और सहयोग दे सकें।

हज़रत उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हफ़सा (रज़ि०) जब बेवा हुई तो मैं उसमान (रज़ि०) से मिला और कहा कि अगर तुम चाहो तो हफ़सा का निकाह तुमसे कर दूँ। उसमान (रज़ि०) ने जवाब दिया, “मैं इस मामले पर ग़ौर करूँगा।” मैंने कई रातों तक उनका इन्तिज़ार किया, फिर उसमान मुझसे मिले और बोले, “मेरा अभी शादी करने का खयाल नहीं है।” मैं फिर अबू बक्र (रज़ि०) के पास गया और कहा “अगर आप पसन्द फ़रमाएँ तो हफ़सा से शादी कर सकते हैं।” वे खामोश रहे और कोई जवाब नहीं दिया। मुझे उनकी खामोशी बहुत खली, उसमान से भी ज़्यादा खली। इसी तरह कई दिन गुज़र गए। फिर नबी (सल्ल०) ने हफ़सा (रज़ि०) का पैग़ाम भेजा और मैंने नबी (सल्ल०) से हफ़सा का निकाह कर दिया। इसके बाद अबू बक्र (रज़ि०) मुझसे मिले और फ़रमाया, “तुमने मुझसे हफ़सा का ज़िक्र किया था और मैंने खामोशी अपना ली थी। हो सकता है, तुम्हें मेरी खामोशी से कोई तकलीफ़ हुई हो।” मैंने कहा, “हाँ, तकलीफ़ तो हुई थी।” फ़रमाया, “मुझे मालूम था कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का खुद ऐसा खयाल है और यह आपका एक राज़ था जिसको मैं ज़ाहिर नहीं करना चाहता था, अगर नबी (सल्ल०) हफ़सा (रज़ि०) का ज़िक्र न फ़रमाते तो मैं ज़रूर क़बूल कर लेता।”

(बुख़ारी)



हज़रत अनस (रज़ि०) एक दिन लड़कों के साथ खेल रहे थे कि इतने में नबी (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और हमें सलाम किया । फिर अपनी एक ज़रूरत बताकर मुझे भेजा । मुझे उस काम को करने में देर लगी । काम से फ़ारिग़ होकर जब घर गया तो माँ ने पूछा, “इतनी देर कहाँ लगाई ?” मैंने कहा, “नबी (सल्ल०) ने अपनी एक ज़रूरत से भेजा था । बोलीं, “क्या ज़रूरत थी ?” मैंने कहा, “वह राज़ की बात है ।” माँ ने कहा, “देखो अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का राज़ किसी को न बताना ।”

(मुस्लिम)

20. इज्तिमाई अखलाक़ (सामूहिक-चरित्र) में इतना फैलाव और समाई पैदा कीजिए कि हर ज़ौक़ व तरबियत और हर सोच-विचार और रुझान रखनेवाला आपकी ज़ात में ग़ैर-मामूली आकर्षण महसूस करे और हर एक के खास ज़ौक़ व रुझान और तरबियत की खास तेज़ी की रियायत करते हुए ऐसा हिकमत भरा व्यवहार कीजिए कि किसी के ज़ब्बात को ठेस न लगे । हर एक को अपने खास ज़ौक़ के पैमाने से नापने की ग़ैर हिकमत भरी कोशिश न कीजिए और न हर एक को अपनी तरबियत के मुताबिक़ ढालने की नाकाम कोशिश कीजिए । ज़ौक़ व तबियत का मतभेद एक फ़ितरी हुस्न (स्वाभाविक सौन्दर्य) है । फ़ितरत के हुस्न को बनावटी हुस्न की बेजा उम्मीद में न बिगाड़िए । हर दोस्त को उसकी फ़ितरी जगह पर रखते हुए उससे दिलचस्पी लीजिए और उसकी क़ीमत समझिए और अपने अच्छे अखलाक़ के ज़रिए उससे जुड़े रहने की कोशिश कीजिए ।

नबी (सल्ल०) की शख्सियत (व्यक्तित्व) का यह हाल था कि हर ज़ौक़ और हर तरबियत का इन्सान आपकी मज्लिस में सुकून पाता और अपनी तबियत की रियायत करते हुए कोई मामूली-सा भी परायापन महसूस न करता । आपकी मज्लिस में अबू बक्र (रज़ि०) जैसे साक्षात प्रेम भी थे और उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) जैसे नंगी तलवार भी, हस्सान बिन साबित (रज़ि०) जैसे काँपनेवाले भी थे और अली (रज़ि०) जैसे ख़ैबर को जीतनेवाले भी, अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) जैसे फ़कीर तबियत आदमी भी और अब्दुलहमान बिन औफ़ (रज़ि०) जैसे धनवान भी । लेकिन नबी (सल्ल०) के ऊँचे अखलाक़, अच्छे किरदार और हिकमत भरी सूझ-बूझ का कमाल यह था कि ये सभी नबी (सल्ल०) की ज़ात से भी बेमिसाल ताल्लुक़ और मुहब्बत रखते और नबी (सल्ल०) भी उनका इतना खयाल रखते कि हर एक यह समझता कि शायद नबी (सल्ल०) सबसे ज़्यादा मुझ ही को चाहते हैं और इसी ऊँचे अखलाक़ और ग़ैर मामूली त्याग की बदौलत नबी (सल्ल०) ने सहाबा किराम का वह आदर्श गिरोह तैयार किया जिनमें अल-अलग तबियतों के मौजूद होने के बावजूद वह बेमिसाल एकता एवं ताल्लुक़ और लागव था कि इन्सानी तारीख़ अपने इन पन्नों

को अपनी लम्बी उम्र का निचोड़ समझती है ।

आपकी दोस्तियाँ हकीकत में उसी वक़्त कामयाब और मज़बूत हो सकती हैं जब आप इज्तिमाई अखलाक में हिकमत भरी लचक और ग़ैर-मामूली जमाव और बर्दाश्त करने की ताक़त पैदा करें और दोस्ताना ताल्लुकात में एक-दूसरे का खयाल और एक दूसरे की ग़लतियों की माफ़ी, त्याग-भाव, आपसी रियायतें, हमदर्दी, मुहब्बत, एक दूसरे की भावनाओं का खयाल और भला चाहने का ज़रूरी हद तक खयाल करें । नबी (सल्ल०) की कुछ घटनाओं से अन्दाज़ा कीजिए कि आप किस आला, फ़ितरी फ़राखदिली, नर्मी, सब्र और रवादारी के साथ लोगों की फ़ितरी ज़रूरतों, ज़ज्बों और कमज़ोरियों का खयाल रखते थे ।

“मैं नमाज़ के लिए आता हूँ और जी चाहता है कि लम्बी नमाज़ पढ़ाऊँ फिर किसी बच्चे की रोने की आवाज़ कान में आती है तो मैं नमाज़ को छोटी कर देता हूँ, क्योंकि मुझपर यह बात बहुत बोझ है कि नमाज़ को लम्बी करके बच्चे की माँ को परेशानी में डाल दूँ ।”

(बुखारी)

हज़रत मालिक बिन हुवैरस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हम कुछ हम-उम्र नौजवान दीन का इल्म हासिल करने के लिए नबी (सल्ल०) के यहाँ पहुँचे । हमने बीस दिन आपके यहाँ किया किया । नबी (सल्ल०) बड़े रहम करनेवाले और नर्म मामला करनेवाले थे । (जब आपके यहाँ रहते हुए हमें बीस दिन हो गए तो) आपने महसूस किया कि हम घर जाने के शौक़ में हैं तो आपने हमसे पूछा, “तुम अपने घरों में अपने पीछे किन-किन लोगों को छोड़ आए हो ?” हमने घर के हालात बताए तो आपने फ़रमाया, “जाओ अपने बीवी-बच्चों में वापस जाओ और उनके दरमियान रहकर उन्हें भी वह सब सिखाओ जो तुमने सीखा है और उन्हें भले कामों पर उभारो और फ़लाँ नमाज़ फ़लाँ वक़्त पर पढ़ो और जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुममें से कोई अज़ान दे और जो तुम लोगों में इल्म व अखलाक के एतिबार से बढ़ा हुआ है, वह नमाज़ पढ़ाए ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत मुआविया बिन हक़म सुलमी (रज़ि०) अपना किस्सा सुनाते हैं कि मैं नबी (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में एक आदमी को छींक आई । नमाज़ पढ़ते हुए ही मेरी ज़बान से ‘यर्हमुकल्लाह’ निकल गया तो लोग मुझे घूरने लगे । मैंने कहा, “ख़ुदा तुम्हें सलामत रखे, मुझे घूर क्यों रहे हो ?” फिर जब मैंने देखा कि वे मुझसे ख़ामोश रहने को कह रहे हैं तो मैं ख़ामोश हो गया । जब नबी (सल्ल०) नमाज़ से फ़ारिग हो गए—मेरे माँ-बाप आप (सल्ल०) पर क़ुरबान ! मैंने नबी (सल्ल०) से ज़्यादा बेहतर तालीम व तरबियत करनेवाला

न तो पहले देखा, न बाद में । आपने ने न तो मुझे डाँटा, न मारा, न भला-बुरा कहा, सिर्फ़ इतना कहा—

“यह नमाज़ है । नमाज़ में बातचीत करना मुनासिब नहीं । नमाज़ तो नाम है खुदा की पाकी बयान करने का, उसकी बड़ाई बयान करने का और कुरआन पढ़ने का ।” (मुस्लिम)

21. दुआ का खास एहतिमाम कीजिए । खुद भी दोस्तों के लिए दुआ कीजिए और उनसे भी दुआ की दरखास्त कीजिए । दुआ दोस्तों के सामने भी कीजिए और उनके पीछे भी । पीछे में दोस्तों का खयाल करके और उनका नाम लेकर भी दुआ कीजिए । हज़रत उमर (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल०) से उमरा करने की इजाज़त चाही तो आपने इजाज़त देते हुए फ़रमाया—

“ऐ मेरे भाई ! अपनी दुआओं में हमें न भूलना ।” हज़रत उमर (रज़ि०) कहते हैं, “मुझे इस बात से इतनी खुशी हुई कि अगर उसके बदले मुझे पूरी दुनिया भी मिलती तो इतनी खुशी न होती ।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई के लिए गाइबाना (अनुपस्थिति में) दुआ करता है तो खुदा उसको कबूल फ़रमाता है और दुआ करनेवाले के सिरहाने एक फ़रिश्ता मुक़र्र रहता है कि जब वह आदमी अपने भाई के लिए अच्छी दुआ करता है तो फ़रिश्ता ‘आमीन’ कहता है और कहता है, तेरे लिए भी वही कुछ है जो तू अपने भाई के लिए माँग रहा है । (मुस्लिम)

अपनी खुलूस भरी दुआओं में खुदा से यह दरखास्त करते रहिए कि ऐ खुदा ! हमारे दिलों को कीना और दुश्मनी की धूल से धो दे और हमारे सीनों को खुलूस और मुहब्बत से जोड़ दे और हमारे ताल्लुकात को आपसी मेल-जोल और एकता के ज़रिए खुशगवार बना ।

कुरआन पाक की इस दुआ का भी एहतिमाम कीजिए—

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِأَخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ (الحشر)

रब्बनगाफ़िर लना व लि इख्वानिनल्लज़ी-न स-ब-कूना बिल ईमानी वला तज-अल फ़ी कुलूबिना गिल्लल लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊ-फ़रहीम ।

“ऐ रब । हमारी और हमारे इन भाइयों की माफ़िरत फ़रमा जो ईमान

में हम से बाज़ी ले गए और हमारे दिलों में एक-दूसरे के खिलाफ़ कीना और कुदूरत न रहने दे । ऐ हमारे रब ! तू बहुत ही मेहरबान, बहुत ही रहम करनेवाला है ।”

(अल-हश्म 59:10)

## 27. मेज़बानी के आदाब

1. मेहमान के आने पर खुशी और मुहब्बत ज़ाहिर कीजिए और बड़ी खुशदिली, खुले मन और इज़्जत के साथ उसका स्वागत कीजिए। तंगदिली, बेरुखी, कुढ़न और घुटन को हरगिज़ ज़ाहिर न कीजिए।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो लोग खुदा और आखिरत के दिन पर यक़ीन रखते हैं उन्हें अपने मेहमान का सत्कार करना चाहिए।” (बुखारी, मुस्लिम)

आदर-सत्कार में वे तमाम बातें शामिल हैं जो मेहमान के मान-सम्मान, राहत व आराम, सुकून व खुशी और भावनाओं की तस्कीन के लिए हों। खुले दिल और खुले मन से पेश आना, हँसी-खुशी की बातों से दिल बहलाना, इज़्जत के साथ बैठने-लेटने का इन्तिज़ाम करना, अपने प्यारे दोस्तों से परिचय और भेंट कराना, उसकी ज़रूरतों का खयाल करना, बड़ी खुशदिली और फ़राखदिली के साथ खाने-पीने का इन्तिज़ाम करना और आदर-सत्कार में लगे रहना, ये सभी बातें मेहमान के सत्कार में दाखिल हैं।

प्यारे नबी (सल्ल०) के पास जब मेहमान आते तो आप खुद ही उनकी खातिरदारी फ़रमाते।

जब आप मेहमान को अपने दस्तरखान पर खाना खिलाते तो बार-बार फ़रमाते, “और खाइए, और खाइए।” जब मेहमान का दिल भर जाता और इनकार करता तब आप इसरार करने से रुक जाते।

2. मेहमान के आने पर सबसे पहले उससे दुआ-सलाम कीजिए और खैर व आफ़ियत मालूम कीजिए। क़ुरआन में है—

هَلْ أَتَكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا  
سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ ۝

“क्या आपको इबराहीम के इज़्जतदार मेहमानों की दास्तान भी पहुँची है कि जब वे उनके पास आए तो आते ही सलाम किया। इबराहीम ने जवाब में सलाम किया।” (क़ुरआन, 51:24)

3. दिल खोलकर मेहमान का स्वागत कीजिए और जो अच्छे से अच्छा मिले, मेहमान के सामने फ़ौरन पेश कीजिए। हज़रत इबराहीम (अलै०) के मेहमान जब

आए तो हज़रत इबराहीम (अलै०) फ़ौरन उनके खाने-पीने के इंतज़ाम में लग गए और जो मोटा-ताज़ा बछड़ा उनके पास था, उसी का गोشت भूनकर मेहमानों की खिदमत में पेश किया ।

कुरआन में है—

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ ۝ (الذّاریات)

“तो जल्दी से घर में जाकर एक मोटा-ताज़ा बछड़ा (जबह करके भुनवा) लाए और मेहमानों के सामने पेश किया ।” (कुरआन, 51:26)

यहाँ जो अरबी शब्द आए हैं, उसका एक मतलब यह भी है कि वे चुपके से घर में मेहमानों के सत्कार का इन्तिज़ाम करने चले गए, इसलिए कि मेहमानों को दिखाकर और जनाकर उनके खाने-पीने और सत्कार की दौड़-धूप होगी तो वे शर्म और मेज़बान की तकलीफ़ की वजह से मना करेंगे और पसन्द न करेंगे कि उनकी वजह से मेज़बान किसी ग़ैर-मामूली परेशानी में पड़े और फिर मेज़बान के लिए मौक़ा न होगा कि वह भरपूर खातिरदारी कर सके ।

नबी (सल्ल०) ने मेहमान की खातिरदारी पर जिस अंदाज़ से उभारा है उसका नक्शा खींचते हुए अबू शुऱैह (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

“मेरी इन दो आँखों ने देखा और इन दो कानों ने सुना, जबकि नबी (सल्ल०) यह हिदायत दे रहे थे : “जो लोग खुदा और आखिरत के दिन पर यक़ीन रखते हों, उन्हें अपने मेहमानों का सत्कार करना चाहिए । मेहमान के इनाम का मौक़ा पहली रात और दिन है ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

पहली रात और दिन की मेज़बानी को इनाम कहने का मतलब यह है कि जिस तरह इनाम देनेवाला दिल की इतिहाई खुशी और मुहब्बत की गहरी भावनाओं के साथ इनाम देते हुए रूहानी लज़्ज़त और खुशी महसूस करता है, ठीक यही बात पहली रात और दिन के मेज़बान की होनी चाहिए । और जिस तरह इनाम लेनेवाला खुशी की भावनाओं में डूबकर इनाम देनेवाले के एहसान की कद्र करते हुए अपना हक़ समझकर इनाम वसूल करता है, ठीक उसी हालत को पहली रात और दिन में मेहमान को भी ज़ाहिर करना चाहिए और बिना किसी झिझक के अपना हक़ समझते हुए खुशी और कुरबत की भावनाओं के साथ मेज़बान की भेंट क़बूल करना चाहिए ।

4. मेहमान के आते ही उसकी इनसानी ज़रूरतों का एहसास कीजिए । ज़रूरत

पूरी करने के लिए पूछिए । मुँह-हाथ धोने का एहतिमाम कीजिए, जरूरत हो तो नहाने का भी इतिजाम कीजिए । खाने-पीने का वक्त न हो जब भी मालूम कर लीजिए और इस बेहतर तरीके से कि मेहमान तकल्लुफ में इनकार न करे । जिस कमरे में लेटने-बैठने और ठहराने की व्यवस्था हो, वह मेहमान को बता दीजिए ।

5. हर वक्त मेहमान के पास धरना मारे बैठे न रहिए और इसी तरह रात गए तक मेहमान को परेशान न कीजिए ताकि मेहमान को आराम करने का मौका मिले और वह परेशानी महसूस न करे । हजरत इबराहीम (अलै०) के पास जब मेहमान आए तो उनके खाने-पीने का इतिजाम करने के बाद मेहमान से कुछ देर के लिए अलग हो गए ।

6. मेहमानों के खाने-पीने पर खुशी महसूस कीजिए । तंगदिली, कुढ़न और कोफ्त महसूस न कीजिए । मेहमान परेशानी नहीं, बल्कि रहमत और बरकत का जरिया होता है और खुदा जिसको आपके यहाँ भेजता है उसकी रोजी भी उतार देता है । वह आपके दस्तरखान पर आपकी क्रिस्मत का नहीं खाता बल्कि अपनी क्रिस्मत का खाता है और आपके आदर-सत्कार में बढ़ोतरी की वजह बनता है ।

7. मेहमान की इज्जत व आबरू का भी ध्यान रखिए और उसकी इज्जत व आबरू को अपनी इज्जत व आबरू समझिए । आपके मेहमान की इज्जत पर कोई हमला करे तो उसको अपनी गैरत के खिलाफ चुनौती समझिए ।

कुरआन में है कि जब लूत (अलै०) के मेहमानों पर बस्ती के लोग बदनियती के साथ हमलावर हुए तो वे रोकने के लिए उठ खड़े हुए और कहा कि ये लोग मेरे मेहमान हैं । इनके साथ बदसलूकी करके मुझे रुसवा न करो, इनकी रुसवाई मेरी रुसवाई है ।

लूत (अलै०) ने कहा—

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ

“भाइयो ! ये मेरे मेहमान हैं, मुझे रुसवा न करो । खुदा से डरो और मेरी बेइज्जती से बाज रहो ।” (कुरआन, 15:68-69)

8. तीन दिन तक बड़े शौक और वलवले के साथ मेजबानी के तकाजे पूरे कीजिए । तीन दिन तक की मेहमानी मेहमान का हक है और हक अदा करने में मोमिन को बड़े खुले दिल का होना चाहिए । पहला दिन खास सत्कार का है, इसलिए पहले दिन मेहमान-नवाजी का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए । बाद के दो दिनों में अगर वह गैर-मामूली एहतिमाम न रह सके तो कोई हरज नहीं । नबी

(सल्ल०) का इरशाद है—

“और मेहमानदारी तीन दिन तक है । इसके बाद मेज़बान जो कुछ करेगा, वह उसके लिए सदका होगा ।” (बुखारी, मुस्लिम)

9. मेहमान की खिदमत को अपना अखलाकी फ़र्ज़ समझिए और मेहमान को नौकरों या बच्चों के हवाले करने के बजाए खुद उनकी खिदमत और आराम के लिए क़मर कसे रहिए । नबी (सल्ल०) प्यारे मेहमानों की मेहमानदारी खुद फ़रमाते थे । हज़रत इमाम शाफ़ई (रह०) जब इमाम मालिक (रह०) के यहाँ जाकर मेहमान के तौपर ठहरे तो इमाम मालिक (रह०) ने बड़ी इज़्ज़त व एहतियार से उन्हें एक क़मरे में सुला दिया । भोर में इमाम शाफ़ई ने सुना कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और बड़ी मुहब्बत से आवाज़ दी, आपपर खुदा की रहमत हो, नमाज़ का वक़्त हो गया है । इमाम शाफ़ई (रह०) तुरन्त उठे, क्या देखते हैं कि इमाम मालिक (रह०) हाथ में पानी का भरा हुआ लोटा लिए खड़े हैं । इमाम शाफ़ई (रह०) को कुछ शर्म-सी महसूस हुई । इमाम मालिक (रह०) ताड़ गए और निहायत मुहब्बत से बोले, “भाई ! तुम कोई खयाल न करो । मेहमान की खिदमत तो करनी ही चाहिए ।”

10. मेहमान को ठहराने के बाद बैतुलखला (शौचालय) बता दीजिए । पानी का लोटा दे दीजिए और और क़िबले का रुख भी बता दीजिए । नमाज़ की जगह और मुसल्ला वग़ैरह मुहय्या कर दीजिए । इमाम मालिक (रह०) के खादिम ने इमाम शाफ़ई (रह०) को एक क़मरे में ठहराने के बाद कहा, “हज़रत ! क़िबले का रुख यह है, पानी का बरतन यहाँ रखा है, बैतुलखला इस ओर है ।”

11. खाने के लिए जब हाथ धुलाई तो पहले खुद हाथ धोकर दस्तरखान पर पहुँचिए और फिर मेहमान का हाथ धुलाई । इमाम मालिक (रह०) ने जब यही अमल किया तो इमाम शाफ़ई (रह०) ने इसकी वजह पूछी, फ़रमाया, “खाने से पहले तो मेज़बान को पहले हाथ धोना चाहिए और दस्तरखान पर पहुँचकर मेहमान का स्वागत करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए और खाने के बाद मेहमान का हाथ धुलवाना चाहिए और सबके बाद मेज़बान को हाथ धोना चाहिए । हो सकता है कि उठते-उठते कोई और आ पहुँचे ।”

12. दस्तरखान पर खाने-पीने का सामान और बरतन वग़ैरह मेहमानों की तादाद से कुछ ज़्यादा रखिए, हो सकता है कि खाने के दौरान कोई और साहब आ जाएँ और फिर उनके लिए इन्तिज़ाम करने को दौड़ना-भागना पड़े । अगर बरतन और सामान पहले से मौजूद होगा तो आनेवाला भी हल्केपन के बजाए खुशी और इज़्ज़त महसूस करेगा ।



13. मेहमान के लिए त्याग से काम लीजिए । खुद तकलीफ उठाकर उसको आराम पहुँचाइए ।

एक बार नबी (सल्ल०) की खिदमत में एक आदमी आया और बोला, “हुज़ूर ! मैं भूख से बेताब हूँ ।” आपने अपनी बीवी के यहाँ कहलवाया कि खाने के लिए जो कुछ भी मौजूद हो, भेज दो ।” जवाब आया, “उस खुदा की कसम जिसने आपको पैगम्बर बनाकर भेजा है, यहाँ तो पानी के सिवा और कुछ नहीं है ।” फिर आपने दूसरी बीवी के यहाँ कहला भेजा, वहाँ से भी यही जवाब आया, यहाँ तक कि आपने एक-एक करके सब बीवियों के यहाँ कहलवाया और सबके यहाँ से उसी तरह का जवाब आया । अब नबी (सल्ल०) अपने सहाबियों की ओर मुतवज्जोह हुए और फरमाया, “आज रात के लिए इस मेहमान को कौन क़बूल करता है ?” एक अनसारी सहाबी (रज़ि०) ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! मैं क़बूल करता हूँ ।”

अनसारी मेहमान को अपने घर ले गए और घर जाकर बीवी को बताया, “मेरे साथ यह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के मेहमान हैं, इनकी खातिरदारी करो ।” बीवी ने कहा, “मेरे पास तो सिर्फ़ बच्चों के लायक़ खाना है ।” सहाबी ने कहा, “बच्चों को किसी तरह बहलाकर सुला दो और जब मेहमान के सामने खाना रखो तो किसी बहाने से चिराग़ बुझा देना, ताकि उसको यह महसूस हो कि हम भी खाने में शरीक हैं ।”

इस तरह मेहमान ने पेट भरकर खाना खाया और घरवालों ने सारी रात फ़ाक़े से गुज़ारी । सुबह जब यह सहाबी (रज़ि०) नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुए तो आपने देखते ही फ़रमाया, “तुम दोनों ने रात अपने मेहमान के साथ जो अच्छा व्यवहार किया, वह खुदा को बहुत ही पसन्द आया ।” (बुख़ारी, मुस्लिम)

14. अगर आपके मेहमान ने कभी किसी मौक़े पर आपके साथ बेमुरव्वती और रूख़ेपन का व्यवहार किया हो तब भी आप उसके साथ बड़े खुले दिल का व्यवहार कीजिए ।

हज़रत अबुल अहवस ज़श्मी (रज़ि०) अपने बाप के बारे में बयान करते हैं कि एक बार उन्होंने नबी (सल्ल०) से पूछा—

“अगर किसी के पास मेरा गुज़र हो और वह मेरी मेहमानी का हक़ अदा न करे और फिर कुछ दिनों के बाद उसका गुज़र मेरे पास हो तो क्या मैं उसकी मेहमानी का हक़ अदा करूँ? या उस (की बेमुरव्वती और बेरुख़ी) का बदला उसे चखाऊँ ? नबी (सल्ल०) ने इश़ाद फ़रमाया,

“नहीं, बल्कि तुम उसकी मेहमानी का हक़ अदा करो ।” (मिशकात)

15. मेहमान से अपने हक़ में ख़ैर व बरकत की दुआ के लिए दरखास्त कीजिए, खास तौर से अगर मेहमान नेक, दीनदार और बुजुर्ग हों । हज़रत अब्दुल्लाह बिन बिन्ना (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) मेरे बाप के यहाँ मेहमान ठहरे । हमने आपके सामने हरीसा पेश किया । आपने थोड़ा-सा खाया, फिर हमने खजूरें पेश कीं । आप खजूरें खाते थे और गुठलियाँ शहादत की उँगली और बीच की उँगली में पकड़-पकड़कर फेंकते जाते थे, फिर पीने के लिए कुछ पेश किया गया । आपने पी लिया और अपने दाईं तरफ़ बैठनेवाले के आगे बढ़ा दिया । जब आप तशरीफ़ ले जाने लगे तो वालिद साहब ने आपकी सवारी की लगाम पकड़ ली और दरखास्त की कि हुज़ूर हमारे लिए दुआ फ़रमाएँ । और नबी (सल्ल०) ने यह दुआ फ़रमाई ।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَاَرْحَمْهُمْ. (ترمذی)

अल्लाहुम-म बारिक लहुम फ़ीमा र-ज़क़-तहुम वग़िफ़र लहुम वरहमहुम ।

(तिरमिज़ी)

“ऐ अल्लाह ! तूने इनको जो रोज़ी दी है उसमें बरकत फ़रमा, इनकी माग़फ़िरत फ़रमा और इनपर रहम कर ।”

## 28. मेहमानी के आदाब

1. किसी के यहाँ मेहमान जाएँ तो हैसियत के मुताबिक़ मेज़बान या मेज़बान के बच्चों के लिए कुछ तोहफ़े-तहाज़ूफ़ लेते जाएँ और तोहफ़े में मेज़बान के ज़ौक़ और पसन्द पर ध्यान दीजिए । तोहफ़ों और उपहारों के लेन-देन से मुहब्बत और ताल्लुक़ात के ज़ब्बे बढ़ते हैं और तोहफ़ा देनेवाले के लिए दिल में गुंजाइश पैदा होती है ।

2. जिसके यहाँ भी मेहमान बनकर जाएँ, कोशिश करें कि तीन दिन से ज़्यादा न ठहरें अलावा इसके कि कोई खास हालात पैदा हो जाएँ और मेज़बान आग्रह करे ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मेहमान के लिए जायज़ नहीं कि वह मेज़बान के यहाँ इतना ठहरे कि उसको परेशानी में डाल दे ।” (अल-अदबुल मुफ़रद)

सही मुस्लिम में है—

“मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि वह अपने भाई के यहाँ इतना ठहरे कि उसको गुनाहगार कर दे ।” लोगों ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! गुनाहगार कैसे करेगा ?”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“इस तरह कि वह उसके पास इतना ठहरे कि मेज़बान के पास मेज़बानी के लिए कुछ न रहे ।”

3. हमेशा दूसरों के ही मेहमान न बनिए, दूसरों को भी अपने यहाँ आने की दावत दीजिए और दिल खोलकर आदर-सत्कार कीजिए ।

4. मेहमानी में जाएँ तो मौसम के लिहाज़ से ज़रूरी सामान और बिस्तर वगैरह लेकर जाएँ । जाड़े में खास तौर पर बग़ैर बिस्तर के हरगिज़ न जाएँ वरना मेज़बान को तकलीफ़ होगी और यह हरगिज़ मुनासिब नहीं कि मेहमान मेज़बान के लिए वबाले जान बन जाए ।

5. मेज़बान के कामों और ज़िम्मेदारियों का भी खयाल रखिए और इसका एहतिमाम कीजिए कि आपकी वजह से मेज़बान के कामों पर असर न पड़े और ज़िम्मेदारियों में खलल न पड़े ।

6. मेज़बान से तरह-तरह की माँगें न कीजिए । वह आपके सत्कार के लिए और आपका दिल रखने के लिए खुद जो एहतिमाम करे उसी पर मेज़बान का शुक्रिया अदा कीजिए और उसको किसी बेजा मशक्क़त में न डालिए ।

7. अगर आप मेज़बान की औरतों के लिए 'नामहरम' हैं तो मेज़बान के न रहने पर बेवजह उनसे बातें न कीजिए, न उनकी आपस की बातों पर कान लगाइए और इस ढंग से रहिए कि आपकी बातों और तौर-तरीकों से उन्हें कोई परेशानी भी न हो और किसी वक़्त बेपरदगी भी न होने पाए ।

8. और अगर किसी वजह से आप मेज़बान के साथ न खाना चाहें या रोज़े से हों तो बड़े अच्छे अन्दाज़ में बताना दें और मेज़बान के लिए ख़ैर व बरक़त की दुआ माँगें ।

जब हज़रत इबराहीम (अलै०) ने आनेवाले प्यारे मेहमानों के सामने तकल्लुफ़ भरा खाना रखा और वे हाथ खींचे ही रहे तो हज़रत इबराहीम (अलै०) ने दरखास्त की, "आप लोग खाते क्यों नहीं ?" जवाब में फ़रिश्तों ने हज़रत इबराहीम (अलै०) को तसल्ली देते हुए कहा—

"आप नागवार न महसूस फ़रमाएँ । असल में हम खा नहीं सकते, हम तो सिर्फ़ आपको एक लायक़ बेटे के पैदा होने की खुशख़बरी देने आए हैं ।"

9. जब किसी के यहाँ दावत में जाएँ तो खाने-पीने के बाद मेज़बान के लिए बेहतरीन रोज़ी, ख़ैर व बरक़त और माफ़िरत व रहमत की दुआ कीजिए । हज़रत अबुल हैसम बिन तैहान (रज़ि०) ने नबी (सल्ल०) और आपके सहाबा की दावत की । जब आप लोग खाने से फ़ारिग़ हुए तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अपने भाई का बदला दो ।" सहाबा ने पूछा, "बदला क्या दें ? ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) !" फ़रमाया— "जब आदमी अपने भाई के यहाँ जाए और वहाँ खाए पिए तो उसके हक़ में ख़ैर व बरक़त की दुआ करे । यह उसका बदला है ।"

(अबू दाऊद)

नबी (सल्ल०) एक बार हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि०) के यहाँ तशरीफ़ ले गए । हज़रत साद ने रोटी और जैतून पेश किया । आपने खाया और यह दुआ फ़रमाई—

أَفْطَرُ عَنْكُمْ الصَّائِمُونَ وَأَكَلْ طَعَامَكُمْ الْإِبْرَارُ وَصَلْتُ عَلَيْكُمْ الْمَلَائِكَةُ.  
(البुख़ारी)

अफ़-त-र इन्दकुमुस्साइमू-न व अ-क-ल तआ-म-कुमुल अब-रारु व सल्लत अलैकुमुल मलाइक़ह ।

"तुम्हारे यहाँ रोज़ेदार रोज़ा इफ़तार करें, नेक लोग तुम्हारा खाना खाएँ और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत व माफ़िरत की दुआ करें ।"

(अबू दाऊद)

## 29. मज्लिस के आदाब

1. हमेशा अच्छे लोगों की सोहबत में बैठने की कोशिश कीजिए ।

2. मज्लिस में जो बातें हो रही हों उनमें हिस्सा लीजिए, मज्लिस की बातों में शरीक न होना और माथे पर लकीरें डाले बैठे रहना घमण्ड की निशानी है । मज्लिस में सहाबा किराम (रज़ि०) जिन बातों में लगे होते, नबी (सल्ल०) भी उन बातों में शरीक रहते । मज्लिस में गमगीन और ढीले होकर न बैठिए । मुस्कुराते चेहरे के साथ खुश व खुर्रम बैठिए ।

3. कोशिश कीजिए कि आपकी कोई मज्लिस खुदा और आखिरत के जिक्र से खाली न रहे और जब आप महसूस करें कि मौजूद लोग दीनी बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं तो बातों का रुख किसी दुनियावी मसले की तरफ फेर दें और फिर जब मुनासिब मौक़ा पाएँ तो बातों का रुख हिकमत के साथ दीन के किसी विषय की ओर फेरने की कोशिश करें ।

4. मज्लिस में जहाँ जगह मिल जाए बैठ जाइए । मजमे को चीरते और कूदते-फलाँगते आगे जाने की कोशिश न कीजिए । ऐसा करने से आनेवालों और बैठनेवालों को भी तकलीफ़ होती है और ऐसा करनेवालों में भी अपनी बड़ाई का एहसास और घमण्ड पैदा होता है ।

5. मज्लिस में से किसी बैठे हुए आदमी को उठाकर उसकी जगह बैठने की कोशिश न कीजिए । यह इतिहाई बुरी आदत है । इससे दूसरों के दिल में नफ़रत और कीना भी पैदा होता है और अपने को बड़ा समझना और अपनी अहमियत बताना भी ज़ाहिर होता है ।

6. अगर मज्लिस में लोग घेरा डाले बैठे हों तो उनके बीच में न बैठिए । यह सख़्त क्रिस्म की बदतमीज़ी और मस्खरापन है । नबी (सल्ल०) ने ऐसा करनेवाले पर लानत भेजी है ।

7. मज्लिस में बैठे हुए लोगों में से अगर कोई किसी ज़रूरत से उठकर चला जाए तो उसकी जगह पर क़ब्ज़ा न कीजिए, उसकी जगह बचाए रखिए । हाँ, अगर यह मालूम हो जाए कि वह आदमी अब वापस न आएगा तो फिर बेतकल्लुफी से उस जगह बैठ सकते हैं ।

8. अगर मज्लिस में दो आदमी एक-दूसरे के करीब बैठ गए हों तो उनसे इजाज़त लिए बाँर उनको अलग-अलग न कीजिए, क्योंकि वे आपसी बेतकल्लुफी या मुहब्बत या किसी और मस्लहत से करीब बैठे होंगे और उनको अलग-अलग करने से उनके दिल को तकलीफ़ होगी ।

9. मज्लिस में किसी खास जगह पर बैठने से परहेज कीजिए । किसी के यहाँ जाएँ तो वहाँ भी उसकी खास जगह पर बैठने की कोशिश न कीजिए । हाँ, अगर वह खुद ही इसरार करे तो बैठने में कोई हरज नहीं । मज्लिस में हमेशा अदब से बैठिए, पाँव फैलाकर या पिंडुलियाँ खोलकर न बैठिए ।

10. यह कोशिश न कीजिए कि आप बहरहाल सदर (अध्यक्ष) के करीब ही बैठें, बल्कि जहाँ जगह मिले बैठ जाइए और इस तरह बैठिए कि बाद में आनेवालों को जगह मिलने और बैठने में कोई कष्ट न हो और जब लोग ज्यादा आ जाएँ तो सिमटकर बैठ जाइए और आनेवालों को खुले दिल से जगह दे दीजिए ।

11. मज्लिस में किसी के सामने या आस-पास खड़े न रहना चाहिए । एहतिराम का यह तरीका इस्लामी मिजाज के खिलाफ़ है ।

12. मज्लिस में दो आदमी आपस में चुपके-चुपके बातें न करें, इससे दूसरों को यह एहसास भी होता है कि उन्होंने हमें अपने राज़ की बातों में शरीक करने के काबिल न समझा और यह बदगुमानी भी होती है कि शायद हमारे ही बारे में कोई बात कर रहे हों ।

13. मज्लिस में जो कुछ कहना हो, मज्लिस के सदर से इजाज़त लेकर कहिए और बातों या सवाल व जवाब में ऐसा अन्दाज़ न अपनाइए कि आप ही मज्लिस के सदर मालूम होने लगें । यह अपने को नुमायाँ करना भी है और मज्लिस के सदर के साथ ज्यादती भी ।

14. एक वक़्त में एक ही आदमी को बोलना चाहिए और हर आदमी की बात ग़ौर से सुनना चाहिए । अपनी बात कहने के लिए ऐसी बेताबी नहीं होनी चाहिए कि सब एक ही साथ बोलने लगें और मज्लिस में हड़बोंग होने लगे ।

15. मज्लिस में जो बातें राज़ की हों उनको जगह-जगह बयान न करना चाहिए । मज्लिस का यह हक़ है कि उसके राज़ों की हिफ़ाज़त की जाए ।

16. मज्लिस में जिस विषय पर बात हो रही हो, जब तक उसके बारे में कुछ तय न हो जाए, दूसरा विषय न छेड़िए और न दूसरे की बात काटकर अपनी बात शुरू कीजिए । अगर कभी कोई ऐसी ज़रूरत पेश आ जाए कि आपके लिए तुरन्त बोलना ज़रूरी हो तो बोलनेवाले से पहले इजाज़त ले लीजिए ।

17. मज्लिस के सदर को बातें करते समय तमाम लोगों की तरफ़ तवज्जोह रखनी चाहिए और दाएँ-बाएँ हर ओर रुख़ फेर-फेरकर बात करनी चाहिए और आज्ञादी के साथ हर एक को खयाल ज़ाहिर करने का मौक़ा देना चाहिए ।

18. मज्लिस बर्खास्त होने से पहले यह दुआ पढ़िए और फिर मज्लिस बर्खास्त

اَللّٰهُمَّ اَقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُولُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعْصِيَتِكَ وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا  
تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتِكَ، وَمِنْ الْيَقِيْنِ مَا تَهْوُوْهُ عَلَيْنَا مَصَارُ الدُّنْيَا. اَللّٰهُمَّ مَعِنَا  
بِاسْمَاعِنَاوَابْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا اَحْيَيْتَنَا وَاَجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا، وَاَجْعَلْ ثَارَنَا  
عَلٰى مَنْ ظَلَمْنَا وَاَنْصَرْنَا عَلٰى مَنْ عَادَاَنَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتَنَا فِى دِيْنِنَا وَلَا  
تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَ هَمًّا، وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَا يَرْحَمُنَا.

अल्लाहुम्मक्रिसम लना मिन खश्यति-क मा तहूलु बै-नना व बै-न  
मअ-सि-य-ति-क व मिन ताअति-क मा तुबल्लिगुना बिही जन्न-त-क,  
व मिनल यक्कीनि मा तहनु बिही अलैना मजरुददुन्या । अल्लाहुम-म मत्तिअना  
बिअस्माइना व अब्सारिना व कुव्वतिना मा अहयैतना वज-अलहुल वारि-स  
मिन्ना, वज-अल सा-रना अला मन ज-ल-म-ना वन-सुरना अला मन आदाना  
व ला तज-अल मुसी-ब-तना फ़ी दीनिना वला तज-अलिद-दुन या अक-ब-र  
हम्मिना, व ला मब ल-ग इल्मिना व ला तुसल्लित अलैना मल्ला थर-हमुना ।  
(तिरमिज़ी)

“ऐ अल्लाह ! तू हमें अपना डर नसीब कर जो हमारे और नाफ़रमानियों  
के दरमियान में आड़ बन जाए और वह फ़रमाँबरदारी दे जो हमें तेरी जन्नत  
में पहुँचा दे और हमें वह पक्का यक्कीन दे, जिससे हमारे लिए दुनिया  
के नुक़सान मामूली हो जाएँ । ऐ खुदा ! तू जब तक हमको रखे, हमें  
हमारे सुनने-देखने की ताक़तों और जिस्मानी तवानाइयों (शारीरिक शक्तियों)  
से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दे और इस भलाई को हमारे बाद भी बाक़ी  
रख और जो हमपर ज़ुल्म करे उससे हमारा बदला ले और जो हमसे दुश्मनी  
करे उसपर हमें ग़लबा अता फ़रमा और हमें दीन की आज़माइश में न  
डाल और दुनिया को हमारा सबसे बड़ा मक़सद न बना और न दुनिया  
को हमारे ज्ञान व विवेक (इल्म व बसीरत) की इंतिहा (आख़िरी हद)  
ठहरा और न हमपर उस आदमी को काबू दे जो हमपर दया न करे ।”

## 30. सलाम के आदाब

1. जब किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात हो तो उससे अपने ताल्लुक और खुशी को ज़ाहिर करने के लिए 'अस्सलामु अलैकुम' कहिए ।

कुरआन पाक में है—

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ (الاحقाम: ५३)

“ऐ नबी ! जब आपके पास वे लोग आएँ जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उनसे कहिए, अस्सलामु अलैकुम ।” (कुरआन, 6:54)

इस आयत में नबी (सल्ल०) से खिताब करते हुए उम्मत को यह उसूली तालीम दी गई है कि मुसलमान जब भी किसी मुसलमान से मिले तो दोनों ही मुहब्बत और खुशी के जज़्बों का तबादला करें और इसका बेहतरीन तरीका यह है कि एक-दूसरे के लिए सलामती और आफ़ियत की दुआ करें । एक 'अस्सलामु अलैकुम' कहे तो दूसरा जवाब में 'व अलैकुमुस्सलाम' कहे । सलाम आपसी मुहब्बत और लगाव को बढ़ाने और उसे मज़बूत करने का ज़रिया है ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“तुम लोग जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि मोमिन नहीं बनते, और तुम मोमिन नहीं बन सकते जब तक कि एक-दूसरे से मुहब्बत न करो । मैं तुम्हें वह तद्बीर क्यों न बता दूँ जिसको अपनाकर तुम आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने लगे । आपस में सलाम फैलाओ ।”

(मिशकात)

2. हमेशा इस्लामी तरीके पर सलाम कीजिए । किसी से बात करें या पत्र-व्यवहार करें तो हमेशा किताब व सुन्नत के बताए हुए ये लफ़्ज़ (शब्द) ही इस्तेमाल कीजिए, इस्लामी तरीके को छोड़कर सोसायटी में जारी लफ़्ज़ और अन्दाज़ न अपनाइए । इस्लाम का बताया हुआ खिताब करने का यह अन्दाज़ बहुत सादा, मानीदार और असर से भरा हुआ भी है और सलामती और आफ़ियत से भरपूर दुआ भी । आप जब अपने किसी भाई से मिलते हुए 'अस्सलामु अलैकुम' कहते हैं तो इसका मतलब यह होता है कि खुदा तुम्हें हर क्रिस्म की सलामती और आफ़ियत से नवाज़े, खुदा तुम्हारे जान व माल को सलामत रखे, घर-बार को सलामत रखे, घरवालों और मुताल्लिक़ लोगों को सलामत रखे, दीन व ईमान को सलामत रखे, दुनिया भी सलामत रहे और आखिरत भी । खुदा तुम्हें उन सलामतियों से भी नवाज़े जो मेरी



जानकारी में हैं और उन सलामतियों से भी नवाजे जो मेरी जानकारी में नहीं हैं। मेरे दिल में तुम्हारा हित चाहने, मुहब्बत करने, खुलूस दिखाने और सलामती व आफ्रियत चाहने की इतिहाई गहरी भावनाएँ हैं। इसलिए तुम मेरी तरफ से कभी कोई डर महसूस न करना। मेरे तरीके से तुम्हें कोई दुख न पहुँचेगा। सलाम के शब्द पर 'अस' लगाकर 'अस्सलामु' कहकर आप मुखातब के लिए सलामती और आफ्रियत की सारी दुआएँ समेट लेते हैं। आप अन्दाज़ा कीजिए कि अगर वे शब्द चेतना के साथ सोच-समझकर आप अपनी ज़बान से निकालें तो मुखातब की मुलाकात पर दिली खुशी ज़ाहिर करने और खुलूस व मुहब्बत, भला चाहने और वफ़ादारी की भावनाओं को ज़ाहिर करने के लिए इससे बेहतर शब्द क्या हो सकते हैं। 'अस्सलामु अलैकुम' के शब्दों में भाई का स्वागत करके आप यह कहते हैं कि आपको वह हस्ती सलामती दे जो आफ्रियत का स्रोत और पूरी तरह सलाम है, जिसका नाम ही अस्सलाम है और वही सलामती और आफ्रियत पा सकता है जिसको वह सलामत रखे और जिसको वह सलामती से महरूम कर दे, वह दोनों ज़हान में सलामती से महरूम है।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“अस्सलाम’ खुदा के नाम में से एक नाम है जिसको खुदा ने ज़मीन में (ज़मीनवालों के लिए) रख दिया है, अतः ‘अस्सलाम’ को आपस में खूब फैलाओ।”  
(अल-अदबुल मुफ़्फ़द)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा ने जब हज़रत आदम को पैदा फ़रमाया तो उनको फ़रिश्तों की एक जमाअत के पास भेजते हुए यह हुक्म दिया कि जाओ और इन बैठे हुए फ़रिश्तों को सलाम करो और वे सलाम के जवाब में जो दुआ दें उसको ग़ौर से सुनना (और महफूज़ रखना), इसलिए कि यही तुम्हारी और तुम्हारी औलाद की दुआ होगी। चुनाँचे हज़रत आदम (अलै०) फ़रिश्तों के पास पहुँचे और कहा, ‘अस्सलामु अलैकुम’। फ़रिश्तों ने जवाब में कहा, ‘अस्सलामु अलै-क व रहमतुल्लाहि’ यानी ‘वरहमतुल्लाहि’ को बढ़ाकर जवाब दिया।”  
(बुख़ारी, मुस्लिम)

क़ुरआन में है कि फ़रिश्ते जब मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने आते हैं तो आकर ‘सलाम अलैक’ करते हैं—

كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ الَّذِينَ تَوَفَّيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ اَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

“ऐसी ही जज़ा देता है खुदा तक्वावालों को, उन तक्वावाले लोगों को जिनकी रूहें पाकीज़गी की हालत में जब फ़रिश्ते कब्ज़ करते हैं तो कहते हैं, ‘सलामुन अलैकुम’, जाओ जन्नत में दाखिल हो जाओ अपने (भले) कामों के बदले में।” (कुरआन, 16:31-32)

जन्नत के दरवाज़े पर जब यह तक्वावाले लोग पहुँचेंगे तो जन्नत के ज़िम्मेदार भी इन्हीं शब्दों के साथ उनका शानदार स्वागत करेंगे।

وَسَيَقُالُ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتّٰى اِذَا جَاؤُوهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طَيِّبٌ فَاَدْخُلُوهَا خَالِدِينَ ۝ (الزمر: ५३)

“और जो लोग पाकीज़गी और फ़रमाँबरदारी की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे उनके जत्थे जन्नत की ओर खाना कर दिए जाएँगे और जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े पहले से ही (उनके स्वागत में) खुले हुए होंगे, तो जन्नत के ज़िम्मेदार उनसे कहेंगे ‘सलामुन अलैकुम’ बहुत ही अच्छे रहे, दाखिल हो जाओ इस जन्नत में हमेशा के लिए।” (कुरआन, 39:73)

और जब ये लोग जन्नत में दाखिल हो जाएँगे तो फ़रिश्ते जन्नत के हर-हर दरवाज़े से दाखिल होकर उनको ‘अस्सलामु अलैकुम’ कहेंगे। कुरआन में है—

وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝

“और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके स्वागत के लिए आएँगे और उनसे कहेंगे, ‘सलामुन अलैकुम’। यह बदला है तुम्हारे जमाव और साबित-कदमी की रविश का, अतः क्या ही ख़ूब है यह आखिरत का घर।”

(कुरआन, 13:23-24)

जन्नतवाले आपस में खुद भी एक-दूसरे का स्वागत इन ही बोलों के साथ करेंगे।

دَعَوْهُمْ فِيهَا سُبْحَنَكَ اَللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ.

“वहाँ उनकी ज़बान पर यह आवाज़ होगी कि ऐ खुदा ! तू पाक व बरतर है और उनकी आपस में दुआ यह होगी कि ‘सलाम’ (हो तुमपर)।”

और खुदा की तरफ़ से भी उनके लिए सलाम व रहमत की आवाज़ें होंगी ।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَاكِهُونَ ۖ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ  
عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكُونُونَ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ۖ سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ  
رَّبِّ رَحِيمٍ ۝ (س: ५५-५८)

“जन्नतवाले उस दिन ऐश और खुशी के कामों में होंगे । वे और उनकी औरतें घने सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए (खुश-खुश बैठे) होंगे । उनके लिए जन्नत में हर क्रिस्म के मजेदार मेवे होंगे और वह सब कुछ होगा, जो वे तलब करेंगे । दयावान रब की ओर से उनके लिए सलाम की पुकार है ।” (कुरआन, 36:55-58)

गरज़ जन्नत में ईमानवालों के लिए चारों ओर सलाम ही सलाम की आवाज़ होगी ।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝ (ات: २५-२६)

“न वहाँ बेहूदा बकवास सुनेंगे और न गुनाह की बातें, बस (हर तरफ़) सलाम-सलाम ही की आवाज़ होगी ।” (कुरआन, 56:25-26)

किताब व सुन्नत की इन खुली हिदायतों और गवाहियों के होते हुए मोमिन के लिए किसी तरह जायज़ नहीं कि वह खुदा और रसूल (सल्ल०) के बताए हुए तरीके को छोड़कर मुहब्बत और खुशी ज़ाहिर करने के लिए दूसरे तरीके अपनाए ।

3. हर मुसलमान को सलाम कीजिए चाहे उससे पहले से परिचय और ताल्लुकात हों या न हों । ताल्लुकात और परिचय के लिए इतनी बात ही काफी है कि वह आपका मुसलमान भाई है और मुसलमान के लिए मुसलमान के दिल में मुहब्बत, खुलूस, भलाई और वफ़ादारी की भावनाएँ होनी चाहिएँ ।

एक आदमी ने नबी (सल्ल०) से पूछा, “इस्लाम का बेहतरीन अमल कौन-सा है ?” आपने फ़रमाया—

“ग़रीबों को खाना खिलाना और हर मुसलमान को सलाम करना, चाहे तुम्हारी उससे जान-पहचान हो या न हो ।” (बुखारी, मुस्लिम)

4. जब आप अपने घर में दाखिल हों तो घरवालों को सलाम कीजिए । कुरआन

में है—

فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةٌ طَيِّبَةٌ ۝ (النور: १)

“अतः जब तुम अपने घरों में दाखिल हुआ करो, तो अपने (घरवालों) को सलाम किया करो, भलाई की दुआ खुदा की तरफ से तालीम की हुई बड़ी ही बरकतवाली और पाकीजा ।” (कुरआन, 24:61)

हजरत अनस (रजि०) का बयान है कि मुझे नबी (सल्ल०) ने ताकीद फरमाई कि प्यारे बेटे ! जब तुम अपने घर में दाखिल हुआ करो तो पहले घरवालों को सलाम किया करो । यह तुम्हारे लिए और तुम्हारे घरवालों के लिए भलाई और बरकत की बात है । (तिरमिजी)

इसी तरह जब आप किसी दूसरे के घर जाएँ तो घर में दाखिल होने से पहले सलाम कीजिए । सलाम किए बिना घर के भीतर न जाइए ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ۝ (النور: २८)

“ऐ मोमिनो ! अपने घरों के सिवा दूसरों के घरों में दाखिल न हुआ करो जब तक कि घरवालों की इजाजत न ले लो और घरवालों को सलाम न कर लो ।” (कुरआन, 24:27)

हजरत इबराहीम (अलै०) के पास जब फरिश्ते इज्जतदार मेहमानों की हैसियत से पहुँचे तो उन्होंने आकर सलाम किया और इबराहीम (अलै०) ने जवाब में उनको सलाम किया ।

5. छोटे बच्चों को भी सलाम कीजिए । यह बच्चों को सलाम सिखाने का बेहतरीन तरीका भी है और नबी अकरम (सल्ल०) की सुन्नत भी । हजरत अनस (रजि०) बच्चों के पास से गुजरे तो उनको सलाम किया और फरमाया, “नबी (सल्ल०) भी ऐसा ही किया करते थे ।” (बुखारी, मुस्लिम)

और हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि०) खत में भी बच्चों को सलाम लिखा करते थे । (अल-अदबुल मुफ़रद)

6. औरतें भी मर्दों को सलाम कर सकती हैं और मर्द भी औरतों को सलाम

कर सकते हैं। हज़रत अस्मा अनसारिया (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैं अपनी सहेलियों में बैठी हुई थी कि नबी (सल्ल०) का हमारे पास से गुज़र हुआ तो आपने हम लोगों को सलाम किया।  
(अल-अदबुल मुफ़रद)

और हज़रत उम्मे हानी (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैं नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुई। आप उस वक़्त नहा रहे थे। मैंने आपको सलाम किया तो आपने पूछा, “कौन ?” मैंने कहा, “उम्मे हानी हूँ।” फ़रमाया, “ख़ूब ! स्वागत है।”

7. ज़्यादा से ज़्यादा सलाम करने की आदत डालिए और सलाम करने में कभी कोताही न कीजिए। आपस में ज़्यादा से ज़्यादा सलाम किया कीजिए। सलाम करने से मुहब्बत बढ़ती है और खुदा हर नुक़सान से बचाता है। नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मैं तुम्हें ऐसा उपाय बताता हूँ। जिसको अपनाने से तुम्हारे बीच दोस्ती और मुहब्बत बढ़ जाएगी, आपस में ज़्यादा से ज़्यादा एक-दूसरे को सलाम किया करो।”

और आपने यह भी फ़रमाया, “सलाम को ख़ूब फैलाओ, खुदा तुमको सलामत रखेगा।”

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) के साथी (सहाबा) बहुत ज़्यादा सलाम किया करते थे। सलाम की ज़्यादती का हाल यह था कि अगर किसी वक़्त आपके साथी किसी पेड़ की ओट में हो जाते और फिर सामने आते, तो फिर सलाम करते। आप (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी अपने मुसलमान भाई से मिले तो उसको सलाम करे और अगर पेड़ या दीवार या पत्थर बीच में ओट बन जाए और वह फिर उसके सामने आए तो उसको फिर सलाम करे।” (रियाज़ुस्सालिहीन)

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि०) कहते हैं कि मैं अकसर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) की खिदमत में हाज़िर होता और आपके साथ बाज़ार जाया करता, जब हम दोनों बाज़ार जाते तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) जिसके पास से भी गुज़रते, उसको सलाम करते, चाहे वह कोई कबाड़िया होता, चाहे कोई दुकानदार होता, चाहे कोई ग़रीब और मिस्कीन होता, गरज़ कोई भी होता आप उसको सलाम ज़रूर करते।

एक दिन मैं अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) की खिदमत में आया तो उन्होंने कहा—

“चलो बाज़ार चलें। मैंने कहा, “हज़रत ! बाज़ार जाकर क्या

कीजिएगा । आप न तो सौदे की खरीदारी के लिए खड़े होते हैं, न किसी माल के बारे में जानकारी रखते हैं, न मोल-भाव करते हैं और न ही बाज़ार की महफ़िलों में बैठते हैं । आइए, यहाँ बैठकर कुछ बातचीत करें ।” हज़रत ने फ़रमाया, “ऐ अबू बत्न (तोंदवाले) ! हम तो सिर्फ़ सलाम करने की गरज़ से बाज़ार जाते हैं कि हमें जो मिले हम उसे सलाम करें ।”  
(मुवत्ता इमाम शालिक रह०)

8. सलाम अपने मुसलमान भाई का हक़ समझिए और हक़ को अदा करने में उदारता का सबूत दीजिए । सलाम करने में कभी कमी न कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर यह हक़ है कि जब मुसलमान भाई से मिले तो उसको सलाम करे ।”  
(मुस्लिम)

हज़रत अबू हु़रैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि सबसे बड़ा कंज़ूस वह है जो सलाम करने में कंज़ूसी करे ।  
(अल-अदबुल मुफ़रद)

9. सलाम करने में हमेशा पहल कीजिए और अगर कभी खुदा न खास्ता किसी से अनबन हो जाए तब भी सलाम करने और सुलह-सफ़ाई करने में पहल कीजिए । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“वह आदमी खुदा से ज़्यादा करीब है जो सलाम करने में पहल करता है ।”  
(अबू दाऊद)

और आपने (सल्ल०) फ़रमाया—

“किसी मुसलमान के लिए यह बात जायज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा तक ताल्लुक तोड़े रहे कि जब दोनों मिलें तो एक इधर कतरा जाए और एक उधर । इनमें अफ़ज़ल वह है, जो सलाम में पहल करे ।”  
(अल-अदबुल मुफ़रद)

नबी (सल्ल०) से किसी ने पूछा कि जब दो आदमी एक-दूसरे से मिलें तो दोनों में कौन पहले सलाम करे । फ़रमाया, “जो उन दोनों में खुदा के नज़दीक ज़्यादा बेहतर हो ।”  
(तिरमिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) सलाम में पहल करने का इतना एहतिमाम फ़रमाते कि कोई आदमी उनसे सलाम करने में पहल नहीं कर सकता था ।

10. हमेशा ज़बान से ‘अस्सलामु अलैकुम’ कहकर सलाम कीजिए और ज़रा ऊँची आवाज़ में सलाम कीजिए ताकि वह आदमी सुन सके जिसको आप सलाम कर

रहे हैं। अलबत्ता अगर कहीं ज़बान से 'अस्सलामु अलैकुम' कहने के साथ सिर से इशारा करने की ज़रूरत हो तो कोई हरज नहीं, जैसे— आप जिसको सलाम कर रहे हैं वह दूर है और खयाल है कि आपकी आवाज़ उस तक न पहुँच सकेगी या कोई बहरा है और आपकी आवाज़ नहीं सुन सकता तो ऐसी हालत में इशारा कीजिए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

“जब किसी को सलाम करो तो अपना सलाम उसको सुनाओ, इसलिए कि सलाम खुदा की तरफ़ से निहायत पाकीज़ा और बरकतवाली दुआ है।”  
(अल-अदबुल मुफ़रद)

हज़रत असमा बिनत यज़ीद (रज़ि०) फ़रमाती हैं—

एक दिन नबी (सल्ल०) मस्जिद के पास से गुज़रे। वहाँ कुछ औरतें बैठी हुई थीं तो आपने उनको हाथ के इशारे से सलाम किया। (तिरमिज़ी)

मतलब यह है कि नबी (सल्ल०) ने ज़बान से 'अस्सलामु अलैकुम' कहने के साथ-साथ हाथ के इशारे से भी सलाम किया। इसी बात की ताईद इस रिवायत से भी होती है जो अबू दाऊद में है। हज़रत अस्मा (रज़ि०) कहती हैं कि नबी (सल्ल०) हमारे पास से गुज़रे तो हमें सलाम किया। इसलिए सही बात यह है कि सलाम ज़बान से ही कीजिए, अलबत्ता कहीं ज़रूरत हो तो हाथ या सिर के इशारे से भी काम लीजिए।

11. अपने बड़ों को सलाम करने का एहतिमाम कीजिए। जब आप पैदल चल रहे हों और कुछ लोग बैठे हों तो बैठनेवालों को सलाम कीजिए और जब आप किसी छोटी टोली के साथ हों और कुछ ज़्यादा लोगों से मुलाकात हो जाए तो सलाम करने में पहल कीजिए। नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“छोटा बड़े को, चलनेवाला बैठे हुए को और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को सलाम करने में पहल करें।”

12. अगर आप सवारी पर चल रहे हों तो पैदल चलनेवालों को और राह में बैठे हुए लोगों को सलाम कीजिए।

नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“सवारी पर चलनेवाले, पैदल चलनेवालों को और पैदल चलनेवाले बैठे हुए लोगों को और थोड़े आदमी ज़्यादा आदमियों को सलाम करने में पहल करें।”  
(अल-अदबुल मुफ़रद)

13. किसी के यहाँ मिलने जाएँ या किसी की बैठक में पहुँचें या किसी मजमे के पास से गुज़रें या किसी मज्लिस में पहुँचें तो पहुँचते वक़्त भी सलाम कीजिए और जब वहाँ से विदा होने लगें तब भी सलाम कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब तुम किसी मज्लिस में पहुँचो तो सलाम करो और जब वहाँ से विदा होने लगो तो फिर सलाम करो और याद रखो कि पहला सलाम दूसरे सलाम से ज़्यादा अज़्र का हक़दार नहीं है कि आते वक़्त तो आप सलाम का बड़ा एहतिमांम करें और जब विदा होने लगें तो सलाम न करें और विदाई सलाम को कोई अहमियत न दें ।” (तिरमिज़ी)

14. मज्लिस में आएँ तो पूरी मज्लिस को सलाम कीजिए, खास तौर पर किसी का नाम लेकर सलाम न कीजिए । एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) मज्लिस में थे कि एक माँगनेवाला आया और उसने आपका नाम लेकर सलाम किया । हज़रत ने फ़रमाया, “ख़ुदा ने सच फ़रमाया और रसूल (सल्ल०) ने तबलीग़ का हक़ अदा कर दिया” और फिर आप घर में तशरीफ़ ले गए । लोग इन्तिज़ार में बैठे रहे कि आपके फ़रमाने का मतलब क्या है । ख़ैर जब आप आए तो हज़रत तारिक़ (रज़ि०) ने पूछा कि हज़रत ! हम लोग आपकी बात का मतलब न समझ सके तो फ़रमाया, “नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि क्रियामत के करीब, लोग मज्लिसों में, लोगों को खास-खासकर के सलाम करने लगेंगे ।”

(अल-अदबुल मुफ़रद)

15. अगर अपने किसी बुजुर्ग या अज़ीज़ और दोस्त को किसी दूसरे के ज़रिए सलाम कहलवाने का मौक़ा हो या किसी के खत में सलाम लिखवाने का मौक़ा हो तो इस मौक़े से ज़रूर फ़ायदा उठाइए और सलाम कहलवाइए ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि नबी (सल्ल०) ने मुझसे फ़रमाया—

“आइशा ! जिब्रील (अलै०) तुमको सलाम कर रहे हैं ।” मैंने कहा,  
“व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

16. अगर आप किसी ऐसी जगह पहुँचें जहाँ कुछ लोग सो रहे हों तो ऐसी आवाज़ में सलाम कीजिए कि जागनेवाले सुन लें और सोनेवालों की नींद में खलल न पड़े ।

हज़रत मिक़दाद (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हम नबी (सल्ल०) के लिए कुछ दूध रख लिया करते थे । जब आप कुछ रात गए तशरीफ़ लाते तो आप इस तरह



सलाम करते कि सोनेवाला जागे नहीं और जागनेवाला सुन ले । अतः नबी (सल्ल०) तशरीफ लाए और मामूल के मुताबिक सलाम किया । (मुस्लिम)

17. सलाम का जवाब बड़ी खुशदिली के साथ और हँसते-मुस्कराते दीजिए । यह मुसलमान भाई का हक है । इस हक को अदा करने में कभी भी कोताही न कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मुसलमान पर मुसलमान के पाँच हक हैं—

□ सलाम का जवाब देना,

□ बीमारों का हाल पूछना,

□ जनाजे के साथ जाना,

□ दावत कबूल करना, और

□ छींक का जवाब देना ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

और नबी (सल्ल०) ने फरमाया, “रास्ते में बैठने से परहेज करो ।” लोगों ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! हमारे लिए तो रास्तों में बैठना जरूरी है ।” तो नबी अकरम (सल्ल०) ने फरमाया, “अगर तुम्हारे लिए रास्तों में बैठना ऐसा ही जरूरी है तो बैठो, लेकिन रास्ते का हक जरूर अदा करो ।” लोगों ने कहा, “रास्ते का हक क्या है ?” अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया, “निगाहें नीची रखना, दुख न देना, सलाम का जवाब देना, नेकियों पर उभारना और बुराइयों से रोकना ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

18. सलाम के जवाब में ‘व अलैकुमुस्सलाम’ कहने पर ही बस न कीजिए बल्कि ‘व रहमतुल्लाहि व बरकतुहु’ के शब्दों को भी बढ़ा दीजिए ।

कुरआन पाक में है—

وَإِذَا حُيِّتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوْهَا ۝

“और जब कोई तुम्हें दुआ-सलाम करे तो उसको उससे बेहतर दुआ दो या फिर वही लफ्ज जवाब में कह दो ।” (कुरआन, 4:86)

मतलब यह है कि सलाम के जवाब में कोताही न करो । सलाम के शब्दों में कुछ बढ़ाकर के उससे बेहतर दुआ दो, वरना कम से कम वही शब्द दोहरा दो, बहरहाल जवाब जरूर दो ।

हज़रत इमरान बिन हसीन (रज़ि०) का बयान है कि नबी अकरम (सल्ल०) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी आया और उसने आकर 'अस्सलामु अलैकुम' कहा। आपने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया, "दस"। (यानी दस नेकियाँ) मिलीं। फिर एक दूसरा आदमी आया और उसने अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि कहा, आपने सलाम का जवाब दे दिया और फ़रमाया "बीस" (यानी बीस नेकियाँ) मिलीं। इसके बाद एक तीसरा आदमी आया और उसने आकर कहा, 'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।' आपने जवाब दिया और फ़रमाया, "तीस" (यानी उसको तीस नेकियाँ) मिलीं। (तिरमिज़ी)

हज़रत उमर (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार मैं हज़रत अबू बक्र के पीछे सवारी पर था। हम जिन लोगों के पास से गुज़रते, अबू बक्र (रज़ि०) उन्हें 'अस्सलामु अलैकुम' कहते और वे जवाब देते 'व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।' इस पर अबू बक्र (रज़ि०) ने फ़रमाया कि आज तो लोग बुज़ुर्गी में हम से बहुत बढ़ गए। (अल-अदबुल मुफ़रद)

19. जब किसी से मुलाकात हो तो सबसे पहले 'अस्सलामु अलैकुम' कहिए। यकबागी बात शुरू कर देने से बचिए, जो बातचीत भी करनी हो सलाम के बाद कीजिए।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो कोई सलाम से पहले कुछ बात करने लगे, उसका जवाब न दो।” (मुस्लिम)

20. इन हालात में सलाम करने से बचिए—

☆ जब लोग कुरआन व हदीस पढ़ने-पढ़ाने या सुनने-सुनाने में लगे हों,

☆ जब कोई खुतबा देने और सुनने में लगा हो,

☆ जब कोई अज़ान या तकबीर कह रहा हो,

☆ जब किसी मज्लिस में किसी दीनी विषय पर बात हो रही हो या कोई किसी को कोई दीनी हुक्म समझा रहा हो,

☆ जब उस्ताद पढ़ाने में लगा हो, और

☆ जब कोई अपनी ज़रूरत पूरी करने बैठा हो।

और नीचे के हालात में न सिर्फ़ सलाम करने से बचिए, बल्कि अपनी बेतकल्लुफ़ी और रूहानी तकलीफ़ को हिकमत के साथ ज़ाहिर कीजिए—

☆ जब कोई फ़िस्क व फुज़ूर और शरीअत के खिलाफ़ खेल-तमाशे में लगकर दीन

- की तौहीन कर रहा हो,
- ☆ जब कोई गाली-गलौज, बेहूदा बकवास, झूठी-सच्ची, गैरसंजीदा बातें और फ़हश मजाक़ करके दीन को बदनाम कर रहा हो,
- ☆ जब कोई दीन व शरीअत के खिलाफ़ नियम और सिद्धान्त का प्रचार कर रहा हो और लोगों को दीन से बिदकाने और बिदअत और बेदीनी अपनाने पर उभार रहा हो ।
- ☆ जब कोई दीनी अक्कीदों और पहचान की बेहुर्मती कर रहा हो और शरीअत के नियमों और हुक्मों का मजाक़ उड़ाकर अपनी अन्दरूनी ख़राबी और निफ़ाक़ का सबूत दे रहा हो ।

21. जब किसी मज्लिस में मुसलमान और मुशरिक दोनों जमा हों तो वहाँ सलाम कीजिए । नबी अकरम (सल्ल०) एक बार ऐसी मज्लिस के पास से गुज़रे जिसमें मुस्लिम और मुशरिक सभी शामिल थे, तो आपने उन सबको सलाम किया ।  
(अल-अदबुल मुफ़रद)

22. अगर किसी गैर-मुस्लिम को सलाम करने की ज़रूरत पेश आए तो 'अस्सलामु अलैकुम' न कहिए, बल्कि 'आदाब अर्ज', और जवाब में 'तस्लीमात' वगैरह किस्म के लफ़्ज़ इस्तेमाल कीजिए और हाथ या सिर से भी कोई ऐसा इशारा न कीजिए जो इस्लामी अक्कीदे और इस्लामी मिज़ाज के खिलाफ़ हो ।

हिरक्ल के नाम जो नबी (सल्ल०) ने ख़त भेजा था, उसमें सलाम के शब्द ये थे—

سَلَامٌ عَلَىٰ مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ

“सलाम है उसपर जो हिदायत की पैरवी करे ।”

23. सलाम के बाद मुहब्बत और खुशी का अक्कीदा जाहिर करने के लिए मुसाफ़ा भी कीजिए । नबी (सल्ल०) खुद भी मुसाफ़ा फ़रमाते और आपके सहाबा भी आपस में मिलते तो मुसाफ़ा करते । आपने सहाबा किराम को मुसाफ़ा करने की ताकीद फ़रमाई और उसकी बड़ाई और अहमियत पर बहुत-से पहलुओं से रौशनी डाली ।

हज़रत क़तादा (रज़ि०) ने हज़रत अनस (रज़ि०) से पूछा, “क्या सहाबा में मुसाफ़ा का रिवाज था ?” हज़रत अनस (रज़ि०) ने जवाब दिया, “जी हाँ, था !”

(बुख़ारी)

हज़रत सलमा बिन वरदान (रह०) कहते हैं कि मैंने हज़रत मालिक बिन अनस (रह०) को देखा कि लोगों से मुसाफ़ा कर रहे हैं। मुझसे पूछा, “तुम कौन हो ?” मैंने कहा, “बनी लैस का गुलाम हूँ।” आपने मेरे सिर पर तीन बार हाथ फेरा और फ़रमाया, “ख़ुदा तुम्हें ख़ैर व बरकत से नवाजे।”

एक बार जब यमन के कुछ लोग आए तो नबी (सल्ल०) ने सहाबा (रज़ि०) से कहा, “तुम्हारे पास यमन के लोग आए हैं और आनेवालों में ये मुसाफ़े के ज़्यादा हक़दार हैं।”  
(अबू दाऊद)

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, “जब दो मोमिन मिलते हैं और सलाम के बाद मुसाफ़े के लिए एक दूसरे का हाथ अपने हाथ में लेते हैं तो दोनों के गुनाह इस तरह झड़ जाते हैं, जिस तरह पेड़ से (सूखे) पत्ते।”  
(तबरानी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मुकम्मल सलाम यह है कि मुसाफ़े के लिए हाथ भी मिलाए जाएँ।”

24. कोई दोस्त, अज़ीज़ या बुज़ुर्ग़ सफ़र से वापस आए तो गले मिलिए। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ि०) जब मदीना आए तो नबी (सल्ल०) के यहाँ पहुँचकर दरवाज़ा खटखटाया। आप अपनी चादर घसीटते हुए दरवाज़े पर पहुँचे, उनसे गले मिले और माथे का बोसा दिया।  
(तिरमिज़ी)

हज़रत अनस (रज़ि०) का बयान है कि जब सहाबा किराम (रज़ि०) आपस में मिलते तो मुसाफ़ा करते और अगर सफ़र से वापस आते तो गले मिलते।

(तबरानी)

## 31. इयादत (रोगी का हाल पूछने) के आदाब

1. मरीज़ की इयादत ज़रूर कीजिए । इयादत करने की हैसियत सिर्फ़ यही नहीं है कि वह इज्तिमाई (सामूहिक) ज़िन्दगी की एक ज़रूरत है या आपसी मदद और सेवा के जज़्बे को उभारने का ज़रिया है, बल्कि यह मुसलमान पर दूसरे मुसलमान भाई का दीनी हक़ है और खुदा से मुहब्बत का एक ज़रूरी तकाज़ा है । खुदा से ताल्लुक रखनेवाला खुदा के बन्दों से बेताल्लुक नहीं हो सकता । मरीज़ का हाल पूछना और उसके काम आने से ग़फ़लत बरतना असल में खुदा से ग़फ़लत है ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि क्रियामत के दिन खुदा फ़रमाएगा—

“ऐ आदम के बेटे ! मैं बीमार पड़ा और तूने मेरी इयादत नहीं की ?” बन्दा कहेगा, “परवरदिगार ! तू सारी दुनिया का पालनहार है, भला मैं तेरी इयादत कैसे करता ?” खुदा कहेगा, “अगर तू उसका हाल पूछने जाता तो मुझे वहाँ पाता (यानी तू मेरी खुश्नूदी और रहमत का हक़दार करार पाता) ।”

(मुस्लिम)

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छः हक़ हैं ।” पूछा गया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! वे क्या हैं ?” फ़रमाया :

—“जब तुम मुसलमान भाई से मिलो तो उसको सलाम करो,

—जब वह तुम्हें दावत के लिए बुलाए तो उसकी दावत क़बूल करो,

—जब वह तुमसे नेक मशविरे माँगे तो उसकी भलाई चाहो और नेक मशविरा दो,

—जब उसको छींक आए और वह ‘अल-हम्दुलिल्लाह’ कहे तो उसके जवाब में ‘यर्हमुकल्लाह’ कहो,

—जब वह बीमार पड़ जाए तो उसकी इयादत करो, और

—जब वह मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाओ ।”

(मुस्लिम)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जिसने अपने मुसलमान भाई की इयादत की वह जन्नत के ऊपरी हिस्से में होगा ।”

(अल-अदबुल मुफ़रद)

हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जब कोई बन्दा अपने मुसलमान भाई की इयादत करता है या उससे मुलाक़ात के लिए जाता है तो एक पुकारनेवाला आसमान से पुकारता है, तुम अच्छे रहे, तुम्हारा चलना अच्छा रहा, तुमने अपने लिए जन्नत में ठिकाना बना लिया ।” (तिर्मिज़ी)

2. मरीज़ के सिरहाने बैठकर उसके सिर या बदन पर हाथ फेरिए और तसल्ली भरे बोल बोलिए, ताकि उसका ज़ेहन आखिरत के अज़्र व सवाब की तरफ़ मुतवज्जोह हो और बेसब्री और शिकवा-शिकायत की कोई बात उसकी ज़बान पर न आए ।

हजरत आइशा बिनत साद (रज़ि०) बयान करती हैं कि मेरे वालिद ने अपना किरसा सुनाया— “मैं एक बार मक्के में सख़्त बीमार पड़ा । नबी (सल्ल०) मेरी इयादत के लिए तशरीफ़ लाए तो मैंने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं काफ़ी माल छोड़ रहा हूँ, मेरी सिर्फ़ एक ही बच्ची है । क्या मैं अपने माल में से दो तिहाई वसीयत कर जाऊँ और एक तिहाई बच्ची के लिए छोड़ दूँ ? फ़रमाया, “नहीं ।” मैंने कहा, “आधे माल की वसीयत कर जाऊँ और आधा लड़की के लिए छोड़ जाऊँ ?” फ़रमाया, “नहीं ।” मैंने अर्ज़ किया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! फिर एक तिहाई की वसीयत कर जाऊँ ?” फ़रमाया, “हाँ, एक तिहाई की वसीयत कर जाओ और एक तिहाई बहुत है ।” इसके बाद नबी (सल्ल०) ने अपना हाथ मेरे माथे पर रखा और फिर मेरे मुँह पर और पेट पर फेरा, फिर दुआ की—

“ऐ खुदा ! साद को शिफ़ा दे और उसकी हिजरत को पूरा कर दे ।”

इसके बाद से आज तक जब भी खयाल आता है तो नबी (सल्ल०) के मुबारक हाथ की ठंडक अपने जिगर पर महसूस करता हूँ । (अल-अदबुल मुफ़रद)

हजरत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार मेरी आँखें दुखने आ गईं तो नबी (सल्ल०) मेरा हाल पूछने के लिए तशरीफ़ लाए और कहने लगे, “ज़ैद ! तुम्हारी आँख में यह तकलीफ़ है तो तुम क्या करते हो ?” मैंने अर्ज़ किया कि सब्र व बरदाश्त करता हूँ ।” आपने फ़रमाया, “तुमने आँखों की इस तकलीफ़ में सब्र व बरदाश्त से काम लिया तो तुम्हें इसके बदले में जन्नत नसीब होगी ।”

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) जब किसी मरीज़ की इयादत को जाते तो उसके सिरहाने बैठते थे । इसके बाद सात बार फ़रमाते—

أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ.

अस-अलुल लाहल अजी-म रब-बल अरशिल अजीमि अय्यंशफियक ।

“मैं बहुत बड़े खुदा से जो बड़े अर्श का रब है, सवाल करता हूँ कि वह तुझे शिफा दे ।”

और नबी (सल्ल०) ने फरमाया कि यह दुआ सात बार पढ़ने से मरीज को जरूर शिफा होगी, अलावा इसके कि उसकी मौत हो गई हो । (मिशकात)

हजरत जाबिर (रजि०) फरमाते हैं—

“नबी (सल्ल०) उम्मुस्साइब (एक बूढ़ी औरत) की इयादत को आए । उम्मुस्साइब बुखार की तेजी से काँप रही थीं ।” पूछा, “क्या हाल है ?” औरत ने कहा— “खुदा इस बुखार को समझे, इसने घेर रखा है ।” यह सुनकर नबी (सल्ल०) ने फरमाया, “बुखार को बुरा भला न कहो । यह मोमिन के गुनाहों को इस तरह साफ कर देता है, जैसे आग की भट्टी लोहे के मोर्चे को साफ कर देती है ।” (अल-अदबुल मुफ़रद)

3. मरीज के पास जाकर उसकी तबीयत का हाल पूछिए और उसके लिए सेहत की दुआ कीजिए । नबी अकरम (सल्ल०) जब मरीज के पास पहुँचते तो पूछते, “कहिए, कैसी तबीयत है ?” फिर तसल्ली देते और फरमाते, “घबराने की कोई बात नहीं, खुदा ने चाहा तो यह मरज जाता रहेगा और यह मरज गुनाहों से पाक होने का जरिया साबित होगा ।” और तकलीफ की जगह पर सीधा हाथ फेरते, और यह दुआ फरमाते—

اَللّٰهُمَّ اَذْهَبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاَشْفِهِ اَنْتَ الشَّافِى لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُكَ لَا يَغَادِرُ سَقَمًا. (بخاری، مسلم)

अल्लाहुम-म अजहिबिल बअ-स रब्बन्नासि अश्फिही व अन्तश-शाफी ला शिफाअ इल्ला शिफाउ-क शिफाउल ला युगादिरु सुकमा ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

“ऐ खुदा ! इस तकलीफ को दूर फरमा, ऐ इनसानों के रब ! इसको शिफा अता फरमा, तू ही शिफा देनेवाला है, तेरे सिवा किसी से शिफा की उम्मीद नहीं, ऐसी शिफा बख्श कि बीमारी का नाम व निशान न रहे ।”

4. मरीज के पास ज्यादा देर तक न बैठिए और न शोर-हंगामा कीजिए । हाँ, अगर मरीज आपका कोई बेतकल्लुफ दोस्त या अजीज हो और वह खुद आपको देर

तक बिठाए रखने का खाहिशमंद हो तो आप जरूर उसकी भावनाओं का एहतिराम कीजिए ।

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि०) फरमाते हैं कि मरीज़ के पास ज्यादा देर तक न बैठना और शोर-हंगामा न करना सुन्नत है ।

5. मरीज़ के रिश्तेदारों से भी मरीज़ का हाल पूछिए और हमदर्दी जाहिर कीजिए और जो खिदमत कर सकते हों जरूर कीजिए । जैसे— डॉक्टर को दिखाना, हाल कहना, दवा वगैरह लाना और अगर जरूरत हो तो माली मदद भी कीजिए ।

हजरत इबराहीम बिन अबी हबला (रह०) कहते हैं, एक बार मेरी बीवी बीमार पड़ गई । मैं उन दिनों हजरत उम्मुहर्दा (रजि०) के पास आया-जाया करता था । जब मैं उनके पास पहुँचता तो फरमातीं, “कहो, तुम्हारी बीवी की तबीयत कैसी है ?” मैं जवाब देता, “अभी तो बीमार हैं ।” फिर वह खाना मँगवतीं और मैं उनके यहाँ बैठकर खाना खाता और वापस जाता । एक दिन जब मैं पहुँचा और उन्होंने हाल पूछा तो मैंने बताया कि खुदा के फ़ज़ल व करम से अब करीब-करीब अच्छी हो गई हैं । फरमाने लगीं, “जब तुम कहते थे कि बीवी बीमार हैं तो मैं तुम्हारे खाने का इन्तिज़ाम कर दिया करती थी, अब जब वह ठीक हो गई हैं तो इस इन्तिज़ाम की क्या जरूरत है ।”

6. ग़ैर मुस्लिम मरीज़ को पूछने के लिए भी जाइए और मुनासिब मौका पाकर हिकमत के साथ उसको दिने हक़ की तरफ़ मुतवज्जोह कीजिए । बीमारी में आदमी खुदा की तरफ़ कुछ ज्यादा मुतवज्जोह होता है और भली बात अपनाने की भावना भी आम तौर से ज्यादा उभार पर होती है ।

हजरत अनस (रजि०) का बयान है कि एक यहूदी लड़का नबी (सल्ल०) की खिदमत किया करता था । एक बार वह बीमार पड़ा तो आप उसका हाल पूछने के लिए तशरीफ़ ले गए । आप उसके सिरहाने बैठे तो उसको इस्लाम की दावत दी । लड़का अपने बाप की ओर देखने लगा जो पास ही मौजूद था (कि बाप का क्या खयाल है ?) । बाप ने लड़के से कहा, “(बेटे ! ) अबुल कासिम (सल्ल०) की बात मान ले ।” चुनाँचे लड़का मुसलमान हो गया । अब नबी (सल्ल०) उसके यहाँ से यह कहते हुए बाहर आए, “शुक्र है उस खुदा का, जिसने इस लड़के को जहन्नम से बचा लिया ।”

7. मरीज़ के घर हाल पूछने के लिए पहुँचें तो इधर-उधर ताकने से परहेज़ कीजिए और एहतियात के साथ इस अन्दाज़ से बैठिए कि घर की औरतों पर निगाह न पड़े ।



हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) एक बार किसी मरीज़ का हाल पूछने के लिए गए। उनके साथ कुछ और लोग भी थे। घर में एक औरत भी मौजूद थी। हजरत अब्दुल्लाह (रज़ि०) के साथियों में से एक साहब उस औरत को घूरने लगे— हजरत अब्दुल्लाह (रज़ि०) को जब महसूस हुआ तो फरमाया, “अगर तुम अपनी आँख फोड़ लेते तो तुम्हारे हक़ में बहुत बेहतर होता।”

8. जो लोग एलानिया फ़िस्क व फ़ुज़ूर में पड़े हों और बड़ी बेशर्मी और ढिठाई के साथ खुदा की नाफ़रमानी कर रहे हों, उनका हाल पूछने के लिए न जाइए।

हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) फरमाते हैं कि शराब पीनेवाले जब बीमार पड़ जाएँ तो उनका हाल पूछने के लिए न जाओ।

9. मरीज़ का हाल पूछने के लिए जाइए तो मरीज़ से अपने लिए भी दुआ कराइए।

इब्ने माजा में है—

“जब तुम किसी मरीज़ का हाल पूछने के लिए जाओ तो उससे अपने लिए भी दुआ की दरखास्त करो। मरीज़ की दुआ ऐसी है जैसे फ़रिश्तों की दुआ।” (यानी फ़रिश्ते खुदा की मरज़ी पाकर ही दुआ करते हैं और दुआ मक़बूल होती है।)

## 32. मुलाकात के आदाब

1. मुलाकात के वक्त मुस्कुराते चेहरे से स्वागत कीजिए । खुशी और मुहब्बत ज़ाहिर कीजिए और सलाम में पहल कीजिए, इसका बड़ा सवाब है ।

2. सलाम और दुआ के लिए इधर-उधर के लफ्जों का इस्तेमाल न कीजिए । नबी (सल्ल०) के बताए हुए शब्द 'अस्सलामु अलैकुम' इस्तेमाल कीजिए, फिर मौका हो तो मुसाफ़ा कीजिए, मिज़ाज पूछिए और मुनासिब हो तो घरवालों की ख़ैरियत भी मालूम कीजिए । नबी (सल्ल०) के बताए हुए शब्द 'अस्सलामु अलैकुम' बहुत मानीदार (Meaningful) हैं । इसमें दीन व दुनिया की तमाम सलामतियाँ और हर तरह की ख़ैर व आफ़ियत शामिल है । यह भी खयाल रखिए कि नबी (सल्ल०) मुसाफ़ा करते वक्त अपना हाथ तुरन्त छुड़ाने की कोशिश न करते, बल्कि इन्तिज़ार फ़रमाते कि दूसरा आदमी खुद ही हाथ छोड़ दे ।

3. जब किसी से मिलने जाइए तो साफ़-सुथरे कपड़े पहनकर जाइए । मैले-कुचैले कपड़ों में न जाइए और न इस नीयत से जाइए कि आप अपने क़ीमती कपड़ों में उसपर रौब कायम करें ।

4. जब किसी से मुलाकात का इरादा हो तो पहले उससे वक्त ले लीजिए, यूँ ही वक्त-बेवक्त किसी के यहाँ जाना मुनासिब नहीं है । इससे दूसरों का वक्त भी ख़राब होता है और मुलाकात करनेवाला भी कभी-कभी नज़रों से गिर जाता है ।

5. जब कोई आपके यहाँ मिलने आए तो मुहब्बत भरी मुस्कान से स्वागत कीजिए, इज़ाज़त से बिठाइए और मौक़े के मुताबिक़ मुनासिब आवभगत भी कीजिए ।

6. किसी के पास जाइए तो काम की बातें कीजिए । बेकार की बात करके उसका और अपना वक्त बेकार न कीजिए, वरना आपका लोगों के यहाँ जाना और बैठना उनको खलने लगेगा ।

7. किसी के यहाँ जाइए तो दरवाज़े पर इज़ाज़त लीजिए और इज़ाज़त मिलने पर 'अस्सलामु अलैकुम' कहकर अन्दर जाइए और तीन बार 'अस्सलामु अलैकुम' कहने के बाद कोई ज़वाब न मिले तो खुशी-खुशी लौट आइए ।

8. किसी के यहाँ जाते वक्त कभी-कभी मुनासिब तोहफ़ा भी साथ लेते जाइए । तोहफ़ा देने-दिलाने से मुहब्बत बढ़ती है ।

9. जब कोई ज़रूरतमन्द आपसे मिलने आए तो जहाँ तक मुमकिन हो, उसकी ज़रूरत पूरी कीजिए । सिफ़ारिश की दरखास्त करे तो सिफ़ारिश कर दीजिए और

अगर ज़रूरत पूरी न कर सकें तो प्यार भरे अन्दाज़ में मना कर दीजिए, खाहमखाह उसको उम्मीदवार न रखिए ।

10. आप किसी के यहाँ अपनी ज़रूरत से जाएँ तो तहजीब और अदब के साथ अपनी ज़रूरत बयान कीजिए, पूरी हो जाए तो शुक्रिया अदा कीजिए । न हो सके तो सलाम करके खुश-खुश लौट आइए ।

11. हमेशा यही खाहिश न रखिए कि लोग आप से मिलने आएँ, खुद भी दूसरों से मिलने जाइए । आपस में मेल-जोल बढ़ाना और एक-दूसरे के काम आना बड़ी पसन्दीदा बात है । लेकिन खयाल रखिए कि मोमिनों का मेल-जोल हमेशा नेक मकसदों के लिए होता है ।

12. मुलाकात के वक़्त अगर आप देखें कि मिलनेवाले के चेहरे व दाढ़ी या कपड़ों पर कोई तिनका या कोई और चीज़ है तो हटा दीजिए और अगर कोई दूसरा आपके साथ यह अच्छा व्यवहार करे तो शुक्रिया अदा कीजिए और यह दुआ कीजिए—

مَسَحَ اللَّهُ عَنْكَ مَا تَكْرَهُ.

मस्स-हल्लाहु अन-क मा तक-रहु ।

“अल्लाह आपसे उन चीज़ों को दूर फ़रमाए जो आपको नागवार हैं ।”

13. रात के वक़्त किसी के यहाँ जाने की ज़रूरत हो तो उसके आराम का खयाल रखिए । ज़्यादा देर न बैठिए और अगर जाने के बाद अन्दाज़ा हो कि वह सो गया है तो बिना किसी कुढ़न के खुश-खुश वापस आ जाइए ।

14. कुछ लोग मिलकर किसी से मुलाकात के लिए जाएँ तो बात करनेवाले को बातों में सबकी नुमाइन्दगी करनी चाहिए । बातों में अपनी ख़ास शान ज़ाहिर करने, अपनी अहमियत जताने, अपने साथियों को नज़रअन्दाज़ करने और मुखातब को सिर्फ़ अपनी ज़ात की ओर मुतवज्जोह करने से सख्ती से परहेज कीजिए ।

### 33. बात करने के आदाब

1. हमेशा सच बोलिए । सच बोलने में कभी झिझक न महसूस कीजिए चाहे कितना ही बड़ा नुकसान हो ।

2. ज़रूरत के वक़्त बात कीजिए और जब भी बात कीजिए तो काम की बात कीजिए । हर वक़्त बोलना और बेज़रूरत बातें करना बकार और संजीदगी के खिलाफ़ है और खुदा के यहाँ हर बात का जवाब देना है । आदमी जो भी बात मुँह से निकालता है, खुदा के फ़रिश्ते उसे तुरन्त नोट कर लेते हैं ।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ

“कोई बात उसकी ज़बान पर आती ही है कि एक निगराँ (उसको महफूज़ करने के लिए) मुस्तैद (तैयार) रहता है ।” (कुरआन, 50:18)

3. जब बात कीजिए तो नर्मी के साथ कीजिए, मुस्कराते हुए मीठे स्वर में कीजिए, हमेशा दरमियानी आवाज़ में बोलिए । न इतना धीरे बोलिए कि मुखातब सुन ही न सके और न इतना चीखकर बोलिए कि मुखातब पर रौब जमाने का खतरा होने लगे । कुरआन में है—

إِنْ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ (الفرقان)

“सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा और भद्दी आवाज़ गधे की है ।”

(कुरआन, 31:19)

4. कभी किसी बुरी बात से ज़बान गन्दी न कीजिए । दूसरों की बुराई न कीजिए, चुगली न खाइए, शिकायतें न कीजिए, दूसरों की नकलें न उतारिए, झूठा वादा न कीजिए, किसी की हँसी न उड़ाइए, अपनी बड़ाई न कीजिए, अपनी तारीफ़ न कीजिए, कठहुज्जती न कीजिए, मुँह देखी बात भी न कीजिए, फ़ब्तियाँ न कसिए, किसी पर व्यंग न कीजिए, किसी को ज़िल्लत के नाम से न पुकारिए और बात-बात पर कसम न खाइए ।

5. हमेशा इनसाफ़ की बात कहिए, चाहे उसमें अपना या अपने किसी दोस्त और रिश्तेदार का नुकसान ही क्यों न हो ।

وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ

“और जब ज़बान से कुछ कहो तो इनसाफ़ की बात कहो, चाहे वह

तुम्हारा रिश्तेदार ही हो ।”

6. नर्म, भली और दिल रखनेवाली बात कीजिए । खुरी, बेलोच और तकलीफदेह सख्त बात न कहिए ।

7. औरतों को अगर कभी मदों से बोलने का इत्तिफाक हो तो साफ़, सीधे और खुरे स्वर में बात करनी चाहिए । स्वर में कोई नज़ाकत और घुलावट न पैदा करें कि सुननेवाला मर्द बुरा खयाल दिल में लाए ।

8. जाहिल बातों में उलझाना चाहें तो मुनासिब अन्दाज़ में सलाम करके वहाँ से चल दीजिए । बेकार बातें कहनेवाले और बकवास में पड़े रहनेवाले लोग उम्मत के सबसे बुरे लोग हैं ।

9. सामने के आदमी को बात अच्छी तरह समझाने के लिए या किसी बात की अहमियत को बताने के लिए उसके ज़ेहन व फ़िक्र को सामने रखकर मुनासिब अन्दाज़ अपनाइए और अगर सामने का आदमी न समझ सके या न सुन सके, तो फिर अपनी बात दोहरा दीजिए और ज़रा भी न कुदिए ।

10. हमेशा कम और मतलब की बात कीजिए, बेमतलब बातों को लम्बा करना नामुनासिब है ।

11. कभी कोई दीन की बात समझानी हो या तक्रर के ज़रिए दीन के कुछ हुक्मों को बताना और मसूलों को ज़ेहन में बिठाना हो तो बड़े सादा अन्दाज़ में दर्द के साथ अपनी बात स्पष्ट कीजिए ।

तक्रर के ज़रिए शोहरत चाहना, अपनी लच्छेदार बातों से लोगों पर रौब डालना, उनको अपना चाहनेवाला बना लेना, घमण्ड करना या सिर्फ़ दिल्लगी और हँसी-मजाक के लिए तक्ररि करना— ये सबसे बुरी आदतें हैं जिससे दिल काला हो जाता है ।

12. कभी खुशामद और चापलूसी की बातें न कीजिए । अपनी इज़्ज़त का हमेशा खयाल रखिए और कभी अपने मरतबे से गिरी हुई बात न कीजिए ।

13. दो आदमी बात कर रहे हों तो इजाज़त लिए बग़ैर दखल न दीजिए और न कभी किसी की बात काटकर बोलने की कोशिश कीजिए । बोलना ज़रूरी ही हो तो इजाज़त लेकर बोलिए ।

14. ठहर-ठहरकर सलीके और वक्रार के साथ बातें कीजिए, जल्द और तेज़ न कीजिए, न हर वक़्त हँसी-मजाक कीजिए, इससे आदमी की इज़्ज़त जाती रहती है ।

15. कोई कुछ पूछे तो पहले गौर से उसका सवाल सुन लीजिए और खूब सोचकर जवाब दीजिए । बिना सोचे-समझे अलल-टप जवाब देना बड़ी नादानी है और अगर कोई दूसरे से सवाल कर रहा हो तो खुद बढ़-बढ़कर जवाब न दीजिए ।

16. कोई कुछ बता रहा हो तो पहले यह न कहिए कि हमें मालूम है । हो सकता है कि उसके बताने से कोई नई बात समझ में आ जाए या किसी खास बात का दिल पर खास असर हो जाए, इसलिए कि बात के साथ-साथ बात करनेवाले का इखलास और नेकी भी असर करती है ।

17. जिससे भी बातें करें, उसकी उम्र, मरतबे और उससे अपने तात्लुक का ध्यान रखते हुए बात कीजिए । माँ-बाप, उस्ताद और दूसरे बड़ों से दोस्तों की तरह बात न कीजिए । इसी तरह छोटों से बात करें तो अपने रुतबे को ध्यान में रखकर मुहब्बत और बड़प्पन के साथ बात कीजिए ।

18. बात करते वक़्त किसी की तरफ़ इशारा न कीजिए कि दूसरे को बदगुमानी हो और खाहमखाह उसके दिल में शक गुजरे । दूसरों की बातें छिपकर सुनने से परहेज़ कीजिए ।

19. दूसरों की ज़्यादा सुनिए और खुद कम से कम बात कीजिए और जो बात राज़ की हो, वह किसी से भी बयान न कीजिए । अपना राज़ दूसरे को बताकर उसकी हिफ़ाज़त की उम्मीद रखना खुली नासमझी है ।

## 34. खत लिखने के आदाब

1. खत की शुरूआत 'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' से कीजिए। थोड़े में लिखना चाहें तो 'बिस्मिही तआला' लिखिए। प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस काम के शुरू में बिसमिल्लाह नहीं की जाती वह अधूरा और बेबरकत रहता है। कुछ लोग शब्दों में लिखने के बजाए 786 लिखते हैं। इससे बचने की कोशिश कीजिए, इसलिए कि खुदा के सिखाए हुए शब्दों में ही बरकत है।

2. अपना पता हर खत में ज़रूर लिखिए। यह सोचकर पता लिखने में हरगिज़ सुस्ती न कीजिए कि आप जिसको खत लिख रहे हैं, उसको पता पहले लिख चुके हैं या उसको याद होगा। यह ज़रूरी नहीं है कि आपका पता उसके पास हिफ़ाज़त से रखा हो और यह भी ज़रूरी नहीं कि उसे आपका पता याद हो।

3. अपना पता दाहिनी ओर थोड़ा-सा हाशिया छोड़कर लिखिए। पता हमेशा साफ़ और अच्छा लिखिए और पते के सही लिखे होने की तरफ़ से ज़रूर इतमीनान कर लीजिए।

4. अपने पते के नीचे/बाईं ओर ऊपर तारीख़ ज़रूर लिख दिया कीजिए।

5. तारीख़ लिखने के बाद थोड़े-से शब्दों में अलकाब व आदाब के ज़रिए जिसे खत लिख रहे हैं उसे खिताब कीजिए। अलकाब व आदाब हमेशा थोड़ा और सादा लिखिए जिससे खुलूस महसूस हो और यह कि आप उससे बहुत करीब हैं। ऐसे अलकाब से बचिए जिनसे बनावट और दिखावा ज़ाहिर हो। अलकाब व आदाब के साथ ही या अलकाब के नीचे दूसरी लाइन में 'सलाम मसनून' या 'अस्सलामु अलैकुम' लिखिए। 'आदाब', 'तस्लीमात' वगैरह न लिखिए।

6. ग़ैर मुस्लिम को खत लिख रहे हों तो 'अस्सलामु अलैकुम' या 'सलाम मसनून' लिखने के बजाए 'आदाब' या 'तस्लीमात' वगैरह जैसे शब्द लिखिए।

7. अलकाब व आदाब के बाद अपना वह असल मक़सद लिखिए जिस ग़रज़ से आप खत लिखना चाहते हैं। मतलब और मक़सद के बाद, जिसे आप खत लिख रहे हैं, उससे अपना ताल्लुक ज़ाहिर करनेवाले शब्दों के साथ अपना नाम लिखकर खत को ख़त्म कीजिए, जैसे— 'आप का खादिम' (सेवक), 'दुआ का तालिब', 'हितैषी', 'दुआ गो' वगैरह।

8. खत बहुत साफ़, सादा और अच्छा लिखिए कि आसानी से पढ़ा और समझा जा सके और जिसे खत लिखा जा रहा है उसके दिल में उसकी कद्र हो।

9. खत में साफ़-सुथरी, आसान और सुलझी हुई भाषा इस्तेमाल कीजिए ।
10. खत थोड़ा-सा लिखिए और हर बात खोलकर साफ़-साफ़ लिखिए, सिर्फ़ इशारों से काम न लीजिए ।
11. पूरे खत में अलकाब व आदाब से लेकर खातमे तक, जिसको खत लिखा जा रहा है, उसके मतबे का खयाल रखिए ।
12. नया पैराग्राफ़ शुरू करते वक़्त शब्द की जगह छोड़ दीजिए ।
13. खत में हमेशा संजीदा अन्दाज़ अपनाइए । ग़ैर संजीदा बातों से बचिए ।
14. खत कभी गुस्से में न लिखिए और न कोई सख़्त-सुस्त बात लिखिए । खत हमेशा नर्म लहजे में लिखिए ।
15. आम खत में कोई राज़ की बात न लिखिए ।
16. जुमले के खातमे पर पूर्ण विराम ज़रूर लगाइए ।
17. किसी का खत बग़ैर इजाज़त हरगिज़ न पढ़िए । यह ज़बरदस्त अखलाकी ख़ियानत है । अलबत्ता घर के बुजुर्गों और सरपरस्तों की ज़िम्मेदारी है कि वे छोटों के खतों को पढ़कर उनकी तरबियत फ़रमाएँ और उन्हें मुनासिब मशविरे दें । लड़कियों के खतों पर खास नज़र रखनी चाहिए ।
18. रिश्तेदारों और दोस्तों को ख़ैर व आफ़ियत के खत बराबर लिखते रहिए ।
19. कोई बीमार पड़ जाए, खुदा न खास्ता कोई हादसा हो जाए या किसी और मुसीबत में कोई फँस जाए तो उसको हमदर्दी का खत ज़रूर लिखिए ।
20. किसी के यहाँ कोई ज़न हो, कोई रिश्तेदार आया हो या खुशी का कोई और मौका हो तो मुबारकबाद का खत ज़रूर लिखिए ।
21. खत हमेशा नीली या काली रोशनाई (स्याही) से लिखिए । पेंसिल या लाल रोशनाई से हरगिज़ न लिखिए ।
22. कोई आदमी डाक में डालने के लिए खत दे तो निहायत ज़िम्मेदारी के साथ ठीक वक़्त पर ज़रूर डाल दिया कीजिए । लापरवाही या देर हरगिज़ न कीजिए ।
23. ग़ैर-मुताल्लिक़ लोगों को जवाब तलब बातों के लिए जवाबी कार्ड या टिकट भेज दिया कीजिए ।
24. लिखकर काटना चाहें तो हल्के हाथ से उसपर लाइन खींच दिया कीजिए ।
25. खत में सिर्फ़ अपनी दिलचस्पी और अपने ही मतलब की बातें न लिखिए,



बल्कि जिसे खत लिखा जा रहा है उसकी भावनाओं और दिलचस्पियों का भी खयाल रखिए । सिर्फ अपने से मुताल्लिक लोगों की खैर व आफ्रियत न बताइए, बल्कि उससे मुताल्लिक लोगों की खैर व आफ्रियत भी मालूम कीजिए और याद रखिए— खतों में कभी किसी से ज्यादा माँगें न कीजिए । ज्यादा माँग करने से आदमी की इज्जत नहीं रहती ।

## 35. कारोबार के आदाब

1. दिलचस्पी और मेहनत के साथ कारोबार कीजिए । अपनी रोज़ी खुद अपने हाथों से कमाइए और किसी पर बोझ न बनिए ।

एक बार नबी (सल्ल०) की खिदमत में एक अनसारी आए और उन्होंने नबी (सल्ल०) से कुछ सवाल किया । आपने पूछा, “तुम्हारे घर में कुछ सामान भी है ?” सहाबी (रज़ि०) ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! सिर्फ़ दो चीज़ें हैं— एक टाट का बिछौना जिसको हम ओढ़ते भी हैं और बिछाते भी हैं और एक पानी पीने का प्याला है ।” आप ने फ़रमाया— “ये दोनों चीज़ें मेरे पास ले आओ ।” सहाबी (रज़ि०) दोनों चीज़ें लेकर हाज़िर हो गए । आप ने वे दोनों चीज़ें दो दिरहम में नीलाम कर दीं और दोनों दिरहम उनके हवाले करते हुए फ़रमाया, “जाओ, एक दिरहम में तो कुछ खाने-पीने का सामान ख़रीद कर घरवालों को दे आओ और एक दिरहम में कुल्हाड़ी ख़रीद कर लाओ ।” फिर कुल्हाड़ी में आपने अपने मुबारक हाथों से दस्ता लगाया और फ़रमाया, “जाओ जंगल से लकड़ियाँ काट-काटकर लाओ और बाज़ार में बेचो । पन्द्रह दिन के बाद हमारे पास आकर पूरी बात सुनाना ।” पन्द्रह दिन के बाद जब वह सहाबी हाज़िर हुए तो उन्होंने दस दिरहम जमाकर लिए थे । आप (सल्ल०) खुश हुए और फ़रमाया—

“यह मेहनत की कमाई तुम्हारे लिए इससे कहीं बेहतर है कि तुम लोगों से माँगते फ़िरो और क्रियामत के दिन तुम्हारे चेहरे पर भीख माँगने का दाग़ हो ।”

2. जमकर कारोबार कीजिए और ख़ूब कमाइए ताकि आप लोगों के मुहताज न रहें ।

नबी (सल्ल०) से लोगों ने एक बार पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! सबसे बेहतर कमाई कौन-सी है ?” फ़रमाया—

“अपने हाथ की कमाई और हर वह कारोबार जिसमें झूठ और ख़ियानत न हो ।”

हज़रत अबू क़लाबा (रह०) फ़रमाया करते थे—

“बाज़ार में जमकर कारोबार करो, तुम दीन पर मज़बूती के साथ जम सकोगे और लोगों से बेनियाज़ रहोगे ।”

3. कारोबार बढ़ाने के लिए हमेशा सच्चाई अपनाईए । झूठी क़समों से सख्ती

के साथ परहेज़ कीजिए ।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“क्रियामत के दिन अल्लाह तआला न उस आदमी से बात करेगा, न उसकी ओर मुँह उठाकर देखेगा और न ही उसको पाक-साफ़ करके जन्नत में दाखिल करेगा, जो झूठी क़समें खा-खाकर अपने कारोबार को बढ़ाने की कोशिश करता है ।” (मुस्लिम)

और आपने यह भी फ़रमाया—

“अपना माल बेचने के लिए कसरत से झूठी क़समें खाने से बचो । यह चीज़ वक्ती तौर पर तो बढ़ाने की मालूम होती है, लेकिन आखिरकार कारोबार में बरकत ख़त्म हो जाती है ।” (मुस्लिम)

4. कारोबार में हमेशा दियानत व अमानत इख़तियार कीजिए और कभी किसी को ख़राब माल देकर या जाने-पहचाने नफ़ा से ज़्यादा ग़ैर-मामूली नफ़ा लेकर अपनी हलाल कमाई को हराम न बनाइए ।

ख़ुदा के रसूल (सल्ल०) का इश़ाद है—

“सच्चा और अमानतदार ताजिर क्रियामत में नबियों, सिद्दीकों और शहीदों के साथ-साथ होगा ।” (तिरमिज़ी)

5. ख़रीदारों को अच्छे से अच्छा माल देने की कोशिश कीजिए । जिस माल पर आपको इतमीनान न हो, वह हरगिज़ किसी ख़रीदार को न दीजिए और अगर कोई ख़रीदार आपसे मशविरा तलब करे तो उसको मुनासिब मशविरा दीजिए ।

6. ख़रीदारों को अपने एतबार में लेने की कोशिश कीजिए कि वे आपको अपना भला चाहनेवाला समझें, आप पर भरोसा करें और उनको पूरा-पूरा इतमीनान हो कि वे आपके यहाँ कभी धोखा न खाएँगे ।

नबी अकरम (सल्ल०) का इश़ाद है—

“जिसने पाक कमाई पर गुज़ारा किया, मेरी सुन्नत पर अमल किया और लोगों को अपनी ख़राबी से बचाए रखा तो यह आदमी जन्नती है, जन्नत में दाखिल होगा ।” लोगों ने अर्ज़ किया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! इस ज़माने में तो ऐसे लोग कसरत से हैं ।” आपने फ़रमाया, “मेरे बाद भी ऐसे लोग होंगे ।” (तिरमिज़ी)

7. वक़्त की पाबन्दी का पूरा-पूरा ख़याल रखिए । वक़्त पर दुकान पहुँच जाइए और ज़मकर सब्र के साथ बैठिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“रोजी की खोज और हलाल कमाई के लिए सुबह-सवैरे ही चले जाया करो, क्योंकि सुबह के कामों में बरकत और फैलाव होता है ।”

8. खुद भी मेहनत कीजिए और नौकरों को भी मेहनत का आदी बनाइए । अलबत्ता नौकरों के हक्कों को फ़ैयाजी और ईसार के साथ अदा कीजिए और हमेशा उनके साथ नमी और अच्छाई का बरताव कीजिए । बात-बात पर गुस्सा करने और शक करने से परहेज कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“खुदा उस उम्मत को पाकीज़गी नहीं देता जिसके माहौल में कमज़ोरों को उनका हक़ न दिलवाया जाए ।”

9. खरीदारों के साथ हमेशा नमी का मामला कीजिए और क़र्ज़ माँगनेवालों के साथ सख्ती न कीजिए, न उन्हें मायूस कीजिए और न ही उनसे तक्राजे में सख्ती कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“खुदा उस आदमी पर रहम फ़रमाएगा जो खरीदने-बेचने और तक्राज़ा करने में नमी और खुश-अखलाक़ी से काम लेता है । (बुखारी)

और आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया, “जिस आदमी की यह खाहिश हो कि खुदा उसको क्रियामत के दिन की घुटन और ग़म से बचाए तो उसे चाहिए कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उसके ऊपर से उतार दे ।”

10. माल का ऐब छिपाने और खरीदार को धोखा देने से परहेज कीजिए । माल की खराबी और ऐब खरीदार पर खोल दीजिए ।

एक बार नबी (सल्ल०) गल्ले के एक ढेर के पास से गुज़रे । आपने अपना हाथ उस ढेर में डाला तो उँगलियों में कुछ नमी महसूस हुई । आपने गल्लेवाले से पूछा—

“यह क्या है ?” दुकानदार ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! इस ढेर पर बारिश हो गई थी ।” आपने फ़रमाया, “फिर तुमने भीगे हुए गल्ले को ऊपर क्यों नहीं रख दिया कि लोग उसे देख लेते । जो आदमी धोखा दे, उसका मुझसे कोई ताल्लुक नहीं ।”

11. क़ीमतें बढ़ने के इंतज़ार में खाने-पीने की चीज़ें रोककर खुदा की मखलूक को पेशान करने से सख्ती के साथ बचिए ।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जमाखोरी करनेवाला गुनाहगार है ।”

एक मौक़े पर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“जमाखोरी करनेवाला बुरा आदमी है । जब खुदा चीज़ों को सस्ता फ़रमा देता है तो वह ग़म में घुलता है और जब कीमतें चढ़ जाती हैं तो उसका दिल खुश हो जाता है ।” (मिशकात)

12. ख़रीदार को उसका हक़ पूरा-पूरा दीजिए । नाप-तौल में एहतिमाम कीजिए । लेने और देने का पैमाना एक रखिए । नबी (सल्ल०) ने नाप-तौलवाले ताजिरी को खिताब करते हुए बताया—

“तुम लोग दो ऐसे कामों के ज़िम्मेदार बनाए गए हो जिनकी वजह से तुमसे पहले गुज़री हुई क़ौमें हलाक हुई ।”

क़ुरआन में है—

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۖ وَإِذَا كَالُوا لَهُمْ أَوْ وَزَنُوا لَهُمْ يُخْسِرُونَ ۖ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ (طه: 1-4)

“नाप-तौल में कमी करनेवालों के लिए हलाकत है, जो लोगों से नापकर लें तो पूरा-पूरा लें और जब उनको नाप या तौल कर दें तो कम कर दें । क्या ये लोग नहीं जानते कि ये ज़िन्दा करके उठाए भी जाएंगे ? एक बड़े ही सख्त दिन में, जिस दिन तमाम इनसान सारे जहानों के पालनहार के हुज़ूर खड़े होंगे । (83:1-6)

13. तिजारीती कोताहियों का कफ़़ारा ज़रूर अदा करते रहिए और खुदा की राह में दिल खोलकर सदका व ख़ैरात (दान-पुण्य) करते रहा कीजिए ।

नबी (सल्ल०) ने ताजिरी को हिदायत फ़रमाई—

“ऐ कारोबार करनेवालो ! माल के बेचने में बेकार की बात करने और झूठी क़सम खा जाने का बहुत इमकान रहता है, तो तुम लोग अपने मालों में से सदका ज़रूर किया करो ।” (अबू दाऊद)

14. और उस तिजारीत को कभी ज़ेहनों से ओझल न होने दीजिए जो दर्दनाक

अज़ाब से निजात दिलानेवाली है और जिसका नफ़ा मिटनेवाली दौलत नहीं, बल्कि हमेशा की कामयाबी और न ख़त्म होनेवाली ज़िन्दगी है ।

कुरआन में है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝  
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ  
وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

“ऐ ईमानवालो ! मैं तुम्हें ऐसी तिजारत क्यों न बताऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचाए । (यह कि) तुम खुदा पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और खुदा की राह में अपने माल और अपनी जानों से ज़िहाद करो । यह तुम्हारे हक़ में बहुत बेहतर है, अगर तुम इल्म से काम लो ।”

(कुरआन, 61:10-11)

## दीन की दावत

### 36. दीन की दावत देनेवालों के आदाब

1. अपने मंसब (पद) की सच्ची चेतना पैदा कीजिए । आप नबी (सल्ल०) के जानशीन हैं और दीन की दावत, हक़ की गवाही और तबलीग़ की वही ज़िम्मेदारी आपको अंजाम देनी है जो खुदा के नबी (सल्ल०) अंजाम देते रहे, इसलिए दावत देनेवाले इनसान जैसी तड़प पैदा करने की कोशिश कीजिए जो नबी (सल्ल०) की खास और उभरी हुई खूबी है ।

कुरआन का इरशाद है—

هُوَ أَجْتَبَكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۖ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ  
هُوَ سَمَّكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ  
وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ

“उसने तुम्हें चुन लिया है और दीन के मामले में तुमपर कोई तंगी नहीं रखी है, पैरवी करो उस दीन की, जो तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन है । उसने पहले ही से तुम्हें मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) नाम से नवाज़ा था और इसी सिलसिले में, कि रसूल तुम्हारे लिए दीने हक़ की गवाही दें और तुम दुनिया के सारे इनसानों के सामने दीने हक़ की गवाही दो ।”

(कुरआन, 22:78)

यानी मुस्लिम उम्मत (समुदाय) रसूल (सल्ल०) की जानशीन है और उसको वही काम अंजाम देना है जो रसूल (सल्ल०) ने अंजाम दिया, जिस तरह आखिरी रसूल (सल्ल०) ने अपनी कथनी-करनी और रात व दिन की दौड़-धूप से खुदा के दीन को स्पष्ट करने का हक़ अदा किया, ठीक उसी तरह उम्मत को भी दुनिया के सारे ही इनसानों के सामने खुदा के दीन को स्पष्ट करना है और ज़िम्मेदारी के उसी एहसास और दावत देनेवाले जैसी तड़प के साथ दीने हक़ की ज़िन्दा गवाही

बनकर ज़िन्दा रहना है ।

2. अपनी असल हैसियत को हमेशा निगाह में रखिए और उसकी शान के मुताबिक अपनी ज़िन्दगी बनाने और बनाए रखने की कोशिशें बराबर जारी रखिए । आप दुनिया की आम उम्मतों की तरह एक आम उम्मत नहीं हैं बल्कि आपको खुदा ने खास शान बख्शी है । आपको दुनिया की तमाम क्रौमों में सरदार की तरह रहनुमाई की जगह हासिल है । आप हर तरह की इतिहाओं से पाक होकर खुदा के सीधे रास्ते पर एतिदाल के साथ कायम रहें ।

कुरआन में है—

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ  
الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۝ (البقره)

“और इसी तरह हमने तुमको एक ‘उम्मेते वसत’ बनाया है, ताकि तुम सारे इनसानों के लिए दीने हक के गवाह बनो और रसूल तुम्हारे लिए गवाह हों ।”  
(कुरआन, 2:143)

3. अपने नस्बुलऐन (मिशन) की सच्ची जानकारी हासिल कीजिए और खुले दिल के साथ और पूरी तरह मुतमइन होकर उसको अपनाने की कोशिश कीजिए । खुदा की नज़र में मुसलमानों का नस्बुलऐन कतई तौरपर यह है कि वह पूरी यकसूई और इखलास के साथ उस पूरे दीन को कायम और जारी करें जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) लेकर आए और जो अक़ीदे व इबादत, अखलाक और रहन-सहन, खान-पान और सियासत (राजनीति) गरज़ इनसानी ज़िन्दगी से मुताल्लिक तमाम ही आसमानी हिदायतों में शामिल है । नबी (सल्ल०) ने अपने मुबारक दौर में इस दीन को अपनी तमाम तफ़सीली बातों के साथ कायम फ़रमाया । आपने अक़ीदे और अखलाक की तालीम भी दी, इबादत के तरीक़े भी सिखाए । दीन की बुनियादों और समाज का निर्माण भी किया और इनसानी ज़िन्दगी को संगठित करने और खैर व बरकत से मालामाल करनेवाली एक बाबरकत स्टेट भी कायम की ।

खुदा का इरशाद है—

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا  
وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۝

“मुसलमानो ! खुदा ने तुम्हारे लिए दीन का वही तरीक़ा मुक़रर किया



है, जिसकी वसीयत उसने नूह को की थी और जिसकी वहत्य ऐ रसूल! हमने आपकी ओर भेजी है और जिसकी हिदायत हम इबराहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं कि इस दीन को कायम करो और इसमें फूट न डालो ।” (कुरआन, 42:13)

4. बुराइयों को मिटाने और भलाईयों को कायम करने के लिए हर वक्त तैयार रहिए । यही आपके ईमान का तक्काजा है और यही आपके मिल्ली वुजूद का मकसद है । इसी मकसद के लिए जिन्दा रहिए और इसी के लिए जान दीजिए । इसी काम को अंजाम देने के लिए खुदा ने आपको ‘खैर उम्मत’ (सर्वोत्तम गिरोह) के बड़े लकब से याद किया है—

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۝

“तुम खैर उम्मत (बेहतरीन उम्मत) हो जो सारे इन्सानों के लिए वुजूद में लाई गई है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और खुदा पर पूरा ईमान रखते हो ।” (कुरआन, 3 : 110)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“उस ज्ञात की कसम जिसके कब्जे में मेरी जान है, तुम लोग लाजिमी तौर पर नेकी का हुक्म देते रहो और बुराई से रोकते रहो, वरना बहुत जल्द खुदा तुमपर ऐसा अजाब भेज देगा कि फिर तुम पुकारते रहोगे और कोई सुनवाई न होगी ।” (तिरमिजी)

5. खुदा का पैगाम पहुँचाने और खुदा के बन्दों को जहन्नम के खतरनाक अजाब से बचाने के लिए दावत-देनेवालों जैसी तड़प और मिसाली दर्द पैदा कीजिए । नबी (सल्ल०) की बेमिसाल तड़प और दर्द को कुरआन ने इन शब्दों में याद किया है—

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسِكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ ۝ أَسْفَا ۝ (अल्कहफ: १)

“शायद आप इन लोगों के पीछे अपनी जान ही हलाक कर डालेंगे अगर ये लोग हिदायत के इस कलाम पर ईमान न लाएँ ।”

(कुरआन, 18:6)

और नबी (सल्ल०) ने अपनी इस हालत को इन लफ्जों में बयान फरमाया है—

“मेरी मिसाल उस आदमी की सी है जिसने आग जलाई और जब आस-पास का माहौल आग की रौशनी से चमक उठा तो ये कीड़े-पतंगे उसपर गिरने लगे और वह आदमी पूरी ताकत से उन कीड़े-पतंगों को रोक रहा है, लेकिन पतंगे हैं कि उसकी कोशिशों को नाकाम बनाए देते हैं और आग में घुसे पड़ रहे हैं, (इसी तरह) मैं तुम्हें कमर से पकड़-पकड़ कर आग से रोक रहा हूँ और तुम हो कि आग में गिरे पड़ रहे हो ।”

(मिशकात)

एक बार हज़रत आइशा (रजि०) ने आपसे पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! उहुद से ज्यादा सख्त दिन भी आप पर कोई गुजरा है ?” फरमाया, “हाँ आइशा ! मेरी ज़िन्दगी में सबसे ज्यादा सख्त दिन उक़्बा का दिन था ।” यह वह दिन था, जब आप मक्केवालों से मायूस होकर तायफ़वालों को खुदा का पैग़ाम पहुँचाने के लिए तशरीफ़ ले गए । वहाँ के सरदार अब्द या लैल ने गुण्डों को आपके पीछे लगा दिया और उन्होंने पैग़ामे रहमत के जवाब में आप पर पत्थर बरसाए । आप (सल्ल०) लहू-लुहान हो गए और बेहोश होकर गिर पड़े । फिर आप इतिहाई परेशान और ग़मगीन वहाँ से चले । जब कर्नुस्सआलिब पहुँचे तो ग़म कुछ हल्का हुआ । खुदा ने अज़ाब के फ़रिश्ते को आपकी खिदमत में भेजा । अज़ाब के फ़रिश्ते ने कहा—

“ऐ अल्लाह के रसूल ! अगर आप फरमाएँ तो मैं अबू कुबैस और जबले अहमर को आपस में टकरा दूँ और इन दोनों पहाड़ों के बीच में ये बदबख्त पिसकर अपने अंजाम को पहुँच जाएँ ।” रहमते आलम ने फरमाया, “नहीं, नहीं! मुझे छोड़ दो कि मैं अपनी क़ौम को खुदा के अज़ाब से डराता रहूँ, शायद कि खुदा इन्हीं के दिलों को हिदायत के लिए खोल दे या फिर उनकी औलाद में ऐसे लोग पैदा हों जो हिदायत को क़बूल कर लें ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

नबी (सल्ल०) मक्के में हैं और मक्के के लोगों में आपके खिलाफ़ साज़िशें हो रही हैं । कोई कहता है कि इन्हें शहर से निकाल दो । कोई कहता है कि इन्हें क़त्ल कर दो । उन्हीं दिनों मक्के को अचानक अकाल ने आ घेरा— ऐसा अकाल कि क़ुरैश के लोग पत्ते और छाल खाने पर मजबूर हो गए । बच्चे भूख से बिलबिलाते और बड़े उनकी इस हालत को देखकर तड़प-तड़प उठते ।

रहमते आलम (सल्ल०) उन लोगों को इस हिला देनेवाली हालत में देखकर बेकरार हो गए। आपके सच्चे साथी भी आपकी बेचैनी देखकर तड़प उठे। आपने अपने इन जानी दुश्मनों को, जिनके द्वारा पहुँचाए गए घाव अभी बिलकुल ताज़ा थे, अपनी दिली हमदर्दी का पैगाम भेजा और अबू सूफ़ियान और सफ़वान के पास पाँच सौ दीनार भेजकर कहलवाया कि ये दीनार इन अकाल के मारे हुए ग़रीबों में बाँट दिए जाएँ।

सच तो यह है कि गुमराह बन्दों के ग़म में घुलना, उनकी गुमराही और मुसीबत पर कुढ़ना, उनको खुदा के ग़ज़ब से बचाने के लिए तड़पना, उनकी तकलीफ़ देखकर बेकरार हो जाना उनकी हिदायत के लिए ग़ैर मामूली हरीस हो जाना— हक़ की दावत देनेवाले के यही वे जौहर हैं जिनके ज़रिए उसकी ज़िन्दगी बड़ी मनभावन और ग़ैर मामूली असर रखनेवाली बन जाती है।

6. क़ौम की बेग़रज़ खिदमत कीजिए और अपनी खिदमत का बदला बन्दों से तलब न कीजिए। जो कुछ कीजिए सिर्फ़ खुदा की खुशनूदी के लिए कीजिए और उसी से अपने अज़्र व सवाब की उम्मीद कीजिए। खुदा की रिज़ा और खुदा ही से अज़्र व सवाब की तलब ऐसी बात है जो आदमी की बात में असर पैदा करती है और आदमी को लगातार सरग़म रखती है। खुदा हमेशा से है और हमेशा रहेगा, न उसे नींद आती है, न ऊँघ। उसकी नज़र से बन्दे का कोई अमल छिपा हुआ नहीं है। वह अपने सच्चे बन्दों का अज़्र कभी बरबाद नहीं करता। वह मेहनत से कहीं ज़्यादा देता है और किसी को महरूम नहीं करता। पैग़म्बर बार-बार अपनी क़ौम से कहते थे—

“मैं तुमसे किसी अज़्र और बदले की माँग नहीं करता। मेरा अज़्र तो सारे ज़हानों के रब के ज़िम्मे है।”

7. इस्लाम की गहरी बसीरत (विवेक) हासिल कीजिए और यह यक़ीन रखिए कि खुदा के नज़दीक दीन तो बस इस्लाम ही है, उस दीने हक़ को छोड़कर बन्दगी का जो तरीक़ा भी अपनाया जाएगा, खुदा के यहाँ उसकी कोई क़द्र व क़ीमत न होगी। खुदा के यहाँ तो वही मक़बूल दीन है जो क़ुरआन में है और जिसकी अमली तफ़सीर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी मुबारक ज़िन्दगी से पेश फ़रमाई। क़ुरआन पाक में नबी (सल्ल०) से कहा गया है कि लोगों को साफ़-साफ़ बता दीजिए कि मैंने जो राह भी अपनाई है, सोच-समझकर पूरी बसीरत के साथ अपनाई है।

क़ुरआन में है—

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَى بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَنَ

اللَّهُ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ○ (يوسف: ١٠٨)

“(ऐ रसूल) आप उनसे साफ-साफ कह दीजिए कि मेरा रास्ता तो यह है। मैं और मेरे पीछे चलनेवाले पूरी बसीरत के साथ अल्लाह की ओर दावत दे रहे हैं और खुदा हर ऐब से पाक है और मेरा उनसे कोई वास्ता नहीं है, जो खुदा के साथ शिर्क कर रहे हैं।” (कुरआन, 12:108)

और खुदा का साफ-साफ इशारा है—

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۖ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ○ (آل عمران: ٨٥)

“और जो कोई इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को अपनाना चाहेगा उसका वह दीन हरगिज़ कबूल न किया जाएगा और आखिरत में वह नाकाम व नामुराद रहेगा।” (कुरआन, 3:85)

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ○

“खुदा के नज़दीक दीन तो बस इस्लाम ही है।”

8. अपने नस्बुलऐन (मिशन) के बड़प्पन और अहमियत को हमेशा निगाह में रखिए और खयाल रखिए कि वह बड़ा काम है जिसके लिए खुदा की ओर से हमेशा नबी भेजे जाते रहे हैं और यह यक़ीन रखिए कि खुदा ने आपको दीन की जो दौलत दे रखी है, यही दोनों दुनिया के बड़प्पन और सरबुलन्दी की पूँजी है, भला उसके मुकाबले में दुनिया की दौलत और शान व शौकत की क्या कद्र व कीमत है, जो कुछ दिनों की बहार है।

कुरआन में है—

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ○ (الحج: ٨٤)

“और हमने आपको सात दोहराई जानेवाली आयतें और बड़प्पनवाला कुरआन दे रखा है, तो आप इस ख़त्म हो जानेवाली पूँजी की ओर निगाह उठाकर भी न देखिए, जो हमने उनके अलग-अलग वर्गों को दे रखा है।” (कुरआन, 15:87)

और किताबवालों को खिताब करते हुए कहा गया है—

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ  
إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ○ (المائدة: ५८)

“ऐ अहले किताब ! तुम कुछ नहीं हो, जब तक तुम तौरात और  
इंजील और दूसरी किताबों को कायम न करो, जो तुम्हारे रब ने उतारी  
हैं ।” (कुरआन, 5:68)

9. दीन की सही समझ हासिल करने और दीन की हिकमतों को समझने की  
बराबर कोशिश करते रहिए । नबी अकरम (सल्ल०) का इरशाद है—

“खुदा जिस आदमी को भलाई से नवाज़ना चाहता है उसे अपने दीन  
की सही समझ और सूझ-बूझ अता फ़रमाता है ।” (बुखारी, मुस्लिम)

सच तो यह है कि दीन की सही समझ और दीन की हिकमत ही तमाम भलाईयों  
का स्रोत है और जो आदमी इस भलाई से महरूम है, वह दोनों दुनिया की सआदतों  
से महरूम है, न उसकी ज़िन्दगी में एतित्ताल (सन्तुलन) और एक-रंगी पैदा हो  
सकती है और न वह ज़िन्दगी के हर मैदान में दीन की सही नुमाइन्दगी कर सकता  
है ।

10. जो कुछ दुनिया के सामने पेश करें, उसे सबसे पहले अपनी ज़ात पर पेश  
कीजिए । दूसरों के बताने से पहले खुद को बताइए और जो दूसरों से चाहें, पहले  
खुद करके दिखाइए ।

दीने हक़ की दावत देनेवाले की खास बात यह होती है कि वह अपनी दावत  
का सच्चा नमूना होता है । जो कुछ वह कहता है, अपने अमल व किरदार को  
उसपर गवाह बनाता है । जिन हक़ीक़तों के क़बूल करने में वह दुनिया की भलाई  
देखता है, खुद वह उसका सबसे ज़्यादा लालची होता है । पैग़म्बर जब-जब क़ौम  
के सामने दावत देने उठे तो उन्होंने एलान किया, ‘अना अब्वलुल मुस्लिमीन’ ।  
(मैं खुद सबसे पहला मुसलमान (फ़रमाबरदार) हूँ ।)

आप ज़बान व क़लम से भी गवाही दीजिए कि हक़ वही है जो आप पेश कर  
रहे हैं और अपने निजी अमल, घरेलू ताल्लुकात, समाजी मामलों और सियासी  
और मुल्की सरगर्मियों से भी यह साबित कीजिए कि दीने हक़ को अपनाकर ही  
पाक-साफ़ किरदार वुजूद में आता है, मज़बूत ख़ानदान बनता है, अच्छा समाज  
ढलता है और तहज़ीब व तमददुन (सभ्यता एवं संस्कृति) की ऐसी व्यवस्था बनती  
है जिसकी बुनियाद न्याय व इनसाफ़ पर हो । जो लोग अपनी तरबियत व इस्लाह

से ग्राफिल होकर दूसरों की इस्लाह व तरबियत की बातें करते हैं, वे इतिहाई नादान हैं। वे अपना घर जलता हुआ देखकर बेफिक्र हैं और पानी की बाल्टियाँ लिए खोज रहे हैं कि किसी के घर आग लगी मिल जाए तो उसको बुझा दें। ऐसे लोग दुनिया में भी नाकाम हैं और आखिरत में भी नाकाम रहेंगे। यहाँ तो उनकी बेअमली उनकी नसीहत को बेवज़न और बेअसर करती रहेगी और आखिरत में ये इतिहाई दर्दनाक अज़ाब भुगतेंगे।

खुदा को यह बात बहुत नागवार है कि दूसरों को नसीहत करनेवाले खुद बेअमल रहें और वह कहें जो खुद न करते हों। (कुरआन, 61:3)

नबी (सल्ल०) ने ऐसे बेअमल दावत देनेवालों को इतिहाई हौलनाक अज़ाब से डराया है। आपने फ़रमाया—

“क्रियामत के दिन एक आदमी लाया जाएगा और आग में फेंक दिया जाएगा। उसकी अंतड़ियाँ उस आग में बाहर निकल पड़ेंगी। फिर वह आदमी उन अंतड़ियों को इस तरह लिए-लिए फिरेगा जिस तरह गधा अपनी चक्की में फिरता है। यह देखकर दूसरे जहन्मी लोग उसके पास जमा होंगे और पूछेंगे, “ऐ फ़लाँ ! यह तुम्हारा क्या हाल है ? क्या तुम दुनिया में हमें नेकियों पर उभारते न थे और बुराइयों से नहीं रोकते थे ? (ऐसे नेकी के काम करने के बावजूद तुम यहाँ कैसे आ गए ?)” वह आदमी कहेगा, “मैं तुम्हें नेकियों का सबक देता था लेकिन खुद नेकी के करीब न जाता था, तुम्हें तो बुराइयों से रोकता था लेकिन खुद बुराइयों पर अमल करता था। (मुस्लिम, बुखारी)

मेराज की रात के जो सबक भरे हुए दृश्य नबी (सल्ल०) ने लोगों के सामने रखे हैं उनका एक अहम मक़सद यह भी है कि कोताही करनेवालों को तंबीह हो और वे अपने हालात सुधारने की चिन्ता करें। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“मैंने मेराज की रात में कुछ लोगों को देखा कि उनके होंठ आग की कैंचियों से काटे जा रहे थे।” मैंने ज़िबरील से पूछा, “ये कौन लोग हैं ?” ज़िबरील ने कहा, “ये आपकी उम्मत के तक्ररीर करनेवाले (वक्ता) हैं जो लोगों को नेकी और तक्रवा पर उभारते थे और खुद को भूले हुए थे।” (मिशकात)

सहाबा किराम (रज़ि०) भी इस किस्म की कोताही करनेवालों और बेअमलों को सख्त तंबीह फ़रमाते थे। एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से एक आदमी ने कहा, “हज़रत ! मैं चाहता हूँ कि लोगों को नेकी का हुक्म

दूँ और बुराइयों से रोक्कूँ और दावत व तबलीग का काम करूँ ?” हज़रत ने फ़रमाया, “क्या तुम इस रुतबे को पहुँच चुके हो कि तबलीग करनेवाले मुबल्लिग बनो ।” उसने कहा, “हाँ, उम्मीद तो है ।” हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया, “अगर तुम्हें यह डर न हो कि कुरआन पाक की तीन आयतें तुम्हें रुसवा कर देंगी तो शौक़ से दीन की तबलीग का काम करो ।” वह आदमी बोला, “हज़रत वे कौन-सी तीन आयतें हैं ?” हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया—

पहली आयत यह है—

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ ○ (البقرة: २२)

“क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने को भूल जाते हो ।” (कुरआन, 2:44)

इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने कहा, “क्या इस आयत पर अच्छी तरह अमल कर लिया है ?” उसने कहा, “नहीं”, और दूसरी आयत यह है—

لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ○ (الغف: २)

“तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो ।” (कुरआन, 61:2)

तो तुमने इस आयत पर अच्छी तरह अमल कर लिया है ? उसने कहा, ‘नहीं’, और तीसरी आयत यह है—

مَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالَفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنهَاكُم عَنْهُ ○ (يوسف: ८८)

“(हज़रत शुऐब ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा) जिन बुरी बातों से मैं तुम्हें मना करता हूँ, उनको बढ़कर खुद करने लगूँ, मेरी यह चाहिश, नहीं (बल्कि मैं तो इन बातों से बहुत दूर रहूँगा ।)” (कुरआन, 11:88)

बताओ, तुमने इस आयत पर अच्छी तरह अमल कर लिया है ? वह आदमी बोला, “नहीं,” तो हज़रत ने फ़रमाया, “जाओ, पहले अपने को नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको ।”

11. नमाज़ को उसके पूरे आदाब व शर्तों और चाव के साथ अदा कीजिए । नफ़लों का भी एहतिमाम कीजिए । खुदा से गहरा ताल्लुक कायम किए बिना उसके दीन की दावत व तबलीग का काम मुमकिन नहीं और खुदा से ताल्लुक पैदा करने का यकीनी ज़रिया नमाज़ है, जो खुद खुदा ही ने अपने बन्दों को बताया है ।

नबी (सल्ल०) से खिताब करते हुए खुदा ने फरमाया—

يَا أَيُّهَا الْمَرْمِلُ قُمْ الْيَلَّ إِلَّا قَلِيلًا نِّصْفَهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا أَوْ زِدْ عَلَيْهِ

وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝ إِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝ (الزل)

“ऐ चादर में लिपटनेवाले ! रात में क्रियाम कीजिए, पर कुछ रात, आधी रात या उससे कुछ कम या कुछ ज्यादा और कुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़िए । हम जल्द आप पर एक भारी फरमान (की जिम्मेदारी) डालनेवाले हैं ।”

(कुरआन, 73:1-5)

भारी फरमान की जिम्मेदारी से मुराद देने हक की तबलीग है और यह एक सच्चाई है कि यह जिम्मेदारी दुनिया की तमाम जिम्मेदारियों में ज्यादा भारी और बोझिल है । इस बड़ी जिम्मेदारी का हक अदा करने के लिए जरूरी है कि आप नमाज से ताकत हासिल करें और खुदा से ताल्लुक मजबूत करें ।

12. कुरआन पाक से लगाव पैदा कीजिए और पाबन्दी के साथ उसकी तिलावत (अध्ययन) कीजिए । नमाज में भी इतिहाई तवज्जोह के साथ तिलावत कीजिए और नमाज के बाहर भी जौक व शौक के साथ ठहर-ठहरकर पढ़िए । दिल के झुकाव और तबीयत की हाजिरी के साथ जो तिलावत की जाती है, उससे कुरआन को समझने और सोच-विचार करने में भी मदद मिलती है और जौक व शौक में भी बढ़ोत्तरी होती है । कुरआन पाक हिदायत व नसीहत का अकेला स्रोत है । यह इसी लिए उतरा है कि उसकी आयतों पर गौर किया जाए और उसकी हिदायतों और नसीहतों से फायदा उठाया जाए, इसलिए इसमें खुद सोच-विचार की आदत डाली जाए और इस इरादे के साथ इसकी तिलावत कीजिए कि इसी की रहनुमाई में अपनी जिन्दगी भी बनानी है और इसी की हिदायतों के मुताबिक समाज को भी बदलना है । खुदा के दीन को वही लोग कायम कर सकते हैं जो सोच-विचार का केन्द्र और अपनी दिलचस्पियों की धुरी कुरआन पाक को बनाएँ । इससे बेनियाज होकर न तो खुद दीन पर कायम रहना मुमकिन है और न दीन कायम करने की कोशिश में हिस्सा लेना ही मुमकिन है । तिलावत करनेवालों को हिदायत की गई है—

كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبْرَكٌ لِّدَّبَرُوا أَيْتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ (س: २९)

“किताब जो हमने आपकी ओर भेजी है, शुरु से लेकर आखिर तक बरकत है, ताकि लोग उसकी आयतों में सोच-विचार करें और सही अक़ल



रखनेवाले उससे सबक हासिल करें ।”

(कुरआन, 38:29)

और हिदायत की गई—

“और कुरआन को ठहर-ठहरकर पढ़िए ।” (कुरआन, 73:4)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“दिलों पर जंग (मोर्चा) लग जाता है जिस तरह लोहे पर लग जाता है, जब उसपर पानी पड़ता है ।” पूछा गया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! फिर दिलों के जंग को दूर करनेवाली चीज़ क्या है ?” फरमाया, “दिल का जंग इस तरह दूर होता है कि आदमी मौत को ज़्यादा से ज़्यादा याद करे और दूसरे यह कि कुरआन की तिलावत करे ।” (मिशकात)

13. हर हाल में खुदा का शुक्र कीजिए और शुक्र का जज़्बा पैदा करने के लिए उन लोगों पर निगाह रखिए जो दुनिया की शान व शौकत और माल व दौलत में आपसे कमतर हों ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“उन लोगों की तरफ़ देखो जो तुमसे माल व दौलत और दुनिया के रुतबों में कम हैं (तो तुम्हारे अन्दर शुक्र का जज़्बा पैदा होगा) । और उन लोगों की ओर न देखो जो तुमसे माल व दौलत में और दुनिया के साज़ व सामान में बढ़े हुए हैं, ताकि जो नेमतें तुम्हें इस वक़्त मिली हुई हैं, वे तुम्हारी निगाह में हकीर न हों, (वरना खुदा की नाशुक्री का जज़्बा पैदा होगा) ।”

14. आराम-तलबी से बचिए और हक़ के ऐसे सिपाही बनिए जो हर वक़्त झूटी पर हो और किसी वक़्त भी हथियार न उतारिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मैं ऐश व आराम की ज़िन्दगी कैसे गुज़ारूँ जबकि इसराफ़ील सूँ मुँह में लिए कान लगाए और सिर झुकाए इतिज़ार कर रहे हैं कि कब सूँ फूँकने का हुक्म होता है ।”

और कुरआन पाक में ईमानवालों को खिताब करते हुए खुदा ने इरशाद फरमाया—

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ  
اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا  
تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَظْلَمُونَ (النّال १०)

“और तुम लोग, जहाँ तक तुम्हारा बस चले, ज्यादा से ज्यादा ताकत और तैयार बँधे रहनेवाले घोड़े उनके मुक्काबले के लिए जुटा रखो, ताकि इसके ज़रिए खुदा के दुश्मनों और खुद अपने दुश्मनों को और उन दूसरे दीन के दुश्मनों को डरा दो जिन्हें तुम नहीं जानते, खुदा जानता है। खुदा की राह में तुम जो कुछ भी खर्च करोगे, उसका पूरा-पूरा बदला लौटाया जाएगा और तुम्हारा हक देने में ज़रा भी कमी न की जाएगी।

(कुरआन, 8:60)

15. दीन के लिए हर कुरबानी देने और ज़रूरत पड़ने पर अपने प्यारे वतन से भी हिजरत करने के लिए खुद को तैयार रखिए और खुद को बराबर तौलते रहिए कि किस हद तक आप में यह जज़्बा ताकत पकड़ रहा है। कुरआन में हजरत इबराहीम (अलै०) की हिजरत की घटना का जिक्र करते हुए हिजरत पर उभारने और कुरबानियों के लिए तैयार रहने के लिए इस तरह कहा गया है—

وَإِذْ كُفِّيَ الْكِتَابَ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ  
لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۚ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي  
مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۚ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ  
الشَّيْطَانَ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ۚ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ  
يَمْسَكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۚ قَالَ أَرَأَيْتَ  
أَنْتَ عَنْ الْهَيْئِ يَا إِبْرَاهِيمُ ۚ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ۚ  
قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۚ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۚ وَأَعِزَّنِي لَكُمْ  
وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ ۚ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ أَنْ لَا أَكُونَ بِدُعَاءِ  
رَبِّي شَقِيًّا ۚ (مریم: 31-38)

“और इस किताब में इबराहीम के क्रिस्से से नसीहत हासिल कीजिए।  
बेशक वह एक सच्चे नबी थे। (लोगों को उसका जिक्र सुनाइए) जब

उन्होंने अपने बाप से कहा, अब्बा जान ! आप उन चीजों की इबादत क्यों कर रहे हैं जो न सुनती हैं, न देखती हैं और न आपके किसी काम आ सकती हैं ? अब्बा जान ! मेरे पास वह इल्म (ज्ञान) आया है जो आपके पास नहीं आया है, आप मेरे कहे पर चलें, मैं आपको सीधी राह पर चलाऊँगा । अब्बा जान ! आप शैतान की बन्दगी न कीजिए । शैतान तो रहमान का बड़ा नाफरमान है । अब्बा जान ! मुझे डर है कि (आप इसी रवैए पर अगर रहे तो) रहमान का अज़ाब आपको आ पकड़े और आप शैतान के साथी बनकर रह जाएँ ।

बाप ने कहा, “इबराहीम ! क्या तुम मेरे माबूदों से फिर गए हो ? अगर तुम बाज़ न आए तो मैं तुम्हें पत्थर मार-मारकर हलाक कर दूँगा और जाओ, हमेशा के लिए मुझ से दूर हो जाओ ।” इबराहीम ने कहा, “आपको मेरा सलाम है । मैं अपने पालनहार से दुआ करूँगा कि वह आपकी बख्शिश फ़रमा दे । बेशक मेरा रब मुझपर बड़ा ही मेहरबान है । मैं आप लोगों से किनारा करता हूँ और उन हस्तियों से भी जिनको आप खुदा को छोड़कर पुकारा करते हैं । मैं तो अपने रब ही को पुकारूँगा । मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकारकर हरगिज़ नामुराद (असफल) नहीं होऊँगा ।”

(क़ुरआन, 19:41-48)

16. खुदा की राह में निकलने की तड़प, जान व माल से जिहाद करने का जज़्बा और उसकी राह में शहादत पाने की पाकीज़ा आरज़ू पैदा कीजिए । हकीकत तो यह है कि जिहाद ईमान का मेयार है और जिस दिल में इसकी आरज़ू न हो, वह ईमान व हिदायत से महरूम एक बेरौनक़ और वीरान खंडहर है । जिहाद के मैदान में पहुँचने की तौफ़ीक़ और खुदा की राह में जान व माल क़ुरबान कर देने का मौक़ा पाना वाक़ई बहुत बड़ी सआदत है, लेकिन अगर ऐसे हालात न हों कि आप उसका मौक़ा पा सकें या साधन न हों कि आप जिहाद के मैदान में पहुँचकर ईमान के जौहर दिखा सकें, तब भी आपकी गिनती खुदा के यहाँ उन मुजाहिदों में हो सकती है जो खुदा की राह में शहीद हुए या गाज़ी बनकर लौटे, बशर्ते कि आपके दिल में खुदा की राह में निकलने की तड़प हो, दीन की राह में क़ुरबान होने की भावना हो और शहादत की आरज़ू हो, इसलिए कि खुदा की नज़र मन की उन भावनाओं पर होती है जो मुजाहिदाना कारनामों के लिए आदमी को बेचैन करती हैं । तबूक की लड़ाई से नबी (सल्ल०) वापस हो रहे थे तो राह में आपने अपने साथियों को खिताब करते हुए फ़रमाया था—

“मदीना में कुछ लोग ऐसे हैं कि तुमने जो कूच भी किया और जो

घाटी भी तय की, वह बराबर तुम्हारे साथ रहे ।” नबी (सल्ल०) के साथियों ने ताज्जुब से पूछा, “क्या मदीना में रहते हुए ?” फरमाया, “हाँ, मदीना में रहते हुए, क्योंकि उनको मजबूरी ने रोक लिया था । वे खुद रुकनेवाले न थे ।”

कुरआन पाक में भी खुदा ने ऐसे लोगों की तारीफ़ फरमाई है जो जज़्बा रखने के बावजूद जिहाद की शिरकत से महरूम रहे और अपनी इस महरूमी पर उनकी आँखें आँसू बहाती रहीं—

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا اتَّوَكَّلُوا لِيْتَهِمَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدَ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ○ (التوبة: १२)

“और न उन (बेसरो सामान) लोगों पर इलज़ाम है जो खुद आपके पास आए कि आप उनके लिए सवारियाँ जुटा दें और जब आपने कहा कि मैं तुम्हारे लिए सवारियों का इन्तिज़ाम नहीं कर सकता तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आँखों से आँसू जारी थे, इस ग़म में कि उनके पास जिहाद में शरीक होने के लिए खर्च करने को कुछ मौजूद नहीं है ।” (कुरआन, 9:92)

नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“जो आदमी खुदा की राह में जिहाद किए बग़ैर मर गया और उसके दिल में उसकी आरजू भी नहीं थी तो वह निफ़ाक़ की एक हालत में मरा ।” (मुस्लिम)

हकीक़त यह है कि खुदा की राह में लड़ने और जान व माल की कुरबानी पेश करने की भावना से जो सीना खाली है, वह मोमिन का सीना नहीं हो सकता ।

## 37. दावत व तबलीग के आदाब

1. दावत व तबलीग की हिकमत और सलीके का पूरा-पूरा खयाल रखिए और ऐसा तरीका अपनाइए जो हर लिहाज से मुनासिब, बावकार मकसद के मुताबिक और सामने के आदमी में शौक और बलबला पैदा करनेवाला हो ।

कुरआन पाक का इरशाद है—

أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ (النحل)

“अपने रब के रास्ते की ओर दावत दीजिए, हिकमत के साथ और बेहतर नसीहत के साथ और बहस कीजिए तो ऐसे तरीके पर जो बहुत भला हो ।”  
(कुरआन, 16:125)

कुरआन की इस आयत से तीन उसूली हिदायतें मिलती हैं—

- (i) दावत हिकमत के साथ दी जाए,
- (ii) नसीहत और समझाने-बुझाने का काम अच्छे अन्दाज में किया जाए, और
- (iii) बहस भले तरीके पर की जाए ।

हिकमत के साथ दावत देने का मतलब यह है कि खुद आपको अपनी दावत की पाकी और बड़प्पन का पूरा-पूरा एहसास हो और आप इस क़ीमती दौलत को नादानी के साथ यूँ ही जा-बेजा न बिखेरें बल्कि आप मौक़े को भी पूरा-पूरा ध्यान में रखिए और उसका भी जिसे खिताब किया जा रहा हो । हर तबके, हर ग़िरोह और हर आदमी से उसकी सोच की बुलन्दी, क़ाबिलियत, सलाहियत और समाजी दर्जे के मुताबिक़ बात कीजिए और उन अटल मूल्यों को आपसी समझाने-बुझाने और दावत देने की बुनियाद बनाइए जिनमें आपस में एक राय हो और जो एक-दूसरे के लिए करीब होने और अच्छी बात अपना लेने का ज़रिया बनें ।

उम्दा नसीहत करने का मतलब यह है कि आप बड़े खुलूस और दर्द के साथ नेक भावनाओं को उभारिए तकि जिसे खिताब किया जा रहा है, उसमें शौक और चाव पैदा हो जाए और दीन से उसका ताल्लुक सिर्फ़ ज़ेहनी इतमीनान की हद तक न रहे, बल्कि दीन उसके दिल की आवाज़, रूह का खाना और ज़ज्बात की तस्कीन बन जाए ।

बहसों में अच्छा तरीका अपनाने का मतलब यह है कि आपकी बात सही हो, दिल की गहराईयों से निकली हो और खुलूस से भरी हुई हो और अन्दाज़ ऐसा मनभावन और सादा हो कि जिसे खिताब किया जा रहा हो उसमें ज़िद, नफ़रत, हठधर्मी, तास्सुब और जाहिलियत के जज़्बात न उभरें, बल्कि वह वाकई कुछ सोचने-समझने पर मजबूर हो और उसको हक़ की तलब पैदा हो और जहाँ ये बातें पैदा होती नज़र न आएँ, आप अपनी ज़बान बन्द कर लीजिए और उस मज्लिस से उठकर चले आइए ।

2. हर हाल में पूरे दीन की दावत दीजिए और अपनी समझ से इसमें काट-छाँट न कीजिए । इस्लाम की दावत देनेवाले को यह हक़ हरगिज़ नहीं है कि वह अपनी मरज़ी से उसके कुछ हिस्से पेश करे और कुछ छिपाए रखे ।

खुदा का इरशाद है—

وَإِذَا تُلِيٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ ۖ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنِّتْ بِقُرْآنٍ  
غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِيَّ أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِ نَفْسِي ۚ إِنِ  
اتَّبَعْتُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝  
قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ  
عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا  
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ۝ (يونس १-१८)

“और जब उनको हमारी खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जो लोग हमारी मुलाकात का यकीन नहीं रखते, वे कहते हैं कि इस कुरआन के बजाए दूसरा कुरआन लाइए या इसी में कुछ तबदीली कर दीजिए । आप फ़रमा दीजिए कि मैं अपनी ओर से हरगिज़ उसमें कुछ कमी-बेशी नहीं कर सकता । मैं तो खुद उसी वह्य की पैरवी करनेवाला हूँ जो मेरी ओर भेजी जाती है । अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक बड़े हौलनाक दिन के अज़ाब का डर है, और कहिए कि अगर खुदा ने यह न चाहा होता कि मैं यह कुरआन तुम्हें सुनाऊँ, तो मैं कभी न सुना सकता और न वही तुम्हें इसकी जानकारी देता । फिर

उससे बंदकर जालिम और कौन होगा जो एक झूठी बात गढ़कर खुदा से जोड़ दे या खुदा की (वाकई) आयतों को झूठा करार दे दे, यक्नीनन मुजरिम लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते ।” (कुरआन, 10:15-17)

हालात कैसे ही नासाजगार (प्रतिकूल) हों, दावत देनेवाले का काम बहरहाल यही है कि वह खुदा के दीन को अपनी असल और मुकम्मल हालत में पेश करे और खुदा के दीन में कमी-बेशी और हालात के तक्राजों के तहत अपनी समझ से उसमें तबदीली बहुत बड़ा जुल्म है और ऐसे लोगों की दुनिया भी तबाह होती है और आखिरत भी । इस्लाम, उस खुदा का भेजा हुआ दीन है, जिसका ज्ञान (इल्म) पूरी कायनात का घेरा किए हुए है, जो शुरू से आखिर तक का सच्चा ज्ञान रखता है और जिसकी सोच ग़लती से बिल्कुल पाक है, जो इनसानी ज़िन्दगी की शुरूआत को भी जानता है और अंजाम को भी और जिसकी मंशा के तहत ही इनसानी जानकारियों में हर दिन अचम्भे में डाल देनेवाला फैलाव पैदा हो रहा है और इनसानी ज़िन्दगी में ग़ैर-मामूली तरक्कियाँ होती जा रही हैं,—..... किसी और के लिए तो भला किसी कमी-बेशी की क्या गुंजाइश होगी जबकि खुद पहले दावत देनेवाले का यह रुतबा बताया गया है कि वह एक आदर्श फ़रमाँबरदार की तरह उस दीन की पैरवी करे और नाफ़रमानी के खयाल से काँपता रहे ।

3. दीन को इस हिकमत के साथ फ़ितरी अंदाज़ में पेश कीजिए कि वह ग़ैर फ़ितरी बोझ महसूस न हो और लोग बिदकने और परेशान होने के बजाए उसको कबूल करने में सुकून और राहत महसूस करें और आपकी नमी, मिठास और दावत के हिकमत भरे तरीके से लोग दीन में ग़ैर-मामूली खिंचाव महसूस करें ।

हज़रत मुआविया बिन हक़म (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार मैं नबी (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ रहा था कि एक आदमी को छींक आई । मैंने नमाज़ ही में यह मुकल्लाह कहकर छींक का जवाब दे दिया । लोग मुझे घूरने लगे । मैंने कहा, “खुदा तुम्हारा भला करे, मुझे क्यों घूर रहे हो ?” तो लोगों ने मुझे इशारा किया, मैं खामोश हो गया । जब नबी (सल्ल०) नमाज़ से फ़ारिग हुए, मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान, मैंने ऐसा बेहतरीन तालीम व तरबियत करनेवाला न उनसे पहले कभी देखा और न उनके बाद । आपने ने न तो मुझे डाँटा, न मारा और न ही बुरा-भला कहा । सिर्फ़ यह फ़रमाया—

“देखो, यह नमाज़ है । नमाज़ में बातचीत करना मुनासिब नहीं ।

नमाज़ तो नाम है खुदा की पाकी और बरतरी बयान करने का, उसकी बड़ाई करने और कुरआन पढ़ने का ।”

4. अपने लेखों, भाषणों और दावती बातों में हमेशा इस दरमियानी बात का

एहतिमाम रखिए कि सुनने-जालों पर उम्मीद की दशा भी पाई जाए और डर की भी । न तो डर पर इतना ज्यादा जोर दीजिए कि वे खुदा की रहमत से मायूस होने लगे और अपनी इस्लाह और निजात उन्हें न सिर्फ मुश्किल बल्कि नामुमकिन नजर आने लगे और न खुदा की रहमत और बख्शिाश का ऐसा विचार पेश कीजिए कि वह बिलकुल ही बेबाक और गैर-जिम्मेदार बन जाएँ और खुदा की अपार रहमत व बख्शिाश का सहारा लेकर नाफरमानियों पर कमर बाँध लें ।

हजरत अली (रजि०) फरमाते हैं—

“बेहतरीन आलिम वह है जो लोगों को (ऐसे अन्दाज़ से खुदा की तरफ दावत देता है कि) खुदा से मायूस नहीं करता और न ही खुदा की नाफरमानी के लिए उन्हें रुख्सतें देता है और न खुदा के अज़ाब से उन्हें बेखौफ बना देता है ।”

5. दावती कोशिशों को हमेशा और लगातार जारी रखिए और जो प्रोग्राम बनाएँ, उसे बराबर और जिम्मेदारी के साथ चलाते रहने की कोशिश कीजिए । प्रोग्राम को अधूरा छोड़ने और नए-नए प्रोग्राम बनाने की आदत से बचिए । थोड़ा काम कीजिए, लेकिन लगातार ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“बेहतरीन अमल वह है जो लगातार किया जाता रहे, चाहे वह कितना ही छोटा हो ।”

6. दावत व तबलीग की राह में पेश आनेवाली कठिनाइयों, तकलीफों और आजमाइशों का खुले दिल से स्वागत कीजिए और सब्र व इस्तिक्ामत (दृढ़ता) दिखाइए ।

कुरआन में है—

وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ ۖ (الن: १८)

“और नेकी का हुक्म दो और बुराई से रोको और इस राह में जो मुसीबतें भी आएँ, उनको जमकर बरदाश्त करते रहो ।” (कुरआन, 31:17)

राहे हक में मुसीबतों का आना ज़रूरी है । आजमाइश की मंज़िलों से गुज़र कर ही ईमान में ताकत आती है और चरित्र मज़बूत हो जाता है । यही वजह है कि खुदा अपने उन बन्दों को ज़रूर आजमाता है जो ईमान का दावा करते हैं और जो अपने दीन व ईमान में जितना ज्यादा पक्का होता है उसकी आजमाइश भी उसी हिसाब से सख्त होती है ।



खुदा का इरशाद है—

وَلَبِلُوا نَكْمُ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ  
وَالْثَّمَرَاتِ ۚ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا  
لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاغِبُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ  
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ (البقرة: 155-157)

“और हम जरूर तुम्हें डर, खतरा, उपवास, जान व माल के नुकसान और आमदनियों के घाटे में डालकर तुम्हारी आजमाइश करेंगे। इन हालात में जो लोग सब्र करें और जब कोई मुसीबत पड़े तो कहें, ‘हम खुदा ही के हैं और खुदा ही की ओर हमें पलटकर जाना है,’ उन्हें खुशखबरी दे दीजिए कि उनपर उनके रब की ओर से नवाज़िशें होंगी, उसकी रहमत उनपर साया करेगी और ऐसे ही लोग हिदायत पर हैं।”

(कुरआन, 2:155-157)

हजरत सअद (रजि०) ने प्यारे नबी (सल्ल०) से पूछा, “सबसे ज्यादा सख्त आजमाइश किस आदमी की होती है ?” आपने फरमाया—

“नबियों की, फिर जो दीन व ईमान में उनसे ज्यादा करीब हो और फिर जो उनसे करीब हो। आदमी की आजमाइश उसके दीन के एतिबार से होती है, अतः जो आदमी अपने दीन में पक्का होता है, उसकी आजमाइश सख्त होती है और जो दीन में कमजोर होता है, उसकी आजमाइश हल्की होती है और यह आजमाइश बराबर होती रहती है, यहाँ तक कि वह ज़मीन पर इस हाल में चलता है कि उसपर गुनाह का कोई असर नहीं रह जाता।” (मिशकात)

और नबी (सल्ल०) ने अपना हाल बयान करते हुए फरमाया—

“मुझे खुदा की राह में इतना-इतना सताया गया कि कभी कोई इनसान इतना नहीं सताया गया और मुझे खुदा की राह में इतना-इतना डराया गया कि कभी कोई आदमी इतना नहीं डराया गया और हम पर तीस दिन और रात ऐसे गुज़रे हैं कि मेरे और बिलाल के खाने के लिए कोई ऐसी चीज़ न थी, जिसे कोई जानदार खा सके, सिवाए उस थोड़े से सामान के जो बिलाल की बगल में था।” (तिरमिज़ी)

और नबी (सल्ल०) ने इश्राद फरमाया—

“जो आदमी सब्र करने की कोशिश करेगा खुदा उसको सब्र बख्शेगा और सब्र से ज्यादा बेहतर और बहुत-सी भलाइयों को समेटनेवाली बख्शिश और कोई नहीं ।” (बुखारी, मुस्लिम)

असल में आजमाइशें तहरीक (आन्दोलन) को ताकत पहुँचाने और आगे बढ़ाने का ज़रूरी साधन हैं । आजमाइशों की मंजिलों से गुज़रे बिना कोई तहरीक कभी कामयाब नहीं हो सकती, खास तौर से वह तहरीक जो इनसानी दुनिया में हर पहलू पर छानेवाले इनकिलाब की दावत देती हो और पूरी इनसानी ज़िन्दगी को नई बुनियादों पर तामीर करने का मंसूबा रखती हो ।

जिस ज़माने में मक्का के संगदिल लोग नबी (सल्ल०) और नबी (सल्ल०) के साथियों पर बेपनाह जुल्म व सितम तोड़ रहे थे, उन्हीं दिनों का एक वाकिआ हज़रत खब्बाब बिन अरत (रज़ि०) बयान फरमाते हैं—

“नबी (सल्ल०) अल्लाह के घर के साए में चादर को सिर के नीचे रखे आराम फरमा रहे थे । हम आपके पास शिकायत लेकर पहुँचे । ऐ अल्लाह के रसूल ! आप हमारे लिए खुदा से मदद तलब नहीं फरमाते, आप इस जुल्म के ख़ात्मे की दुआ नहीं करते (आखिर यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा और कब इन मुसीबतों का दौर ख़त्म होगा ?) ।” नबी (सल्ल०) ने यह सुनकर फरमाया, “तुमसे पहले ऐसे लोग गुज़रे हैं कि उनमें से कुछ के लिए ग़दा खोदा जाता, फिर उसको उस गढ़े में खड़ा कर दिया जाता, फिर आरा लाया जाता और उसके जिस्म को चीरा जाता, यहाँ तक कि उसके जिस्म के दो टुकड़े कर दिए जाते, फिर भी वह अपने दीन से न फिरता और उसके जिस्म में लोहे के कंधे चुभाए जाते जो गोशत से गुज़रकर हड्डियों और पट्टों तक पहुँच जाते, पर बन्दा हक़ से न फिरता । क्रसम है खुदा की, यह दीन ग़ालिब होकर रहेगा, यहाँ तक कि सवार सनआ (यमन की राजधानी) से हज़र-मौत तक का सफ़र करेगा और रास्ते में खुदा के सिवाय उसको किसी का डर न होगा, अलबत्ता घरवाहों को सिर्फ़ भेड़ियों का डर रहेगा कि कहीं बकरी उठा न ले जाएँ, लेकिन अफ़सोस कि तुम जल्दी मचा रहे हो ।” (बुखारी)

हज़रत मुआविया (रज़ि०) फरमाते हैं—

“मैंने नबी (सल्ल०) को यह इश्राद फरमाते सुना है कि मेरी उम्मत में बराबर एक गिरोह ऐसा मौजूद रहेगा जो खुदा के दीन की हिफ़ाज़त

करता रहेगा । जो लोग उनका साथ न देंगे और जो लोग उनकी मुखालफत करेंगे वे उनको तबाह न कर सकेंगे, यहाँ तक कि खुदा का फ़ैसला आ जाए और ये दीन की हिफ़ाज़त करनेवाले लोग अपनी उसी हालत पर कायम रहेंगे ।” (बुखारी, मुस्लिम)

7. बेजा रवादारी, ढीलापन और उसूलों की कुरबानी देने से सख्ती से परहेज़ कीजिए । कुरआन में ईमानवालों की तारीफ़ में कहा गया है—

أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ

“वे काफ़िरों (इनकार करनेवालों) पर सख्त होते हैं ।” (कुरआन, 48:29)

यानी वे अपने दीन और उसूल के मामले में बड़े सख्त होते हैं । वे किसी हाल में भी अपने उसूलों के मामलों में कोई समझौता नहीं करते, न ढीलापन दिखाते हैं । वे सब कुछ सहन कर सकते हैं, लेकिन दीन व उसूल की कुरबानी नहीं दे सकते । मुसलमानों को खुदा ने नबी (सल्ल०) के वास्ते से हिदायत दी है—

فَلِذَلِكَ فَادُعْ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ هُمْ (الشورى: 15)

“अतः आप इसी दीन की ओर दावत दीजिए और जिस तरह आप को हुक्म दिया गया है, उसी पर मज़बूती के साथ जमे रहिए और उन लोगों के चाहने पर न चलिए ।” (कुरआन, 42:15)

दीन के मामले में ढीलापन, बेजा रवादारी और असत्य से समझौता बेहद खतरनाक कमज़ोरी है जो दीन व ईमान को तबाह करके रख देती है ।

नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“जब बनी इसराईल खुदा की नाफ़रमानियों के काम करने लगे तो उनके उलेमा ने उनको रोका, लेकिन वे नहीं रुके (तो उनके उलेमा उनका बाइकाट करने के बजाए) उनकी मज्लिसों में बैठने लगे और उनके साथ खाने-पीने लगे । जब ऐसा हुआ तो खुदा ने उन सबके दिल एक जैसे कर दिए और फिर हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा बिन मरयम की ज़बान से खुदा ने उनपर लानत की, यह इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की राह अपनाई और उसी में बढ़ते चले गए ।”

इस हदीस को रिवायत करनेवाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद हैं । वे फ़रमाते हैं,—

“नबी (सल्ल०) टेक लगाए बैठे थे, फिर सीधे बैठ गए और फ़रमाया,

“नहीं ! उस ज्ञात की कसम, जिसके कब्जे में मेरी जान है, तुम जरूर लोगों को नेकी का हुक्म देते रहोगे और बुराई से रोकते रहोगे और ज़ालिम का हाथ पकड़ोगे और ज़ालिम को हक के आगे झुकाओगे । अगर तुम लोग ऐसा न करोगे तो तुम सबके दिल भी एक ही तरह के हो जाएंगे और फिर खुदा तुम्हें अपनी रहमत और हिदायत से दूर फेंक देगा, जिस तरह बनी इसराईल को उसने महरूम कर दिया ।”

8. अपने बच्चों को इस्लाह व तरबियत और उनको दीन कायम करने की जिम्मेदारी निभाने पर तैयार करना आपका पहला कर्तव्य है और आपकी सरगर्मियों का फ़ितरी मैदान भी । इस मैदान को छोड़कर अपनी तबलीगी और इस्लाही कोशिशों के लिए सिर्फ़ बाहर के मैदान तलाश करना हिकमत के खिलाफ़ भी है और ग़ैर फ़ितरी अमल भी । यह बहुत बड़ी कोताही और अपनी जिम्मेदारियों से भागना भी है । इसकी मिसाल ऐसी है कि आप अकाल के ज़माने में अपने घरवालों को भूख-प्यास से निढाल और मरने के करीब छोड़कर बाहर के जरूरतमंदों को तलाश करके अनाज बाँटने में फ़ैयाज़ी दिखाएँ, गोया न तो आपको भूख-प्यास और कुर्बत व मुहब्बत का एहसास है और न अनाज के बाँटने की हिकमत ही को आपका मन जानता है । कुरआन में मोमिनों को हिदायत दी गई है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا ۖ

“ऐ ईमानवालो ! बचाओ अपने को और घरवालों को जहन्नम की आग से ।” (कुरआन, 66:6)

और नबी (सल्ल०) ने इन शब्दों में इसे बयान किया—

“तुममें से हर एक निगराँ और जिम्मेदार है और तुममें से हर एक से उन लोगों के बारे में पूछ-गछ की जाएगी, जो तुम्हारी निगरानी में होंगे । हाकिम निगराँ है और उससे उसकी जनता के बारे में पूछा जाएगा, और शौहर अपने घर का निगराँ है, और औरत अपने शौहर के घर और उसके बच्चों की निगराँ है, तो तुममें से हर एक निगराँ और जिम्मेदार है और तुममें से हर एक से उन लोगों के बारे में पूछ-गछ होगी, जो उसकी निगरानी में दिए गए हैं ।” (बुखारी, मुस्लिम)

9. अपने पड़ोसियों और मुहल्लेवालों की इस्लाह व तरबियत की भी फ़िज़्र कीजिए और उसको भी अपनी जिम्मेदारी समझिए ।

नबी (सल्ल०) ने एक दिन ख़ुतबा दिया और उसमें कुछ मुसलमानों की तारीफ़

फरमाई, फिर फरमाया—

“ऐसा क्यों है कि कुछ लोग अपने पड़ोसियों में दीन की समझ-बूझ पैदा नहीं करते और उन्हें दीन नहीं सिखाते और उन्हें दीन न जानने के सबक भरे नतीजे नहीं बताते और उन्हें बुरे कामों से नहीं रोकते ? और ऐसा क्यों है कि कुछ लोग अपने पड़ोसियों से दीन का इल्म हासिल नहीं करते और दीन की समझ-बूझ पैदा नहीं करते और दीन से जाहिल रहने के सबक भरे नतीजे मालूम नहीं करते ? खुदा की कसम ! लोग अपने पड़ोसियों को जरूर ही दीन की तालीम दें, उनके अन्दर दीन की समझ पैदा करें, उन्हें नसीहत करें, उनको अच्छी बातें बताएँ और उनको बुरी बातों से रोकें । साथ ही लोगों को चाहिए कि वे जरूर ही अच्छे पड़ोसियों से दीन सीखें, दीन की समझ पैदा करें और उनकी नसीहतों को कबूल करें, वरना मैं उन्हें बहुत जल्द सज़ा दूँगा ।” (फिर आप मिम्बर से उतर आए और तक़रीर ख़त्म फ़रमा दी ।)

सुनेवालों में से कुछ लोगों ने दूसरों से पूछा— “ये कौन लोग थे जिनके खिलाफ़ नबी (सल्ल०) ने तक़रीर फ़रमाई ?” दूसरे लोगों ने बताया कि आपका रुख़ अशूर क़बीले के लोगों की ओर था । ये लोग दीन का इल्म रखनेवाले लोग हैं और उनके पड़ोस में चश्मों पर रहनेवाले देहाती उजड़ड़ लोग हैं । जब इस तक़रीर की ख़बर अशूरी लोगों को पहुँची तो वे नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा, “ऐ खुदा के रसूल ! आपने अपने खुतबे में कुछ लोगों की तारीफ़ फ़रमाई और हमारे ऊपर गुस्सा फ़रमाया, तो फ़रमाइए हम से क्या क़सूर हुआ ?” आपने फ़रमाया, “लोगों का फ़र्ज़ है कि वह अपने पड़ोसियों को दीन की तालीम दें, उन्हें वाज़ व नसीहत करें, अच्छी बातें बताएँ और बुरी बातों से रोकें और लोगों का यह भी फ़र्ज़ है कि वे अपने पड़ोसियों से दीन का इल्म हासिल करें, उनकी नसीहतों को क़बूल करें और अपने अन्दर दीन की समझ पैदा करें, वरना मैं उनको बहुत जल्द सज़ा दूँगा ।” यह सुनकर अशूर क़बीले के लोगों ने कहा, “ऐ खुदा के रसूल ! क्या हम दूसरे लोगों में समझ पैदा करें ?” आपने फ़रमाया, “जी हाँ ! यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है ।” तो ये लोग बोले, “हुज़ूर ! हमें साल भर की मोहलत दीजिए ।” चुनौचे हुज़ूर (सल्ल०) ने उनको एक साल की मोहलत दी जिसमें वे अपने पड़ोसियों को दीन सिखाएँ और दीनी समझ पैदा करें । इसके बाद नबी (सल्ल०) ने ये आयतें तिलावत फ़रमाई—

لَعْنُ الدِّينِ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ

مَرِيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ  
فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ (المائدة)

“बनी इसराईल के कुफ़र करनेवालों पर लानत की गई दाऊद की जबान से और ईसा बिन मरयम की जबान से और यह लानत इसलिए की गई कि उन्होंने नाफ़रमानी की राह अपनाई और बराबर खुदा के हुक्मों को तोड़ते चले गए । ये आपस में एक दूसरे को बुरी बातों के करने से नहीं रोकते थे । बेशक उनकी यह हरकत इतिहाई बुरी थी ।” (कुरआन, 5:78)

10. जिन लोगों के बीच आप दावत व तबलीग की भारी ज़िम्मेदारी निभा रहे हों उनके मज़हबी अक़ीदों और जज़्बों का मान-सम्मान कीजिए । न उनके बुजुर्गों और पेशवाओं को बुरे नाम से याद कीजिए, न उनके विचारों पर हमले कीजिए और न उनके मज़हबी नज़रियों को हक़ीर समझिए । सीधे तरीक़े से हिक्मत के साथ अपनी दावत पेश कीजिए और आलोचना में भी सामने के लोगों को भड़काने के बजाए दिल की गहराइयों से उनके दिल में अपनी बात उतारने की कोशिश कीजिए, इसलिए कि जज़्बाती तनक़ीद (भावनात्मक आलोचना) और तौहीन भरी बातों से सामनेवाले आदमी में किसी अच्छी तबदीली की उम्मीद नहीं होती अलबत्ता यह डर रहता है कि बेजा तास्सुब और तंगनज़री की वजह से वह खुदा और दीन की शान में गुस्ताख़ी करने लगे और दीन के करीब आने के बजाए और ज़्यादा दीन से दूर हो जाए ।

कुरआन की हिदायत है—

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ

“(ऐ ईमानवालो !) ये लोग खुदा के सिवा जिनको पुकारते हैं उनको गालियाँ न दो, ऐसा न हो कि ये शिर्क से आगे बढ़कर जिहालत की बुनियाद पर खुदा को गालियाँ देने लगें ।” (कुरआन, 6:108)

11. अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाला बनकर दावत की ज़िम्मेदारी पूरी कीजिए । यानी सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ दावत देनेवाले बनिए । खुदा के बन्दों को खुदा के सिवा किसी और चीज़ की ओर हरगिज़ न बुलाइए, न वतन की ओर बुलाइए, न क़ौम और नस्ल की ओर, न किसी ज़बान की ओर दावत दीजिए और न किसी जमाअत की ओर । ईमानवाले का लक्ष्य सिर्फ़ खुदा की रिज़ा है, इसी लक्ष्य की ओर दावत दीजिए और यह यक़ीन पैदा करने की कोशिश कीजिए कि बन्दे का

काम सिर्फ यह है कि वह अपने पैदा करनेवाले और मालिक की बन्दगी करे— अपनी निजी ज़िन्दगी में भी और घरेलू ज़िन्दगी में भी, समाजी ज़िन्दगी में भी और मुल्की मामलों में भी— गरज़ पूरी ज़िन्दगी में अपने मालिक और परवरदिगार के कहने पर चले और उसके क़ानून की खुलूस के साथ पैरवी करे, उसके सिवा कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसको मुसलमान अपना लक्ष्य करार दे और उसकी तरफ़ लोगों को दावत दे। मोमिन जब भी खुदा की हिदायत से मुँह मोड़कर खुदा की रिज़ा के सिवा किसी और चीज़ को अपना लक्ष्य करार देगा, दोनों दुनिया में नाकाम व नामुराद होगा।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

“उस आदमी से अच्छी बात और किसकी होगी जिसने अल्लाह की ओर दावत दी और नेक अमल किया और कहा कि मैं खुदा का फ़रमाँबरदार और मुस्लिम हूँ।”

(कुरआन, 41:33)

### 38. जमाअत बनाने के आदाब

1. दावत व तबलीग की ज़िम्मेदारी निभाने के लिए मजबूत संगठन बनाइए और दीन कायम करने के लिए मिल-जुलकर कोशिश कीजिए—

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ  
عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ

“और तुममें एक जमाअत तो ऐसी ज़रूर ही होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ दावत दे, अच्छे कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके।”

(कुरआन, 3:104)

‘खैर’ से मुराद हर वह फ़ितरी भलाई है जिसे हमेशा इनसानी फ़ितरत ने भलाई समझा है और जिसकी भलाई होने की गवाही आसमानी किताबों ने दी है। उन तमाम भलाईयों और खूबियों की एक शानदार शकल खुदा का वह दीन है जो हर दौर में खुदा के पैग़म्बर लाते रहे हैं, जिसकी आख़िरी, मुकम्मल, भरोसे के लायक और महफूज़ शकल वह किताब व सुन्नत है जो नबी (सल्ल०) उम्मत को दे गए हैं। उसी ‘खैर’ की ओर बुलाने और भलाईयों से दुनिया को मालामाल करने के लिए ज़रूरी है कि मुसलमान एक जमाअत बनकर और संगठित होकर इस काम को करें और ज़िन्दगी के हर मैदान में असत्य पर ग़लबा हासिल करने के लिए मजबूत गिरोह वुजूद में लाएँ और संगठित होकर कोशिश करें। खुदा ने ईमानवालों के इस मजबूत गिरोह और संगठन बनकर कोशिश करने का नक्श़ा खींचते हुए उनके आदर्श-समूह की तारीफ़ की है और उनको अपना प्रिय बताया है—

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَانَهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُورٌ ۝

“बेशक वे लोग खुदा के प्रिय हैं जो उसकी राह में जमकर सफ़ बाँधे लड़ते हैं, गोया कि वे सीसा पिलाई हुई इमारत हैं।” (कुरआन, 61:4)

नबी (सल्ल०) ने इज्तिमाई ज़िन्दगी की अहमियत और जमाअत बनाकर ज़िन्दगी गुज़ारने की हिदायत करते हुए इरशाद फ़रमाया—

“तीन आदमी जो किसी जंगल में रहते हों, उनके लिए जायज़ नहीं है, मगर यह कि वे अपने में से किसी को अपना अमीर चुन लें।”

(मुन्तक़ा)



और आपने यह भी इशारा फरमाया—

“जो आदमी जन्नत के बीच में अपना घर बनाना चाहता हो, उसे ‘अल-जमाअत’ से चिमटा रहना चाहिए, इसलिए कि शैतान एक आदमी के साथ होता है और जब वे दो हो जाते हैं तो वह दूर भाग जाता है।”

‘अल-जमाअत’ से मुराद मुसलमानों का ऐसा संगठित गिरोह है, जब सत्ता इस्लाम के हाथ में हो, और मुसलमान खलीफा इस्लामी हुक्म और कानून लागू कर रहा हो, और सारे इस्लामवाले उस नेतृत्व और रहनुमाई पर एक राय हों तो ऐसी हालत में किसी मुसलमान के लिए कतई तौर पर कोई गुंजाइश नहीं कि वह जमाअत से अलग रहकर ज़िन्दगी गुजारे और जब यह अल-जमाअत मौजूद न हो तो उम्मत का फ़र्ज है कि वह संगठित होकर, मिल-जुलकर की गई कोशिशों के ज़रिए इस अल-जमाअत को वुजूद में लाने की कोशिश करे।

2. मेल-मिलाप और संगठन की बुनियाद सिर्फ़ दीन को बनाइए। इस्लामी संगठन वही है जिसकी बुनियाद खुदा का दीन हो। खुदा के दीन को छोड़कर किसी और बुनियाद पर मुसलमानों का मेल-मिलाप वह मेल-मिलाप नहीं है। जिसका हुक्म इस्लाम ने दिया है और ऐसा संगठन और जमाअत हकीकत में इस्लामी संगठन नहीं है। मुसलमानों में भाईचारा और मेल-मिलाप का हकीकती रिश्ता सिर्फ़ दीन है। दीन के सिवा जिस चीज़ को भी यह अपने मेल-मिलाप की बुनियाद बनाएँगे, एक होने के बजाए अलग-अलग होंगे और एक ‘अल-जमाअत’ बनने के बजाए गिरोह-गिरोह और फ़िरका-फ़िरका बन जाएँगे।

जमाअत बनाइए तो सिर्फ़ इसलिए कि खुदा का दीन कायम करना आपका लक्ष्य हो और आपकी सारी कोशिश सिर्फ़ उसी के लिए हो।

कुरआन का इशारा है—

وَاَعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ  
إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ (آل عمران: १०३)

“और तुम सब मिलकर खुदा की रस्सी को मज़बूत पकड़े रहना, और अलग-अलग फ़िरके न बन जाना और खुदा के इस एहसान को याद रखना जो उसने तुमपर किया है। तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, उसने तुम्हारे दिल जोड़ दिए और तुम उसकी मेहरबानी से भाई-भाई बन गए।”

(कुरआन, 3:103)

खुदा की रस्सी से मुराद खुदा का दीन, इस्लाम है। कुरआन के नज़दीक मुसलमानों

की इकाई और गिरोह बनने की बुनियाद यही है। इसके सिवा कोई भी बुनियाद मुसलमानों को जोड़नेवाली नहीं, बल्कि टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाली है।

3. हक की तरफ बुलानेवाले कार्यकर्ताओं (कारकुनों) से दिली मुहब्बत कीजिए और इस रिश्ते को हर रिश्ते से ज्यादा अहम और एहतिराम के काबिल समझिए।

कुरआन में ईमानवालों की तारीफ में कहा गया है—

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ  
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ (البقره: 177)

“तुम उस गिरोह को जो खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है, उन लोगों से मुहब्बत और प्रेम करते न देखोगे जो खुदा और उसके रसूल की दुश्मनी और मुखालफत पर तैयार हों, चाहे वे उसके अपने ही बाप या अपने ही बेटे या अपने ही भाई या अपने ही खानदानवाले क्यों न हों।”

(कुरआन, 58:22)

4. जमाअती साथियों की भलाई चाहने का एहतिमाम कीजिए और जमाअती जिन्दगी में आपस में एक-दूसरे के जज्बे को जगाए रखिए, इसलिए कि यही कामयाबी की जमानत है। खुदा का इरशाद है—

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۚ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝ (العصر)

“जमाना गवाह है कि इनसान घाटे में है सिवाए उन लोगों के, जो ईमान लाए और जो नेक अमल करते रहे और जो एक-दूसरे को दीने हक की वसीयत करते रहे और सब्र और जमाव पर उभारते रहे।”

(कुरआन, 103:1-3)

5. जमाअती अनुशासन (Discipline) की पूरी-पूरी पाबन्दी कीजिए और उसको सिर्फ जमाअती मजबूती का जरिया ही न समझिए बल्कि दीनी ज़िम्मेदारी भी समझिए।

खुदा का इरशाद है—

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ  
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۝ (الزور: ۶۲)

“ईमानवाले तो हक़ीक़त में वही लोग हैं जो खुदा और उसके रसूल को दिल से मानें और जब किसी सामूहिक काम के मौक़े पर रसूल के साथ हों तो उनसे इजाज़त लिए बिना न जाएँ। सच तो यह है कि जो लोग आपसे इजाज़त लेते हैं, वही लोग खुदा और उसके रसूल को माननेवाले हैं।”  
(कुरआन, 24:62)

जमाअत के नज़्म (अनुशासन) की पाबन्दी और अपने नेता की इताअत व फ़रमाँबरदारी सिर्फ़ एक क़ानूनी मामला ही नहीं है बल्कि यह एक अहम शर्ई मामला है और कुरआन पाक ने उन लोगों के ईमान की सच्चाई की गवाही दी जो जमाअत के अनुशासन के पाबन्द हों और जमाअती इयूटी से उसी वक़्त हटें जब अपने ज़िम्मेदार से इजाज़त हासिल कर लें।

6. जमाअती ज़िन्दगी में नेकी के जो काम भी हो रहे हों, दिल के खुलूस से उसमें मदद कीजिए और जो कुछ कर सकते हों उसमें कमी न कीजिए। खुदाग़रज़ी, स्वार्थ और अहंकार जैसी गन्दी भावनाओं से अपना अख़लाक़ी दामन पाक रखिए।

कुरआन की हिदायत है—

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۝

“और नेकी और खुदातरसी के कामों में एक-दूसरे की मदद करते रहो।”  
(कुरआन, 5:2)

7. साथियों से ताल्लुकात अच्छे रखिए और कभी किसी से कोई मतभेद हो जाए तो तुरन्त सुलह-सफ़ाई कर लीजिए और मन को मैल से पाक रखिए।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۝

“अतः खुदा से डरो और आपस के ताल्लुकात को अच्छा रखो।” (8:1)

8. इस्लामी जमाअत के अमीर की खुशदिली के साथ इताअत कीजिए और उसका भला चाहनेवाले और वफ़ादार रहिए।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“मुसलमानों को अपने ज़िम्मेदार की बात सुनी और माननी ज़रूरी।

है, चाहे उसका हुक्म अपनी तबीअत को पसन्द हो या न हो बशर्ते कि वह खुदा की नाफरमानी की बात न हो । हाँ, जब खुदा की नाफरमानी का हुक्म दिया जाए तो वह बात न सुननी चाहिए और न माननी चाहिए ।”  
(बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत तमीम दारी (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“दीन खुलूस के साथ भला चाहने और वफ़ादार रहने का नाम है ।”

—तीन बार आपने यह बात फ़रमाई । लोगों ने पूछा, “किसका भला चाहना और वफ़ादार रहना ?” इरशाद फ़रमाया—

“खुदा का, रसूल का, उसकी किताब का, मुसलमानों के ज़िम्मेदार का और आम मुसलमानों का ।”  
(मुस्लिम)

9. जमाअती पक्षपात, तंगनज़री और गुटबन्दी से बचिए । खुले दिल और अच्छे अख़लाक के साथ हर एक की मदद कीजिए और जो लोग भी दीन का काम कर रहे हों उनकी क़द्र कीजिए । उनके साथ भला चाहने का और इख़लास का बरताव कीजिए और उनको अपना साथी और कामों में मददगार समझिए । दीन का काम करनेवाले हक़ीक़त में सब एक दूसरे के मददगार और हिमायत करनेवाले हैं । सब दीन की तलब में हैं और सब अपनी-अपनी समझ के मुताबिक़ दीन की खिदमत ही करना चाहते हैं । खुलूस के साथ समझा-बुझाकर एक दूसरे की ग़लती बताना और सोच-विचार के सही तरीक़े की निशानदेही करना तो एक निहायत ही मुबारक अमल है और यह होना ही चाहिए । अलबत्ता आपसी नफ़रत, खिंचाव और दुश्मनी, एक दूसरे को नीचा दिखाना और एक दूसरे के खिलाफ़ प्रचार करना वह घटिया तरीक़ा है जो किसी तरह भी दीन की दावत देनेवालों की शान के मुताबिक़ नहीं है और उन लोगों का दामन इस तरह के दाग़-धब्बों से बिलकुल ही साफ़ होना चाहिए जो वाक़ई दिल की गहराई से यह चाहते हैं कि अपनी ताक़त और योग्यताओं को खुदा की राह में लगाएँ और ज़िन्दगी में खुदा के दीन की कुछ खिदमत कर जाएँ ।

## 39. रहनुमाई के आदाब

1. इस्लामी जमाअत की रहनुमाई के लिए ऐसे आदमी को चुनिए जो खुदातरसी और परहेजगारी में सबसे बड़ा हुआ हो, (क्योंकि) दीन में बुजुर्गी और बड़ाई का मेयार न माल व दौलत है और न खानदान, बल्कि दीन में वही आदमी सबसे अफ़ज़ल है जो सबसे ज़्यादा खुदा से डरनेवाला है ।

कुरआन का इरशाद है—

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ (البرات)

“ऐ इंसानो ! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, तुम्हारे कुंभे और कबीले बनाए ताकि तुम आपस में पहचाने जाओ । बेशक खुदा के नज़दीक तुम सबमें ज़्यादा इज़्ज़तदार वह है जो तुम सबमें ज़्यादा तक़वावाला और परहेजगार है ।” (कुरआन, 49:13)

2. रहनुमा के चुनाव को एक खालिस दीनी फ़र्ज़ समझिए और अपनी राय को खुदा की अमानत समझते हुए सिर्फ़ उसी आदमी के हक़ में इस्तेमाल कीजिए जिसको आप वाकई इस बड़े बोझ को उठाने और उसका हक़ अदा करने के लायक समझते हों ।

खुदा का इरशाद है—

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ۚ (النساء: ५८)

“बेशक खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अपनी अमानतें उन्हीं के सुपुर्द करो जो उसके अहल हैं ।” (कुरआन, 4:58)

यह एक उसूली हिदायत है जो हर तरह की अमानतों पर हावी है और यहाँ अमानतों से मुराद इस्लामी जमाअत की जिम्मेदारियाँ हैं, यानी इस्लामी जमाअत की रहनुमाई के लिए अपनी राय और पसन्द की अमानत उसी सबसे अहल आदमी के हवाले कीजिए जो वाकई अमानत के इस बोझ को उठाने की अहलियत और सलाहियत रखता हो । इस मामले में जानिबदारी या बेजा रवादारी और इसी तरह के दूसरे तत्त्वों से मुतास्सिर होकर राय देना ख़ियानत है जिससे मोमिन का दामन पाक होना चाहिए ।

3. अगर आप मुसलमानों की जमाअत की ज़िम्मेदारी सँभालें तो अपनी ज़िम्मेदारियों का पूरा-पूरा एहसास रखिए और पूरी दियानत, मेहनत, ज़िम्मेदारी के एहसास और तनदही के साथ अपनी इयूटी अंजाम दीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“जो आदमी मुसलमानों के सामूहिक मामलों का ज़िम्मेदार हो और वह उनके साथ खियानत करे तो खुदा उसपर जन्नत हराम कर देगा ।”

(बुखारी, मुस्लिम)

और आपने यह भी इशारा फ़रमाया—

“जिस आदमी ने मुसलमानों के सामूहिक मामलों की ज़िम्मेदारी कबूल की, फिर उसने उनका भला न चाहा और उनके काम अंजाम देने में अपने आपको इस तरह नहीं थकाया जिस तरह वह अपनी निजी ज़रूरत के लिए खुद को थकाता है तो खुदा उस आदमी को मुँह के बल जहन्नम में गिरा देगा ।”

(तबरानी)

4. अपने पीछे चलनेवालों के साथ नर्मी, मुहब्बत, इनसाफ़ और सूझबूझ का बरताव कीजिए ताकि वे खुले दिल से आपका साथ दे सकें और खुदा आपकी जमाअत को अपने दीन की कुछ खिदमत करने की तौफ़ीक़ बख़्शे । कुरआन में नबी (सल्ल०) की तारीफ़ में कहा गया है—

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۚ

“यह खुदा की रहमत ही तो है कि आप उन लोगों के लिए इतिहाई नर्म दिल हैं, वरना अगर कहीं आप सख्त मिज़ाज और कड़ी पकड़ करनेवाले होते तो ये सब आपके आस-पास से छँट जाते ।” (कुरआन, 3:159)

और आपको ताकीद की गई है—

وَ اخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ (الشّراء: ११५)

“और आप अपनी मुहब्बत के बाजू फैला दीजिए उन मोमिनों के लिए जो आपकी पैरवी कर रहे हैं ।” (कुरआन, 26:215)

हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि०) ने एक बार तक़रीर (Speech) करते हुए इशारा फ़रमाया—

“ऐ लोगो ! हमारा तुमपर हक़ है कि पीठ पीछे हमारा खुलूस के साथ भला चाहो और नेकी के मामलों में हमारी मदद करो ।”

फिर इरशाद फ़रमाया—

“ऐ हुकूमत के ज़िम्मेदारो ! ज़िम्मेदार की नर्मी से ज़्यादा नफ़ा देनेवाली और खुदा के नज़दीक ज़्यादा पसन्दीदा और कोई नर्मी नहीं है । इसी तरह ज़िम्मेदार की नासमझी, भावुकता में डूबकर बेसमझे-बूझे काम करने से ज़्यादा नुक़सानदेह और नापसन्दीदा कोई दूसरी नासमझी नहीं है ।”

5. अपने साथियों की अहमियत को महसूस कीजिए, उनकी भावनाओं का एहतिराम कीजिए, उनकी ज़रूरतों का एहसास कीजिए और उनके साथ ऐसा भाई जैसा सुलूक कीजिए कि वे आपको अपना सबसे बड़ा भला चाहनेवाला समझें ।

हज़रत मालिक बिन हुवैरिस (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार हम कुछ हमउम्र नौजवान नबी (सल्ल०) की खिदमत में रहने के लिए पहुँचे और हम आपकी खिदमत में बीस रात तक रहे । वाकई खुदा के रसूल इतिहाई नर्मदिल और रहम करनेवाले थे । जब आपने यह महसूस किया कि अब हमें घरवालों की याद सता रही है तो हमसे पूछने लगे कि तुम लोग अपने पीछे घर में किन-किन लोगों को छोड़कर आए हो ? हमने तफ़सील बताई तो फ़रमाया—

“अच्छा तो अब तुम लोग अपने घरों को वापस जाओ और उन्हीं के साथ रहो और जो कुछ तुमने सीखा है, उनको सिखाओ और उन्हें नेक बातें बताओ और फ़लाँ नमाज़ फ़लाँ वक़्त पढ़ो और जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुममें से कोई एक अज़ान दे दे और तुममें जो इल्म व किरदार के लिहाज़ से सबसे बढ़कर हो, वह नमाज़ पढ़ाए ।”

6. अपने साथियों की कद्र कीजिए और इन्हीं को अपनी असल पूँजी समझते हुए पूरी तनदही और दिलसोज़ी के साथ उनकी तरबियत कीजिए । उनको ग़रीब और कमज़ोर समझकर उन लोगों की ओर ललचाई हुई नज़रों से न देखिए जिनको खुदा ने दुनिया की शान व शौकत और माल व असबाब देकर ढील दी है—

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَشَىٰ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ  
وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۝ (النّٰہ: २४)

“और अपने आपको उन लोगों के साथ होने पर मुतमइन रखिए जो अपने रब की रिज़ा के तालिब बनकर सुबह व शाम उसको पुकारते रहते

हैं और उनको नज़रअंदाज़ करके दुनिया की शान व शौकत की तलब में अपनी निगाहें न दौड़ाए ।” (कुरआन, 18:28)

असल में दीनी जमाअत की असल पूँजी वही लोग हैं जो तन-मन-धन से दीन की तबलीग व इशाअत में लग गए हैं । जमाअत के नेता का फ़र्ज़ है कि उनकी अहमियत का एहसास करे और अपनी सारी तवज्जोह इन्हीं की तरबियत और तैयारी पर लगाए रखे ।

7. जमाअत के तमाम अहम काम साथियों के मशविरे से तय कीजिए और अंजाम दीजिए और साथियों के खुलूस भरे मशविरे से फ़ायदा उठाकर जमाअत के कामों से उनका लगाव और चाव बढ़ाइए, ईमानवालों की ख़ूबी खुदा ने यह भी बयान की है कि उनके मामले आपसी मशविरो से तय होते हैं ।

وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ

“और उनके मामले आपसी मशविरो से तय पाते हैं ।”

(कुरआन, 42:38)

नबी (सल्ल०) को ताकीद की गई है कि ख़ास मामलों में अपने साथियों से मशविरा लीजिए ।

وَشَاوَرَهُمْ فِي الْأَمْرِ

“और ख़ास मामले में उनसे मशविरा कीजिए ।” (कुरआन, 3:159)

8. जमाअती मामलों में हमेशा खुले दिल और त्याग-भावना से काम लीजिए । अपने और अपने घरवालों को किसी मामले में तरजीह न दीजिए, बल्कि हमेशा ईसार और फ़ैयाज़ी का बरताव कीजिए, ताकि साथी खुशदिली के साथ हर कुरबानी देने के लिए पेश-पेश रहें और जमाअत से बददिली और बेताल्लुकी न पैदा हो और न खुदग़राजी और स्वार्थ की भावनाएँ उभरने पाएँ । हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने एक बार हज़रत उमर (रज़ि०) से कहा—

“ऐ ख़ताब के बेटे ! मैंने मुसलमानों पर तुम्हें इसलिए चुना है कि तुम उनके साथ मुहब्बत का बरताव करो । तुमने नबी (सल्ल०) की सोहबत उठाई है । तुमने देखा है कि नबी (सल्ल०) किस तरह हमको अपने ऊपर उठाई है । तुमने देखा है कि नबी (सल्ल०) किस तरह हमको अपने ऊपर और हमारे घरवालों को अपने घरवालों पर तरजीह दिया करते थे, यहाँ तक कि हमको जो कुछ आपकी तरफ़ से मिलता, उसमें से कुछ बच जाता तो वह हम नबी (सल्ल०) के घरवालों को तोहफ़ा भेजा करते थे ।”

(किताबुल ख़िराज)



9. जानिबदारी और भाई-भतीजावाद से हमेशा बचते रहिए और बेजा मुहब्बत और रवादारी से भी परहेज कीजिए । हज़रत यज़ीद बिन सुफ़ियान (रज़ि०) कहते हैं कि जब हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने मुझे सिपहसालार (सेनापति) बनाकर शाम की ओर रवाना किया तो उस वक़्त यह नसीहत फ़रमाई—

“ऐ यज़ीद ! तुम्हारे कुछ अज़ीज़ और रिश्तेदार हैं । हो सकता है कि तुम उनको कुछ ज़िम्मेदारियाँ देने पर तरज़ीह देने लगे । तुम्हारे लिए मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा अंदेशे और डर की बात यही है ।”

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो आदमी मुसलमानों के समाजी मामलों का ज़िम्मेदार हो और वह मुसलमानों पर किसी को सिर्फ़ रिश्तेदारी की वजह से या सिर्फ़ दोस्ती की वजह से हाकिम बनाए, तो खुदा उसकी ओर से कोई फ़िदया क़बूल न करेगा, यहाँ तक कि जहन्नम में डाल देगा । (किताबुल ख़िराज)

10. जमाअत के नज़्म (संगठन) को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत रखने की कोशिश कीजिए और इस मामले में बेजा नर्मी और ढील से काम न लीजिए ।

खुदा का इरशाद है—

فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۝ (النور: १२)

“तो जब वे अपने किसी खास काम के लिए आपसे इज़ाज़त माँगें तो आप जिसको चाहें इज़ाज़त दे दिया करें और उन लोगों के हक़ में खुदा से माग़फ़िरत (माफ़ी) तलब किया करें ।” (क़ुरआन, 24:62)

यानी जब जमाअत के साथी किसी समाजी ज़रूरत के लिए जमा हों और फिर कुछ लोग अपनी निजी ज़रूरत और मज़बूरियों की वजह से इज़ाज़त माँगने लगे तो जमाअत के ज़िम्मेदार का फ़र्ज़ है कि वह जमाअत के नज़्म की अहमियत को देखते हुए सिर्फ़ उन्हीं लोगों को इज़ाज़त दे जिनकी ज़रूरत वाक़ई इस इज्तिमाई दीनी काम के मुक़ाबले में तरज़ीह के ज़्यादा काबिल हो या जिनकी मज़बूरी वाक़ई मज़बूरी हो और उसका क़बूल करना ज़रूरी हो ।

## बंदगी का एहसास

### 40. तौबा और इसतिगफ़ार

1. तौबा के कबूल होने के बारे कभी मायूस न हों, कैसे ही बड़े-बड़े गुनाह हों गए हों, तौबा से अपने नफ़्स को पाक कीजिए और खुदा से उम्मीद बाँधे रखिए। मायूसी तो ग़ैर ईमानवालों का तरीक़ा है। ईमानवालों की तो खास ख़ूबी ही यह है कि वे बहुत ज़्यादा तौबा करनेवाले होते हैं और किसी हाल में खुदा से मायूस नहीं होते। गुनाहों की ज़्यादती से घबराकर मायूसी में पड़े रहना और तौबा के कबूल होने से नाउम्मीद होना ज़ेहन व फ़िक्र की तबाह कर देनेवाली गुमराही है। खुदा ने अपने महबूब बन्दों की यह तारीफ़ नहीं फ़रमाई है कि उनसे गुनाह नहीं होते, बल्कि फ़रमाया कि उनसे गुनाह होते हैं लेकिन वे अपने गुनाहों पर इसरार नहीं करते, खुलेदिल से उन्हें मान लेते हैं और खुद को पाक करने के लिए बेचैन हो जाते हैं :

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا  
لذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرَ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا  
فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ (آل عمران: १३५)

“और अगर कभी उनसे कोई गन्दा काम हो जाता है या वे अपने ऊपर कभी ज़्यादती कर बैठते हैं तो तुरन्त उन्हें खुदा याद आ जाता है और वे उससे अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं और खुदा के सिवा कौन है, जो गुनाहों को माफ़ कर सकता है और वे जानते-बूझते अपने किए पर हरगिज़ इसरार नहीं करते।” (क़ुरआन, 3:135)

और दूसरी जगह फ़रमाया—

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ  
مُبْصِرُونَ (الاعراف: २०१)

“हकीकत में जो लोग खुदा से डरनेवाले हैं, उनका हाल यह होता है कि कभी शैतान के असर से कोई बुरा खयाल उन्हें छू भी जाता है तो वे फौरन चौकन्ने हो जाते हैं और फिर उन्हें साफ नज़र आने लगता है कि सही रविश क्या है ।” (कुरआन, 7:201)

और नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“सारे के सारे इनसान खताकार हैं और बेहतरीन खताकार वे हैं जो बहुत ज़्यादा तौबा करनेवाले हैं ।” (तिरमिज़ी)

कुरआन पाक में खुदा ने अपने प्यारे बन्दों की यह खास खूबी बयान की है कि वे भोर में खुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं और तौबा व इसतिग़फ़ार करते हैं । और ईमानवालों को हिदायत फ़रमाई है कि वे तौबा व इसतिग़फ़ार करते रहें और यह यक़ीन रखें कि खुदा उनके गुनाहों पर माफ़ी का परदा डाल देगा, इसलिए कि वह बड़ा ही माफ़ फ़रमानेवाला और अपने बन्दों से इत्तिहाई मुहब्बत करनेवाला है ।

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ (سورة 40: 40)

“और अपने परवरदिगार से माफ़ी चाहो और उसके आगे तौबा करो ।  
बेशक मेरा रब बड़ा ही रहम फ़रमानेवाला और बहुत ही मुहब्बत करनेवाला है ।” (कुरआन, 11:90)

2. खुदा की रहमत से हमेशा उम्मीदें बाँधे रखिए और यह यक़ीन रखिए कि गुनाह चाहे कितने ही ज़्यादा हों, खुदा की रहमत इससे कहीं ज़्यादा बड़ी और फैली हुई है । समुद्र के झाग से ज़्यादा गुनाह करनेवाला भी जब अपने गुनाहों पर शर्मिंदा होकर खुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाता है तो खुदा उसकी सुनता है और उसको अपनी रहमत के दामन में पनाह देता है ।

يَعْبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَإِنِّي إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُ لَهُ مِنْ قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصِرُونَ (الزمر: 53-54)

“ऐ मेरे वे बन्दो जो अपनी जानों पर ज़्यादती कर बैठे हो ! खुदा की रहमत से हरगिज़ मायूस न होना । यक़ीनन खुदा तुम्हारे सारे के सारे

गुनाह माफ़ फ़रमाएगा । वह बहुत ही माफ़ फ़रमानेवाला और बड़ा ही मेहरबान है और तुम अपने रब की तरफ़ रुजू हो जाओ और उसकी फ़रमाँबरदारी बजा लाओ, इससे पहले कि तुमपर कोई अज़ाब आ पड़े और फिर तुम कहीं से मदद न पा सको ।” (क़ुरआन 39:53-54)

3. ज़िन्दगी के किसी हिस्से में गुनाहों पर शर्मिंदगी और नदामत का एहसास पैदा हो तो उसे खुदा की तौफ़ीक़ समझिए और तौबा के दरवाज़े को खुला समझिए । खुदा अपने बन्दों की तौबा उस वक़्त तक क़बूल फ़रमाता है जब तक उसकी साँस नहीं उखड़ती, अलबत्ता साँस उखड़ने के बाद जब इनसान दूसरी दुनिया में झाँकने लगता है तो तौबा की गुंजाइश ख़त्म हो जाती है ।

नबी (सल्ल०) का इशारा है—

“खुदा अपने बन्दे की तौबा क़बूल करता है, पर साँस उखड़ने से पहले-पहले ।” (तिरमिज़ी)

हज़रत यूसुफ़ (अलै०) के भाइयों ने उनको अँधेरे कुएँ में धकेलकर अपनी समझ से उन्हें ख़त्म कर दिया, गोया वे नबी के क़त्ल का गुनाह कर बैठे और उनका कुर्ता खून में रंगकर अपने बाप याक़ूब (अलै०) को यक़ीन दिलाने की कोशिश करने लगे कि यूसुफ़ मर गए और उनको भेड़िए ने अपना भोजन बना लिया । लेकिन ऐसा महापाप करने के कई साल बाद जब अपने ज़ुर्म का एहसास उभरता है और वे शर्मिंदा होकर अपने बाप से दरखास्त करते हैं कि अब्बा जान ! हमारे लिए खुदा से दुआ कीजिए कि खुदा हमारे गुनाह को माफ़ फ़रमा दे, तो खुदा के पैग़म्बर हज़रत याक़ूब (अलै०) यह कहकर उन्हें मायूस नहीं करते कि तुम्हारा पाप बहुत बड़ा है और इस (महापाप) पर अब वर्षों गुज़र चुके हैं, इसलिए अब माफ़ी का क्या सवाल, बल्कि वे उनसे वादा करते हैं कि मैं ज़रूर तुम्हारे लिए पालनहार से माफ़ी की दुआ करूँगा और उन्हें यह यक़ीन दिलाते हैं कि खुदा ज़रूर तुम्हें माफ़ करेगा, इसलिए कि वह बहुत ज़्यादा दरगुज़र (माफ़) करनेवाला और बड़ा ही रहम फ़रमानेवाला है ।

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ۝ (يوسف)

“उन सबने कहा : ऐ अब्बा जान ! हमारे गुनाहों की बख़्शिश के लिए दुआ कीजिए, वाक़ई हम बड़े ख़ताकार थे ।” (क़ुरआन, 12:97)

हजरत याकूब (अलै०) ने कहा—

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ॥

“मैं अपने रब से तुम्हारे लिए जरूर माफ़ी की दुआ करूँगा (और वह तुम्हें जरूर माफ़ कर देगा ।) यकीनन वह बड़ा ही माफ़ करनेवाला और इतिहाई रहम फ़रमानेवाला है ।” (कुरआन, 12:98)

नबी (सल्ल०) ने उम्मत को मायूसी की तबाही से बचाने के लिए सहाबा (रज़ि०) को एक अजीबो गरीब किस्सा सुनाया जिससे यह सबक मिलता है कि मोमिन उग्र के जिस हिस्से में भी अपने गुनाहों पर शर्मिंदा होकर सच्चे दिल से खुदा के हुजूर गिड़गिड़ाएगा तो वह अपनी माफ़िरत के दामन में ढाँप लेगा और कभी नहीं धुतकारेगा ।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि पिछली क़ौम में एक आदमी था जिसने निन्नावे खून किए थे । उसने लोगों से मालूम किया कि दुनिया में सबसे बड़ा आलिम कौन है ? लोगों ने उसको एक खुदा को पहुँचे हुए राहिब (संन्यासी) का पता दिया । वह उस राहिब के पास गया और बोला, “हजरत ! मैंने निन्नावे खून किए हैं, क्या मेरी तौबा भी क़बूल हो सकती है ? राहिब ने कहा, “नहीं, तुम्हारी तौबा क़बूल होने की अब कोई शक़्ल नहीं ।” यह सुनते ही उस आदमी ने मायूसी में उस राहिब को भी क़त्ल कर दिया और अब पूरे सौ आदमियों का कातिल था । अब उसने फिर लोगों से पूछना शुरू किया कि इस धरती पर दीन का सबसे बड़ा आलिम कौन है ? लोगों ने उसको एक और राहिब का पता दिया । अब वह तौबा की गरज़ से उस राहिब की खिदमत में पहुँचा और उसको अपनी हालत बताते हुए कहा कि हजरत ! मैंने सौ क़त्ल किए हैं । यह बताइए, क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ? और मेरी बख़्शिश की भी कोई शक़्ल है ? राहिब ने कहा, “क्यों नहीं ? भला तुम्हारे और तौबा के दरमियान में कौन-सी चीज़ रुकावट बन सकती है ? तुम फ़लाँ मुल्क में जाओ, वहाँ खुदा के कुछ चुने हुए बन्दे खुदा की इबादत में लगे हुए हैं, तुम भी उनके साथ खुदा की इबादत में लग जाओ और फिर कभी अपने वतन लौटकर न आना, क्योंकि अब यह जगह दीनी लिहाज़ से तुम्हारे लिए मुनासिब नहीं है ।” (यहाँ तुम्हारे लिए तौबा पर कायम रहना और सुधार की कोशिश करना बहुत मुश्किल है ।) वह आदमी ख़ाना हुआ । अभी आधे रास्ते तक ही पहुँचा था कि मौत का पैग़ाम आ गया । अब फ़रिश्ते आपस

में झगड़ने लगे । रहमत के फ़रिश्तों ने कहा, “यह गुनाहों से तौबा करके खुदा की तरफ़ मुतवज्जोह होकर इधर आया है ।” अज़ाब के फ़रिश्तों ने कहा, “नहीं, अभी उसने कोई भी नेक अमल नहीं किया है ।”

यह बात हो ही रही थी कि एक फ़रिश्ता इनसान की शकल में आया । इन फ़रिश्तों ने उसको अपना हक़म (पंच) बना लिया कि वह इन दोनों के दरमियान कोई फैसला कर दे । उसने कहा, “दोनों तरफ़ की ज़मीन नापो और यह देखो कि वह जगह यहाँ से क़रीब है जहाँ से आदमी आया है या वह जगह यहाँ से क़रीब है जहाँ उस आदमी को जाना था ।” फ़रिश्तों ने ज़मीन को नापा तो वह जगह क़रीब निकली जहाँ उस आदमी को जाना था और जाते हुए राह में रहमत के फ़रिश्ते ने उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली, और खुदा ने उसको बख़्श दिया ।

(बुखारी, मुस्लिम)

4. सिर्फ़ खुदा के हुज़ूर अपने गुनाहों का इकरार कीजिए । उसी के हुज़ूर गिड़गिड़ाइए और उसी के सामने अपनी आजिज़ी, बेकसी और खताकारी को ज़ाहिर कीजिए । इज़्ज़त व इनकिसारी इनसान की वह पूँजी है जो सिर्फ़ खुदा ही के हुज़ूर पेश की जा सकती है और जो बदनसीब अपनी इज़्ज़त व इनकिसारी की यह पूँजी अपने ही जैसे मजबूर व बेबस इनसानों के सामने पेश करता है, तो फिर उस दिवालिये के पास खुदा के हुज़ूर पेश करने के लिए कुछ नहीं रह जाता और वह ज़लील व रसवा होकर हमेशा के लिए दर-दर की ठोकरें खाता है और कहीं इज़्ज़त नहीं पाता ।

खुदा का इरशाद है—

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۚ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ۝ (الکَافِی: ۵۸)

“और आपका परवरदिगार गुनाहों को ढाँपनेवाला और बहुत ज़्यादा रहम करनेवाला है । अगर वह उनके करतूतों पर उनको तुरन्त पकड़ने लगे, तो अज़ाब भेज दे, पर उसने (अपनी रहमत से) एक वक़्त उनके लिए गुर्कार कर रखा है और ये लोग बचने के लिए उसके सिवा कोई पनाहग़ाह न पाएँगे ।”

(कुरआन, 18:58)

और सूरा शूरा में है—

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا

“और वही तो है जो अपने बन्दों की तौबा कबूल करता है और उनकी खताओं को माफ़ फ़रमाता है और वह सब जानता है जो तुम करते हो ।”  
(कुरआन, 42:25)

असल में इनसान को यह यकीन रखना चाहिए कि कामयाबी का एक ही दरवाज़ा है । उस दरवाज़े से जो धुत्कार दिया गया, फिर वह हमेशा के लिए ज़लील और महरूम हो गया । ईमानवालों की सोच का अन्दाज़ यही है कि बन्दे से चाहे कैसे भी गुनाह हो जाएँ, उसका काम यह है कि वह खुदा ही के हुज़ूर गिड़गिड़ाए और उसी के दामन पर अपनी शर्मिन्दगी के आँसू टपकाए । बन्दे के लिए खुदा के सिवा कोई और दरवाज़ा नहीं जहाँ उसे माफ़ी मिल सके । हद यह है कि अगर आदमी खुदा को छोड़कर रसूल को खुश करने की कोशिश करेगा भी तो खुदा के दरबार में उसकी इस कोशिश की कोई कीमत न लगेगी और वह धुत्कार दिया जाएगा । रसूल भी खुदा का बन्दा है और वह भी उसी दर का फ़कीर है । उसे भी जो बड़ा रुतबा मिला है, इसी दर से मिला है और उसके बड़प्पन का भेद भी यही है कि वह खुदा का सबसे ज़्यादा आजिज़ बन्दा होता है और आम इनसानों के मुकाबले में कहीं ज़्यादा खुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाता है ।

नबी (सल्ल०) का इश़ाद है—

“लोगो ! खुदा से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहो और उसकी ओर पलट आओ । मुझे देखो मैं दिन में सौ-सौ बार खुदा से माफ़िरत की दुआ करता रहता हूँ ।”  
(मुस्लिम)

मुनाफ़िकों का ज़िक्र करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया—

يَخْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ  
عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ○ (११: ७)

“ये मुनाफ़िक आपके सामने क़समें खाएँगे कि आप उनसे राज़ी हो जाएँ । अगर आप उनसे राज़ी हो भी गए तो खुदा हरगिज़ ऐसे बेदीनों से राज़ी न होगा ।”  
(कुरआन, 9:96)

कुरआन पाक में हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि०) का वाक़िआ हमेशा के लिए सबक़ है कि बन्दा सब कुछ सहे, हर आजमाइश बरदाश्त करे, लेकिन खुदा के दर से उठने का खयाल तक उसके दिल में न आए । दीन की राह में आदमी

पर जो कुछ बीते और खुदा की ओर से उसको जितना भी रौंदा जाए, वह उसकी ज़िन्दगी को चमकाने और उसके दर्जों को बुलन्द करने का ज़रिया है। यह बेइज़्जती हमेशा रहनेवाली इज़्जत का यक़ीनी रास्ता है और जो खुदा के दरवाज़े को छोड़कर कहीं और इज़्जत तलाश करता है, उसको कहीं भी इज़्जत नहीं मिल सकती। वह हर जगह ज़लील होगा और ज़मीन और आसमान की कोई एक आँख भी उसको इज़्जत की नज़र से नहीं देख सकती।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ  
وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ  
عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ (التوبة: ११८)

“और उन तीनों को भी खुदा ने माफ़ कर दिया, जिनका मामला मुल्तवी (स्थगित) कर दिया गया था, जब ज़मीन अपने सारे फैलाव के बावजूद उनपर तंग हो गई और उनकी जानें भी उनपर बोझ होने लगीं और उन्होंने जान लिया कि खुदा से बचने के लिए कोई पनाहगाह नहीं है, सिवाए इसके कि खुद उसी की पनाह ली जाए, तो खुदा अपनी मेहरबानी से उनकी ओर पलटा, ताकि वे उसकी ओर पलट आएँ। बेशक वह बड़ा ही माफ़ फ़रमानेवाला और इतिहाई मेहरबान है।”

(कुरआन, 9:118)

इन तीन बुज़ुर्गों से हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि०), हज़रत मुरारा बिन रुबैअ (रज़ि०) और हिलाल बिन उमैया (रज़ि०) मुराद हैं और इन तीनों की मिसाली तौबा रहती ज़िन्दगी तक के लिए मोमिनों के वास्ते रास्ते की मशाल है।

हज़रत काब बिन मालिक (रज़ि०), जो बुढ़ापे में अंधे हो गए थे और अपने लड़के के सहारे चला करते थे, उन्होंने खुद अपनी मिसाली तौबा का नसीहत भरा वाक़िआ अपने बेटे से बयान किया था जो हदीस की किताबों में दर्ज है— तबूक की लड़ाई की तैयारी में जब नबी (सल्ल०) मुसलमानों को लड़ाई में शरीक होने पर उभारा करते थे, मैं भी उन सोहबतों में शरीक रहता था। मैं जब भी आपकी बातें सुनता, मन में सोचता कि मैं ज़रूर जाऊँगा, लेकिन वापस जब घर आता तो सुस्ती कर जाता और सोचता कि अभी बहुत वक़्त है, मेरे पास सफ़र का सामान मौजूद है, मैं सेहतमंद हूँ, सवारी अच्छी से अच्छी मुहैया है, फिर खाना होते क्या देर लगेगी और बात टलती रही यहाँ तक कि मुजाहिद लड़ाई के मैदान में पहुँच



गए और मैं मदीना में बैठा इरादा ही करता रहा ।

अब खबरें आने लगीं कि नबी (सल्ल०) वापस आनेवाले हैं और एक दिन मालूम हुआ कि आप वापस आ गए और आदत के मुताबिक मस्जिद में ठहरे हुए हैं । मैं भी मस्जिद में पहुँचा, यहाँ मुनाफिक (कपटी लोग) हुजूर (सल्ल०) की खिदमत में पहुँच रहे थे और लम्बी-चौड़ी कस्में खा-खाकर अपने बहाने पेश कर रहे थे । नबी अकरम (सल्ल०) उनकी बनावटी बातें सुन-सुनकर उनके जाहिरी उज्र कबूल कर रहे थे और फरमाते जाते— “खुदा तुम्हें माफ़ करे ।”

जब मेरी बारी आई तो नबी (सल्ल०) ने मुझसे कहा—

“कहो तुम्हें किस चीज़ ने रोक दिया था ?” मैंने देखा कि आप की मुस्कराहट में गुस्से के निशान हैं और मैंने साफ़-साफ़ बात कह डाली—खुदा के रसूल ! वाकिआ यह है कि मुझे कोई उज्र न था । मैं सेहतमन्द था, खुशहाल था, सवारी भी मेरे पास मौजूद थी, बस मेरी सुस्ती और ग़फलत ने मुझे इस सआदत से महरूम रखा ।”

मेरी साफ़-साफ़ बात सुनकर नबी (सल्ल०) ने फरमाया, “अच्छा जाओ और इन्तिज़ार करो कि खुदा तुम्हारे मामले में कोई फैसला फरमाए ।” मैं उठा और अपने कबीले के लोगों में आ बैठा । कबीले के लोगों ने मुझे बुरा-भला कहबा शुरू किया कि तुमने कोई बात क्यों न बना दी । तुम तो हमेशा दीन के कामों में पेश-पेश रहे हो । लेकिन जब मुझे यह मालूम हुआ कि मेरे दो साथियों ने भी इसी तरह सच्ची बात कही है तो मेरा दिल मुतमइन हो गया और मैंने तय कर लिया कि मैं अपनी सच्चाई पर जमा रहूँगा ।

इसके बाद नबी (सल्ल०) ने आम एलान फरमाया कि हम तीनों से कोई बात न करे । यह एलान होते ही मेरे लिए मदीने की ज़मीन बिलकुल बदल गई और मैं अपनों में बे-यार व मददगार बिलकुल अजनबी बनकर रह गया । कोई भी समाज में मुझसे सलाम-कलाम न करता । एक दिन जब मैं बहुत ज़्यादा उकता गया और तबीअत बहुत घबराई तो अपने एक बचपन के दोस्त और चचेरे भाई अबू कतादा (रज़ि०) के पास गया । मैंने जाकर सलाम किया लेकिन उस खुदा के बन्दे ने सलाम का जवाब तक न दिया । मैंने पूछा, “अबू कतादा ! मैं तुम्हें खुदा की कसम देकर पूछता हूँ, बताओ क्या मुझे खुदा और उसके रसूल से मुहब्बत नहीं है ?” वे ह्याप्रोश रहे । मैंने फिर पूछा लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया । तीसरी बार जब मैंने कसम देकर पूछा तो बस उन्होंने कहा, “खुदा और खुदा के रसूल ही बेहतर जानते हैं ।” मेरा दिल भर आया और मेरी आँखों से आँसू टपकने लगे और मैं अपना गम लिए हुए वापस आ गया ।

उन्हीं दिनों बाज़ार में 'शाम' के एक व्यापारी ने मुझे 'शाह गस्सान' का एक खत दिया। ईसाइयों के इस बादशाह ने लिखा था— हमने सुना है कि तुम्हारे साहब तुमपर बहुत ही सितम तोड़ रहे हैं। तुम कोई जलील आदमी तो हो नहीं, तुम्हारी क़द्र हम जानते हैं, तुम हमारे पास आओ। हम तुम्हारे मरतबे के लायक मुलूक करेंगे। खत देखते ही मेरी ज़बान से निकला, "यह एक और मुसीबत नाज़िल हुई।" उसी वक़्त उस खत को लेकर मैंने चूल्हे में झोंक दिया।

चालीस दिन इस हालत पर गुज़र चुके थे कि नबी (सल्ल०) का भेजा हुआ एक आदमी यह हुक्म लेकर आया कि अपनी बीवी से भी अलग हो जाओ। मैंने पूछा, "तलाक़ दे दूँ?" जवाब मिला, "नहीं, बस अलग रहो।" मैंने अपनी बीवी को मायके रवाना कर दिया और उस खुदा की बन्दी से कह दिया कि अब तुम भी खुदा के फैसले का इन्तिज़ार करती रहो।

पचासवें दिन मैं फ़ज़्र की नमाज़ के बाद अपनी जान से बेज़ार बहुत ही मायूस और दुखी अपने मकान की छत पर बैठा हुआ था कि यकायक किसी ने पुकारकर कहा, "काब ! मुबारक हो।" यह सुनते ही मैं समझ गया और अपने खुदा के हुज़ूर सज्दे में गिर पड़ा, फिर तो लोगों का ताँता बँध गया। फ़ौज़ दर फ़ौज़ मेरे पास मुबारकबाद देने के लिए लोग आने लगे। मैं उठा और सीधे नबी (सल्ल०) के पास मस्जिद में पहुँचा। क्या देखता हूँ कि नबी (सल्ल०) का चेहरा खुशी से चमक रहा है। मैंने आगे बढ़कर सलाम किया तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "काब ! मुबारक हो यह तुम्हारी ज़िन्दगी का सबसे बेहतरीन दिन है।" मैंने कहा, "हुज़ूर ! यह माफ़ी आपकी तरफ़ से है या खुदा की तरफ़ से?" फ़रमाया, "खुदा की तरफ़ से" और सूरा तौबा की कुछ आयतें पढ़कर सुनाई।

5. तौबा करने में कभी देर न कीजिए। ज़िन्दगी का हाल किसी को मालूम नहीं, कब अमल की मोहलत ख़त्म हो जाए कुछ ख़बर नहीं। अगला लम्हा ज़िन्दगी का लम्हा है या मौत का मालूम नहीं। हर वक़्त अंजाम का ध्यान रखिए और तौबा व इस्तिफ़ार के ज़रिए क़ल्ब व रूह और ज़ेहन व ज़बान को गुनाहों से धोते रहिए।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

"खुदा रात को अपना हाथ फैलाता है ताकि जिस आदमी ने दिन में कोई गुनाह किया है वह रात में खुदा की ओर पलट आए और दिन में वह अपना हाथ फैलाता है ताकि रात में अगर किसी ने कोई गुनाह किया है तो वह दिन में अपने रब की ओर पलटे और गुनाहों की माफ़ी माँगे, यहाँ तक कि सूरज पश्चिम से निकले।" (मुस्लिम)

खुदा के 'हाथ फैलाने' से मुराद यह है कि वह अपने गुनाहगार बन्दों को अपनी ओर बुलाता है और अपनी रहमत से उनके गुनाहों को ढँपना चाहता है। अगर बन्दे ने किसी वक़्त ज़ज्बे से दबकर कोई गुनाह कर लिया है तो उसे चाहिए कि वह अपने रहम फ़रमानेवाले और माफ़ करनेवाले खुदा की ओर दौड़े और तनिक देर न करे कि गुनाह से गुनाह पैदा होता है और शैतान हर वक़्त इनसान की घात में लगा हुआ है और वह उसको गुमराह करने की चिन्ता से किसी वक़्त भी निश्चिन्त नहीं है।

6. बहुत ही सच्चे दिल से खुलूस के साथ तौबा कीजिए जो आपकी ज़िन्दगी की काया पलट दे और तौबा के बाद आप एक दूसरे ही इनसान नज़र आएँ।

खुदा का फ़रमान है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ  
عَنكُم سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَا يَوْمَ لَا  
يُخْزَىٰ اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ ۖ

“ऐ मोमिनो ! खुदा के आगे सच्ची और खालिस तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा फ़रवरदिगार तुम्हारे गुनाहों को तुमसे दूर फ़रमा देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाखिल फ़रमाएगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उस दिन खुदा अपने रसूल को और उन लोगों को जो ईमान लाकर उसके साथ हो लिए हैं, रुसवा न करेगा।” (कुरआन, 66:8)

यानी ऐसे तौबा कीजिए कि फिर क़ल्ब व ज़ेहन के किसी कोने में भी गुनाह की ओर पलटने का कोई अंश बाक़ी न रह जाए। ऐसी तौबा के तीन या चार पहलू हैं। अगर गुनाह का ताल्लुक खुदा के हक़ से है तो तौबा के तीन हिस्से हैं—

(क) इनसान वाक़ई अपने गुनाहों के एहसास से शर्मिदा हो,

(ख) आगे गुनाह से बचने का पक्का इरादा करे, और

(ग) अपनी ज़िन्दगी को सँवारने और सुधारने में पूरा दिल लगाकर और फ़िक्र के साथ सरगर्म हो जाए, और अगर उसने किसी बंदे का हक़ मार लिया है तो तौबा का हिस्सा यह भी है कि—

(घ) बन्दे का हक़ अदा करे या उससे माफ़ कराए।

यही वह तौबा है जिससे बाकई इन्सान गुनाहों से धुल जाता है। उसका एक-एक गुनाह उसकी रूह से टपककर गिर जाता है और वह नेक कामों से सँवरकर, सजी ज़िन्दगी के साथ, खुदा के हुज़ूर पहुँचता है और खुदा उसको अपनी जन्नत में ठिकाना बख्शाता है।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में एक स्याह (काला) दाग पड़ जाता है।”

अब अगर वह—

☆ गुनाह से बाज़ आ जाए,

☆ अपने गुनाहों के एहसास से शर्मिदा होकर बख्शिश का तलबगार (इच्छुक) हो, और

☆ खुदा की ओर पलटकर गुनाह से बचने का पक्का इरादा करे तो खुदा उसके दिल को रौशनी बख्श देता है और अगर वह फिर गुनाह कर बैठे तो इस स्याह दाग में बढ़ोत्तरी कर दी जाती है, यहाँ तक कि वह पूरे दिल पर छा जाता है। यही वह मोर्चा है जिसका जिक्र खुदा ने अपनी किताब में फ़रमाया है—

كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ

“हरगिज़ नहीं, बल्कि असल बात यह है कि उनके दिलों पर उनके बुरे करतूतों का जंग चढ़ गया है।” (कुरआन, 83:14)

7. अपनी तौबा पर कायम रहने का पक्का इरादा कीजिए और रात व दिन ध्यान रखिए कि खुदा से किए हुए अह्द के खिलाफ़ कोई हरकत (काम) न होने पाए और अपनी हर दिन बढ़ती पाकीज़गी और सुधार से अपने इरादे का अंदाज़ा करते रहिए और अगर अपनी सारी कोशिशों के बावजूद भी आप फिसल जाएँ और फिर कोई खता कर बैठें तब भी मायूस हरगिज़ न हों, बल्कि फिर खुदा की माफ़िरत के दामन में पनाह खोजिए और खुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाइए कि ‘पालनहार ! मैं बहुत कमज़ोर हूँ, तू मुझे अपने दर से ज़िल्लत के साथ न निकाल, इसलिए कि मेरे लिए तेरे दर के सिवा और कोई दर नहीं है जहाँ जाकर मैं पनाह लूँ।’

हज़रत शेख़ सादी (रह०) ने फ़रमाया है—

इलाही बज़िल्लत मरौ अज़ दरम्

कि जुज तू नदारम दे दीगारम  
और हजरत अबू सईद अबुल खैर (रह०) की यह रुबाई (चौकड़ी) भी बहुत  
ही खूब है—

बाज़ आ बाज़ आ हर आन चे हस्ती बाज़ आ  
गर काफ़िर व गिन्न व बुतपरस्ती बाज़ आ,  
ई दर गहे मादर गहे नौमीदी नीस्त,  
सद बार अंगर तौबा शिकस्ती बाज़ आ ।

(पलट आ खुदा की तरफ़, फिर पलट आ तू जो कुछ और जैसा  
कुछ भी है, खुदा की तरफ़ पलट आ । अगर तू काफ़िर, आतिशपरस्त  
और बुतपरस्त है तब भी खुदा की तरफ़ पलट आ ।

हमारा यह दरबार मायूसी और नाउम्मीदी का दरबार नहीं है, अगर  
तूने सौ बार भी तौबा कर के तोड़ दी है तब भी पलट आ ।)

खुदा को सबसे ज़्यादा खुशी जिस चीज़ से होती है वह बन्दे की तौबा है ।  
तौबा का मतलब है पलटना, रुजू होना । बन्दा जब फ़िक्र व ज़ब्बात की गुमराही  
में पड़कर गुनाहों के दलदल में फँसता है तो वह खुदा से बिछुड़ता है और बहुत  
दूर जा पड़ता है गोया वह खुदा से गुम हो गया और जब वह फिर पलटता है  
और शर्मिंदा होकर खुदा की तरफ़ मुतवज्जोह होता है तो यूँ समझिए कि गोया  
खुदा को अपना गुम हुआ बन्दा फिर मिल गया । इस पूरी हालत को नबी (सल्ल०)  
ने बड़ी ज़ोरदार मिसाल में यूँ बयान फ़रमाया है—

“अगर तुममें से किसी आदमी का ऊँट एक चटयल मैदान में गुम  
हो गया और उस आदमी का खाने-पीने का सामान भी उसी गुम होनेवाले  
ऊँट पर लदा हुआ हो और वह आदमी चारों ओर उस चटयल मैदान  
में अपने ऊँट को ढूँढ-ढूँढकर मायूस हो चुका हो, फिर वह ज़िन्दगी से  
निराश होकर किसी पेड़ के नीचे मौत के इन्तिज़ार में लेट रहा हो, ठीक  
इसी हालत में वह अपने ऊँट को सारे सामान से लदा हुआ अपने पास  
खड़ा देखे, तो सोचो तो उसको कैसी कुछ खुशी होगी! तुम्हारा पालनहार  
उस आदमी से भी कहीं ज़्यादा उस वक़्त खुश होता है जब तुममें से  
कोई भटका हुआ बन्दा उसकी ओर फिर पलटता है और गुमराही के बाद  
फिर वह फ़रमाँबरदारी की रविश इख्तियार करता है ।” (तिरमिज़ी)

एक मौक़े पर कुछ लड़ाई के कैदी गिरफ़्तार होकर आए । उनमें एक औरत  
भी थी जिसका दूध पीता बच्चा छूट गया था । वह ममता की मारी ऐसी बेक्रार

थी कि जिस छोटे बच्चे को पा लेती तो अपनी छाती से लगाकर दूध पिलाने लगती । उस औरत का यह हाल देखकर नबी (सल्ल०) ने सहाबा (रजि०) से पूछा. “क्या तुम उम्मीद कर सकते हो कि यह माँ अपने बच्चे को खुद अपने हाथों आग में फेंक देगी ?” सहाबा ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! खुद फेंकना तो दूर की बात, वह अगर गिरता हो तो भी यह जान की बाज़ी लगाकर उसको बचाएंगी ।” उसपर नबी (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया—

“खुदा अपने बन्दों पर इससे भी ज्यादा रहीम और मेहरबान है. जितनी यह माँ अपने बच्चे पर मेहरबान है ।”

8. तौबा और इसतिगफ़ार बराबर करते रहिए । सुबह से शाम तक इनसान से न मालूम कितनी खताएँ होती रहती हैं और कभी-कभी खुद इनसान को इनका एहसास भी नहीं हो पाता । यह न सोचिए कि कोई बड़ा गुनाह हो जाने पर ही तौबा की ज़रूरत है । इनसान हर वक़्त ही तौबा व इसतिगफ़ार का मुहताज है और क़दम-क़दम पर उससे कोताहियाँ होती रहती हैं । खुद नबी (सल्ल०) दिन में सत्तर-सत्तर बार और सौ-सौ बार तौबा व इसतिगफ़ार फरमाते थे । (बुखारी, मुस्लिम)

9. जो गुनाहगार तौबा करके अपनी ज़िन्दगी को सुधार ले उसको कभी हकीर न समझिए । हज़रत इमरान बिन हुसैन (रजि०) रिसालत के दौर का एक वाकिआ बयान फरमाते हैं कि कबीला जुहैना की एक औरत नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुई जो बदकारी के नतीजे में गर्भवती हो गई थी । कहने लगी, “ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं ज़िनाकारी की सज़ा की हक़दार हूँ, मुझपर शरई हद कायम कीजिए और मुझे सज़ा दीजिए ।” नबी (सल्ल०) ने उस औरत के वली को बुलाया और उससे कहा, “तुम उसके साथ अच्छा सुलूक करते रहो और जब उसका बच्चा पैदा हो जाए तो उसको मेरे पास लेकर आना ।” विलादत के बाद जब वह औरत आई तो आपने हुक़म दिया कि उसके कपड़े उसके जिस्म से बाँध दिए जाएँ । (ताकि संगसार होते वक़्त खुल न जाएँ और बेपरदगी न हो) । फिर उसको संगसार करने का हुक़म दिया और वह संगसार कर दी गई । फिर नबी अकरम (सल्ल०) ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी तो हज़रत उमर (रजि०) ने नबी (सल्ल०) से कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! आप इसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ रहे हैं, यह तो बदकारी कर चुकी है ।” इसपर नबी (सल्ल०) ने फरमाया, “इसने तौबा कर ली और ऐसी तौबा की कि अगर इसकी तौबा मदीने के सत्तर आदमियों पर तक़सीम कर दी जाए तो सबकी निजात के लिए काफ़ी हो जाए । तुमने उससे अफ़ज़ल किसी को देखा है जिसने अपनी जान खुदा के हुज़ूर पेश कर दी ।”

10. सय्यिदुल इसतिगफ़ार का एहतिमाम कीजिए । नबी (सल्ल०) ने हज़रत

शहाद बिन औस (रज़ि०) को बताया कि सय्यिदुल इसतिगाफ़ार यानी सबसे उम्दा दुआ यह है—

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِىْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ  
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ  
عَلٰى وَاَبُوْءُ بِذَنْبِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ. (بخاری-ترمذی)

अल्लाहुम-म अन-त रब्बि ला इला-ह इल्ला अन-त खलक-तनी व अना  
अब्दु-क व अना अला अहदि-क व वअदि-क मस-त-तअतु अऊजुबि-क  
मिन शरि मा स-नअतु अबू-उ-ल-क बिनिअ-मति-क अलय-य व अबू-उ  
बिजम्बी फ़ाग़फ़िरली फ़इन-नहू ला यग़फ़िरुज्जुनू-ब इल्ला अन-त ।

“ऐ खुदा ! तू मेरा परवरदिगार है, तेरे सिवा कोई और माबूद नहीं ।  
तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ । और मैंने तुझसे बन्दगी और  
इताअत का जो अहद किया है, उसपर अपने बस भर कायम रहूँगा और  
जो गुनाह भी मुझसे हो जाए उसके बुरे नतीजों से बचने के लिए मैं तेरी  
पनाह का तालिब हूँ, तूने मुझे जिन-जिन नेमतों से नवाज़ा है उनका मैं  
इकरार करता हूँ और मैं मानता हूँ कि गुनाहगार हूँ, अतः ऐ मेरे परवरदिगार !  
मेरे जुर्म को माफ़ फ़रमा दे, तेरे सिवा मेरे गुनाहों को और कौन माफ़  
करनेवाला है ।” (बुख़ारी, तिरमिज़ी)

## 41. दुआ के आदाब

1. दुआ सिर्फ़ खुदा से माँगिए, उसके सिवा कभी किसी को ज़रूरत के पूरा करने के लिए न पुकारिए । दुआ इबादत का जौहर है और इबादत का हक़दार तनहा खुदा है ।

कुरआन पाक का इरशाद है—

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٌ كَفَيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِالْغِيْثِ وَمَا دَعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝ (الرعد: 14)

“उसी को पुकारना बरहक़ है और ये लोग उसको छोड़कर जिन हस्तियों को पुकारते हैं, वे उनकी दुआओं का कोई जवाब नहीं दे सकते । उनको पुकारना तो ऐसा है जैसे कोई आदमी अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैलाकर चाहे कि पानी (दूर ही से) उसके मुँह में आ पहुँचे, हालाँकि पानी उस तक कभी नहीं पहुँच सकता । बस उसी तरह काफ़िरों की दुआएँ बेनतीजा भटक रही है ।” (कुरआन, 13:14)

यानी ज़रूरतें पूरी करनेवाला और सबका करता-धरता खुदा ही है । उसी के हाथ में तमाम इख्तियार हैं, उसके सिवा किसी के पास कोई इख्तियार नहीं, सब उसके मुहताज हैं, उसके सिवा कोई नहीं जो बन्दों की पुकार सुने और उनकी दुआओं का जवाब दे ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

“इनसानो ! तुम सब अल्लाह के मुहताज हो, अल्लाह ही है जो गनी और बेनियाज़ और अच्छी खूबियोंवाला है ।” (कुरआन, 35:15)

नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि खुदा ने फ़रमाया है—

“मेरे बन्दो ! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म हराम कर लिया है, तुम भी एक-दूसरे पर ज़ुल्म व ज़्यादती को हराम समझो । मेरे बन्दो ! तुममें से हर एक गुमराह है, सिवाए उसके जिसको मैं हिदायत दूँ, अतः तुम मुझी से हिदायत तलब करो कि मैं तुम्हें हिदायत दूँ । मेरे बन्दो ! तुममें से हर एक भूखा



है सिवाए उस आदमी के जिसको मैं खिलाऊँ, अतः तुम मुझी से रोज़ी माँगो. तो मैं तुम्हें रोज़ी दूँ। मेरे बन्दो ! तुममें से हर एक नंगा है, सिवाए उसके जिसको मैं पहनाऊँ. अतः मुझी से लिबास माँगो मैं तुम्हें पहनाऊँगा। मेरे बन्दो ! तुम रात में भी गुनाह करते हो और दिन में भी और मैं शोरे गुनाह माफ़ कर दूँगा।” (मुस्लिम)

और आप (सल्ल०) ने यह भी इश़ाद फ़रमाया है कि आदमी को अपनी सारी ज़रूरतें खुदा ही से माँगनी चाहिएँ यहाँ तक कि अगर जूती का फ़ीता भी टूट जाए तो खुदा ही से माँगे और अगर नमक की ज़रूरत हो तो वह भी उसी से माँगे। (तिरमिज़ी)

मतलब यह है कि इन्सान को अपनी छोटी से छोटी ज़रूरत के लिए भी खुदा ही की तरफ़ मुतवज्जोह होना चाहिए। उसके सिवा न कोई दुआओं का सुननेवाला है और न कोई मुरादें पूरी करनेवाला है।

2. खुदा से वही कुछ माँगिए जो हलाल और पाक हो। नाजायज़ मक़सदों और गुनाह के कामों के लिए खुदा के हुज़ूर हाथ फैलाना इन्तिहाई दर्जे की बेअदबी, बेहयाई और गुस्ताखी है। हराम और नाजायज़ मुरादों के पूरा होने के लिए खुदा से दुआएँ करना और मन्नतें मानना दीन के साथ बहुत बुरे किस्म का मज़ाक़ है। इसी तरह उन बातों के लिए भी दुआ न माँगिए जो खुदा ने हमेशा के लिए तय फ़रमा दी हैं और जिनमें तबदीली नहीं हो सकती, जैसे—कोई पस्ता क़द (ठिगना) इन्सान अपने क़द के लम्बा होने की दुआ करे या कोई ग़ैर मामूली लम्बे क़द का आदमी क़द के पस्त होने की दुआ करे या कोई दुआ करे कि मैं हमेशा जवान हूँ, कभी बुढ़ापा न आए, वग़ैरह।

क़ुरआन का इश़ाद है—

وَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا دَعْوَةَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينِ ۚ (اعراف: २९)

“और हर इबादत में अपना रुख ठीक उसी की ओर रखो और उसी को पुकारो, उसके लिए अपनी इताअत को खालिस करते हुए।”

(क़ुरआन, 7:29)

खुदा के हुज़ूर अपनी ज़रूरतें रखनेवाला नाफ़रमानी की राह पर चलते हुए नाजायज़ मुरादों के लिए दुआएँ न माँगे, बल्कि अच्छा किरदार और पाकीज़ा जज़्बों को पेश करते हुए नेक मुरादों के लिए खुदा के हुज़ूर अपनी दरखास्त रखे।

3. दुआ गहरे इख़लास और पाकीज़ा नीयत से माँगिए और इस यक़ीन के साथ माँगिए कि जिस खुदा से आप माँग रहे हैं, वह आपके हालात का पूरा-पूरा यक़ीनी

इल्म भी रखता है । आप पर इन्तिहाई मेहरबान भी है और वही है जो अपने बन्दों की पुकार सुनता है और उनकी दुआएँ क़बूल करता है । दिखावा, नुमाइश, धोखादेही और शर्क के हर पहलू से अपनी दुआओं को अलग रखिए ।

कुरआन में है—

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ (المؤمن)

“अतः अल्लाह को पुकारो उसके लिए अपनी इताअत को खालिस करते हुए ।”  
(कुरआन, 40:14)

और सूरा बकरा में है—

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۚ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۚ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ (البقرة: 186)

“और ऐ रसूल (सल्ल०) ! जब आप से मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें, तो उन्हें बता दीजिए कि मैं उनके करीब ही हूँ । पुकारनेवाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ को क़बूल करता हूँ । इसलिए उन्हें मेरी दावत क़बूल करनी चाहिए और मुझपर ईमान लाना चाहिए, ताकि वे सीधे रास्ते पर चलें ।”  
(कुरआन, 2:186)

4. दुआ पूरी तवज्जोह, एकसूई और दिल लगाकर माँगिए और खुदा से अच्छी उम्मीद रखिए । अपने गुनाहों के ढेर पर निगाह रखने के बजाए खुदा की बेपनाह माफ़ी, मेहरबानी और बेहद वहिसाब कैयाज़ी पर नज़र रखिए । उस आदमी की दुआ हकीकत में दुआ ही नहीं है जो गाफ़िल और लापरवाह हो और ला उबालीपन के साथ सिर्फ़ ज़बान की नोक से कुछ लफ़्ज़ बेदिली के साथ अदा कर रहा हो और खुदा से खुशगुमान न हो ।

हदीस में है—

“अपनी दुआओं के क़बूल होने का यक़ीन रखते हुए (दिल की गहराई से) दुआ कीजिए । खुदा ऐसी दुआ को क़बूल नहीं करता जो गाफ़िल और बेपरवाह दिल से निकली हो ।”  
(तिरमिज़ी)

5. दुआ इन्तिहाई आजिज़ी और गिड़गिड़ाहट के साथ माँगिए । गिड़गिड़ाहट से मुराद यह है कि आपका दिल खुदा की हैबत और अज़मत व जलाल से काँप रहा हो और जिस्म की ज़ाहिरी हालत पर भी खुदा का डर पूरी तरह ज़ाहिर हो,

सिर और निगाहें झुकी हुई हों, आवाज़ पस्त हो, आँखें नम हों और तमाम तौर-तरीकों से मिस्कीनी और बेकसी ज़ाहिर हो रही हो ।

नबी (सल्ल०) ने एक आदमी को देखा कि वह नमाज़ के दौरान अपनी दाढ़ी के बालों से खेल रहा है तो आपने फ़रमाया, “अगर उसके दिल में गिड़गिड़ाहट होती तो उसके जिस्म पर भी कपकपाहट होती ।”

असल में दुआ माँगते वक़्त आदमी को इस विचार से काँपना चाहिए कि मैं एक मुहताज़ फ़क़ीर, बेसहारा मिस्कीन हूँ । अगर खुदा-न-खास्ता मैं इस दर से ठुकरा दिया गया तो फिर मेरे लिए कहीं कोई ठिकाना नहीं । मेरे पास अपना कुछ नहीं है, जो कुछ मिला है, खुदा से ही मिला है और अगर खुदा न दे तो दुनिया में कोई दूसरा नहीं है जो मुझे कुछ दे सके । खुदा ही हर चीज़ का वारिस है, उसी के पास हर चीज़ का ख़ज़ाना है । बन्दा तो सिर्फ़ फ़क़ीर और आजिज़ है ।

क़ुरआन पाक में हिदायत है—

اَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا ۝

“अपने पालनहार को आजिज़ी और गिड़गिड़ाहट के साथ पुकारो ।”

(क़ुरआन, 7:55)

बन्दगी की शान ही यही है कि बन्दा अपने पालनहार को बड़ी आजिज़ी और गिड़गिड़ाहट के साथ पुकारे और उसका दिल व दिमाग़, सोच-विचार, भावनाएँ और सारे अंग उसके हुज़ूर झुके हुए हों और उसके ज़ाहिर व बातिन की पूरी हालत से ज़रूरत और फ़रियाद टपकी पड़ रही हो ।

6. दुआ चुपके-चुपके धीमी आवाज़ में माँगिए । खुदा के हुज़ूर गिड़गिड़ाइए लेकिन इस गिड़गिड़ाहट की नुमाइश हरगिज़ न कीजिए । बन्दे की आजिज़ी इनकिसारी और फ़रियाद सिर्फ़ खुदा के सामने होना चाहिए ।

बेशक कभी-कभी दुआ ज़ोर-ज़ोर से भी कर सकते हैं, लेकिन या तो तनहाई में ऐसा कीजिए या फिर जब इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ करा रहे हों तो उस वक़्त बुलन्द आवाज़ से दुआ कीजिए, ताकि दूसरे लोग ‘आमीन’ कहें । आम हालात में ख़ामोशी के साथ, पस्त आवाज़ में दुआ कीजिए और इस बात का पूरा-पूरा एहतिमाम कीजिए कि आपकी गिरया व ज़ारी और फ़रियाद बन्दों को दिखाने के लिए हरगिज़ न हो ।

وَ اذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ

بِالْغَدُوِّ وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ○ (الأعراف: ٢٠٥)

“और अपने रब को दिल ही दिल में जारी और खौफ़ के साथ याद किया करो और ज़बान से भी, हल्की आवाज़ से भी, सुबह व शाम याद करो और उन लोगों में से न हो जाओ जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।”

(कुरआन, 7:205)

हज़रत ज़करीया (अलै०) की शाने बन्दगी की तारीफ़ करते हुए कुरआन में कहा गया है—

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ○ (مریم: ٣)

“जब उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा।” (कुरआन, 19:3)

7. दुआ करने से पहले कोई नेक अमल कीजिए, जैसे— कुछ सद्का व खैरात कीजिए, किसी भूखे को खाना दीजिए या नफ़ली नमाज़ और रोज़ों का एहतिमांम कीजिए और अगर खुदा-न-ख्वास्ता किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाएँ तो अपने आमाल का वासता देकर दुआ कीजिए, जो आपने पूरे इख़लास के साथ सिर्फ़ खुदा के लिए किए हों।

कुरआन में है—

إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ○ (الطّٰه: ١٠)

“उसी की ओर पाकीजा कलिमे चढ़ते हैं और नेक अमल उन्हें ऊँचे दर्जे तय कराते हैं।”

(कुरआन, 35:10)

नबी (सल्ल०) ने एक बार तीन ऐसे लोगों का वाकिआ सुनाया जो एक अंधेरी रात में एक गुफा के भीतर फँस गए थे। उन लोगों ने अपने खुलूस-भरे अमल का वास्ता देकर खुदा से दुआ की और खुदा ने उनकी मुसीबत को दूर फ़रमा दिया।

वाकिआ यह हुआ कि तीन साथियों ने एक रात एक गुफा में पनाह ली। खुदा का करना, पहाड़ से एक चट्टान फिसलकर गुफा के मुँह पर आ पड़ी और गुफा बन्द हो गई। भारी-भरकम चट्टान थी। भला उनके बस में कहाँ था कि उसको हटाकर गुफा का मुँह खोल दें। मशविरा यह हुआ कि अपनी-अपनी जिन्दगी के खुलूस-भरे अमल का वास्ता देकर खुदा से दुआ की जाए, क्या अजब कि खुदा सुन ले और इस मुसीबत से निजात मिल जाए। चुनाँचे एक ने कहा कि मैं जंगल में बकरियाँ चराया करता था और उसी पर मेरा गुज़ारा था। जब मैं जंगल से

वापस आता तो सबसे पहले अपने बूढ़े माँ-बाप को दूध पिलाता और फिर अपने बच्चों को । एक दिन मैं देर में आया, बूढ़े माँ-बाप सो चुके थे, बच्चे जाग रहे थे और भूखे थे, लेकिन मैंने यह गवारा न किया कि माँ-बाप से पहले बच्चों को पिलाऊँ और यह भी गवारा न किया कि माँ-बाप को जगाकर तकलीफ पहुँचाऊँ । चुनौच मैं रात भर दूध का प्याला लिए उनके सिरहाने खड़ा रहा । बच्चे मेरे पैरों में चिमट-चिमटकर रोते रहे, लेकिन मैं सुबह तक उसी तरह खड़ा रहा ।

ऐ खुदा ! मैंने यह अमल खालिस तेरे लिए किया । तू उसकी बरकत से गुफा के मुँह से चट्टान हटा दे और चट्टान इतनी हट गई कि आसमान नज़र आने लगा ।

दूसरे ने कहा कि मैंने कुछ मजदूरों से काम लिया और सबको मजदूरी दे दी, लेकिन एक आदमी अपनी मजदूरी छोड़कर चला गया । कुछ दिनों के बाद जब वह मजदूरी लेने आया तो मैंने उससे कहा कि ये गायें, ये बकरियाँ और ये नौकर-चाकर सब तुम्हारे हैं, ले जाओ । वह बोला, “खुदा के लिए मज़ाक न करो ।” मैंने कहा, “मज़ाक नहीं, वाकई यह सब कुछ तुम्हारा है । तुम जो रकम छोड़कर गए थे मैंने उसको कारोबार में लगाया । खुदा ने उसमें बरकत दी और यह जो कुछ तुम देख रहे हो सब उसी से हासिल हुआ है, यह तुम इतमीनान के साथ ले जाओ, सब कुछ तुम्हारा है ।” वह आदमी सब कुछ लेकर चला गया ।

“ऐ खुदा ! यह मैंने सिर्फ तेरी रिज़ा के लिए किया । ऐ खुदा ! तू उसकी बरकत से गुफा के मुँह से इस चट्टान को दूर फ़रमा दे ।” खुदा के करम से चट्टान और हट गई ।

तीसरे ने कहा : मेरी एक चचेरी बहन थी जिससे मुझको ग़ैर-मामूली मुहब्बत हो गई थी । सख़्त ज़रूरत पड़ने पर उसने कुछ रकम माँगी । मैंने इस शर्त पर रकम मुहैया कर दी कि वह मेरी ख़ाहिश पूरी करे । लेकिन जब मैंने अपनी ख़ाहिश पूरी करनी चाही तो उसने कहा, खुदा से डरो और इस काम से बाज़ रहो । मैं फ़ौरन रुक गया और मैंने वह रकम भी उसको बख़्श दी । ऐ खुदा ! तू ख़ूब जानता है कि मैंने यह सब सिर्फ तेरी खुशनूदी के लिए किया । ऐ खुदा ! तू उसकी बरकत से गुफा के मुँह को खोल दे ।” खुदा ने गुफा के मुँह से चट्टान हटा दी और तीनों को खुदा ने उस मुसीबत से निजात बख़्शी ।

8. नेक मकसदों के लिए दुआ करने के साथ-साथ अपनी ज़िन्दगी को खुदा की हिदायत के मुताबिक़ सँवारने और सुधारने की भी कोशिश कीजिए । गुनाह और हराम से पूरी तरह परहेज़ कीजिए । हर काम में खुदा की हिदायत का पास व लिहाज़ कीजिए और परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारिए । हराम खाकर, हराम पीकर,

हराम पहनकर और बेबाकी के साथ हराम के माल से अपने जिस्म को पालकर दुआ करनेवाला यह आरजू करे कि मेरी दुआ कबूल हो तो यह ज़बरदस्त नादानी और ढिठाई है। दुआ को क़ाबिले क़बूल बनाने के लिए ज़रूरी है कि आदमी की कथनी-करनी भी दीन की हिदायत के मुताबिक़ हो।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा पाकीज़ा है और वह सिर्फ़ पाकीज़ा माल ही को क़बूल करता है और खुदा ने ईमानवालों को उसी बात का हुक्म दिया है, जिसका उसने रसूलों को हुक्म दिया है। चुनाँचे उसने फ़रमाया है—

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوْا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ

“ऐ रसूलो ! पाकीज़ा रोज़ी खाओ और नेक अमल करो।”

और ईमानवालों को खिताब करते हुए उसने कहा— (क़ुरआन, 23:51)

“ऐ ईमानवालो ! जो हलाल और पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको बख़शी हैं वे खाओ।”

फिर आपने एक ऐसे आदमी का ज़िक्र किया जो लम्बा सफ़र तय करके पाक जगह पर हाज़िरी देता है, धूल में अटा हुआ है और अपने दोनों हाथ आसामान की ओर उठाकर कहता है, “ऐ मेरे रब ! ऐ मेरे रब !” हालाँकि उसका खाना हराम है, उसका पीना हराम है, उसका लिबास हराम है और हराम ही से उसका जिस्म पला है, तो ऐसे बागी और नाफ़रमान आदमी की दुआ क्योंकर क़बूल हो सकती है। (मुस्लिम)

9. बराबर दुआ करते रहिए। खुदा के हुज़ूर अपनी आजिज़ी, इनकिसारी और बन्दगी ज़ाहिर करना खुद एक इबादत है। खुदा ने खुद दुआ करने का हुक्म दिया है और फ़रमाया है कि बन्दा जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी सुनता हूँ। दुआ करने से कभी न उकताइए और इस चक्कर में कभी न पड़िए कि दुआ से तक्रदीर बदलेगी या नहीं। तक्रदीर का बदलना या न बदलना, दुआ का क़बूल करना या न करना खुदा का काम है, जो जाननेवाला और हिकमतवाला है। बन्दे का काम बहरहाल यह है कि वह एक फ़कीर व मुहताज की तरह बराबर उससे दुआ करता रहे और लम्हे भर के लिए भी खुद को बेनियाज़ न समझे।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“सबसे बड़ा आजिज़ वह है जो दुआ करने में आजिज़ है।”

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फरमाया—

“खुदा के नजदीक दुआ से ज्यादा इज्जत व इकरामवाली चीज़ और कोई नहीं है ।”  
(तिरमिज़ी)

मोमिन की शान यह है कि वह रंज व राहत, दुख व सुख, तंगी व खुशहाली और मुसीबत व आराम हर हाल में खुदा ही को पुकारता है । उसी के हुज़ूर अपनी हाजर्तें रखता और बराबर उससे ख़ैर की दुआ करता रहता है ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जो आदमी खुदा से दुआ नहीं करता, खुदा उसपर ग़ज़बनाक (क्रोधित) होता है ।”  
(तिरमिज़ी)

10. दुआ क़बूल होने के मामले में खुदा पर पूरा भरोसा रखिए और अगर दुआ के क़बूल होने के असरात जल्द ज़ाहिर न हो रहे हों तो मायूस होकर दुआ छोड़ देने की ग़लती कभी न कीजिए । दुआ के क़बूल होने की चिन्ता में परेशान होने के बजाए सिर्फ़ दुआ माँगने की चिन्ता कीजिए ।

हज़रत उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं—

“मुझे दुआ क़बूल होने की चिन्ता नहीं है, मुझे सिर्फ़ दुआ माँगने की चिन्ता है । जब मुझे दुआ माँगने की तौफ़ीक़ हो गई तो क़बूल होना भी उसके साथ हो जाएगा ।”

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब कोई मुसलमान खुदा से कुछ माँगने के लिए खुदा की ओर मुँह उठाता है तो खुदा उसका सवाल ज़रूर पूरा करता है, या तो उसकी मुराद पूरी हो जाती है या खुदा उसके लिए माँगी हुई चीज़ को आखिरत के लिए जमा फ़रमा देता है । क़ियामत के दिन खुदा ऐसे मोमिन बन्दे को अपने हुज़ूर तलब फ़रमाएगा और उसको अपने सामने खड़ा करके पूछेगा, ‘ऐ मेरे बन्दे ! मैंने तुझे दुआ करने का हुक्म दिया था और यह वादा किया था कि मैं तेरी दुआ क़बूल करूँगा तो क्या तूने दुआ माँगी थी ?’ वह कहेगा, ‘पालनहार ! माँगी थी ।’ फिर खुदा फ़रमाएगा, ‘तूने मुझसे जो दुआ भी माँगी थी, मैंने वह क़बूल की, क्या तूने फ़लाँ दिन यह दुआ न की थी कि मैं तेरा वह रंज व ग़म दूर कर दूँ जिसमें तू पड़ा हुआ था और मैंने तुझे इस रंज व ग़म से निजात बख़्शी थी ?’ बन्दा कहेगा, “बिलकुल सच है पालनहार” फिर खुदा फ़रमाएगा, “वह दुआ तो मैंने क़बूल करके दुनिया ही में तेरी आरज़ू पूरी कर दी थी और फ़लाँ

दिन फिर तूने दूसरे ग़म में पड़ने पर दुआ की कि ऐ ख़ुदा ! इस मुसीबत से निजात दे, पर तूने इस रंज व ग़म से निजात न पाई और बराबर उसमें पड़ा रहा था ।” वह कहेगा—“बेशक पालनहार !” तो ख़ुदा फ़रमाएगा, “मैंने इस दुआ के बदले जन्नत में तेरे लिए तरह-तरह की नेमतें जमा कर रखी हैं,” और इसी तरह दूसरी ज़रूरतों के बारे में भी मालूम करके यही फ़रमाएगा ।”

फिर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“मोमिन बन्दे की कोई दुआ ऐसी न होगी जिसके बारे में ख़ुदा यह बयान न कर दे कि यह मैंने दुनिया में क़बूल की और यह तुम्हारी आखिरत के लिए जमा करके रखी । उस वक़्त मोमिन बन्दा सोचेगा, काश ! मेरी कोई भी दुआ क़बूल न होती, इसलिए बन्दे को हर हाल में दुआ माँगते रहना चाहिए ।” (हाकिम)

11. दुआ माँगते वक़्त ज़ाहिरी आदाब, पाकी और सफ़ाई का भी पूरा-पूरा खयाल रखिए और दिल को भी नापाक जज़्बों (दूषित भावनाओं), गन्दे खयालों और बेहूदा विचारों से پاک रखिए ।

क़ुरआन में है—

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝

“बेशक ख़ुदा के महबूब वे बन्दे हैं जो बहुत ज़्यादा तौबा करते हैं और जो बहुत पाक व साफ़ रहते हैं ।” (क़ुरआन, 2:222)

और क़ुरआन की सूरा मुद्हास्सिर में है—

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ وَتَيَّابَكَ فَطَهِّرْ ۝

“और अपने पालनहार की किबरियाई (बड़ाई) बयान कीजिए और अपने नफ़्स को पाक रखिए ।” (क़ुरआन, 74:2-3)

12. दूसरों के लिए भी दुआ कीजिए लेकिन हमेशा अपनी ज़ात से शुरू कीजिए । पहले अपने लिए माँगिए, फिर दूसरों के लिए । क़ुरआन पाक में हज़रत इबराहीम और हज़रत नूह (अलै०) की जो दुआएँ नक़ूल की गई हैं जिनसे यही सबक़ मिलता है—

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي



وَلِوَالِدَيَّْ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝ (अब्राहम: २५-२६)

रब्बिज अलनी मुक्कीमस्सलाति व मिन ज़ुरीयती, रब्बना व तक्रब्बल दुआ ।  
रब्बनगफिरली व लि-वालिदय-य व लिल मुअ्मिनी-न यौ-म यकूमल  
हिसाब । (कुरआन, 14:40-41)

“ऐ मेरे पालनहार ! मुझे नमाज़ कायम करनेवाला बना और मेरी औलाद  
में से भी (ऐसे लोग उठा जो ये काम करें) । पालनहार ! मेरी दुआ कबूल  
फरमा और मेरे माँ-बाप और सारे मुसलमानों को उस दिन माफ़ फरमा  
दे जबकि हिसाब कायम होगा ।”

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّْ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ  
وَالْمُؤْمِنَاتِ ۝ (نوح)

रब्बिग फ़िरली व लिवालि-दय-य व लिमन द-ख-ल बैति-य मुअ्मिनव  
व लिल मुअ्मिनी-न वल मुअ्मिनात । (कुरआन, 71:28)

“मेरे पालनहार ! मेरी मगफ़िरत फ़रमा और मेरे माँ-बाप की मगफ़िरत  
फ़रमा और उन ईमानवालों की मगफ़िरत फ़रमा जो ईमान लाकर मेरे घर  
में दाखिल हुए और सारे ही ईमानवाले मर्दों और औरतों की मगफ़िरत  
फ़रमा ।”

हज़रत उबई बिन काब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) जब किसी आदमी  
का ज़िक्र फ़रमाते तो उसके लिए दुआ करते और दुआ अपनी ज़ात से शुरू करते ।  
(तिरमिज़ी)

13. अगर आप इमामत कर रहे हों तो हमेशा ज़ामेअ दुआएँ माँगिए और बहुवचन  
का इस्तेमाल किया कीजिए । कुरआन पाक में जो दुआएँ नक्कल की गई हैं उनमें  
आमतौर से बहुवचन का इस्तेमाल किया गया है । इमाम असल में सब मुक्तदियों  
का नुमाइन्दा है । जब वह बहुवचन में दुआ माँगे तो मुक्तदियों को चाहिए कि  
वे ‘आमीन’ कहते जाएँ ।

14. दुआ में तंगनज़री और खुदागरज़ी से भी बचिए और खुदा की आम रहमत  
को महदद (सीमित) समझने की ग़लती करके उसकी मेहरबानी को अपने लिए  
खास करने की दुआ न कीजिए ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी में एक बददू आया ।

उसने नमाज़ पढ़ी, फिर दुआ माँगी और कहा, “ऐ खुदा ! मुझपर और मुहम्मद (सल्ल०) पर रहम फ़रमा और हमारे साथ किसी और पर रहम न फ़रमा”, तो नबी अकरम (सल्ल०) ने फ़रमाया—

لَقَدْ تَحَجَّرَتْ وَاسِعًا.

“तूने खुदा की कैली हुई रहमत को तंग कर दिया ।” (बुखारी)

15. दुआ सादे अंदाज़ में गिड़गिड़ाकर माँगिए । गाने और सुर मिलाने से बचिए । अलबता अगर बग़ैर किसी तकल्लुफ़ के कभी ज़बान से ऊँचे लफ़्ज़ निकल जाएँ या ग़लती से कुछ छूट जाए तो कोई हरज नहीं है । नबी (सल्ल०) से भी कुछ दुआएँ ऐसी नक़ल की गई हैं जिनमें ऊँचे लफ़्ज़ों का इस्तेमाल हुआ है । जैसे आपकी एक बहुत ही ज़ामेअ दुआ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि०) से नक़ल की गई है—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَنَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَعِلْمٍ لَا يَنْفَعُ  
وَدَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا.

अल्लाहुम-म इन-नी अ-ऊज़ुबि-क मिन क़लबिल ला यख-शउ व नफ़सिल ला तश-बउ व इलमिल ला यन-फ़उ, व दअवतिल ला युस्तज़ाबु लहा ।

“ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह में आता हूँ उस दिल से जिसमें नर्मी न हो, उस नफ़स से जिसमें सब्र न हो; उस इल्म से जो नफ़ा न देनेवाला हो और उस दुआ से जो कबूल न हो ।”

16. खुदा के दरबार में अपनी ज़रूरत और हाज़त रखने से पहले उसकी हम्द व सना कीजिए । फिर दो रक़अत नफ़ल पढ़ लीजिए और दुआ के शुरू और आखिर में नबी (सल्ल०) पर दरूद पढ़ने का भी एहतिमाम कीजिए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“जब किसी आदमी को खुदा या किसी इनसान से ज़रूरत व हाज़त पूरी करने का मामला सामने हो तो उसको चाहिए कि पहले वुज़ू करके दो रक़अत नमाज़ पढ़े और फिर खुदा की हम्द व सना करे और नबी (सल्ल०) पर दरूद व सलाम भेजे । (इसके बाद खुदा की बारगाह में अपनी ज़रूरत बयान करे) ।” (तिरमिज़ी)

नबी (सल्ल०) की गवाही है कि बन्दे की जो दुआ खुदा की हम्द व सना और नबी (सल्ल०) पर दरूद व सलाम के साथ पहुँचती है, वह क़बूल हो जाती है। हज़रत फुज़ाला (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे कि एक आदमी आया, उसने नमाज़ पढ़ी और नमाज़ के बाद कहा, “ऐ अल्लाह ! मेरी माग़फ़िरत फ़रमा ।”

आपने यह सुनकर उससे कहा, “तुमने दुआ माँगने में जल्दबाज़ी से काम लिया। जब नमाज़ पढ़कर बैठो तो पहले खुदा की हम्द व सना करो, फिर दरूद शरीफ़ पढ़ो, फिर दुआ माँगो।” आप यह फ़रमा ही रहे थे कि दूसरा आदमी आया और उसने नमाज़ पढ़कर खुदा की हम्द बयान की, दरूद शरीफ़ पढ़ा। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अब दुआ माँगो, दुआ क़बूल होगी।” (तिरमिज़ी)

17. खुदा से हर वक़्त दुआ माँगते रहिए, इसलिए कि वह अपने बन्दों की फ़रियाद सुनने से कभी नहीं उकताता, लेकिन हदीस से मालूम होता है कि कुछ खास वक़्त और हालतें ऐसी हैं जिनमें खुसूसियत के साथ दुआएँ जल्द क़बूल होती हैं, इसलिए इन खास वक़्तों और हालतों में दुआओं का भी खास एहतिमाम कीजिए—

(i) रात के पिछले हिस्से के सन्नाटे में, जब आम तौर पर लोग मीठी नींद के मजे में मस्त पड़े होते हैं। जो बन्दा उठकर अपने ख़ब से राज़ व नियाज़ की बातें करता है और मिस्कीन बनकर अपनी ज़रूरतें उसके सामने रखता है तो वह खास करम फ़रमाता है।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा हर रात को दुनिया के आसमान पर पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर होता है यहाँ तक कि रात का पिछला हिस्सा बाक़ी रह जाता है तो फ़रमाता है : कि कौन मुझे पुकारता है कि मैं उसकी दुआ क़बूल करूँ; कौन मुझसे माँगता है कि मैं उसको अता करूँ और कौन मुझसे माग़फ़िरत चाहता है कि मैं उसे माफ़ करूँ।” (तिरमिज़ी)

(ii) शबे क़द्र में ज़्यादा से ज़्यादा दुआ कीजिए कि यह रात खुदा के नज़दीक एक हज़ार महीनों से ज़्यादा बेहतर है। और यह दुआ खास तौर पर पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تَحِبُّ الْعَفْوَ فَاَعْفُ عَنِّيْ.

अल्लाहुम-म इन्न-क अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ़-व फ़अफ़ु अन्नी ।

“ऐ खुदा ! तू बहुत ज़्यादा माफ़ करनेवाला है, माफ़ करने को पसन्द करता है, अतः तू मुझे माफ़ फ़रमा दे ।” (तिरमिज़ी)

(iii) अरफ़ात के मैदान में जब 9 ज़िलहिज्जा को ख़ुदा के मेहमान जमा होते हैं । (तिरमिज़ी)

(iv) जुमा की ख़ास साअत में जो जुमा का ख़ुतबा शुरू होने से नमाज़ के ख़त्म होने तक है या अम्र की नमाज़ के बाद से मग़रिब की नमाज़ तक है ।

(v) अज़ान के वक़्त और जिहाद के मैदान में जब मुजाहिदों की लाइनें ठीक की जा रही हों ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“दो चीज़ें ख़ुदा के दरबार से रद्द नहीं की जाती— एक अज़ान के वक़्त की दुआ, दूसरी जिहाद (में लाइनें ठीक करते वक़्त) की दुआ ।”

(अबू दाऊद)

(vi) अज़ान और तकबीर के दरमियान में ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“अज़ान और इक़ामत के बीच के वक़्त की दुआ रद्द नहीं की जाती ।”

सहाबा किराम ने मालूम किया, “ऐ अल्लाह के रसूल ! इस बीच क्या दुआ माँगा करें ?”

फ़रमाया, “यह दुआ माँगा करो—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ .

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुकल अफ़-व वल आफ़ि-य-त फ़िददुनया वल आखिरह ।

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे माफ़ी, मेहरबानी, आफ़ियत और सलामती माँगता हूँ, दुनिया में भी और आखिरत में भी ।”

(vii) रमज़ान के मुबारक दिनों में, ख़ास तौर से इफ़तार के वक़्त ।

(बज़ज़ार)

(viii) फ़र्ज नमाज़ों के बाद चाहे आप तनहा दुआ करें या इमाम के साथ । (तिरमिज़ी)

(ix) सज्दे की हालत में । नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“सज्दे की हालत में बन्दा अपने रब से बहुत ही करीब हो जाता है, अतः तुम इस हालत में ख़ूब-ख़ूब दुआ माँगा करो ।”

(x) जब आप किसी बड़ी मुसीबत या इतिहाई रंज व गम में हों । (हाकिम)

(xi) जब जिक्र व फिक्र की कोई दीनी मज्लिस हो । (बुखारी, मुस्लिम)

(xii) जब कुरआन पाक खत्म किया जाए । (तबरानी)

18. इन जगहों पर भी दुआ का खास एहतिमाम कीजिए । हज़रत हसन बसरी (रह०) जब मक्का से बसरा जाने लगे तो आपने मक्कावालों के नाम एक खत लिखा जिसमें मक्का में ठहरने की अहमियत और फ़ज़ीलतें बयान कीं और यह भी लिखा कि मक्का में इन जगहों पर खुसूसी तौर पर दुआ क़बूल होती है—

(i) मुलतज़म के पास (ii) मीज़ाब के नीचे (iii) काबा के अन्दर (iv) चाहे ज़मज़म (ज़मज़म के कुएँ) के पास (v) सफ़ा व मरवा पर (vi) सफ़ा व मरवा के पास, जहाँ 'सई' की जाती है । (vii) मक्कामे इबराहीम के पीछे (viii) अरफ़ात में (ix) मुज़दल्फ़ा में, (x) मिना में (xi) तीनों ज़मरात के पास । (हिस्ने हसीन)

19. बराबर कोशिश करते रहिए कि आपको खुदा से दुआ माँगने के लिए दुआ के वही शब्द याद हो जाएँ जो कुरआन पाक और रसूल (सल्ल०) की हदीसों में आए हैं । खुदा ने अपने पैग़म्बरों और नेक बन्दों को दुआ माँगने के जो अन्दाज़ और शब्द बताए हैं, उनसे अच्छे शब्द और अन्दाज़ कोई कहाँ से लाएगा । फिर खुदा के बताए हुए और रसूलों के इख़तियार किए हुए शब्दों में जो असर, मिठास, बरकत, क़बूलियत की शान और व्यापकता हो सकती है वह किसी दूसरे कलाम में कैसे मुमकिन है । इसी तरह नबी (सल्ल०) ने रात दिन जो दुआएँ माँगी हैं उनमें भी तड़प, मिठास, व्यापकता और बन्दगी की ऐसी शान पाई जाती है कि उनसे बेहतर दुआओं, प्रार्थनाओं और आरज़ुओं की बात सोची भी नहीं जा सकती ।

कुरआन व हदीस की बताई हुई दुआओं को बार-बार पढ़िए । उनके शब्दों और मतलबों पर ध्यान देने से सोचने-समझने की यह ट्रेनिंग भी होती है कि मोमिन की तमन्नाएँ और इल्तिजाएँ क्या होनी चाहिएँ, किन कामों में उसकी अपनी ताकतों को खपाना चाहिए और किन चीज़ों को उसे अपना मक़सद बनाना चाहिए ।

बेशक दुआ के लिए किसी भाषा, शैली या शब्दों की कोई कैद नहीं है । बन्दा अपने खुदा से जिस भाषा और जिन शब्दों में जो चाहे माँगे, पर यह खुदा की बड़ी मेहरबानी है कि उसने यह भी बताया कि मुझसे यह माँगो और इस तरह माँगो और दुआओं के शब्दों को तय करके बता दिया कि मोमिन को दीन व दुनिया की कामयाबी के लिए किस तरह सोचना चाहिए और क्या तमन्नाएँ और आरज़ुएँ करनी चाहिए । और फिर दीन व दुनिया की कोई ज़रूरत और भलाई का कोई पहलू ऐसा नहीं जिसके लिए दुआ न सिखाई गई हो । इसलिए बेहतर यही है कि

आप खुदा से कुरआन व सुन्नत के बताए हुए शब्दों ही में दुआ मांगें और उन्हीं दुआओं को बार-बार पढ़ें जो कुरआन में नकूल की गई हैं , या अलग-अलग वक्तों में खुद नबी (सल्ल०) ने मांगी हैं ।

अलबत्ता जब तक आपको कुरआन व सुन्नत की ये दुआएँ याद नहीं हो जातीं, उस वक्त तक के लिए आप कम से कम यही एहतिमाम कीजिए कि अपनी दुआओं में किताब व सुन्नत की बताई हुई दुआओं के मतलब ही को नज़रों के सामने रखें ।

आगे कुरआन पाक और नबी (सल्ल०) की कुछ जामेअ दुआएँ नकूल की जाती हैं । इन मुबारक दुआओं को याद कर लीजिए और फिर इन्हीं को बार-बार पढ़िए ।

## 42. कुरआन की दुआएँ

### रहमत व मगफिरत की दुआ

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ (اعراف)

रब्बना ज़-लम्ना अनफु-स-ना व इल्लम तगफिर लना व तर्हम्ना ल-न-कूनन-न मिनल खासिरिन ।

“ऐ हमारे रब! हमने अपने ऊपर बड़ा जुल्म किया । अगर तू हमारी मगफिरत न फ़रमाए और हम पर रहम न खाए तो हम यकीनन तबाह हो जाएँगे !” (कुरआन, 7:23)

बेशक अगर खुदा इनसान के गुनाहों को माफ न करे और अपनी अपार रहमत से न नवाजे तो वह तबाह हो जाएगा ।

### दोनों दुनिया की कामयाबी की दुआ

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

रब्बना आतिना फ़िद-दुन्या ह-स-न-तवँ व फ़िल आखिरति ह-स-न-तवँ-व किना अज़ाबन्नार । (कुरआन, 2:201)

“ऐ हमारे रब ! हमें दुनिया में भी भलाई दे, और आखिरत में भी भलाई दे और आग के अज़ाब से हमें बचा ।”

### रुत्र और जमाव की दुआ

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

الْكَافِرِينَ ۝ (البقرة: २५०)

रब्बना अफ़रिग़ अलैना सब-रवँ व सब्बित अक्दाम-मना वनसुरना अलल

कौमिल काफ़िरीन ।

(कुरआन, 2:250)

“पालनहार ! हमपर सब्र उंडेल दे और हमारे क़दमों को मज़बूत जमा दे और काफ़िरीं पर विजय दिलाने के लिए हमारी मदद फ़रमा ।”

शैतान की शरारतों से बचे रहने की दुआ

رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنَ ۝ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ  
يَّحْضُرُوْا ۝ (النّٰزِعَات: १८-१९)

रब्बि अऊजु बि-क मिन ह-म-जातिश-शयातीन । व अऊजु बि-क रब्बि  
अय्यहज़रून । (कुरआन, 23:97,98)

“पालनहार ! मैं शैतान की उकसाहटों से तेरी पनाह में आता हूँ, बल्कि  
ऐ मेरे पालनहार ! मैं इससे भी तेरी पनाह चाहता हूँ कि वे मेरे क़रीब  
फटकें ।”

जहन्नम के अज़ाब से बचने की दुआ

رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۚ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۚ وَلَمْ يَكُنْ لَهَا سَاءَاتٌ  
مُّسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ (الفرقان)

रब्ब-नसरिफ अन्ना अज़ा-ब जहन्न-म, इन-न अज़ाबहा का-न गरामा ।  
इन्हा साअत मुस्तक़र्रव-व मुकामा ।

(कुरआन, 25:65-66)

“ऐ हमारे परवरदिगार ! जहन्नम का अज़ाब हमसे फेर दे । बेशक  
उसका अज़ाब तो जान का लागू है । वह बहुत ही बुरा ठिकाना और  
बहुत ही बुरी जगह है ।”

दिल के सुधार की दुआ

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ  
اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ (آل عمران: ८)



रब्बना ला तुजिग कुलू-बना बअ-द इज्र हदेतना व हब लना मिल्लदुन-क  
रह-म-तन इन्न-क अन्तल वहहाब । (कुरआन, 3:8)

“परवरदिगार ! जब तूने हमें सीधी राह पर लगा दिया है तो फिर  
कहीं हमारे दिलों को टेढ़ में न फँसा देना । हमें अपनी ओर से रहमत  
अता फ़रमा कि तू ही हकीक़ी देनेवाला है ।

### दिल की सफ़ाई की दुआ

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًا  
لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ (المؤمن: 10)

रब्बनगफ़िर लना व लि इश्वानिनल्लिअी-न स-ब कूना बिल ईमानी व ला  
तज-अल फ़ी कुलूबिना गिल्लल लिल्लिअी-न आमनू रब्बना इन्न-क  
रऊफ़रहीम । (कुरआन, 59:10)

“पालनहार ! हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा दे और हमारे उन भाइयों के,  
जो हमसे पहले ईमान ले आए हैं । और हमारे दिलों में ईमानवालों के  
खिलाफ़ कपट न पैदा होने दे । हमारे रब बेशक तू बड़ी मुहब्बत करनेवाला  
मेहरबान है ।”

### हालात के सुधार की दुआ

رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝ (البقرة: 10)

रब्बना आतिना मिल्लदुन-क रह-म-तवै व हय्यि लना मिन अमरिना  
र-श-दा । (कुरआन, 18:10)

“पालनहार ! हम पर अपने यहाँ से रहमत उतार और हमारे मामले  
में सुधार (के सामान) जुटा ।”

### इसतिगफ़ार

رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝ (المؤمنون: 9-10)

रब्बना आमन्ना फ़ग़फ़िर लना वरहमना व अन-त खैरुराहिमीन ।

(कुरआन, 23 : 109)

“पालनहार ! हम ईमान लाए, अतः तू हमारी माफ़िरत फ़रमा दे और हम पर रहम कर दे, तू बड़ा ही रहम फ़रमानेवाला है ।

**घर के लोगों की ओर से सुकून की दुआ**

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ

إِمَامًا (الفرقان: ८२)

रब्बना हब लना मिन अज़-वाजिना व ज़ुर्रियातिना कुर-त अअ-युनिव्वं वज-अलना लिल मुत्तक़ी-न इमामा ।

(कुरआन, 25:74)

“पालनहार ! हमें हमारे जोड़ों की ओर से और हमारी औलाद की ओर से आँखों की ठंडक दे और हमको परहेज़गारों ही के लिए मिसाल बना ।”

यानी हमको ऐसी नेक और पाकीज़ा ज़िन्दगी दे कि परहेज़गार लोग हमें अपने लिए नमूना और मिसाल समझें ।

**माँ-बाप के लिए दुआ**

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ○ (الاحقاف: २१)

रब्बनग़फ़िर ली व लिवालिदय-य व लिल मुअ्मिनी-न यौ-म यकूमुल हिसाब ।

(कुरआन, 14:41)

“पालनहार ! मेरी और मेरे माँ-बाप की और तमाम ईमानवालों की उस दिन माफ़िरत फ़रमा, जिस दिन कि हिसाब कायम होगा ।”

**आज़माइश से बचने की दुआ**

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ

عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ إِنَّكَ مُولِنَا فَأَنْصِرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

रब्बना ला तुआखिजना इन नसीना अब अख-तअना रब्बना व ला तहमिल  
अलैना इसरन कमा ह-मल-तहू अलल्लजी-न मिन कब्लिना, रब्बना व ला  
तुहम्मिलना मा ला ता-क-त-लना बिही, वअ-फु अन्ना वगफिर लना,  
वर-हम-ना, अन-त मौलाना फन-सुरना अलल कौमिल काफिरीन ।

(कुरआन, 2:286)

“ऐ हमारे परवरदिगार ! हमसे भूलचूक में जो कुसूर हो जाएँ, उनकी  
पकड़ न कर । मालिक ! हमपर वह बोझ न डाल जो तूने हमसे पहले  
लोगों पर डाले थे । पालनहार ! जिस बोझ को उठाने की ताकत हममें  
नहीं है, वह हमपर न रख । हमारे साथ नर्मी कर, हम से दरगुजर फरमा,  
हमपर रहम कर ! तू हमारा मौला है, कुफ्र करनेवालों के मुकाबले में  
हमारी मदद फरमा ।”

कुफ्रवालों से निजात की दुआ

عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ  
مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

अलल्लाहि त-वक्कलना रब्बना ला तज-अलना फित-न-तल  
लिल-कौमिज्जालिमीन । व नज्जिना बिरहमति-क मिनल कौमिल काफिरीन ।  
(कुरआन, 10:85,86)

“हमने खुदा ही पर भरोसा किया । ऐ हमारे रब ! हमें ज़ालिम लोगों  
के लिए फितना न बना और अपनी रहमत से हमको काफिरों से निजात  
दे ।”

भलाई पर खातमे की दुआ

فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِمَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا  
وَالْحَقِّي بِالصَّلَاحِينَ ۝ (يوسف: 101)

फ़ातिरस्समावाति वल अर-ज़ि अन-त वलीयी फ़िद-दुनया वल आखिरति

त-वफ़रुनी मुस्लिमैव-व अल-हिक्नी बिस्सालिहीन । (कुरआन, 12:101)

“ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले ! तू ही मेरा बली और कारसाज है, दुनिया और आखिरत में । मेरा खातमा इस्लाम पर फ़रमा और मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा ।”

رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا  
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ رَبَّنَا وَآتِنَا مَا  
وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسْلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ

الْمِيعَادَ ○ (آل عمران: 193-194)

रब्बना इन्नना समिअ-ना मुनादिय्युनादी लिल ईमानि अन् आमिन्  
बिरब्बिकुम फ़आमन्ना, रब्बना फ़ग़फ़िर लना जुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना  
सय्यिआतिना व त-वफ़रुना म-अल-अबरार । रब्बना व आतिना मा व-अत्तना  
अला रुसुलि-क व ला तुखज़िना यौमल क्रियामति इन्न-क ला तुखलिफ़ुल  
मीआद । (कुरआन, 3:193-194)

“परवरदिगार ! हमने एक पुकारनेवाले को सुना जो ईमान की तरफ़ बुलाता था और कहता था कि अपने रब को मानो । हमने उसकी दावत कबूल कर ली । अतः ऐ हमारे मालिक ! जो कुसूर हमसे हुए हैं, उनसे दरगुज़र फ़रमा और जो बुराइयाँ हम में हैं, उन्हें दूर फ़रमा और हमारा खात्मा नेक लोगों के साथ कर । ऐ हमारे परवरदिगार ! अपने रसूलों के ज़रिए तूने जो वादे किए हैं, तू उन्हें हमारे हक़ में पूरे फ़रमा और क्रियामत के दिन हमें रुसवा न कर । बेशक तू अपने वादे के खिलाफ़ करनेवाला नहीं है ।”

### 43. नबी (सल्ल०) की दुआएँ

नबी (सल्ल०) रात व दिन, चाहे सफ़र में हों या घर पर, जो दुआएँ माँगा करते थे, हदीस के आलिमों ने बड़ी जी-तोड़ मेहनत करके ये सब हदीस की किताबों में जमा कर दी हैं। कुरआन पाक की दुआओं के साथ आप (सल्ल०) की इन दुआओं को पढ़ने का भी एहतियाम कीजिए। ये दुआएँ निहायत ज़ामेअ, असरदार और बरकतवाली भी हैं और इनसे यह हिदायत भी मिलती है कि एक मोमिन के सोचने का सही अन्दाज़, उसकी आरज़ुओं का सच्चा केन्द्र और उसकी तमन्नाएँ क्या होनी चाहिए। सच तो यही है कि आदमी की सही तस्वीर उसकी आरज़ुओं में ही देखी जा सकती है, खास तौर से उन वक्तों में जब आदमी को यह भी इतमीनान हो कि वह बन्दों की नज़र से ओझल है और उसकी कानाफूसी को सुननेवाला सिर्फ़ उसका पालनहार है। नबी (सल्ल०) रात के अँधेरे में तन्हाई में लोगों से अलग और लोगों की मौजूदगी में जो दुआएँ माँगा करते थे। उनके प्रत्येक शब्द से खुलूस, तड़प, शौक और नूर टपकता है और महसूस होता है कि कोई महान बन्दा है जिसे अपने बन्दे होने का पूरा एहसास है और सिर से पैर तक ज़रूरत बनकर हर वक्त अपने रब से माँगता रहता है और उसका शौक और उसकी लगन बराबर बढ़ती ही जाती है। वह जो कुछ माँगता है उसकी रूह (आत्मा) यह है कि ऐ अल्लाह ! मुझे अपना कुर्ब (नज़दीकी) अता फ़रमा, अपने ग़ज़ब से बचाए रख, अपनी खुश्नूदी से नवाज़ और आखिरत की कामयाबी नसीब फ़रमा।

### सुबह व शाम की दुआएँ

हज़रत उसमान बिन अफ़फ़ान (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“ख़ुदा का जो भी बन्दा हर सुबह व शाम यह दुआ पढ़ लिया करे उसको कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचाती।”

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ  
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (مسند احمد)

बिसमिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुरु म-अस-मिही शैउन फ़िल अर्ज़ि व ला  
फ़िस्समाइ व हुवस्समीउल अलीम। (मुस्नद अहमद)

“ख़ुदा के नाम से (हर काम की) शुरूआत है, जिसके नाम के साथ ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। वह सुननेवाला

और जाननेवाला है ।”

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) पाबन्दी से सुबह व शाम इस दुआ को पढ़ा करते थे और कभी छोड़ते न थे ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي اللَّهُمَّ اسْتَرْعَوْرَاتِي وَأَمِنْ رَوْعَاتِي اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيْ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي. (ترمذی)

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुकल आफ़ि-य-त फ़िद-दुनया वल आखिरति  
अल्लाहुम-म इन्नी अस अलुकल अफ़-व वल आफ़ि-य-त फ़ी दीनी व  
दुनया-य व अहली व माली अल्लाहुम्मस्तुर औराती व आमिन रौआती  
अल्लाहुम्मह-फ़ज़्ज़ी मिम बैनि यदय-य व मिन खलफ़ी व अय्यमीनी व अन  
शिमाली व मिन फ़ौक़ी, व अऊज़ु बिअज़्मत-क अन उगाता-ल मिन तहती ।  
(तिरमिज़ी)

“ऐ खुदा ! मैं तुझसे दुनिया और आखिरत में आफ़ियत चाहता हूँ ।  
ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे माफ़ी, सलामती और आफ़ियत चाहता हूँ दीन  
व दुनिया के मामलों में, अपने घरवालों और अपने माल व दौलत में ।  
ऐ खुदा ! तू मेरे छिपे ऐबों को ढाके रख और मेरी बेचैनियों को अमन  
व चैन में बदल दे । ऐ अल्लाह ! आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ और ऊपर से  
मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और मैं तेरी बड़ाई की पनाह चाहता हूँ इस बात  
से कि अचानक अपने नीचे की ओर से हलाक किया जाऊँ (यानी खुदा  
मुझे ज़मीन में धँसने के अज़ाब से बचाए रखे) ।” (तिरमिज़ी)

## काहिली और बुजदिली से बचने की दुआ

हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि०) का बयान है कि मैं नबी (सल्ल०) की  
खिदमत करने में लगा रहता था और मैं ज़्यादा से ज़्यादा आपको यह दुआ पढ़ते  
सुना करता था—

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَ  
الْجُبْنِ وَضَلَعِ الدِّينِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ. (بخاری-مسلم)

अल्लाहुम-म इन्नी अऊजुबि-क मिनल हम्मि वल हुज्जि वल इज्जि वल  
क-स-लि, वल बुखलि, वल जुबनि व ज़लइद्दिनि व ग-ल-बतिरिजाल ।  
(बुखारी, मुस्लिम)

“ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ रंज व गम से, बेबसी और  
काहिली से, कंजूसी और बुजदिली से, कर्ज के बोझ से और लोगों के  
दबाव से ।”

### तक्वा और पाकदामनी की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ الْهُدٰى وَالتَّقٰى وَالْعَافٰى وَالْغِنٰى.

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलुकल हुदा वतुक्का वल अफा-फ़ वल गिना ।

“ऐ खुदा ! मैं तुझसे हिदायत, तक्वा, पाकदामनी और बेनियाजी का  
सवाल करता हूँ ।”

यह दुआ बहुत जामेअ है । नबी (सल्ल०) ने इन चार शब्दों में असल में वह  
सब ही कुछ माँग लिया है जिसकी मोमिन बन्दे को जरूरत है ।

### दुनिया और आखिरत की रुसवाई से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِى الْاُمُوْر كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَ  
عَذَابِ الْاٰخِرَةِ. (طبرانی)

अल्लाहुम-म अहसिन आक्कि-ब-त-ना फ़िल उमूर कुल्लिहा व अजिरना  
मिन खिज़यिद-दुनया व अज़ाबिल आखिरति । (तबरानी)

“ऐ खुदा ! सारे कामों में हमारा अंजाम बख़ैर फ़रमा और हमें दुनिया  
की रुसवाई और आखिरत के अज़ाब से बचाए रख ।”

## नमाज़ के बाद की दुआ

हज़रत मुआज़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक दिन नबी (सल्ल०) ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया—

“ऐ मुआज़ ! मुझे तुमसे मुहब्बत है”, फिर (फ़रमाया), “ऐ मुआज़ ! मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि तुम किसी नमाज़ के बाद इन कलिमों को मत छोड़ना । हर नमाज़ के बाद ये कलिमे ज़रूर पढ़ा करना ।”

اللَّهُمَّ اَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.

अल्लाहुम-म अइन्नी अला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुसनि इबादतिक ।

“ऐ अल्लाह ! तू हमारी मदद फ़रमा, अपनी याद और अपने शुक्र के लिए और अपनी अच्छी बन्दगी के लिए ।”

## नबी (सल्ल०) की वसीयत

हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मुझे नबी (सल्ल०) ने यह वसीयत फ़रमाई—

“शद्दाद ! जब तुम देखो कि दुनियावाले सोना और चाँदी जमा करने में लग गए हैं तो तुम इन कलिमों का भण्डार करो ।”

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الْأَمْرِ وَالْعَزِيمَةَ عَلَى الرُّشْدِ، وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَأَسْأَلُكَ قَلْبًا سَلِيمًا وَلِسَانًا صَادِقًا وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ. (مسند احمد)

अल्लाहुम-म इन्नी अस्अलुकस्सबा-त फ़िल अमरि वल अज़ीम-त अलर-रुशदि, व अस्अलु-क शुक्र-र निअमति-क व हुस-न इबादति-क व अस्-अलु-क क़ल्बन सलीमवै-व लिसानन सादिकवै-व अस्अलु-क मिन खैरि मा तअल्मु व अऊजु बि-क मिन शरि मा तअल्मु व अस्तग़फ़िरु-क लिमा तअल्मु इन्न-क अन-त अल्लामुल गुयूब । (मुसनद अहमद)



“ऐ अल्लाह ! मैं साबित कदमी में और सीधा रास्ता चलने में जमाव का सवाल करता हूँ और तेरी नेमतों का शुक्र अदा करने और तेरी बेहतरीन बन्दगी बजा लाने की तौफ़ीक़ माँगता हूँ और ऐ खुदा ! मैं तुझसे साफ़ मन और सच्ची ज़बान की खाहिश करता हूँ और हर वह भलाई तुझसे माँगता हूँ जिसका तुझे इल्म है और हर उस बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो तेरे इल्म में है और अपने सारे गुनाहों की माफ़ी चाहता हूँ जो तेरे इल्म में हैं । बेशक तू ग़ैब की बातों को पूरी तरह जानता है ।”

## मग़फ़िरत और अल्लाह की रिज़ा की दुआ

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि नबी (सल्ल०) ने सलमान फ़ारसी (रज़ि०) को वसीयत करते हुए फ़रमाया—

“मैं तुम्हें कुछ कलिमे देना चाहता हूँ, उनके ज़रिए रहमान से सवाल करो, रहमान की तरफ़ लपको और रात दिन इन्हीं शब्दों में खुदा से दुआ माँगो ।”

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ صِحَّةً فِیْ اِیْمَانٍ وَّ اِیْمَانًا فِیْ حُسْنِ خُلُقٍ وَّ نَجَاحًا یَّتْبَعُهُ فَلَاحٌ وَّ رَحْمَةً مِّنْكَ وَّ عَافِیَةً وَّ مَغْفِرَةً مِّنْكَ وَّ رِضْوَانًا. (طبرانی, حاکم)

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क सिह-ह-तन फ़ी ईमानिव-व ईमानन फ़ी हुस्नि खुलुक्किव-व नजाह्य्यत-बउहू फ़लाहुव-व रहमतम-मिन-क व आफ़्रिय-तव-व मग़फ़ि-र-तम मिन-क व रिज़वाना । (तबरानी, हाकिम)

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे अपने ईमान में सेहत और ताक़त तलब करता हूँ, अच्छे अख़लाक़ में ईमान के असर को चाहता हूँ और ऐसी कामयाबी चाहता हूँ जिसके तेहत आख़िरत की कामयाबी हासिल हो और तुझसे रहमत, सलामती, गुनाहों की माफ़ी और तेरी रिज़ा तलब करता हूँ ।”

(तबरानी, हाकिम)

## गुनाहों से पाक होने की दुआ

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) यह दुआ माँगा करते थे—

اللَّهُمَّ نَقِ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَيْتَ الثُّوبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ اللَّهُمَّ

بَعْدُ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطِيئَتِي كَمَا بَعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ. (महम कबीर)

अल्लाहुम-म नक्कि कलबी मिनल खताया कमा नक्कैतस्सौ-बल-  
अब-य-ज मिनद-द-नसि अल्लाहुम-म बअ-इद बैनी व बै-न खती अति कमा  
बअ-अत-त बैनल मशरिक् वल मगरिब ।

(मोअजमे कबीर)

“ऐ खुदा ! तू मेरे दिल को खताओं के मैल से ऐसा पाक व साफ़  
कर दे जैसे तू सफ़ेद कपड़े को मैल-कुचैल से साफ़-सुथरा कर देता है ।  
ऐ अल्लाह ! तू मुझे गुनाहों से इतना दूर कर दे जितना तूने पूब और  
पश्चिम में दूरी कर रखी है ।

## दुनिया की नजर में इज्जत की दुआ

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي صَبُورًا وَاجْعَلْنِي شَكُورًا وَاجْعَلْنِي فِي عَيْنِي صَغِيرًا وَفِي  
أَعْيُنِ النَّاسِ كَبِيرًا.

अल्लाहुम्मज-अलनी सबूरवँ-वज-अलनी शकूरवँ-वज-अलनी फ्री ऐनी  
सगीरवँ-व फ्री अअ-युनिन्नासि कबीरा ।

“ऐ अल्लाह! तू मुझे बहुत सब्र करनेवाला बना दे और बहुत ज्यादा  
शुक्रगुजार बना दे और मुझे मेरी अपनी निगाहों में हकीर और लोगों की  
निगाहों में बड़ा बना दे ।”

## जामेअ दुआ

हजरत आइशा (रजि०) बयान करती हैं कि एक बार नबी (सल्ल०) मेरे पास  
तशरीफ़ लाए । मैं नमाज़ में लगी हुई थी । नबी (सल्ल०) को मुझसे कुछ जरूरत  
थी और मुझे देर लग गई तो आपने फरमाया, “आइशा ! छोटी और जामेअ दुआ  
माँगा करो ।” फिर जब मैं नबी (सल्ल०) के पास आई तो मैंने पूछा कि ऐ अल्लाह  
के रसूल! छोटी और जामेअ दुआ क्या है तो आपने फरमाया कि यह पढ़ा करो—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهِ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ  
وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهِ عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ  
وَاَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا  
قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَاَسْئَلُكَ مِمَّا سَاَلَكَ بِهِ مُحَمَّدٌ وَاَعُوْذُبِكَ  
مِمَّا تَعُوْذُ مِنْهُ مُحَمَّدٌ وَمَا قَضَيْتَ لِيْ مِنْ قَضَاءٍ فَاَجْعَلْ عَاقِبَتَهُ رُشْدًا. (حاکم)

अल्लाहुम-म इन्नी अस-अलु-क मिनल खैर कुल्लिही आजिलिही व  
आजिलिहि मा अलिम्तु मिन्हु व मालम अअलम व अऊजु बि-क मिनश  
शरि कुल्लिही आजिलिही व आजिलिही मा अलिम्तु मिन्हु व मालम अअलम  
व अस्अलु-कल जन-न-त व मा कर्-ब इलैहा मिन कौलिन अव अ-म  
लिन व अऊजु बि-क मिनन्नारि व मा कर्-ब इलैहा मिन कौलिन अव  
अ-म-लिन व अस्अलु-क मिम्मा स-अ-ल-क बिही मुहम्मदुन व अऊजुबि-क  
मिम्मा त अव्व-ज मिन्हु मुहम्मदुन व मा कजै-त ली मिन कजाइन फज-अल  
आकि-ब-त-ह रुशदा । (हाकिम)

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सारी की सारी भलाई का सवाल करता हूँ ।  
जल्द होनेवाली का भी और देर में होनेवाली का भी, मालूम का भी और  
ग़ैर मालूम का भी और मैं सारी की सारी बुराई से तेरी पनाह चाहता  
हूँ, जल्द होनेवाली बुराई से भी और देर में होनेवाली बुराई से भी, मालूम  
से भी और नामालूम से भी और मैं तुझसे जन्नत तलब करता हूँ और  
ऐसी कथनी-करनी की जो जन्नत से करीब कर देनेवाली हो और जहन्नम  
से तेरी पनाह चाहता हूँ और उस कथनी-करनी से भी तेरी पनाह चाहता  
हूँ जो जहन्नम के करीब कर देनेवाली हो और मैं तुझसे वे भलाईयाँ चाहता  
हूँ जिसका सवाल तुझसे मुहम्मद (सल्ल०) ने किया है और तेरी पनाह  
चाहता हूँ उन सारी चीज़ों से, जिनसे मुहम्मद (सल्ल०) ने पनाह माँगी  
है और यह चाहता हूँ कि तू मेरे हक़ में जो फ़ैसला भी फ़रमाए उसका  
अंजाम बेहतर फ़रमा ।”

## इस्लाम पर कायम रहने की दुआ

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ بِالْاِسْلَامِ قَائِمًا وَّ احْفَظْنِيْ بِالْاِسْلَامِ قَاعِدًا وَّ احْفَظْنِيْ  
بِالْاِسْلَامِ رَاقِدًا وَّ لَا تُشْمِتْ بِيْ عَدُوًّا حَاسِدًا.

अल्लाहुम्मह-फ़ज्जी बिल इस्लामि काइमन वट्फ़ज्जी बिल इस्लामि  
क्राइदवै-वट्फ़ज्जी बिल इस्लामि राकिदवै-व ला तुशमित बी अदूवन हासिदा ।

“ऐ अल्लाह ! मुझे उठते-बैठते, सोते (जागते हर हालत में) इस्लाम  
पर कायम रख और किसी दुश्मन और हसद करनेवाले को मुझपर हँसने  
का मौका न दे ।”

## नव मुस्लिम की दुआ

हजरत अबू मालिक अशजई (रजि०) कहते हैं कि मेरे वालिद का बयान है  
कि जब कोई आदमी दीने इस्लाम में दाखिल होता तो नबी (सल्ल०) उसको नमाज़  
सिखाते, फिर उसको बताते कि इस तरह दुआ माँगो—

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ، وَّ ارْحَمْنِيْ وَّ اهْدِنِيْ وَّ عَافِنِيْ وَّ ارْزُقْنِيْ.

अल्लाहुम्माफिरली, वर्हम्नी वहदिनी, व आफिनी वरज़ुक्नी ।

“ऐ खुदा ! तू मेरी माफिरत फरमा, मुझपर रहम कर, मुझे सीधे रास्ते  
पर चला, मुझे आफियत बरूश और मुझे रोजी अता फरमा ।”

## निफ़ाक़ और बदअख़लाक़ी से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مُّنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَالْاَهْوَاءِ، اَللّٰهُمَّ  
اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ.

अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिम-मुनकरातिल अख़लाक़ि वल  
अअमालि वल अह्वाइ, अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनशशिकाक़ि  
वननिफ़ाक़ि व सूइल अख़लाक़ ।

“ऐ खुदा ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुरे अख़लाक़, बुरे काम और  
नफ़स की खाहिश से, ऐ खुदा ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ झगड़े, निफ़ाक़

## कर्ज की अदायगी की दुआ

हजरत अबू वाइल का बयान है कि हजरत अली (रजि०) की खिदमत में एक मुकातब गुलाम हाजिर हुआ और बोला, “हजरत ! मेरी मदद फरमाइए । मैं मुकातबत का मुआवजा अदा नहीं कर पा रहा हूँ ।” हजरत अली (रजि०) ने फरमाया, “मैं तुझे वह दुआ क्यों न सिखा दूँ जो नबी (सल्ल०) ने बताई है । अगर तुम्हारे ज़िम्मे उहुद पहाड़ के बराबर कर्ज भी होगा तो खुदा उसको अदा कर देगा ।” मुकातब ने अर्ज किया, “यह दुआ मुझे जरूर सिखाइए ।” चुनाँचे उन्होंने यह दुआ बताई—

اَللّٰهُمَّ اَكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

अल्लाहुम-मक-फ़िनी बि-हलालि-क अन हरामि-क वगनिनी बिफ़ज़लि-क अम्मन सिवाक ।

“ऐ खुदा ! मुझे हलाल रोज़ी देकर हराम रोज़ी से बेपरवा कर दे और अपनी मेहरबानी से मुझे अपने सिवा हर एक से बेनियाज़ कर दे ।”

## 44. दरूद व सलाम

अपने बहुत बड़े मुहसिन (उपकारी) हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर ज्यादा से ज्यादा दरूद व सलाम भेजिए। यह सच है कि आपके अपार एहसान और निहायत रहमत व शफ़क़त का हम कोई बदला नहीं दे सकते। अगर कुछ कर सकते हैं तो सिर्फ़ यह कि अक़ीदत, मुहब्बत और फ़िदाकारी व जाँनिसारी की गहरी भावनाओं के साथ आपके हुज़ूर में दरूद व सलाम के तोहफ़े पेश करें और खुदा से दुआ करें कि 'पालनहार ! तेरे नबी ने हमारे लिए रात व दिन जो हिला देनेवाली तकलीफ़ें उठाकर हम तक दीन की रौशनी पहुँचाई और हमारी हिदायत के लिए धुल-धुलकर जिस तरह अपनी जान हल्कान की, पालनहार ! हम इस बेमिसाल एहसान का कोई बदला नहीं दे सकते। तुझसे ही हमारी दरखास्त है कि पालनहार ! तू उनपर अपनी बेहद व बेहिसाब रहमतें उंडेल दे, उनके दर्जों को बुलन्द फ़रमा दे, उनके दीन को बातिल के हमले से सलामत रख और उसे तरक्की दे और आखिरत में उन्हें तमाम करीबी लोगों से बढ़कर अपना कुर्ब अता फ़रमा।' कुरआन पाक में मुसलमानों को हिदायत दी गई है—

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

“खुदा और उसके फ़रिश्ते नबी पर बराबर दरूद भेजते हैं। मुसलमानो तुम भी उनपर दरूद व सलाम भेजो।” (कुरआन, 33:56)

हजरत उबई बिन काब (रज़ि०) से नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“उबई ! अगर तुम अपने सारे वक्त दरूद व सलाम में लगा दोगे तो खुदा दुनिया और आखिरत में तुम्हारी ज़िम्मेदारी अपने ज़िम्मे ले लेगा।”

(मुस्नद अहमद)

हजरत अनस बिन मालिक (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“जो आदमी मुझपर एक बार दरूद भेजता है, खुदा उसपर दस बार रहमत उतारता है। उसके लिए दस नेकियाँ लिखता है, दस गुनाह मिटाता है और दस दर्जे बुलन्द फ़रमाता है।” (नसई)

और नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“जो आदमी मुझपर दरूद भेजता है, फ़रिश्ते उस पर दरूद भेजते रहते

हैं जब तक वह मुझपर दरूद भेजता रहे ।” (अहमद व इब्ने माजा)

आपने उस आदमी को बखील (कंजूस) करार दिया है जो आपका जिक्र सुने और आपपर दरूद न भेजे ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“वह आदमी कंजूस है जिसके सामने मेरा जिक्र किया जाए और वह मुझपर दरूद न भेजे ।” (तिरमिजी)

और नबी (सल्ल०) ने उस आदमी को आखिरत में अपने साथ रहने और सोहबत उठाने का सबसे ज्यादा हकदार करार दिया है जो सबसे ज्यादा आपपर दरूद व सलाम भेजे ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“क्रियामत के दिन मेरे साथ रहने और सोहबत उठाने का सबसे ज्यादा हकदार वह आदमी होगा जो मुझपर सबसे ज्यादा दरूद भेजेगा ।” (तिरमिजी)

सहाबा किराम (रजि०) को नबी (सल्ल०) ने बहुत-से मौकों पर दरूद व सलाम के जो शब्द सिखाए हैं, उनमें शब्दों का थोड़ा-थोड़ा फर्क है । आप उनमें से जो दरूद चाहें, पढ़ सकते हैं । आमतौर पर जो दरूद शरीफ नमाज में पढ़ते हैं और जिसको हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजि०) ने अफ़ज़ल करार दिया है वह यह है—

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى اِبْرَاهِيْمَ  
وَعَلَى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى اِبْرَاهِيْمَ  
وَعَلَى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (صالح بن مسعود)

अल्लाहुम-म सललि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम मजीद ।

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम मजीद ।

(सिहाहे सित्ता, मुसनद अहमद)

ऐ खुदा ! तू रहमत फरमा हजरत मुहम्मद पर और हजरत मुहम्मद

की आल पर, जिस तरह तूने रहमत फरमाई हज़रत इबराहीम पर और हज़रत इबराहीम की आल पर । बेशक तू बड़ा ही पाकीज़ा खूबियोंवाला और बड़ाईवाला है ।

“ऐ खुदा ! तू बरकत अता फरमा मुहम्मद को और मुहम्मद की आल को, जिस तरह तूने बरकत दी हज़रत इबराहीम को और हज़रत इबराहीम की आल को । बेशक तू बड़ा ही पाकीज़ा खूबियोंवाला और बड़ाईवाला है ।”

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने लोगों से फरमाया कि जब तुम नबी (सल्ल०) पर दरूद भेजो तो अच्छे तरीके से भेजो । तुम्हें क्या मालूम कि यह दरूद नबी (सल्ल०) की बारगाह में पेश किया जाता हो । लोगों ने उनसे दरखास्त की कि फिर आप हमें दरूद सिखा दीजिए तो उन्होंने फरमाया कि यूँ दरूद पढ़ा करो :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوَتَكَ وَرَحْمَتَكَ وَبَرَكَاتِكَ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَ  
 اِمَامِ الْمُتَّقِيْنَ وَخَاتَمِ النَّبِيِّنَ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ اِمَامِ الْخَيْرِ وَ  
 قَائِدِ الْخَيْرِ وَرَسُولِ الرَّحْمَةِ، اَللّٰهُمَّ ابْعَثْهُ مَقَامًا يَغْبِطُهُ بِهِ الْاَوَّلُوْنَ  
 اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى اِبْرَاهِيْمَ  
 وَعَلَى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ  
 وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ  
 حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (अनबा)

अल्लाहुम्मज-अल सला-त-क व रह-म-त-क व ब-र-काति-क अला  
 सय्यिदिल मुर्सली-न व इमामिल मुत्तकी-न व खात-मन्नबीयी-न मुहम्मदिन  
 अब्दि-क व रसूलि-क इमामिल खैरि व काइदिल खैरि व रसूलिरहमति,  
 अल्लाहुम-मब-असहु मकामय्यंगबितुह बिहिल अव्वलून । अल्लाहुम-म  
 सल्लि अला मुहम्मदिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला  
 इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन-न-क हमीदुम मजीद । अल्लाहुम-म  
 बारिक अला मुहम्मदिव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला



इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम मजीद । (इब्ने माजा)

“ऐ खुदा ! तू अपनी बरकत, रहमत और मेहरबानियाँ उतार रसूलों के सरदार, परहेजगारों के पेशवा और आखिरी नबी हजरत मुहम्मद (सल्ल०) पर जो तेरे बन्दे, तेरे रसूल, भलाई की मिसाल, खैर के रहनुमा और रहमतवाले रसूल हैं । ऐ खुदा ! उनको उस बड़ाई की जगह पर बैठा जो आगेवालों के लिए रश्क के काबिल हो ।

ऐ खुदा ! तू रहमत भेज हजरत मुहम्मद पर और हजरत मुहम्मद की आल पर, जिस तरह तूने रहमत फरमाई हजरत इबराहीम पर और हजरत इबराहीम की आल पर । बेशक तू पाकीजा खूबियोंवाला, बड़ाईवाला है । ऐ खुदा ! तू बरकत नाजिल फरमा हजरत मुहम्मद पर और हजरत मुहम्मद की आल पर । जिस तरह तूने बरकत दी हजरत इबराहीम को और हजरत इबराहीम की आल को । बेशक तू पाकीजा खूबियोंवाला और बड़ाईवाला है ।”

हजरत अबू मसूऊद अनसारी (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार बशीर बिन साद (रज़ि०) ने नबी से पूछा, “ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ! हम आपपर किस तरह दरूद व सलाम भेजें ।” नबी (सल्ल०) कुछ देर खामोश रहे फिर फरमाया, यूँ कहा करो—

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰی اِبْرَاهِيْمَ  
وَبَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اِبْرَاهِيْمَ فِى  
الْعَالَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مُّجِيْدٌ. (مسلم)

अल्लाहुम-म सललि अला मुहम्मदिंव-व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इबराही-म व बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इबराही-म फिल-आलमी-न इन्न-क हमीदुम मजीद । (मुस्लिम)

“ऐ अल्लाह ! रहमत फरमा हजरत मुहम्मद पर और हजरत मुहम्मद की आल पर जिस तरह तूने रहमत फरमाई हजरत इबराहीम पर और बरकत फरमा हजरत मुहम्मद पर और हजरत मुहम्मद की आल पर जिस तरह तूने कायनात में बरकत फरमाई हजरत इबराहीम पर । बेशक तू इन्तिहाई पाकीजा, खूबियोंवाला और बुजुर्गीवाला है ।”

## 45. कुरबानी की दुआ

जानवर को किबला रुख लिटाकर पहले यह दुआ पढ़िए—

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلذِّى فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ  
الْمُشْرِكِينَ، إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ  
لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ، اَللّٰهُمَّ لَكَ وَمِنْكَ.

इन्नी वज्जह्तु वजहि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल अर-ज़  
हनीफ़वै-व मा अना मिनल मुशरिकीन, इन-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य  
व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिरतु  
व अना मिनल मुस्लिमी-न, अल्लाहुम-म ल-क व मिन-क ।

“मैंने पूरी एकसूई के साथ अपना रुख ठीक उस अल्लाह की ओर  
कर लिया है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और मैं शिर्क  
करनेवालों में से नहीं हूँ । बेशक मेरी नमाज़, मेरी कुरबानी, मेरी ज़िन्दगी  
और मेरी मौत सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है । उसका कोई  
शरीक नहीं, इसी का मुझे हुक्म दिया गया है और मैं मुस्लिम और फ़रमाँबरदार  
हूँ । ऐ खुदा ! यह तेरे ही हुज़ूर पेश है और तेरा ही दिया हुआ है ।”

‘बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर’ कहते हुए तेज़ छुरी जानवर के गले पर  
फेर दीजिए और जिब्ह करने के बाद यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ وَحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ  
عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ.

अल्लाहुम-म त-क़ब्बलहु मिन्नी<sup>(1)</sup> कमा त-क़ब्बल-त मिन खलीलि-क  
इब्राही-म व हबीबि-क मुहम्मदिन अलैहिमस्सलातु वस्सलाम ।

“ऐ खुदा ! तू इस कुरबानी को हमारी ओर से कबूल फ़रमा जिस  
तरह तूने अपने दोस्त हज़रत इब्राहीम और अपने हबीब हज़रत मुहम्मद  
की कुरबानी कबूल फ़रमाई । दोनों पर दरूद व सलाम हो ।”

1. अगर जानवर में कोई हिस्सेदार हों तो ‘मिन्नी’ के बजाए ‘मिन’ पढ़िए और इसके बाद सबके नाम लीजिए ।

कुरबानी का जानवर अगरचे किसी दूसरे से जिब्ह कराना भी जायज़ है, लेकिन बेहतर यही है कि आप खुद ही जिब्ह करें और जिब्ह करते वक़्त उन भावनाओं को जान-बूझकर अपने दिल व दिमाग पर ग़ालिब कर लें जिन्हें आप दुआ के शब्दों में जाहिर करते हैं यानी यह कि हमारा सब कुछ खुदा के लिए ही है और उसी की राह में यह सब कुछ कुरबान होना चाहिए । उसका इशारा पाकर आज हम उसकी राह में जानवर कुरबान कर रहे हैं, कल अगर उसका इशारा होगा तो हम उन्हीं भावनाओं के साथ अपनी प्यारी जान भी उसी की राह में कुरबान कर देंगे और उसका शुक्रिया अदा करेंगे कि उसने अपनी राह में खून बहाने की तौफ़ीक़ देकर शहादत की सआदत नसीब फ़रमाई ।

## 46. अक्रीके की दुआ

अक्रीके से मुराद वह बकरी या बकरा है जो नए पैदा बच्चे की ओर से पैदाइश के सातवें दिन सदक़े के तौर पर जिन्ह किया जाए ।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है—

“सातवें दिन बच्चे का नाम तजवीज किया जाए और उसके बाल वगैरह, मैल-कुचैल दूर किया जाए और उसकी ओर से अक्रीका किया जाए ।”

जानवर को जिन्ह करते वक्त क़िबला रुख लिटा दीजिए और पहले वह दुआ पढ़िए जो कुरबानी का जानवर जिन्ह करने से पहले पढ़ते हैं यानी इन्नी वज्जस्तु से ल-क- व मिन-क तक, फिर बिसमिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहते हुए तेज छुरी जानवर के गले पर फेर दीजिए और यह दुआ पढ़िए—

اَللّٰهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةٌ..... تَقْبَلُهُ كَمَا تَقْبَلُ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ  
وَخَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ دَمُهَا بِدَمِهِ لَحْمُهَا بِلَحْمِهِ  
شَعْرُهَا بِشَعْرِهِ عَظْمُهَا بِعَظْمِهِ.

अल्लाहुम-म हाज़िही अक्री-क़तु<sup>(1)</sup>....., त-क़ब्बलहु कमा त-क़ब्बल-त मिन हबीबि-क मुहम्मदिव-व खलीलि-क इबराही-म अलैहिमस्सलातु वस्सलामु दमुहा बि-द-मिही लहमुहा बि-लहमिही शअरुहा बिशअरिही अज्मुहा बिअज्मिही ।

“ऐ खुदा ! यह अक्रीका है..... का, इसको क़बूल फ़रमा जिस तरह तूने अपने हबीब हज़रत मुहम्मद और अपने दोस्त हज़रत इबराहीम अलैहिमस्सलाम की तरफ़ से क़बूल किया । इसका खून बच्चे के खून का फ़िदया है, इसका गोشت बच्चे के गोشت का फ़िदया है, इसके बाल बच्चे के बाल का फ़िदया हैं और इसकी हड्डियाँ बच्चे की हड्डियों का फ़िदया हैं । (ऐ खुदा ! इसको क़बूल फ़रमा ।)”

जो लोग पैसेवाले हों वे अपनी औलाद की ओर से ज़रूर सदक़ा करें । अक्रीका एक मुस्तहब सदक़ा है । लड़के की तरफ़ से दो बकरे या दो बकरियाँ और लड़की

1. 'हाज़िही अक्री-क़तु' कहने के बाद उस बच्चे का नाम लीजिए जिसका अक्रीका है ।

की ओर से एक बकरा या एक बकरी । और यह भी जायज़ है कि लड़के की ओर से भी एक ही बकरी की जाए । अलबत्ता जो लोग ताकत नहीं रखते, उनके लिए हरगिज़ मुनासिब नहीं कि वे तंगदस्ती के बावजूद अक्रीका करना ज़रूरी समझें और बोझ लादकर इस फ़र्ज को पूरा करें ।

अक्रीके का गोشت कच्चा भी बाँट सकते हैं, अलबत्ता मुस्तहब यह है कि पकाकर फ़क़ीरों, मिस्कीनों और पड़ोसियों के यहाँ भेजें । अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को भी खिला सकते हैं और खुद भी खा सकते हैं । हज़रत हसन (रज़ि०) के अक्रीके के मौक़े पर नबी (सल्ल०) ने हिदायत दी कि जानवर की एक टाँग दाईं को भेज दो और बाक़ी तुम खुद खाओ और खिलाओ ।

(अबू दाऊद)

## 47. तरावीह की दुआ

‘तरावीह’, तरवीहा का बहुवचन है। तरावीह में हर चार रक़अत के बाद बैठने और आराम लेने को तरवीहा कहते हैं, और इसी वजह से रमज़ान की इस नफ़ल नमाज़ को तरावीह कहते हैं। तरावीह यानी हर चार रक़अत के बाद बैठना और आराम लेना मसनून है।

तरवीहा में यह दुआ पढ़िए—

سُبْحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوتِ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهِبَةِ  
وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبْرُوتِ: سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَنَامُ  
وَلَا يَمُوتُ سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ، رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ اَللّهُمَّ اجِرْنَا  
مِنَ النَّارِ يَا مُجِيرُ يَا مُجِيرُ يَا مُجِيرُ.

सुबहा-न ज़िल मुलकि वल म-ल-कूति सुबहा-न ज़िलइज़्जति वल अज़्मति  
वल है-बति वल कुदरति वल किबरियाइ वल ज-ब-रूत । सुब्हानल मलिकिल  
हय्यिल्लज़ी ला यनामु वला यमूतु सुब्बूहुन कुददूसुन, रब्बुना व रब्बुल मलाइकति  
वरूहि अल्लाहुम-म अज़िरना मि-नन-नारि या मुजीरु या मुजीरु या मुजीर ।

“पाक है हुकूमत व इक़्तिदारवाला, पाक है इज़्जत व अज़मत, हैबत  
व कुदरत और बड़ाई और दबदबेवाला ।

पाक है वह ज़िन्दा जावेद बादशाह, जो न सोता है और न कभी उसके  
लिए फ़ना है; निहायत पाक व बरतर, ऐबों से पाक, हमारा परवरदिगार  
और फ़रिशतों का परवरदिगार और हज़रत ज़िबरील (अलै०) का परवरदिगार ।

ऐ खुदा ! हम को दोज़ख की आग से पनाह दे! ऐ पनाह देनेवाले,  
ऐ पनाह देनेवाले, ऐ पनाह देनेवाले ।”

तरावीह की नमाज़ जमाअत से पढ़िए और अगर हो सके तो पूरा कुरआन नमाज़  
में सुनने की कोशिश कीजिए । तरावीह किसी ऐसे हाफ़िज़ के पीछे पढ़िए जो पूरे  
एहतिराम के साथ, दिल लगाकर और ज़ौक व शौक के साथ इस तरह कुरआन  
को ठहर-ठहरकर एतिदाल के साथ पढ़े कि ज़्यादा देरी की वजह से मुक्तदी (इमाम  
के पीछे नमाज़ पढ़नेवाले) भी न उकताएँ और कुरआन पाक भी इस तरह साफ़-साफ़  
पढ़ा जाए कि उसकी तिलावत का हक़ अदा हो । कुरआन को बेपनाह रवानी के

साथ बेसोचे-समझे इस तरह पढ़ना कि गोया सिर से एक बोझ उतारा जा रहा है, असल में कुरआन के साथ बड़ा जुल्म है । खुदा कि किताब का यह हक है कि उसको दिल की आमादगी, तबीअत की हाज़िरी और मन के लगाव के साथ पढ़ा जाए और उसको समझने और उसमें गौर व फ़िक्र करने की आदत डाली जाए ।

इसी तरह तरावीह की नमाज़ भी सुकून व एतिदाल के साथ पढ़नी चाहिए । लापरवाही के साथ जल्दी-जल्दी रुकू व सज्दा करना नमाज़ के मक़सद से ग़फलत भी है और नमाज़ की लज़्ज़त से महरूम भी ।

## 48. कुनूते नाजिला

1. खुदा न करे मुसलमान सख्त हालात में धिरे हुए हों और दुश्मन का भय और आतंक छाया हुआ हो तो नमाजों में कुनूते नाजिला पढ़ने का एहतिमाम कीजिए, खास तौर से फ़ज़्र की नमाज़ में । फ़ज़्र की नमाज़ की दूसरी रकअत में रुकू से उठने के बाद खड़े-खड़े यह दुआ पढ़िए और फिर सजदे में जाइए । हदीसों से मालूम होता है कि नबी (सल्ल०) और आपके सहाबा ने सख्त हालात में यह दुआ नमाजों में पढ़ी है और खास तौर पर फ़ज़्र की नमाज़ में इसका एहतिमाम किया है—

اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا فِیْمَنْ هَدَيْتَ وَعَا فِیْمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنَا فِیْمَنْ تَوَلَّيْتَ  
وَبَارِكْ لَنَا فِیْمَا اَعْطَيْتَ وَقِنَا شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی  
عَلَيْكَ اِنَّهُ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ بَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالٰیْتَ  
نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَیْكَ ۝ اَللّٰهُمَّ عَذِبِ الْکُفْرَةَ الَّذِیْنَ یَصْذُوْنَ عَنْ  
سَبِیْلِکَ وَیُکَذِّبُوْنَ رُسُلَکَ وَیَقَاتِلُوْنَ اَوْلِیَاءَکَ ۝ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِیْنَ  
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَیْنِهِمْ وَآلِفَ بَیْنِ  
قُلُوْبِهِمْ وَاجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَالْحِکْمَةَ وَثَبِّتْهُمْ عَلٰی مِلَّةِ رَسُوْلِکَ  
ﷺ وَاَوْزِ عَنْهُمْ اَنْ یُّوْفُوْا بِعَهْدِکَ الَّذِیْ عَاهَدْتَهُمْ عَلَیْهِ وَاَنْصُرْهُمْ عَلٰی  
عَدُوْکَ وَعَدُوْهِمْ اِلَهَ الْحَقِّ وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ .

अल्लाहुम्मह-दिना फ़ीमन हदै-त व आफ़िना फ़ीमन आफ़े-त व त-वल्लना  
फ़ीमन त-वल्लै-त व बारिक लना फ़ीमा अअ तै-त व किना शर-र मा क़ज़ै-त  
फ़-इन्न-क तक्रज़ी व ला युक्रज़ा अलै-क इन्नहु ला याज़िल्लु मव्वाँलै-त व  
ला यइज़्ज़ु मन आदै-त तबा-रक-त रब्बना व तआलै-त नस्तग़फ़िरु-क व  
नतुबु इलैक । अल्लाहुम-म अज़्ज़िबिल क-फ़-र-तल्लजी-न यमुददू-न अन  
सबीलि-क व युक्ज़िज़ू-न रुसु-ल-क व युक्क़ातिलू-न औलि-या-अक ।  
अल्लाहुम्माफ़िर लिल मुअ्मिनी-न वल मुअ्मिनाति वल मुस्लिमी-न वल



मुस्लिमाति व असलिह जा-त बैनिहिम व अल्लिफ बै-न कुलूबिहिम वज-अल फ्री कुलूबिहिमिल ईमा-न वल हिक-म-त व सख्बितहुम अला मिल्लति रसूलि-क सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व औजिअहुम अय्यूफू बिअहदिकल्लजी आहतहुम अलैहि वन्सुरहुम अला अदूबि-क व अदूबिहिम इलाहल हक्कि वज-अलना मिन्हुम ।

“ऐ खुदा ! तू हमें दिहायत से नवाज़कर हिदायत पाए हुए लोगों में शामिल फ़रमा और हमें आफ़ियत बख़्शकर आफ़ियत पानेवालों में शामिल फ़रमा और हमारी सरपरस्ती फ़रमाकर उन लोगों में शामिल फ़रमा जिनकी तूने सरपरस्ती फ़रमाई और हमें उन चीज़ों में बरकत दे जो तूने इनायत फ़रमाई हैं और हमें उसकी शरारतों से बचा जिसका तूने फ़ैसला फ़रमाया है, क्योंकि तू ही फ़ैसला फ़रमाता है और तुझ पर किसी का फ़ैसला लागू नहीं होता । वह हरगिज़ ज़लील नहीं हो सकता जिसकी तू सरपरस्ती फ़रमाए और वह कभी इज़्ज़त नहीं पा सकता जिसको तू अपना दुश्मन करार दे ले, तू बड़ा ही बरकतोंवाला है । ऐ हमारे रब और बहुत ही बुलन्द व बरतर ! हम तुझसे माग़फ़िरत चाहते हैं और तेरे हुज़ूर तौबा करते हैं । ऐ अल्लाह ! काफ़िरों को अज़ाब दे जो तेरी राह से रोकते हैं और तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरे औलिया से लड़ते रहते हैं । ऐ अल्लाह ! मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों, मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की माग़फ़िरत फ़रमा और उनके आपसी ताल्लुकात में सुधार फ़रमा, उनके दिलों में आपसी मुहब्बत पैदा कर; उनके दिलों में ईमान व हिकमत पैदा कर और उनको अपने रसूल (सल्ल०) की मिल्लत पर जमा दे और उनको तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि ये तेरे अहद (वादे) को पूरा कर सकें जो तूने उनसे लिया है और उनकी मदद फ़रमा अपने दुश्मनों के मुकाबले में और उनके दुश्मनों के मुकाबले में । ऐ हक़ीक़ी माबूद ! हमारी इल्तिजाएँ (प्रार्थनाएँ) सुन ले और हमें भी उन्हीं लोगों में शामिल फ़रमा दे ।”

## 49. हाजत (जरूरत) की नमाज़

जब भी आपको कोई छोटी या बड़ी जरूरत पेश आए खुदा के हुज़ूर खड़े होकर दो रक़अत नफ़ल (सलातुल हाजत) पढ़िए और फिर हम्द व सना और दरूद पढ़कर यह दुआ पढ़िए । खुदा से उम्मीद है कि वह आपकी दुआ को रद्द नहीं फ़रमाएगा । नबी (सल्ल०) का इशारा है कि जब किसी को खुदा से या किसी बन्दे से कोई जरूरत हो तो खूब अच्छी तरह वुजू करे, फिर दो रक़अत नमाज़ पढ़कर खुदा की हम्द व सना करे और नबी (सल्ल०) पर दरूद पढ़े और फिर खुदा से यूँ दुआ करे—

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ وَالْحَمْدُ  
لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيمَةَ  
مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ أَثِمٍّ لَا تَدْعُ لِي ذَنْبًا إِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمًّا إِلَّا  
فَرَجْتَهُ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ. (ترمذی، ابن ماجہ)

ला इला-ह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीमु सुब्हानल्लाहि रब्बिल अर्शिल  
अजीम वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमी-न अस-अलु-क मूजिबाति  
रहमति-क व अज़ाइ-म मगफ़ि-र-ति-क वल गनी-म-त मिन कुल्लि  
बिर्बि-व-स्सला-म-त मिन कुल्लि इस्मिन ला त-दअली जंबन इल्ला गफ़र-त  
हू व ला हम्मन इल्ला फ़रज-तहू व ला हाजतन हि-य ल-क रिज़न इल्ला  
क्रज़ै-तहा या अर्हमर्राहिमीन । (तिरमिज़ी, इब्ने माज़ा)

“खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़ा ही बुर्दबार (सहनशील) और बहुत ही करम फ़रमानेवाला है । पाक व बरतर है खुदा, बड़े अर्श का मालिक । शुक्र व तारीफ़ खुदा ही के लिए है जो सारे ज़हानों का परवरदिगार है । (ऐ खुदा ! ) मैं तुझसे उन चीज़ों की भीख माँगता हूँ जो तेरी रहमत को वाज़िब करनेवाली और तेरी मग़फ़िरत को ज़रूरी करनेवाली हैं । हर भलाई में हिस्सा और हर गुनाह से सलामती चाहता हूँ । ऐ अल्लाह ! तू मेरा कोई गुनाह बख़्शे बग़ैर और कोई दुख और ग़म दूर किए बग़ैर न छोड़ और मेरी कोई जरूरत जो तेरे नज़दीक पसन्दीदा हो, पूरी किए बग़ैर न रहने दे, ऐ रहम करनेवालों में सबसे ज़्यादा रहम करनेवाले ।”

## 50. कुरआन हिफ़ज़ करने की दुआ

कुरआन पाक को याद करने और याद रखने के लिए इस दुआ का एहतिमांम कीजिए जो नबी (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) को सिखाई थी ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार हम लोग नबी (सल्ल०) की मज्लिस में बैठे हुए थे कि अली (रज़ि०) आए और अपने हाफ़िज़े की शिकायत करने लगे, “ऐ अल्लाह के रसूल ! कुरआन की आयतें मेरे ज़ेहन में महफूज़ नहीं रहतीं, जो सीखता हूँ याद ही नहीं रहता ।” नबी (सल्ल०) ने अली (रज़ि०) की शिकायत सुनकर फ़रमाया—

“ऐ अबुल हसन ! मैं तुम्हें ऐसी दुआ क्यों न सिखा दूँ जिसको पढ़कर तुम भी फ़ायदा उठाओ और वह भी फ़ायदा उठाए जिसको तुम यह दुआ सिखाओ और फिर जो भी तुम सीखो, वह तुम्हारे दिल में ज़म जाए और तुम्हें याद रहे ।” हज़रत अली (रज़ि०) ने कहा, “ऐ अल्लाह के रसूल ! ऐसी दुआ तो ज़रूर सिखाइए ।” तो आपने इस दुआ के बारे में फ़रमाया—

“जुमा की रात में यह दुआ पढ़ो, तीन या पाँच या सात जुमेरातों में बराबर पढ़ो । खुदा के हुक्म से यह दुआ तीर की तरह सही निशाने पर बैठेगी । उस ज़ात की कसम जिसने मुझे दीने हक़ देकर भेजा है! मोमिन की यह दुआ कभी ख़ाली नहीं जाती ।”

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि पाँच या सात जुमेरातें गुज़री होंगी कि इसी तरह फिर एक दिन हज़रत अली (रज़ि०) नबी (सल्ल०) की मज्लिस में आए और कहने लगे, “ऐ अल्लाह के रसूल ! पहले मैं चार आयतें याद करता, लेकिन जब दोहराता तो ज़ेहन से निकल जातीं और अब यह हाल है कि मैं चालीस-चालीस आयतें याद करता हूँ और जब पढ़ता हूँ तो ऐसा मालूम होता है कि गोया मेरे सामने खुदा की किताब खुली हुई रखी है । इसी तरह पहले मैं एक हदीस सुनता और जब दोहराने की कोशिश करता तो भूल जाता और अब यह हाल है कि मैं कितनी ही हदीसें सुनता हूँ और जब दोहराता हूँ तो एक हर्फ़ (अक्षर) की भी ग़लती नहीं होती ।”

नबी (सल्ल०) ने यह सुनकर फ़रमाया, “काबा के रब की कसम ! अबुल हसन वाक़ई मोमिन हैं ।”

दुआ पढ़ने का तफ़सीली तरीका बताते हुए नबी (सल्ल०) ने हिदायत फ़रमाई कि जुमा की रात में यह दुआ पढ़ें । मेरे भाई याकूब (अलै०) के बेटों ने, जब उनसे इसतिगाफ़ार की दुआ के लिए दरखास्त की तो उन्होंने फ़रमाया, “मैं बहुत

जल्द तुम्हारे लिए इसतिगाफ़ार करूँगा ।” याकूब (अलै०) का मक़सद था कि जुमा की रात आने पर मैं तुम्हारे लिए इसतिगाफ़ार करूँगा, तो ऐ अली ! तुम जुमा की रात में तहज्जुद के वक़्त उठो, इसलिए कि यह वक़्त दुआ के क़बूल होने का वक़्त है । तबीअत उस वक़्त हाज़िर होती है और खुदा की तरफ़ पूरी यकसूई होती है और अगर रात के आखिरी हिस्से में न उठ सको तो आधी रात को उठो और अगर आधी रात को भी न उठ सको तो शुरू रात में चार रक़अत नफ़ल इस तरह पढ़ो कि पहली रक़अत में सूरा फ़ातिहा के बाद सूरा यासीन<sup>१</sup> और दूसरी रक़अत में सूरा फ़ातिहा के साथ सूरा दुखान<sup>२</sup> और तीसरी रक़अत में सूरा फ़ातिहा और अलिफ़-लाम-मीम अस-सज्दा<sup>३</sup> और चौथी रक़अत में सूरा फ़ातिहा के बाद सूरा मुल्क<sup>४</sup> पढ़ो । फिर जब अतहियात पढ़कर सलाम फेर लो तो अच्छे अन्दाज़ में खुदा की हम्द व सना करो और निहायत अच्छे तरीक़े पर नबी (सल्ल०) और दूसरे तमाम नबियों पर दरूद व सलाम भेजो और सारे मोमिन मदों और मोमिन औरतों के लिए इसतिगाफ़ार करो और अपने उन भाइयों के लिए इसतिगाफ़ार करो जो ईमान लाने में तुम पर बाज़ी ले गए हैं । फिर आखिर में यह दुआ पढ़ो—

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِيْ اَبَدًا مَا اَبْقَيْتَنِيْ وَاَرْحَمْنِيْ اَنْ اَتَكَلَّفَ  
مَا لَا يَعْزِيْنِيْ وَاَرْزُقْنِيْ حُسْنَ النَّظَرِ فِيمَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ، اَللّٰهُمَّ بَدِيعَ  
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ الَّتِي لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ  
يَا اَللهُ يَا رَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَنُوْرٍ وَجْهِكَ اَنْ تُلْزِمَ قَلْبِيْ حِفْظَ كِتَابِكَ  
كَمَا عَلَّمْتَنِيْ وَاَرْزُقْنِيْ اَنْ اَتَلُوْهُ عَلٰى النَّحْوِ الَّذِيْ يُرْضِيْكَ عَنِّيْ  
اَللّٰهُمَّ بَدِيعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ الَّتِي  
لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللهُ يَا رَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَنُوْرٍ وَجْهِكَ اَنْ تُنَوِّرَ  
بِكِتَابِكَ بَصَرِيْ وَاَنْ تُطْلِقَ بِهِ لِسَانِيْ وَاَنْ تُفَرِّجَ بِهِ عَن قَلْبِيْ وَاَنْ

१. कुरआन मजीद की सूरा, ३६

२. कुरआन मजीद की सूरा, ४४

३. कुरआन मजीद की सूरा, ३२

४. कुरआन मजीद की सूरा, ६७

تَشْرَحَ بِهِ صَدْرِي وَأَنْ تَغْسِلَ بِهِ بَدَنِي فَإِنَّهُ لَا يُعِينُنِي عَلَى الْحَقِّ غَيْرُكَ  
وَلَا يُؤْتِيهِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ. (ترمذی)

अल्लाहुम्महम्नी बितर्किल मआसी अब-दम मा अब्कैतनी वहम्नी अन  
अ-त-कल्ल-फ़ मा ला यअनीनी वर्जुक्नी हुस्न ज़रि फ़ीमा युर्ज़ी-क अन्नी  
अल्लाहुम-म बदीअस्समावाति वल अर्ज़ि ज़लजलालि वल-इक्रामि  
वल-इज़्जतिल्लती ला तुरामु अस-अलु-क या अल्लाहु या रहमानु बि  
जलालि-क व नूरि वजिह-क अन तुल-ज़ि-म क़ल्बी हिफ़-ज किताबि-क  
क-मा अल्लम-त-नी वर्जुक्नी अन् अत-लूहु अलन्नहविल्लज़ी युर्ज़ी-क अन्नी  
अल्लाहुम-म बदी अस्समावाति वल-अर-ज़ि ज़ल-जलालि वल-इकरामि  
वल इज़्जतिल्लती ला तुरामु अस-अलु-क या अल्लाहु या रहमानु बि  
जलालि-क व नूरि वजिह-क अन् तुनव्वि-र बिकिताबि-क ब-स-री व अन  
तुत-लि-क़ बिही लिसानी व अन तुफ़रि-ज बिही अन क़ल्बी व अन तश-र-ह  
बिही सदरी व अन तग़सि-ल बिही ब-द-नी फ़इन्नहू ला युईनुनी अलल हक्कि  
ग़ैरु-क व ला युअ्तीहि इल्ला अन-त व ला हौ-ल व ला-कूव्व-त इल्ला  
बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम । (तिरमिज़ी)

“ऐ खुदा ! तू मुझे जब तक भी जिन्दा रखे अपनी रहमत से हमेशा  
गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ दे और अपनी रहमत से मुझे बेमक्सद और  
बेकार की बातों से दूर रहने की ताक़त अता फ़रमा और मुझे उन कामों  
में अच्छी नज़र और सूझ-बूझ दे जिनसे तेरी रिज़ा हासिल हो । ऐ खुदा !  
आसमानों और ज़मीन को बौर मिसाल के बनानेवाले, अज़मत व  
एहतिरामवाले और ऐसी सत्ता रखनेवाले जिसके मुकाबले में आने का इरादा  
भी नहीं किया जा सकता । ऐ खुदा ! ऐ रहमकरनेवाले ! मैं तुझ से तेरी  
बुजुर्गी और तेरी ज़ात के नूर का वास्ता देकर सवाल करता हूँ कि जिस  
तरह तूने मुझे अपनी किताब सिखाई उसी तरह मुझे उसके हाफ़िज़े की  
भी ताक़त दे और मुझे इस किताब को पढ़ने की इस तरह तौफ़ीक़ दे  
जिससे तेरी रिज़ा हासिल हो । ऐ आसमानों और ज़मीन के बनानेवाले !  
अज़मेत व एहतिरामवाले और ऐसी सत्ता रखनेवाले जिसके मुकाबले का  
इरादा भी नहीं किया जा सकता, ऐ खुदा ! अपार दया करनेवाले ! मैं  
तेरी बुजुर्गी और तेरी ज़ात के नूर का वास्ता देकर तुझ से सवाल करता

हूँ कि तू अपनी किताब की बरकत से मेरी आँखों को रौशन कर दे और मेरी ज़बान पर इसके शब्द जारी कर दे और मेरे दिल से ग़म और घुटन दूर कर दे और इसकी बरकत से इसके लिए मेरे सीने को खोल दे और इसकी बरकत से मेरे जिस्म को धोकर पाक-साफ़ कर दे । तेरे सिवा कोई नहीं जो हक़ के मामले में मेरी मदद व हिमायत कर सके, हक़ में नवाज़नेवाला बस तू ही है; गुनाहों से बाज़ रहने की ताक़त और नेकी पर ज़मने की ताक़त खुदा ही से मिल सकती है जो बड़ा ही बुलन्द और बहुत ही बुजुर्ग़ीवाला है ।”

## 51. कुरआन की समझ के लिए दुआ

कुरआन मजीद की तिलावत और उसके मतलब पर सोच-विचार मोमिन की प्यारी इबादत है। कुरआन से लगाव खुदा से ताल्लुक की दलील भी है और खुदा से ताल्लुक का जरिया भी। कुरआन में सोच-विचार करने से मोमिन को रूहानी खुशी भी हासिल होती है और उसी के ज़रिए उस पर हिकमत के दरवाज़े भी खुलते हैं।

कुरआन हकीम बेशक बड़ी आसान किताब है। जहाँ तक उससे हिदायत हासिल करने और उसके हुक्मों की पैरवी करने का ताल्लुक है, उसकी तालीम (शिक्षाएँ) बड़ी सादा, खुली हुई और हर एच-पेच से पाक है अलबत्ता उसके मर्म-भेद और उसकी गूढ़ बातों को समझने के लिए ज़रूरी है कि आप कुरआन की समझ पैदा करने के तमाम आदाब और तमाम शर्तों के साथ उसको पढ़ें, सच्ची तलब के साथ उस पर सोचें और किसी वक़्त भी उससे ग़फ़लत और बेनियाज़ी न बरतें, बराबर पढ़ते रहें और ज़िन्दगी भर पढ़ते रहें।

यह बिलकुल फ़ितरी बात है कि पढ़ते वक़्त कुछ ऐसी मुश्किल जगहें भी आएँगी जहाँ गहरे सोच-विचार के बावजूद भी किसी मतलब पर आपका ज़ेहन मुतमइन न होगा और आप सख़्त उलझन महसूस करेंगे। लेकिन अगर आप वाक़ई कुरआन के विद्यार्थी हैं तो आप हरगिज़ मायूस न हों, न आपका दिल टूटे, न कुरआन के बारे में किसी ग़लत खयाल को दिल में आने दें और न उकताकर कुरआन में सोचना-समझना छोड़ दें, बल्कि पूरी यकसूई के साथ खुदा की तरफ़ मुतवज्जोह हों और पूरी सुपुर्दगी के साथ खुदा से इस मुश्किल के हल में मदद तलब करें। कुरआन की आयतों में अपनी खाहिश और अपनी राय से मतलब निकालने या अपना मनपसन्द मतलब निकालने की बेहूदा हिम्मत बिलकुल न करें बल्कि हक़ के एक तलबगार की तरह उस मतलब पर जमे रहें जो कुरआन पाक के शब्दों से समझ में आ रहा हो और फिर इतिहाई आजिज़ी और बेचारगी के साथ खुदा से दुआ करें कि ऐ अल्लाह ! मेरी इस उलझन को दूर फ़रमा; मुझ पर सही मतलब खोल दे और मेरे दिल को उस मतलब पर इतमीनान दे जो वाक़ई सही है। इस मक़सद के लिए रात की नफ़लों में तनिक आवाज़ से, ठहर-ठहरकर तिलावत भी कीजिए और नीचे लिखी हुई दुआ भी पढ़ते रहिए। खुदा से उम्मीद है कि यह फ़ायदा पहुँचाएगी।

नबी (सल्ल०) का इरशाद है कि जो बन्दा भी अपने किसी ग़म और फ़िक्क में यह दुआ पढ़ेगा, खुदा उसके फ़िक्क और ग़म को दूर फ़रमाकर खुशी देगा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ عَبْدُكَ، اِبْنُ عَبْدِكَ، اِبْنُ اَمَّتِكَ نَاصِيَتِيْ بِيدِكَ، مَا ضَرَّ فِىْ  
 حُكْمِكَ، عَدَلٌ فِىْ قَضَاؤِكَ اسْتَلَّكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ  
 نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهُ فِىْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهُ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوْ اسْتَاثَرْتُ  
 بِهِ فِىْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رِبْعَ قَلْبِيْ، وَتُوَرَّ صَدْرِيْ  
 وَجَلَاءَ حُزْنِيْ وَذِهَابَ هَمِّيْ وَغَمِّيْ. (مسند احمد، ابن حبان)

अल्लाहुम-म इन्नी अब्दु-क, इब्नु अब्दि-क, इब्नु अ-म-ति-क नासि-यतो  
 बियदि-क, माजिन फ्री हुक्मि-क, अदलुन फ्री कज़ाई-क अस-अलु-क  
 बिकुल्लिस्मिन हु-व-ल-क, सम्मै-त बिही-नफ़-स--क अव अन्जल-तहू  
 फ्री किताबि-क अव अल्लमतहू अ-ह-दम- मिन खल्कि-क अविस्तासर-त  
 बिही फ्री इल्मिल ग़ैबि इन-द-क, अन् तज-अ-लल कुरआ-न रबी-अ कल्बी,  
 व नू-र सदरी व जिला-अ हुज्नी व जिहा-ब हम्मी व गम्मी ।

“ऐ खुदा ! मैं तेरा बन्दा हूँ, तेरे बन्दे का बेटा हूँ, तेरी बन्दी का  
 बेटा हूँ, मेरी पेशानी तेरी मुट्ठी में है, मुझ पर तेरा ही हुक्म चलता है,  
 मेरे हक में तेरा फैसला ही असल इंसाफ़ है, मैं तुझसे तेरे हर उस नाम  
 के वास्ते से, जो तेरी शान के मुताबिक़ है, जो तूने अपने लिए रखा  
 है या तूने अपनी किताब में उतारा है या अपनी मखलूक में से किसी  
 को बताया है या तूने अपने पास ग़ैब के खज़ाने में उसे छिपा ही रहने  
 दिया है— यह दरखास्त करता हूँ कि कुरआन को मेरे दिल की बहार,  
 मेरे सीने का नूर, मेरे ग़म की दवा और मेरी फ़िक्र और पेशानी का इलाज  
 बना दे ।” (मुस्नद अहमद, इब्ने हिब्बान)

हदीस रिवायत करनेवाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ि०) का बयान  
 है कि नबी (सल्ल०) से पूछा गया कि हम इस दुआ को सीख लें तो आपने इरशाद  
 फ़रमाया, “जो आदमी भी इस दुआ को सुने, वह ज़रूर इसको सीखे और ज़रूर  
 याद करे ।”



## 52. जुमे का खुतबा

इस्लामी जजबों को उभारने, ईमान को ताजा रखने और याददेहानी की ज़िम्मेदारी को तरतीब के साथ लगातार अंजाम देने के लिए जुमे का खुतबा बहुत ही असरदार जरिया है। फ़ितरी अन्दाज़ में हर हफ्ते मुसलमानों को उनकी ज़िम्मेदारी याद दिलाने, दीन के तकाज़े समझाने और इस्लाम के लिए कुछ करने की तड़प को पैदा करने के लिए एक ऐसा दीनी इन्तिज़ाम है जिसकी कोई मिसाल पेश नहीं की जा सकती। लेकिन इससे भरपूर फ़ायदा आप उसी वक़्त उठा सकते हैं जब आप सुननेवालों को उनकी अपनी ज़बान में भी ख़िताब करें।

जहाँ तक दूसरे खुतबे का ताल्लुक है तो वह अरबी ज़बान ही में होना चाहिए। हाँ, पहला खुतबा आप उस ज़बान में भी दें जिसे सुननेवाले जानते हों। अच्छा तो यह है कि आप आज के हालात को सामने रखते हुए दीन के तकाज़ों पर छोटी, पर ज़ामेअ तक़रीर अपने तौर पर तैयार करें और हर हफ्ते बराबर और तरतीब के साथ ज़ेहन को बनाने और अमल पर उभारने की कोशिश करें, लेकिन किसी वजह से अगर आप ऐसा न कर सकें तो कम से कम इतना ज़रूर कीजिए कि कोई भी अरबी खुतबा पढ़कर उसका मतलब भर तर्जुमा उस ज़बान में भी पेश करें जिसको सुननेवाले समझते हों। अरबी खुतबे के चुनाव में भी ज़्यादा मुनासिब यह है कि आप खुद नबी (सल्ल०) या खुलफ़ा-ए-राशिदीन का कोई खुतबा चुन लें। नीचे हम नबी (सल्ल०) के ऐसे वाक्य लिखते हैं जिसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है। इनमें एक तो वह मशहूर खुतबा है जो हिज्रत के बाद आप (सल्ल०) ने मदीने में पहले जुमा को दिया था और दूसरा वह है जिसमें आप (सल्ल०) ने मुसलमानों को बड़े भले और ज़ोरदार अंदाज़ में उभारा है कि वे कुरआन से गहरा लगाव पैदा करें और बराबर इसमें सोच-विचार करते रहें, इसलिए कि इससे ताल्लुक जोड़े बिना दीन से ताल्लुक कायम रखना मुमकिन नहीं।

### मदीने में पहला खुतबा

الْحَمْدُ لِلَّهِ أَحْمَدُهُ وَاسْتَعِينَهُ وَاسْتَغْفِرُهُ وَاسْتَهْدِيهِ وَأُؤْمِنُ بِهِ وَلَا أَكْفُرُهُ، وَأُعَادِي مَنْ يَكْفُرُهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. أَرْسَلَهُ بِالْهُدَى وَالنُّورِ

وَالْمَوْعِظَةُ عَلَى فِتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ وَقِلَّةٍ مِّنَ الْعِلْمِ وَضَلَالَةٍ مِّنَ  
النَّاسِ وَانْقِطَاعٍ مِّنَ الزَّمَانِ وَذُنُوبٍ مِّنَ السَّاعَةِ وَقُرْبٍ مِّنَ الْأَجَلِ  
وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ رَشَدَ وَمَنْ يَعْصِهِمَا فَقَدْ غَوَىٰ وَفَرَطَ  
وَضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا، أَوْصِيَكُمْ بِتَقْوَى اللَّهِ فَإِنَّهُ خَيْرٌ مَّا أَوْصَىٰ بِهِ  
الْمُسْلِمُ الْمُسْلِمُ أَنْ يَحْضَهُ عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنْ يَأْمُرَهُ بِتَقْوَى اللَّهِ  
فَاحْذَرُوا مَا حَذَرَكُمُ اللَّهُ مِنْ نَفْسِهِ وَلَا أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ نَصِيحَةً وَلَا  
أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ ذِكْرًا وَإِنْ تَقَوَّى اللَّهُ لِمَنْ عَمِلَ بِهِ عَلَى وَجَلٍ  
وَمَخَافَةٍ مِّن رَّبِّهِ عَوْنٌ صِدْقٍ عَلَى مَا تَبْغُونَ مِنْ أَمْرِ الْآخِرَةِ وَمَنْ  
يُصْلِحِ الَّذِي بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللَّهِ مِنْ أَمْرِهِ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ لَا يَنْوِي  
بِذَلِكَ إِلَّا وَجْهَ اللَّهِ يَكُنْ لَهُ ذِكْرًا فِي عَاجِلِ أَمْرِهِ وَذُخْرًا فِيْمَا بَعْدَ  
الْمَوْتِ حِينَ يَفْتَقِرُ الْمَرْءُ إِلَى مَا قَدَّمَ وَمَا كَانَ سِوَى ذَلِكَ يَوْذُلُ  
أَنْ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا وَيَحْذَرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَؤُوفٌ  
بِالْعِبَادِ وَالَّذِي صَدَقَ قَوْلُهُ، وَأَنْجَزَ وَعْدَهُ لَا خُلْفَ لِدَلِيلِكَ فَإِنَّهُ يَقُولُ  
عَزَّ وَجَلَّ مَا يُبَدِّلُ الْقَوْلَ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ فَاتَّقُوا اللَّهَ فِي  
عَاجِلِ أَمْرِكُمْ وَآجِلِهِ فِي السِّرِّ وَالْعَلَانِيَةِ فَإِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفِرْ عَنْهُ  
سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا. وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا. وَإِنْ  
تَّقَوَّى اللَّهُ يُوقِى مَقْتَهُ وَيُوقِى عِقَابَتَهُ وَيُوقِى سَخَطَهُ، وَإِنْ تَقَوَّى  
اللَّهُ يَبَيِّضُ الْوُجُوهَ. وَيَرْضَى الرَّبُّ وَيَرْفَعُ الدَّرَجَةَ.

خُذُوا بِحَظِّكُمْ وَلَا تَفَرِّطُوا فِي جَنْبِ اللَّهِ وَقَدْ عَلَّمَكُمُ اللَّهُ كِتَابَهُ وَ

نَهَجَ لَكُمْ سَبِيلَهُ لِيَعْلَمَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَيَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ. فَأَحْسِنُوا كَمَا  
 أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ وَعَادُوا أَعْدَاءَهُ. وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ. هُوَ  
 اجْتَبَاكُمْ وَسَمَّكُمْ الْمُسْلِمِينَ لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ  
 حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ.

فَاكْثُرُوا ذِكْرَ اللَّهِ وَاعْمَلُوا لِمَا بَعْدَ الْيَوْمِ فَإِنَّهُ مَنْ يُصْلِحْ مَا بَيْنَهُ  
 وَبَيْنَ اللَّهِ يَكْفِهِ اللَّهُ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ النَّاسِ.

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يَقْضِيْ عَلَى النَّاسِ وَلَا يَقْضُونَ عَلَيْهِ وَيَمْلِكُ مِنَ النَّاسِ  
 وَلَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَظِيمِ. (طبری جلد: ۱۲ ص: ۲۵)

अल-हम्दु लिल्लाहि अहमदुहू व अस्तईनुहू व अस्तगफिरुहू व अस्तहदीहि  
 व ऊमिनु बिही व ला अक्फुरुहू, व उआदी मय्यैक्फुरुहू । व अशहदु अल्ला  
 इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अशहदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू  
 व रसूलहू । अर-स-ल-हू बिलहुदा वन्नूरि वल-मौईजति अला फ़त-रतिम  
 मिनरुसुलि व किल्लतिम मिनल इलिम व ज़लालतिम मिन्नासि वन किताइम  
 मिनज़मानि व दुनूविम-मिनस्साअति व कुर्विम मिनल अजल । व मय्युति-  
 इल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द र-श-द व मय्यैअसिहिमा फ़-क़द गवा व फ़र-त  
 व ज़ल्ला ज़लालम बईदा । ऊसीकुम बितक्वल्लाहि फ़इन्नहू खैरु मा औसा  
 बिहिल मुसलिमुल मुसलि-म अय्यैहुज़-ज़हू अलल आखिरति व अय्यैअमुरहू  
 वितक्वल्लाहि फ़हज़रु मा हज़-ज़-र कुमुल्लाहु मिन नफ़सिही व ला  
 अफ़-ज़-ल मिन ज़ालि-क नसीहतवै-व ला अफ़-ज़-ल मिन ज़ालि-क ज़िक्वै  
 इन-न तक्वल्लाहि लिमन अमि-ल बिही अला व-ज लिवै-व मखाफ़तिम  
 मिर-रब्बिहि औ-नु सिदक्किन अला म तब्बू-न मिन अमरिल आखिरति व  
 मय्युसलिहिल्लजी बैनहू व बैनल्लाहि मिन अमरिहि फ़िस्सिरि वल अलानियति  
 ला यन्वी बिज़ालि-क इल्ला वजहल्लाहि यकुल्लहु ज़िक-रन फ़ी आजिलि  
 अमरिही व ज़ुख़रन फ़ीमा बअ-दल मौति ही-न यफ़्तकिरुल मरउ इला मा

कह-म व मा का-न सिवा जालि-क य वदु लौ अन-न बै-न हा व बैनह  
 अ-म-दम बईदवै-व युहज्जिरु कुमुल्लाहु नफ्सहू वल्लाहु रऊकुम बिल ईबादि  
 वल्लजी स-द-क कौलहू, व अन-ज-ज वअ-दहू ला-खुलि-फ़ लिजालि-क  
 फ़ इन्नहू यकूलु अज-ज व जल-ल मा युबइलुल कौलु ल-दय-य व मा  
 अना बिजल्लामिल लिल अबीदि फ़त्तकुल्ला-ह फ़ी आजिलि अमरिकुम व  
 आजिलि-ही फ़िस्सिरि वल अलानियति फ़-इन्नहू मय्यंतकिल्ला-ह युकफ़िर  
 अन्हु सय्यिआतिही व युअजिम लहू अजरा । व मय्यंतकिल्ला-ह फ़-कद  
 फ़ा-ज फ़ौजन अजीमा । व इन-न तक्वल्लाहि युवक्की मक्तहू व युवक्की  
 उकू-ब-त-हू व युवक्की सुख्तहू, व इन-न तक्वल्लाहि युबय्यिजुल वुजू-ह ।  
 व युर्जिर रब-ब व यर-फ़उद-द-र-जह ।

खुजू बिहज्जिकुम व ला तुफ़रितू फ़ी जम्बिल्लाहि व कद अल-ल-म  
 कुमुल्लाहु किताबह । व न-ह-ज लकुम सबी-लहु लियअ-ल-मल्लजी-न  
 स-द-कू व यअ-ल-मलकाजिबीन । फ़-अहसिनू कमा अह-स-नल्लाहु  
 इलैकुम व आदू अअ-दाअह । व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़-क़ जिहादिही ।  
 हुवज्तबाकुम व सम्माकुमुल मुसलिमी-न लियहलि-क मन ह-ल-क  
 अम-बय्यिनतिव-व यह्या मन हय-य अमबय्यिनतिन वला कूव्व-त इल्ला  
 बिल्लाह ।

फ़-अक्सिरू जिक्वल्लाहि वअ-मलू लिमा बअ-दल यौमि फ़-इन्नहू  
 मय्यस्लिह मा बैनहू व बैनल्लाहि यक्फ़िहिल्लाहु मा बैनहू व बैनन्नास ।

जालि-क बि-अन्नल्ला-ह यक्की अलन्नासि वला यक्ज़ू-न अलैहि व  
 यमलिकु मिनन्नासि व ला यमलिकू-न मिन्हु अल्लाहु अक्बर व ला कूव्व-त  
 इल्ला बिल्लाहिल अजीम ।  
 (तबरी, भाग-12, पृ० 255)

“शुक्र व तारीफ़ अल्लाह के लिए, मैं उसका शुक्र अदा करता हूँ,  
 उससे मदद चाहता हूँ, उससे माग़फ़िरत तलब करता हूँ और उससे हिदायत  
 चाहता हूँ और उसपर ईमान लाता हूँ और उसके साथ कुफ़्र नहीं करता  
 और उसको अपना दुश्मन समझता हूँ जो उससे कुफ़्र करता है और मैं  
 गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है,  
 उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद खुदा के बन्दे  
 और उसके रसूल हैं जिनको खुदा ने हिदायत, नूर और नसीहत देकर ऐसे  
 दौर में रसूल बनाया जबकि लम्बी मुद्दत से रसूलों के आने का सिलसिला  
 बन्द था । सच्चे ज्ञान की रौशनी हल्की पड़ चुकी थी, गुमराही का दौर-दौरा  
 था, जिन्दगी का निज़ाम (व्यवस्था) बिगड़ चुका था, क्रियामत सिरों पर

आ गई थी और हर आदमी की मौत उसके सिर पर मंडरा रही थी ।

अतः जिसने (रसूल को मानकर) अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (पैरवी) की, उसने हिदायत को पा लिया और जिसने (रिसालत का इनकार करके) खुदा और उसके रसूल की नाफरमानी की, वह गुमराह हुआ और कोताह अंदेशी में घिर गया और हक के रास्ते से भटककर गुमराही में दूर जा पड़ा ।

मैं तुम्हें वसीयत करता हूँ कि खुदा से डरते रहो, एक मुसलमान को जो बेहतरीन नसीहत कर सकता है वह यही है कि वह उसे आखिरत का भंडार जुटाने पर उभारे और खुदा से डरते रहने को कहे । अतः अल्लाह से डरो जैसा कि उसने अपनी ज्ञात से डरते रहने का हुक्म दिया है, उससे बेहतर न कोई और वसीयत है और न उससे बेहतर कोई याद-देहानी हो सकी है ।

और सच तो यह है कि खुदा का तक्वा बन्दे के लिए, जो खुदा से डरते-काँपते जिन्दगी गुजारे, आखिरत के बेहतर अंजाम का सच्चा मददगार है, जिसकी तुम खाहिश करते हो और जो आदमी सच्ची नीयत के साथ सिर्फ अल्लाह की रिज़ा के लिए खुदा से अपने मामले को खुले-छिपे हर हाल में ठीक कर ले, तो उसका तुरन्त बदला दुनिया में यह है कि वह नेक नाम होगा और मौत के बाद की उस घड़ी में वह मालामाल होगा जबकि हर आदमी अपने उन नेक कामों का बेहद मुहताज होगा जो उसने उस वक़्त के लिए किए होंगे और उनके सिवा जो बुरे काम होंगे, उनके बारे में वह तमन्ना करेगा कि काश ! ये काम मुझसे बहुत दूर होते और खुदा तुमको अपनी ज्ञात से डराता है और खुदा अपने बन्दों पर इतिहाई मेहरबान है ।

कसम है उस ज्ञात की जिसकी बात सच्ची है और वादा वफ़ा होकर रहता है कि यह बात होकर रहेगी, क्योंकि खुद वह बुजुर्ग व बरतर फ़रमाता है, “मेरे हुज़ूर बात बदली नहीं जाती और मैं अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करनेवाला नहीं हूँ ।” अतः खुदा से डरते रहो दुनिया और आखिरत के सारे खुले और छिपे मामलों में । सच तो यह है कि जो खुदा के ग़ज़ब से डरता है खुदा उसके गुनाहों को उससे झाड़ देता है और उसके बदले को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाता है और जो उससे डरता रहा, उसने बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की और अच्छी तरह जान लो कि खुदा का डर बन्दे को उसके गुस्से से दूर रखता है; उसके अज़ाब से बचाकर

रखता है और उसकी नाराज़गी से बचाता है और इस सच्चाई को भी अच्छी तरह समझ लो कि खुदा का तक्का चेहरों को रौशन और रौनकदार बनाता है, मालिक को अपने बन्दे से खुश रखता है और बन्दे के मरतबे और बुलन्द करता है ।

देखो, अपने-अपने नसीब की नेकियाँ समेट लो और खुदा की जनाब में हरगिज़ कोताही न करो । जबकि उसने तुम्हें अपनी किताब का ज्ञान देकर अपना सीधा रास्ता तुम पर खोल दिया है ताकि वह जान ले उन लोगों को जो अपने ईमान के दावे में सच्चे हैं और उनको जो झूठे हैं । अतः तुम भी उन लोगों के साथ बेहतर व्यवहार करो, जैसा कि उसने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया है और उसके दुश्मनों को अपना दुश्मन समझो और उसकी राह में ऐसा जिहाद करो कि जिहाद का हक अदा हो जाए । उसने तुम्हें अपने दीन के लिए चुन लिया है और तुम्हारा नाम 'मुस्लिम' रखा है, ताकि जिसे हलाक होना है वह रौशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे जिन्दा रहना है, वह रौशन दलील के साथ जिन्दा रहे और ताक़त व कूव्वत का स्रोत खुदा की ज्ञात है ।

अतः खुदा का जिक्र ज़्यादा से ज़्यादा करो और आज के बाद आनेवाले कल के लिए अमल करते रहो, क्योंकि जो बन्दा अपने और अपने खुदा के दरमियान मामले को सँवार लेता है, खुदा उसके लिए इन तमाम मामलों में काफ़ी हो जाता है जो उसके और बन्दों के बीच होते हैं, इसलिए कि खुदा ही बन्दों के फ़ैसले फ़रमाता है, बन्दे उसका फ़ैसला नहीं करते । वह इनसानों की हर चीज़ का मालिक है और इनसान के कब्ज़े में उसकी कोई चीज़ नहीं । वह सबसे बड़ा है और कूव्वत व ताक़त सिर्फ़ उसी के पास है ।”

## कुरआन मजीद से लगाव की हिदायत

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ أَحْمَدُهُ وَأَسْتَعِينُهُ وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ  
 أَعْمَالِنَا مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضِلَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنْ لَا  
 إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ .

إِنَّ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللَّهِ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَيَّنَهُ اللَّهُ فِي قَلْبِهِ وَأَدْخَلَهُ  
 فِي الْإِسْلَامِ بَعْدَ الْكُفْرِ، وَاخْتَارَهُ عَلَى مَا سِوَاهُ مِنْ أَحَادِيثِ النَّاسِ  
 إِنَّهُ أَصْدَقُ الْحَدِيثِ وَأَبْلَغُهُ. أَحِبُّوا مَنْ أَحَبَّ اللَّهُ وَأَحِبُّوا اللَّهَ مِنْ  
 كُلِّ قُلُوبِكُمْ وَلَا تَمْلُوا غَلَامَ اللَّهِ وَذِكْرَهُ وَلَا تَقْسُوا عَلَيْهِ قُلُوبَكُمْ.  
 اعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَصَدِّقُوا  
 صَالِحَ مَا تَعْمَلُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ وَتَحَابُّوا بِرُوحِ اللَّهِ بَيْنَكُمْ. وَالسَّلَامُ  
 عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ. (اعجاز القرآن)

इन्ल हम-द लिल्लाहि अहमदुहू व अस्तईनुहू व नऊजुबिल्लाहि मिन शुरूरि  
 अनफुसिना व मिन सय्यिआति अअ-मालिना मय्यंहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल-ल  
 लहू व मय्युज़-लिलहु फ़ला हादि-य लहू व अशहदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु  
 वहदहू ला शरी-क लह ।

इन-न अहसनलहदीसि किताबुल्लाहि क़द अफ़-ल-ह मन ज़य्य-न-हुल्लाहु  
 फ़ी क़लबिही व अद-ख-लहू फ़िल इस्लामि बअ-दल कुफ़रि, वख़्तारहू अला  
 मा सिवाहू मिन अहादीसिन्नासि । इन्हू अस्दकुल हदीसि व अब्लगुह । अहिबू  
 मन अ-हब्बल्ला-ह व अहिबुल्ला-ह मिन कुल्लि कुलूबिकुम व ला तमल्लू  
 कलामल्लाहि व ज़िक-रहू, व ला तक्सू अलैहि कुलूबिकुम ।

उअ-बुदुल्ला-ह व ला तुशरिकू बिही शैअन, इत्तकुल्ला-ह हक़-क़ तुक़ातिही  
 व सदिक् सालि-ह मा तअ-मलू-न बिअफ़वाहिकुम व तहाबू बिरूहिल्लाहि  
 बैनकुम । वससलामु अलैकुम व रह-मतुल्लाह ।

(एजाज़ुल कुरआन)

“बेशक शुक्र व तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है ! मैं उसकी हम्द  
 व तारीफ़ करता हूँ, उससे मदद चाहता हूँ और हम उसकी माफ़ी के दामन  
 में पनाह चाहते हैं, नफ़स की शरारतों से और बद-आमालियों के बदले  
 से जिसको खुदा हिदायत दे (और वह उसी को हिदायत देता है जो वाकई  
 हिदायत की तलब रखता हो) तो उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता

और जिसको खुदा सीधे रास्ते से भटका दे (और वह उसी को भटकाता है जो सीधे रास्ते की तलब न रखता हो) तो उसको कोई हिदायत नहीं दे सकता ।

में गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई प्राबूद नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं ।

सच तो यह है कि सबसे बेहतर कलाम खुदा की किताब है । वह आदमी कामयाब हो गया जिसके दिल में अल्लाह की किताब की रौनक है और जिसको कुफ्र के बाद अल्लाह ने इस्लाम की दौलत दी । जिसने सारे इनसानी कलामों को छोड़कर खुदा की किताब को अपने लिए चुना । बेशक खुदा का कलाम पूरे का पूरा सच्चाई है, इनतिहाई असरदार है, जो उससे लगाव रखे, तुम भी उससे मुहब्बत रखो और अपने दिलों की सारी तवज्जोह के साथ खुदा से सच्ची मुहब्बत करो और उसके कलाम की तिलावत और उसकी याद से कभी भी न उकताओ, और न कभी तुम्हारे दिल अल्लाह के कलाम की तरफ से बेनियाज और सरल हों । अतः खुदा ही की बन्दगी करो, किसी को उसके साथ ज़रा भी शरीक न बनाओ और उससे डरते रहो, जैसा कि डरने का हक है और अपने नेक कामों की तसदीक ज़बान से भी करते रहो (यानी ज़बान से वही कहो जो तुम्हारी शान के मुताबिक हो) और खुदा की रहमत और दीन की बुनियाद पर आपस में मुहब्बत रखो ।” वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह !

## दूसरा खुतबा

الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِهِ أَرْسَلَهُ اللَّهُ شَاهِدًا وَنَذِيرًا وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا وَعَلَى آلِهِ وَاصْحَابِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا كَثِيرًا

أَمَّا بَعْدُ: فَيَا أَيُّهَا النَّاسُ! أَوْصِيكُمْ بِتَقْوَى اللَّهِ فَإِنَّ تَقْوَى اللَّهِ مِلَاكُ الْحَسَنَاتِ. وَعَلَيْكُمْ بِالطَّاعَةِ فَإِنَّهُ مَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ قَارَى



قَوْزًا عَظِيمًا. وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى فِي كِتَابِهِ الْمَجِيدِ. إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ  
يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا.

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ الَّذِينَ  
اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ. اللَّهُمَّ امْطِرْ شَائِبَ رِضْوَانِكَ عَلَى السَّابِقِينَ  
الْأَوَّلِينَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ خُصُوصًا عَلَى أَفْضَلِ الْبَشَرِ بَعْدَ  
الْأَنْبِيَاءِ بِالتَّحْقِيقِ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ سَيِّدِنَا أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ  
اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ وَعَلَى أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ الْفَارُوقِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى  
عَنْهُ وَعَلَى أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ سَيِّدِنَا عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانٍ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى  
عَنْهُ وَعَلَى أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ سَيِّدِنَا عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ كَرَّمَ اللَّهُ وَجْهَهُ  
وَعَلَى وَلَدَيْهِ السَّعِيدَيْنِ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الْجَنَّةِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ رَضِيَ  
اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا وَعَلَى أُمَّهُمَا سَيِّدَةِ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَاطِمَةَ الزَّهْرَاءِ  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا وَعَلَى سَائِرِ الصَّحَابَةِ وَالتَّابِعِينَ رِضْوَانُ  
اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ.

اللَّهُمَّ انْصُرْ مَنْ نَصَرَ دِينَ مُحَمَّدٍ ﷺ وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ وَاخْذُلْ مَنْ  
خَذَلَ دِينَ مُحَمَّدٍ ﷺ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْهُمْ عِبَادَ اللَّهِ! رَحِمَكُمُ اللَّهُ  
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَى وَيَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ  
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ أَذْكُرُوا اللَّهَ يَذْكُرْكُمْ وَ  
ادْعُوهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللَّهِ تَعَالَى أَعْلَى وَأَوْلَى وَأَعَزُّ وَأَجَلُّ وَ  
أَتَمُّ وَأَهَمُّ وَأَعْظَمُّ وَأَكْبَرُّ.

अल-हम्दु लिल्लाहि हम्दन कसीरवै-वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही  
 अर-स-ल-हुल्लाहु शाहिदवै-व नजीरवै-व दाईयन इलल्लाहि बिइज्जिहि व  
 सिराजम-मुनीरा, व अला आलिही व अस्हाबिही व सल्ल-म तस्लीमन कसीरन  
 कसीरा ।

अम्माबअद—फ-या-अय्युहन्नासु ! ऊसीकुम बित्तव्वल्लाहि फ-इन-न  
 तव्वल्लाहि मिलाकुल ह-स-नात । व अलैकुम बित्ताअति फ-इन्नहू  
 मँय्युतिइल्ला-ह व रसूलहू फ-कद फा-ज्र फौजन अजीमा । व कालल्लाहु  
 तआला फी किताबिहिल मजीद । इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-त-हू युसल्लू-न  
 अलन्नबी-इ या अय्युहल्लजी-न आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा ।

अल्लाहुम-म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिवै-व अला  
 आलिही व अस्हाबिहिल्लजी-नत-त-ब ऊहु फी साअतिल उसरह ।  
 अल्लाहुम-म अम्तिर श-आबी-ब रिज्वानि-क अलस्साबिकी-नल अव्वली-न  
 मिनल मुहाजिरी-न वल अनसारि खुसूसन अला अफ़ज़लिल ब-शरि बअदल  
 अम्बियाई बित्तहकीकि अमीरिल मुअ्मिनी-न सय्यिदिना अबी  
 बक्रि-निस-सिद्दीकि रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अला अमीरिल मुअ्मिनी-न  
 सय्यिदिना उ-म-र-निल फारूकि रज़ियल्लाहु अन्हु व अला अमीरिल  
 मुअ्मिनी-न सय्यिदिना उसमानबि अफ़फ़ा-न रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व  
 अला अमीरिल मुअ्मिनी-न सय्यिदिना अली-यिबि अबी तालिबन कर्मल्लाहु  
 वज्हहू व अला व-ल-दैहि-सईदेनि सय्यिदा शबाबि अहिलल जन्नति  
 अल-ह-स-नि वल हुसैनि रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा व अला उम्मिहिमा  
 सय्यिदति निसाइ अहिलल जन्नति फ़ाति-म-तज्र-ज़हराइ रज़ियल्लाहु तआला  
 अन्हा व अला साइरिस्सहाबति वत्ताबिई-न रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम  
 अजमईन ।

अल्लाहुम्मनसुर मन न-स-र दी-न मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म  
 धज-अलना मिन्हुम, वर्रजुल मन-ख-ज-ल दी-न मुहम्मदिन सल्लल्लाहु  
 अलैहि व सल्ल-म व ला तजअलना मिन्हुम इबादल्लाहि ! रहि-म-कुमुल्लाहु  
 इन्नल्ला-ह यामुरु बिल अदलि वल एहसानि व ईताइ ज़िल कुर्बा व यन्हा  
 अनिल फ़हशाइ वल मुनकरि वल बरिय यइज़ुकुम ल-अल्लकुम त-ज़क्कल्ल-न  
 उज़्ज़ुकुल्ला-ह यज़्ज़ुकुम वदऊहु यस-तजिब लकुम व ल-ज़िकरुल्लाहि  
 तआला अअ-ला व औला व अ-अज़्ज़ु व अ-ज़ल्लु व अ-तम्मु व अ-हम्मु  
 व अअ-ज़मु व अकबर ।

सारी तारीफें और शुक्र अल्लाह के लिए है और बहुत-बहुत दरूद व सलाम हो उसके पैगम्बर पर, जिन्हें अल्लाह ने अपने हुक्म से गवाही देनेवाला, डरानेवाला और अल्लाह की ओर बुलानेवाला और रौशन चिराग बनाकर भेजा और बहुत-बहुत दरूद व सलाम हो उनकी आल पर और उनके साथियों पर ।

ऐ लोगो ! मैं तुम्हें अल्लाह का तक्रवा और परहेजगारी इखतियार करने की नसीहत करता हूँ । बेशक, अल्लाह का तक्रवा नेकियों का खजाना है । तुम्हारे लिए इताअत और फ़रमाबरदारी ज़रूरी है, तो जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा वह बड़ी कामयाबी पाएगा । अल्लाह तआला ने अपनी बड़ाईवाली किताब में फ़रमाया है, बेशक ! अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दरूद व सलाम भेजते हैं । ऐ ईमानवालो ! तुम भी उनपर दरूद और ख़ूब-ख़ूब सलाम भेजो ।'

ऐ अल्लाह ! तू अपनी रहमतों की बारिश कर, हमारे सरदार और हमारे मौला हज़रत मुहम्मद पर और उनकी आल और साथियों पर, जिन्होंने तंगी और मुसीबतों की घड़ियों में उनकी पैरवी की । ऐ अल्लाह ! अपनी रज़ामन्दी और खुशनुदी की बारिश फ़रमा, उन मुहाजिरों और अनसार पर जो पहले-पहल ईमान लाए । खासतौर से नबियों के बाद सबसे अफ़ज़ल इनसान अमीरुल मोमिनीन, हमारे सरदार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) पर और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) पर और अमीरुल मोमिनीन हमारे सरदार उसमान बिन अफ़फ़ान (रज़ि०) पर और अमीरुल मोमिनीन हमारे सरदार हज़रत अली इब्न अबी तालिब (कर्मल्लाहु वज्हुहु) पर और उनके दोनों नेक, जवान बेटे, जन्नतियों के सरदार हज़रत हसन और हुसैन (रज़ि०) पर और उन दोनों की माँ, जन्नती औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा (रज़ि०) पर और सारे सहाबा और ताबईन (रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन) पर ।

ऐ अल्लाह ! तू मदद फ़रमा उन लोगों की जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के लिए हुए दीन की मदद करें और हमें ऐसे लोगों में शामिल कर और नाकाम और रूसवा कर उन लोगों को जिन लोगों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के लिए हुए दीन को रूसवा और नाकाम बनाने की कोशिश की और हमें ऐसे लोगों में शामिल न कर ।

ऐ अल्लाह के बन्दो ! अल्लाह तुम पर रहम करे । बेशक, अल्लाह

हुक्म देता है इनसाफ़ करने का, एहसान करने का और रिश्तेदारों को देने का और वह मना करता है गन्दी बातों से, बुराइयों से और झुल्म व ज़्यादती से । वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम सबक लो । अल्लाह को याद रखो, वह तुम्हें याद रखेगा । उसे पुकारो वह तुम्हारी पुकार का जवाब देगा और (जान रखो कि) अल्लाह तआला का ज़िक्र बुलन्द ऊँची इज्जत और बड़ाईवाली, मुकम्मल, अहम, अज़ीम और बड़ी चीज़ है ।

### 53. निकाह का खुतबा

निकाह की शर्ई हैसियत समझाने, उसके तत्कार्यों को ज़ेहन में बिठाने और निकाह के ताल्लुक से आनेवाली बड़ी ज़िम्मेदारियों को याद दिलाने के लिए निकाह की महफ़िल में खुतबा पढ़ना भी मसनून है। इस मौके पर खुतबे से पूरा-पूरा फ़ायदा उठाने के लिए ज़्यादा मुनासिब यह है कि निकाह पढ़ानेवाले खुतबे का तर्जुमा और थोड़ी-सी व्याख्या भी अपनी भाषा में पेश कर दिया करें ताकि सुननेवाले अच्छी तरह समझ सकें। इस मक़सद को देखते हुए नीचे निकाह के खुतबे के साथ उसका तर्जुमा भी दिया जाता है—

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا مَنْ  
يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يَضِلَّهِ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ  
إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ  
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا  
زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً. وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ  
بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ  
وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ  
يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا.

وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَاللَّهِ إِنِّي لَأَخْشَاكُمْ لِلَّهِ وَأَتَقُّكُمْ لَهُ وَلَكِنِّي  
أَصُومُ وَأُفْطِرُ وَأُصَلِّي وَأَرْقُدُ وَأَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي  
فَلَيْسَ مِنِّي. (بخاری)

इन्नल हम-द लिल्लाहि न-स-तईनुहू व नस्तगफिरहू व नऊजू बिल्लाहि  
मिन शुरूरि अनफुसिना मय्यैहदिहिल्लाहु फ-ला मुजिल-ल लहू व मय्युजलिलहू  
फला हादि-य लहू व अशहदु अल्ला-इ-ला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन-न  
मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह ।

या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह हक-क तुक्कातिही व ला तमतुन-न  
इल्ला व अन्तुम मुसलिमून ।

या अय्युहन्नासुत्तकू रब्बकुमुल्लजी ख-ल-क-कुम मिन-नफसिवँ-वाहि-द  
तिवँ-व ख-ल-क मिनहा जौजहा व बस-स मिनहुमा रिजालन कसीरवँ-व  
निसा-अ, वत्तकुल्ला-हल्लजी तसाअलू-न बिही वल अरहा-म इन्नल्ला-ह  
का-न अलैकुम रक्कीबा । या अय्युहल्लजी-न आमनुत्तकुल्ला-ह व कूलू कौलन  
सदीदंय्युसलिह लकुम अअ-मालकुम व यगफिर लकुम जुनूबकुम व मय्युति  
इल्ला-ह व रसूलहू फ-कद फा-ज फौजन अजीम ।

व का-ल रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म वल्लाहि इन्नी  
ल-अखशाकुम लिल्लाहि व अतक्काकुम लहू वलाकिन्नी असूमु व उफतिर  
व उसल्ली व अरकुदु व अ-त-जव्वजुनिसा-अ फ-मरगि-ब अन सुन्नती  
फलै-स मिन्नी (बुखारी)

“शुक्र व तारीफ खुदा ही के लिए है । हम उसी से मदद चाहते हैं  
और उसी से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं और हम अपने नफ़्स की  
शरारतों और बुराइयों के मुकाबले में अपने आपको अल्लाह की पनाह  
में देते हैं । (सच तो यह है कि) जिसको खुदा सीधी राह चलाए (और  
वह उसी को सीधी राह चलाता है जो चलने का वाकई इरादा रखता  
हो) तो उसको कोई भटका नहीं सकता और जिसको खुदा गुमराह करता  
है (और वह उसी को गुमराह करता है जो गुमराह होना चाहता है) तो  
उसको कोई भी सीधी राह पर नहीं ला सकता और मैं गवाही देता हूँ  
कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद  
(सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं ।

ऐ ईमानवालो ! ठीक-ठीक अल्लाह का तक्वा अपनाओ और मरते  
दम तक खुदा की वफ़ादारी और हुक्म-बरदारी पर कायम रहो ।

ऐ लोगो ! अपने रब के आज्ञा से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा  
किया और उसी जान से उसका जोड़ा पैदा फ़रमाया और उन दोनों के

ज़रिए बहुत से मर्द और औरतें फैलाए, उस पालनेवाले अल्लाह की नाराज़ी से बचते रहना जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे से अपने हक़ माँगते हो और रिश्तेदारों के हक़ों का पास व लिहाज़ रखो । यक्कीन जानों, खुदा तुम्हारी निगरानी कर रहा है ।

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह से डरते रहो और जैची-तुली मज़बूत बात ज़बान से निकालो । अल्लाह तुम्हारे अमल की इसलाह फ़रमाएगा और गुनाहों पर माफ़ी का परदा डाल देगा और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की इताअत और फ़रमाँबरदारी करेंगे, वे बड़ी कामयाबी से सरफ़राज़ होंगे ।”

नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया—

“खुदा की क़सम ! मैं तुम सबमें ज़्यादा खुदा से डरनेवाला हूँ । तुम सबमें ज़्यादा उसकी नाराज़ी से बचनेवाला हूँ, लेकिन मेरा हाल यह है कि मैं कभी नफ़ली रोज़े रखता हूँ, कभी बाँर रोज़े के रहता हूँ, रातों को नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ और मैं औरतों से निकाह भी करता हूँ । अतः जो मेरी इस सुन्नत से मुँह फेरे, उसका मुझसे कोई ताल्लुक नहीं ।”

## 54. इसतिखारा

जिन्दगी के अहम मामलों, जैसे—सफ़र, निकाह और तिजारत के मामले वगैरह में इसतिखारा कर लिया कीजिए ।

इस्तिखारे का मतलब है 'खैर और भलाई तलब करना ।' जिन अहम और जायज़ कामों में आप पर खैर का पहलू खुल न पाए, उनमें इस्तिखारे का ज़रूर एहतियाम कीजिए और फिर जिस तरह दिल का झुकाव महसूस हो, उसको खुदा का फ़ैसला समझकर अपना लीजिए ।

इस्तिखारे का तरीका यह है कि जब भी कोई ग़ैर मामूली काम सामने हो तो मकरूह और हराम वक्तों के अलावा जब भी चाहें दो रक़अत नफ़ल अदा कीजिए और फिर इस्तिखारे की दुआ पढ़िए ।

हज़रत साद बिन अबी वक्कास (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—

“खुदा से इसतिखारा करना आदम की औलाद की सआदत है और खुदा के फ़ैसले पर राज़ी हो जाना भी आदम की औलाद की सआदत है और आदम की औलाद की बदबख़्ती यह है कि वह खुदा से इसतिखारा न करे और खुदा के फ़ैसले पर नाख़ुश हो ।” (मुस्नद अहमद)

नबी (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया—

“इसतिखारा करनेवाला कभी नामुराद नहीं होता और मशविरा करनेवाला कभी शरमिंदा नहीं होता और क़िफ़ायत से काम लेनेवाला कभी किसी का मुहताज नहीं होता ।” (तबरानी)

हज़रत जाबिर (रज़ि०) का बयान है कि नबी (सल्ल०) जिस तरह हमें क़ुरआन पढ़ाया करते थे उसी तरह हर काम में इसतिखारा करने की भी तालीम देते थे । फ़रमाते, “जब तुममें से कोई किसी अहम मामले में फ़िक्रमंद हो तो दो रक़अत नफ़ल नमाज़ पढ़े और फिर यह दुआ पढ़े— (बुखारी)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَاَلَا تَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَاَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَامُ الْغُیُوْبِ .  
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعِیْشَتِیْ وَ



عَاقِبَةُ أَمْرِى فَاقْدَرُهُ لى وَيَسِّرُهُ لى ثُمَّ بَارِكْ لى فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ  
أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لى فِى دِينِى وَمَعَاشِىتى وَعَاقِبَةُ أَمْرِى فَاصْرِفْهُ عَنِّى  
وَاصْرِفْنِى عَنْهُ وَاقْدِرْ لى الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِى بِهِ.

अल्लाहुम-म इन्नी अस्ताखीरु-क बिइल्मि-क व अस्तान्निदरु-क  
बिक्कुद-रति-क व अस्अलु-क मिन फ़ज़लि-कल अज़ीमि फ़-इन्न-क तक्कदिरु  
व ला अक्कदिरु व तअलमु व ला अअलमु व अन-त अल्लामुल गुयूब ।

अल्लाहुम-म इन-कुन-त तअ-लमु अन-न हाज़ल अम-र<sup>१</sup> खैरुल्ली फ़ी  
दीनी व मईशती व आक्किबति अम्नी फ़क्कदिरहु ली व यससिरहु ली सुम-म  
वारिक ली फ़ीहि व इन कुन-त तअ-लमु अन-न हाज़ल अम-र शरुल्ली  
फ़ी-दीनी व मईशती व आक्किबति अमरी फ़सरिफ़हु अन्नी वसरिफ़नी अन्हु  
वक्कदुर लियल खै-र हैसु का-न सुम-म अर्ज़िनी बिही ।

“ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरे इल्म के वास्ते से खैर की तलब करता  
हूँ और तेरी कुदरत के ज़रिए तुझसे तेरी बड़ी मेहरबानी का सवाल करता  
हूँ, इसलिए कि तू कुदरतवाला है और मुझे ज़रा कुदरत नहीं । तू इल्मवाला  
है और मुझे इल्म नहीं और तू ग़ैब की सारी बातों को ख़ूब जानता है ।

ऐ अल्लाह ! अगर तेरे इल्म में यह काम मेरे लिए बेहतर है, मेरे  
दीन व दुनिया के लिहाज़ से और अंजाम के लिहाज़ से, तो मेरे लिए  
इसे मुक़द्दर फ़रमा और मेरे लिए इसको आसान कर और मेरे लिए इसको  
मुबारक बना दे और अगर तेरे इल्म में यह काम मेरे लिए बुरा है, मेरे  
दीन और दुनिया के लिहाज़ से और अंजाम के लिहाज़ से, तो इस काम  
को मुझ से दूर रख और मुझे इससे बचाए रख और मेरे लिए खैर और  
भलाई मुक़द्दर फ़रमा जहाँ कहीं भी हो, और फिर मुझे उसपर राज़ी और  
यकसू भी फ़रमा दे ।”

१. यहाँ ‘हाज़ल अम-र’ के बजाए अपनी हाज़त का नाम लेकर उसे बयान करे या ‘हाज़ल अम-र’  
कहते वक़्त अपनी हाज़त का तसव्वुर करे ।

## 55. अस्मा-ए-हुसना (अच्छे नाम)

नफ़्स को पाक करने और मन को सुकून पहुँचाने का वह जरिया जो भरोसेमंद और महफूज़ है, यह है कि आप अल्लाह के जिक्र से अपनी ज़बान तर रखें। उसके गुणों को बार-बार ताज़ा करें, इन गुणों के तकाज़ों पर गौर करें, ईमान और सूझ-बूझ के साथ इन गुणों को दिल व दिमाग पर छाए रखने की आदत डालें। कुरआन का इशारा है—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا وَسَبِّحُوا بُكْرَةً وَأَصِيلًا ○

“ईमानवालो ! अल्लाह का जिक्र ज़्यादा से ज़्यादा करते रहो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह (गुण-गान) में लगे रहो।” (कुरआन, 33:42)  
सूरा आराफ़ में है—

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ○

“और अल्लाह के अच्छे-अच्छे नाम हैं, अतः इन अच्छे नामों से उसको पुकारते रहो।” (कुरआन, 7:180)

इन नामों की तफ़सील और इनके फैले तकाज़े कुरआन में भी साफ़ तौर पर बयान किए गए हैं और नबी (सल्ल०) ने भी इन गुणों की तादाद, तफ़सील और उनको हिफ़ाज़त से रखने का बड़ा बदला बताते हुए उनको बार-बार पढ़ने पर उभारा है। आप (सल्ल०) का इशारा है—

“खुदा के नित्यानवे (एक कम पूरे सौ) नाम हैं, जो आदमी इन्हें याद कर लेगा, जन्नत में दाखिल होगा।” (बुखारी)

अल्लाह के गुणों को याद कर लेने का मतलब यह है कि आप उनको समझें, उनके तकाज़ों पर अमल करें और उनके मुताबिक अपनी जिन्दगी को ढालने की कोशिश करें। इसका सही तरीका यह है कि आप ज़ौक व शौक के साथ तिलावत कीजिए, कुरआन पाक को पढ़ने की आदत डालिए और पाबन्दी के साथ उसमें सोच-विचार को अपने ऊपर ज़रूरी कर लीजिए। फिर उन भरोसे की हदीसों को तवज्जोह के साथ दिल लगाकर पढ़िए जिनमें इन गुणों का मतलब और तकाज़े ज़ेहन में बिठाए गए हैं। साथ ही उन मसनून जिक्रों और दुआओं को भी तबीअत

की हाजिरी और एकसूई के साथ पढ़ने की पाबन्दी कीजिए जो आमतौर से अल्लाह के इन गुणों की बुनियाद पर होती हैं । कुरआन पर नज़र रखनेवाले उलेमा ने कुरआन ही से इन निन्यानवे भले नामों को जमा किया है—

1. अल्लाह— यह दुनिया के पैदा करनेवाले की ज्ञात का नाम है जो तमाम ऊँचे गुणों और खैर व बरकत का स्रोत है । यह नाम उसके सिवा न कभी किसी के लिए बोला गया है और न बोलना सही है । अल्लाह ही आपकी मुहब्बतों का हक़ीक़ी मरकज़ है, वही आपकी इबादत और कुरबानी का अकेला हक़दार है और वही तमाम ख़तरों से हिफ़ाज़त की एक ही पनाहगाह है । अतः उसी की मुहब्बत से दिल को आबाद रखिए । उसी की खुलूस के साथ इबादत कीजिए और उसी पर भरोसा कीजिए ।

وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ (البقرة)

“और ईमान रखनेवाले मोमिन अल्लाह से ज़बरदस्त मुहब्बत रखते हैं ।” (कुरआन, 2:165)

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۚ إِنَّا لِلَّهِ  
الدِّينَ الْخَالِصَ (الر: 3)

“ऐ नबी ! यह किताब हमने आपकी ओर हक़ के साथ उतारी है । अतः अल्लाह ही की इबादत कीजिए इताअत को उसके लिए ख़ालिस करते हुए, अच्छी तरह समझ लीजिए कि इताअत और बन्दगी सिर्फ़ अल्लाह ही का हक़ है ।” (कुरआन, 39:2)

قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۚ

“कह दीजिए कि मुझे तो बस यही हुक्म मिला है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूँ और किसी को भी उसका शरीक न बनाऊँ ।”

(13:36)

وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۚ

“और भरोसा करनेवाले अल्लाह ही पर भरोसा करते हैं ।” (14:12)

2. अरहमान— वह ज्ञात जिसकी रहमत में इतिहाई जोश व ख़रोश है और बहुत ज़्यादा रहम करनेवाली है, जिसने अपनी रहमत से इनसान को बहुत ज़्यादा

नेमतों से नवाज़ा है ।

الرَّحْمَنُ عَلَّمَ الْقُرْآنَ خَلَقَ الْإِنْسَانَ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝

“रहमान ने यह कुरआन सिखाया, इनसान को पैदा करके बोलने की ताकत दी ।”  
(कुरआन, 55:1-4)

खुदा की रहमानियत सबसे ज़्यादा इस बात से जाहिर हो रही है कि उसने इनसान को कुरआन जैसी बड़ी नेमत बख्शी और फिर इनसान को बोलने की ताकत देकर दूसरे जीवों में नुमायाँ कर दिया ।

3. अर्रहीम— वह ज्ञात जिसकी रहमत लगातर हो रही है, जिसकी हमेशा रहनेवाली रहमत का सिलसिला कभी ख़त्म नहीं होता, दुनिया में भी लगातार उसकी रहमत के साए ही में इनसान पल-बढ़ रहा है, तरक्की कर रहा है, नेकियों के रास्ते पर बढ़ रहा है, अमल की मोहलत पा रहा है और आखिरत में भी ईमानवाले उसकी इसी खूबी की बरकत से जन्नत जैसी आरामगाह में आराम व सुकून की ज़िन्दगी पाएँगे ।

وَأَنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا إِنَّ اللَّهَ لَعَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

“और अगर तुम खुदा की नेमतों का हिसाब लगाना चाहो तो हिसाब नहीं लगा सकते, यानी खुदा की अपार और लगातार मिलनेवाली नेमतों की गिनती मुमकिन नहीं । इनसान ज़िन्दगी के लम्हे-लम्हे में खुदा की रहमत व तवज्जोह का मुहताज है और उसकी रहमतों की बारिश बराबर हो रही है ।”  
(कुरआन, 16:18)

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝

“वही है जो तुम पर रहमत फ़रमा रहा है और उसके फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआ करते हैं, ताकि वे तुम्हें अंधेरों में से निकालकर रौशनी में लाएँ । वह ईमानवालों पर बहुत ही रहम फ़रमानेवाला है, जिस दिन वे उससे मुलाक़ात करेंगे तो उनका स्वागत सलाम से होगा और उनके लिए खुदा ने इज़्ज़त का बदला मुहैया कर रखा है ।”

(कुरआन, 33:43)

4. अल-मलिक— दुनिया का हक़ीकी बादशाह जिसकी निगरानी दोनों दुनिया में है ।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ

“अतः बाला व बरतर है अल्लाह, हक़ीकी बादशाह ।”

(कुरआन, 20:114)

5. अल-कुददूस— तमाम ऐबों और ग़लतियों से सरासर पाक, इसलिए उसी का भेजा हुआ क़ानून हर ग़लती से महफूज़ है ।
6. अस-सलाम— तमाम कमज़ोरियों और ख़राबियों से सलामत और महफूज़ है ।
7. अल-मुअ्मिन— तमाम आफ़तों और अज़ाब से अमन व अमान में रखनेवाला है ।
8. अल-मुहैमिन— दुनिया की निगरानी करनेवाला और ख़ताओं से महफूज़ रखनेवाला ।
9. अल-अज़ीज़— इज़्ज़त व इक़तिदार का एक ही स्रोत जिसका इक़तिदार सब पर हावी है ।

إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا (يونس)

“इज़्ज़त सारी-की-सारी अल्लाह के लिए है ।” (कुरआन, 10:65)

10. अल-जब्बार— ज़बरदस्त ग़लबे और जोरवाला, दुनिया की बिगड़ी बनानेवाला ।
11. अल-मुतकब्बिर— अज़मत व क़िबरियाई (बड़ाई और प्रतिष्ठा) का स्रोत, जिसकी क़िबरियाई में कोई शरीक नहीं ।
- هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهِمِّنُ  
الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ (الحشر: 1)

“वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, हक़ीकी बादशाह, पाक ज़ात, हर कमी से सलामत, अमन व अमान में रखनेवाला, निगहबान, सब पर ग़ालिब, ज़बरदस्त बड़ाईवाला । पाक व बरतर है अल्लाह उन

चीजों से जिनको ये लोग उसका शरीक करार देते हैं ।” (कुरआन, 59:23)

12. अल-खालिक— मुनासिबेहाल ताकतों और सलाहियतों का मालिक और बेहतरीन वुजूद बरूशनेवाला ।

13. अल-बारी— हर चीज को अदम (नास्ति) से वुजूद (अस्तित्व) में लानेवाला, बेमिसाल ईजाद करनेवाला ।

14. अल-मुसव्विर— जीवों और दुनिया को शकल व सूरत देनेवाला ।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ

“वही है जो (माओं के) रहमों (गर्भाशयों) में जैसी चाहता है तुम्हारी सूरतें बनाता है ।”  
(कुरआन, 3:6)

وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ

“उसने तुम्हारी शकलें बनाई और बेहतरीन शकलें बनाई ।” (64:3)

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ○ (الحشر: २२)

“वही अल्लाह है दुनिया का पैदा करनेवाला, वुजूद देनेवाला, सूरतें बनानेवाला और उसी के लिए हैं अच्छे-अच्छे नाम ।”  
(कुरआन, 59:24)

15. अल-गफ़फ़ार— बहुत ज्यादा माफ़ फ़रमानेवाला और बरूशनेवाला ।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ○ (نوح)

“और मैंने कहा कि अपने रब से माफ़िरत चाहो, वह बहुत ज्यादा माफ़ फ़रमानेवाला है ।”  
(कुरआन, 71:10)

16. अल-क्रहहार— अपनी मखलूक (पैदा की हुई चीजों) पर ग़लबा और इख्तियार रखनेवाला ।

17. अल-वाहिद— अकेला, जिसकी ज़ात और गुणों, जिसकी कुदरत और जिसके हकों में कोई शरीक नहीं ।

لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ

“आज किसकी हुकूमत है, अल्लाह की जो एक है और सब पर ग़ालिब है ।”

18. अत्तव्वाब— बन्दों के हाल पर तवज्जोह फ़रमानेवाला और गुनाहगारों की

तौबा कबूल करनेवाला

ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

“फिर खुदा ने उनपर तबज्जोह फरमाई कि तौबा करें । बेशक अल्लाह ही बहुत ज्यादा तौबा कबूल करनेवाला और दया करनेवाला है ।” (कुरआन, 9:118)

19. अल-वह्हाब— बेगरज बखशिश और सखावत करनेवाला ।

وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (अल عمران)

“हमें अपने पास से रहमत अता फरमा । बेशक तू बड़ा फैयाज है ।”  
(कुरआन, 3:8)

20. अल-खल्लाक— हर तरह, हर वक़्त, हर चीज़ को पैदा करनेवाला, पैदा करने के गुण में कामिल ।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ

“क्या वह, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, इस पर कुदरत नहीं रखता कि इन जैसों को पैदा कर सके । क्यों नहीं, वह बड़ा पैदा करनेवाला और इल्म रखनेवाला है ।” (कुरआन, 36:81)

21. अल-रज्जाक— अपनी मखलूक को खूब ही रोज़ी देनेवाला, ज़रूरत पूरी करनेवाला ।

22. अल-मतीन— निहायत मज़बूत व ताक़तवर ।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ

“बेशक अल्लाह ही खूब रोज़ी देनेवाला जोरआवर और मज़बूत व तबाना है ।”  
(कुरआन, 51:58)

23. अल-फ़त्ताह— मखलूक के दरमियान सही फैसला करनेवाला, मुशकिल-कुशा ।

24. अल-अलीम— बन्दों की हर कथनी-करनी और भाव-विचार का सीधे-सीधे जाननेवाला ।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝

“कहिए, हमारा पालनहार हमको जमा करेगा, फिर हमारे दरमियान ठीक-ठीक फैसला करेगा । बेशक वह बड़ा ही इनसाफ़ के साथ फैसला करनेवाला और सब कुछ जाननेवाला है ।” (कुरआन, 34:26)

25. अल-मुहीत— सारी मखलूकों का अहाता करनेवाला, कोई चीज़ उसके इल्म व कुदरत से बाहर नहीं है ।

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ.

“और खुदा उनको हर ओर से घेरे हुए है ।” (कुरआन, 85:20)

26. अल-कदीर— हर चीज़ पर पूरी-पूरी कुदरत और इख्तियार रखनेवाला ।

إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

“यह कि खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है और यह कि खुदा अपने इल्म से हर चीज़ का अहाता किए हुए है ।” (कुरआन, 65:12)

27. अल-हलीम— अजाब देने में जल्दी न करनेवाला । बन्दों को सँभलने का मौक़ा देनेवाला, बुर्दबार (सहनशील) ।

28. अल-ग़फ़ूर— बहुत ज़्यादा माफ़ फ़रमानेवाला और परदापोशी करनेवाला ।

29. अल-अफूवु— बहुत ज़्यादा माफ़ फ़रमानेवाला ।

30. अश-शकूर— मखलूक के नेक और भले कामों की बहुत कद्र करनेवाला ।

إِنَّ اللَّهَ يُمَسِّكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ (الفاطر: ८)

“हकीकत यह है कि अल्लाह ही है जो आसमानों और ज़मीन को टल जाने से रोके हुए है, और अगर वे टल जाएँ तो अल्लाह के बाद कोई दूसरा उन्हें थामनेवाला नहीं है । बेशक खुदा बड़ा ही दरगुज़र करनेवाला और बुर्दबार है ।” (कुरआन, 35:41)

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَغْفُو عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا غَفُورًا ۝



“नामुमकिन नहीं कि खुदा उनको माफ़ फ़रमा दे, अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला और दरगुज़र फ़रमानेवाला है ।” (कुरआन, 4:99)

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ  
(الفاطر-२२)

“और वे कहेंगे कि खुदा का शुक्र है जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया । बेशक हमारा रब बहुत ज़्यादा चश्मपोशी करनेवाला और क़द्र फ़रमानेवाला है ।” (कुरआन, 35:34)

31. अल-अज़ीम— अपनी ज़ात व सिफ़ात (गुणों) में बड़ाई और बुजुर्गीवाला ।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ

“तो तुम अपने परवरदिगार बुजुर्ग के नाम की तस्बीह करते रहो ।” (56:74)

32. अल-वासिअ— निहायत वुसअतवाला, बन्दों पर बड़ी फ़राखी के साथ एहसान करनेवाला ।

وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۝  
(البقرة-२१८-२१९)

“अल्लाह बड़ी वुसअतवाला और जानकार है । जिसको चाहता है हिकमत अता करता है और जिसको हिकमत मिली, उसको सच में बड़ी दौलत मिल गई ।” (कुरआन, 2:268-269)

33. अल-हकीम— दुनिया के निज़ाम और बन्दों के मामले में बड़ी हिकमत के साथ फ़ैसला करनेवाला ।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

“बेशक अल्लाह बहुत जाननेवाला और हिकमत के फ़ैसले करनेवाला है, जिसको चाहता है अपनी रहमत में दाखिल फ़रमा लेता है और ज़ालिमों के लिए उसने दुख देनेवाला अज़ाब तैयार कर रखा है ।” (76:30-31)

34. अल-हय्यु— ज़िन्दगी का स्रोत, मौत, नींद और ऊँघ से पाक ।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ ۝

“और भरोसा कीजिए उस ज़िन्दा रहनेवाले पर जिसको कभी मौत न आणी ।”  
(कुरआन, 25:58)

35. अल-क़य्यूम— दुनिया के इंतज़ाम को सँभालने और कायम रखनेवाला ।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ

“अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा जावेद, दुनिया के निज़ाम को सँभाले हुए है, न उसको ऊँघ आती है, न नींद ।” (कुरआन, 2:55)

36. अस्समीअ— बन्दों की सुननेवाला, बन्दों का पूरी तरह जानकर ।

37. अल-बसीर— बन्दों के कामों और मामलों पर निगाह रखनेवाला ताकि उनके दरमियान सही-सही फैसला करे ।

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝  
(الحؤمن: २०)

“और अल्लाह ठीक-ठीक बेलाग़ फैसला फ़रमाएगा । रहे वे, जिनको ये ख़ुदा को छोड़कर पुकारते हैं, वे किसी चीज़ का भी फैसला करनेवाले नहीं । बेशक अल्लाह ही सब कुछ सुनने और देखनेवाला है ।”

(कुरआन, 40:20)

38. अल-लतीफ़— निहायत ही बारीकी से देखनेवाला, बारीक से बारीक उपायों को अपनानेवाला ।

39. अल-ख़बीर— बन्दों की हर बात की पूरी-पूरी ख़बर रखनेवाला ।

يُنَبِّئُ إِنَّهَا إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَعْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝  
(القلم: १५)

“प्यारे बेटे ! कोई चीज़ राई के दाने के बराबर भी हो और किसी चट्टान में या आसमानों या ज़मीन में छिपी हुई हो, अल्लाह उसको निकाल लाएगा । बेशक अल्लाह बारीकियों को जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है ।”  
(कुरआन, 31:16)

40. अल-अलीयु— इतिहाई ऊँचा और बुलन्द मरतबेवाला ।

41. अल-कबीर— इतिहाई बुजुर्ग और बड़ाईवाला, जिसकी बड़ाई में कोई शरीक और मुकाबलेवाला नहीं है ।

42. अल-हक्कु— जिसका वुजूद हक है और किसी के इंकार करने से उसके हक होने पर कोई असर नहीं पड़ता ।

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (الن: २०)

“यह इसलिए कि उसका वुजूद हक है और वे सब बातिल हैं, जिन्हें अल्लाह को छोड़कर ये लोग पुकारते हैं और यह कि अल्लाह ही बुलन्द और बड़ाईवाला है ।” (कुरआन, 31:30)

43. अल-मुबीन— हक को खोलनेवाला और हक को हक कर दिखानेवाला ।

وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ (التور: २५)

“और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक है, सच को सच कर दिखानेवाला ।” (कुरआन, 24:25)

44. अल-मौला— ईमानवालों की हिमायत और मदद करनेवाला, हकीकती आक्रा, कारसाज ।

45. अल-नसीर— ईमानवालों की मदद और हिमायत करनेवाला ।

وَاَعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ، فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ (الح: ८)

“और अल्लाह से जुड़ जाओ, वही तुम्हारा हकीकती आक्रा है, क्या ही बेहतरीन हामी है और क्या ही खूब मददगार ।” (कुरआन, 22:78)

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ (محمد: १०)

“यह इसलिए कि जो ईमानवाले हैं उनका आक्रा और कारसाज खुदा है और कुफ्रवालों का कोई हिमायत करनेवाला और कारसाज नहीं ।”

(कुरआन, 47:11)

46. अल-करीम— भारी हौसले के साथ बखशिश और सुलूक करनेवाला ।

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝ الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝ (الأنفطار: ٦-٨)

“ऐ इन्सान ! तुझको किस चीज ने तेरे अपने करीम रब के मामले में धोखे में डाल रखा है, वह रब, जिसने तुझे पैदा करने का मसूबा बनाया, फिर तेरी बनावट को ठीक-ठीक किया, अतः तुझे निहायत मौजू (सन्तुलित) बनाया और जिस शक्त में चाहा तुझे तरकीब दिया ।” (कुरआन, 82:6-8)

47. अल-गनीयु— मखलूक से बेनियाज ।

48. अल-हमीद— अपनी ज्ञात में पाकीजा खूबियोंवाला, जो किसी की तारीफ व सना का मुहताज नहीं ।

وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ (الن: ١٣)

“जो कोई शुक्र करे उसका शुक्र उसके अपने ही लिए फायदेमंद है और जो कुफ्र करे तो खुदा बेनियाज और आप से आप पाक खूबियोंवाला है ।” (कुरआन, 31:12)

49. अल-क़वीयु— बड़ी ताकतवाला, जिसके सामने किसी का जोर नहीं चलता ।

50. अश-शदीद— बड़ी कड़ी पकड़ करनेवाला जिसकी पकड़ से बचना मुमकिन नहीं ।

كَذَّابِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

“जिस तरह आले फिरऔन और उनसे पहले के लोगों के साथ मामला पेश आया है, उन्होंने खुदा की आयतों को मानने से इंकार किया और अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया । अल्लाह ज़बरदस्त ताकतवाला और सख्त सज़ा देनेवाला है ।” (कुरआन, 8:54)

51. अर-रक़ीब— बन्दों के कामों और मामलों की निगरानी करनेवाला ।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝ (النساء: १)

“यक़ीन जानो कि खुदा तुम्हारी निगरानी कर रहा है ।” (कुरआन, 4:1)

52. अल-करीब— बन्दों से निहायत नज़दीक रहनेवाला ।

53. अल-मुज़ीब— बन्दों की दुआएँ सुनने और क़बूल करनेवाला ।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا

دَعَانِ ۝ (البقرة: 186)

“और जब मेरे बन्दे मेरे मुताल्लिक आप से पूछें तो उन्हें बताइए कि मैं उनसे बहुत करीब हूँ, पुकारनेवाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ क़बूल करता हूँ ।” (क़ुरआन, 2:186)

فَاسْتَغْفِرُوا لَهُ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ۝

“अतः तुम उससे माफ़िरत चाहो और उसके हुज़ूर तौबा करो । यकीनन मेरा रब करीब है और दुआओं को क़बूल करनेवाला है ।” (क़ुरआन, 11:61)

54. अल-वकील— बन्दों के काम बनाने की ज़िम्मेदारी लेनेवाला, कारसाज़ ।

وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝ (آل عمران: 123)

“और उन्होंने कहा, हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज़ है ।” (क़ुरआन, 3:173)

55. अल-हसीब— बन्दों से पूछ-गछ करने और हिसाब लेनेवाला ।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝ (النساء: 86)

“बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेनेवाला है ।” (क़ुरआन, 4:86)

56. अल-जामि'अ— ज़िस्म के कर्णों को इकट्ठा करनेवाला और हथ्र के दिन बन्दों को जमा करनेवाला ।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۝ (آل عمران: 9)

“ऐ हमारे पालनहार ! तू इनसानों को उस दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शक नहीं ।” (क़ुरआन, 3:9)

57. अल-क्वादिर— हर काम के करने की ताक़त व कुदरत रखनेवाला ।

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ لَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ ۚ بَلَىٰ ۖ قَادِرِينَ عَلَىٰ أَنْ

نُسَوَّى بَنَانَهُ ۝ (القائمة: ۳-۴)

“क्या इन्सान यह खयाल करता है कि हम उसकी (कण-कण बिखरी हुई) हड्डियाँ इकट्ठा नहीं करेंगे ? जरूर करेंगे । हम इसकी कुदरत रखते हैं कि उसके पोर-पोर को दुरुस्त कर दें ।” (कुरआन, 75:3-4)

58. अल-हफ़ीज— बन्दों को हर आफ़त और मुसीबत से बचानेवाला ।

إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِیْظٌ ۝

“बेशक मेरा रब हर चीज़ की हिफ़ाज़त करनेवाला है ।” (कुरआन, 11:57)

59. अल-मुक़ीत— मखलूक को ठीक-ठीक हिस्सा देने पर पूरी तरह कुदरत रखनेवाला, रोज़ी देनेवाला ।

وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِیْتًا ۝

“और अल्लाह हर चीज़ को ठीक हिस्सा देने की कुदरत रखता है ।” (कुरआन, 4:85)

60. अल-वदूद— बन्दों से बेपनाह मुहब्बत रखनेवाला ।

61. अल-मज़ीद— बुज़ुर्गी और शर्फ़वाला ।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِیْدُ ۝ (البروج: 13-15)

“और वह बहुत ज़्यादा माफ़ करनेवाला, बेपनाह मुहब्बत करनेवाला, अर्शवाला, बुज़ुर्गी और शर्फ़वाला है ।” (कुरआन, 85 : 14-15)

62. अल-शहीद— हर जगह हाज़िर व नाज़िर, हर चीज़ पर निगाह रखनेवाला ।

وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِیْدٌ ۝

“और अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखनेवाला है ।” (कुरआन, 85:9)

63. अल-वारिस— हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक, जिसकी मिलकियत कभी ख़त्म नहीं होगी ।

64. अल-मुह्यी— मखलूक को ज़िन्दगी देनेवाला ।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْیِ وَنُمِیْتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝ (الحجر: 22)

“और हम ही ज़िन्दगी और मौत देनेवाले हैं और हम ही असल वारिस

और मालिक हैं ।”

(कुरआन, 15:23)

65. अल-वलीयु— ईमानवालों का हामी व सरपरस्त ।

66. अल-फ़ातिर— हर चीज़ का बनानेवाला ।

فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ○ (يوسف: 101)

“आसमानों और ज़मीन के बनानेवाले ! तू ही मेरा सरपरस्त है दुनिया में और आखिरत में ।”

(कुरआन, 12:101)

67. अल-मालिक— हर चीज़ का हकीकी मालिक जिसके सामने सब आजिज़ और बेबस हैं ।

مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ○

“बदले के दिन का मालिक ।”

(कुरआन, 1:3)

68. अल-मुक्तदिर— हर चीज़ पर पूरा-पूरा इक़तदार रखनेवाला, जो किसी काम में मजबूर नहीं है ।

69. अल-मलीक— कामिल इख़्तियार रखनेवाला बादशाह ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ○ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ○ (القر: 55)

“मुत्तकी लोग बाग़ों और नहरों में होंगे, कामिल इख़्तियार रखनेवाले बादशाह के दरबार में ।”

(कुरआन, 54:54-55)

70. अल-अव्वल— वह जो सारी मखलूक की तखलीक (रचना) से पहले मौजूद था ।

71. अल-आखिर— वह जो सारी मखलूक की फ़ना (ख़त्म होने) के बाद मौजूद रहेगा ।

72. अज़-ज़ाहिर— जिसकी खुदाई हर कण से ज़ाहिर है ।

73. अल-बातिन— निगाहों से छिपा हुआ ।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ○ (الحديد: 3)

“वह सबसे पहला, सबसे पिछला, सब पर ज़ाहिर और सबकी निगाहों से छिपा हुआ है ।”

(कुरआन, 57:3)

74. अल-क्राहिर— बन्दों पर कामिल ग़लबा और इख़्तियार रखनेवाला ।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۝

“और वह अपने बन्दों पर काबिल गलबा रखता है ।” (कुरआन, 6:18)

75. अल-काफ़ी— जो बन्दों की हर ज़रूरत के लिए खुद काफ़ी है ।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۝

“क्या अल्लाह अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं है ।” (कुरआन, 39:36)

76. अश-शाकिर— बन्दों की कोशिश और अमल की कद्र करनेवाला ।

وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۝

“और अल्लाह कद्र करनेवाला और इल्म (ज्ञान) रखनेवाला है ।”  
(कुरआन, 4:147)

77. अल-मुस्तआन— वह ज्ञात जिससे मदद माँगी जाए ।

وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ ۝

“और अल्लाह ही से मदद माँगी जा सकती है ।” (कुरआन, 12:18)

78. अल-बदीअ— बग़ैर किसी नज़ीर के पैदा करनेवाला, बेमिसाल मूजिद ।

بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝

“आसमानों और ज़मीन का बेमिसाल मूजिद है ।” (कुरआन, 2:117)

79. अल-गाफ़िर— गुनाहों को माफ़ फ़रमानेवाला ।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ ۝

“गुनाह को माफ़ करने और तौबा क़बूल करनेवाला ।” (कुरआन, 40:3)

80. अल-हाकिम— अपनी मख़लूक पर हुक्मत करनेवाला अकेला फ़रमाँरवा और क़ानूनसज़ ।

إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ ۝

“फ़रमाँरवाई सिर्फ़ खुदा का हक़ है ।” (कुरआन, 6:57)

81. अल-ग़ालिब— काबिल इख़तियार और पूरा क़ाबू रखनेवाला ।



وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ ۝

“और अल्लाह अपने काम पर पूरा काबू रखता है ।” (कुरआन, 12:21)

82. अल-ह-कम— बेलाग फ़ैसला करनेवाला ।

أَفْغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حُكْمًا ۝

“तो क्या मैं खुदा के सिवा हकम खोजूँ ।” (कुरआन, 6:114)

83. अल-आलिम— खुले-छिपे को पूरी तरह जाननेवाला ।

84. अल-मु-त-आल— हर हाल में बुलन्द व बाला रहनेवाला ।

عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝

“पोशीदा और ज़ाहिर हर चीज़ को जाननेवाला, बुजुर्ग और बरतर ।”  
(कुरआन, 13:9)

85. अल-रफ़ीअ— बुलन्द व बरतर दर्जोवाला ।

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ ۝

“बुलन्द दर्जोवाला, अर्शवाला ।” (कुरआन, 40:15)

86. अल-हाफ़िज— आफ़तों और हादसों से हिफ़ाज़त करनेवाला ।

فَاللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا ۝

“अतः अल्लाह ही बेहतरीन हिफ़ाज़त करनेवाला है ।” (कुरआन, 12:64)

87. अल-मुंतक़िम— अपने और अपने मुखलिसों के दुशमनों से बदला लेनेवाला ।

فَأَنْتَقِمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

“फिर जिन लोगों ने जुर्म किया, उनसे हमने बदला लिया और हम पर यह हक़ था कि हम ईमानवालों की मदद करें ।” (कुरआन, 30:47)

88. अल-काइमु बिल-क़िस्त— अदल व इनसाफ़ के साथ तदबीर व इन्तिज़ाम करनेवाला ।

89. अल-इलाह— माबूद, जिसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं ।

قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۝

“अद्ल के साथ इन्तिज़ाम करनेवाला, अकेला माबूद ।” (कुरआन, 3:18)

90. अल-हादी— सीधी राह दिखानेवाला, रसूल और किताब भेजनेवाला ।

وَإِنَّ اللَّهَ لَهُدٍ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝

“यकीनन अल्लाह ईमानवालों को सीधी राह दिखाता है ।” (कुरआन, 22:54)

91. अर-रऊफ़— बन्दों पर इतिहाई मेहरबानी करनेवाला ।

وَاللَّهُ رءُوفٌ ۖ بِالْعِبَادِ ۝

“और खुदा अपने बन्दों पर निहायत ही मेहरबान है ।” (कुरआन, 3:30)

92. अन-नूर— दोनों दुनिया को रौशन करनेवाला, रौशनी का स्रोत ।

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝

“खुदा आसमानों और ज़मीन का नूर है ।” (कुरआन, 24:35)

93. अल-अकरम— इज़्ज़त और शर्फ़वाला, बन्दों के साथ बेहतर इज़्ज़त का मामला करनेवाला ।

إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝

“पढ़िए, और आपका रब बड़ा ही करमवाला है ।” (कुरआन, 96:3)

94. अल-अअला— सबसे बुलन्द और बरतर ।

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَىٰ ۝

“अपने बुलन्द व बरतर रब के नाम की तसबीह कीजिए ।” (कुरआन, 87:1)

95. अल-बर्र— अपनी मखलूक के साथ एहसान का सुलूक करनेवाला ।

إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝ (الطّور)

“बेशक वह बड़ा ही एहसान करनेवाला मेहरबान है ।” (कुरआन, 52:28)

96. अर-रब्ब— परवरीश करनेवाला, हर तरह के खतरों से बचाते हुए और तरक्की के तमाम साधनों को जुटाते हुए कमाल की मंज़िल तक पहुँचानेवाला, आक्रा, मालिक ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

“शुक्र अल्लाह, ज़हानों के रब के लिए ।” (कुरआन, 1:1)

97. अल-हफ़ीयु— मखलूक का बहुत ज़्यादा खयाल रखनेवाला, निहायत

मेहरबान ।

إِنَّهُ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ۝

“बेशक वह मुझ पर निहायत मेहरबान है ।” (कुरआन, 19:47)

98. अल-अहद— यकता, बेमिसाल, जिसका कोई बराबरी करनेवाला नहीं ।

99. अस-समद— बेनियाज़, जो किसी का मुहताज नहीं और सब उसके मुहताज हैं ।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝

“कहिए, वह अल्लाह यकता है, अल्लाह बेनियाज़ है, सब उसके मुहताज हैं ।”

(कुरआन, 112:1-2)

## 56. मसनून दुआएँ : एक नज़र में

दिन व रात के अलग-अलग वक्तों में और मौकों पर पढ़ने के लिए कुरआन व हदीस में जो दुआएँ आई हैं उनको याद कीजिए, उन्हें बार-बार पढ़िए और उनको खुलूस के साथ, सोच-समझकर और पूरा दिल लगाकर बराबर पढ़ते रहिए, यहाँ तक कि ये दुआएँ और इलतिजाएँ वाकई आपके दिल की आरजूएँ बन जाएँ। अपने खुदा से माँगना और बराबर माँगते रहना और उन्हीं लफ़्ज़ों में माँगना जो उसने बताए हैं। और वही कुछ माँगना जो उसके प्यारे बन्दे हमेशा माँगते रहे हैं— यही मोमिन की शान है और यही है दोनों दुनिया की सआदत।

यही सोचकर कुरआन व हदीस से चुनी हुई दुआएँ इस किताब में जमा कर दी गई हैं, लेकिन ये दुआएँ चूँकि अलग-अलग बाबों (अध्यायों) में अलग-अलग विषयों के तहत पूरी किताब में बिखरी हुई हैं और पढ़नेवाले को ज़रूरत के वक्त उनकी खोज में बहुत परेशानी होती है इसलिए यहाँ उन दुआओं की एक सूची इस तरह दी जाती है कि अक्षरों के क्रम के अनुसार दुआ का नाम देकर उसके सामने उस पृष्ठ का नम्बर दे दिया गया है जिसपर वह दुआ नक़ल की गई है। इस तरह ये सारी दुआएँ और उनके मौक़े एक ही नज़र में सामने आ जाते हैं और उनसे फ़ायदा उठाने में काफ़ी आसानी हो जाती है।

### अ, आ, इ,

1. अस्मा-ए-हुस्ना	357
2. अज़ान और इक़ामत के दरमियान की दुआ	303
3. अँधेरा छा जाने की दुआ	73
4. अज़ान के बाद की दुआ	85
5. अज़ाबे जहन्नम से बचने की दुआ	307
6. अक्कीक़े की दुआ	327
7. इयादते मरीज़ (रोगी को देखने) की दुआ	226
8. आँधी की दुआ	73
9. कुफ़्रवालों से निजात की दुआ	310
10. आग लग जाने की दुआ	74
11. आज़माइश से बचने की दुआ	309
12. आफ़्रियते दारैन (दोनों दुनिया की भलाई) की दुआ	303
13. इफ़्तार के बाद की दुआ	128
14. इत्तिहाद व इख़लास की दुआ	198

15. इसतिखारे की दुआ	355
16. इफ्तार की दुआ	127
17. इफ्तार की दुआ (दूसरे के यहाँ)	128
18. इस्लाम पर कायम रहने की दुआ	319
19. इसतिगफ़ार	308
20. दिल के सुधार की दुआ	307
21. इज़तिराब (बेचैनी) की दुआ	67

### क, ख, ग, घ

22. काहिली और बुज़दिली से बचने की दुआ	313
23. कपड़े पहनने की दुआ	25
24. कीना से दिल को पाक रखने की दुआ	198
25. कब्र पर मिट्टी डालने की दुआ	114
26. दिल की सफ़ाई की दुआ	308
27. कुरआन पाक से लगाव की हिदायत (खुतबा)	345
28. क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	117
29. क़र्ज़ की अदायगी की दुआ	320
30. कुरबानी की दुआ	325
31. कुनूते नाज़िला	331
32. खाने के बाद की दुआ	36
33. खाना शुरू करने की दुआ	35
34. भलाई पर ख़ातमे की दुआ	310
35. ख़्वाब सुनने से पहले पढ़ने की दुआ	47
36. ख़्वाब की परेशानी दूर करने की दुआ	48
37. ख़्वाबे परेशाँ (बिखरे सपने) की दुआ	48
38. ख़्वाब से बेदार (जागने) होने की दुआ	45
39. ख़्वाब में ज़ियारते रसूल (सल्ल०) की दुआ	46
40. खुशगवार (अच्छे) ताल्लुकात की दुआ	198
41. खुतबा सानिया (दूसरा खुतबा)	347
42. खुतबा (कुरआन पाक से लगाव की हिदायत)	345
43. ख़ौफ़ (डर) व दहशत (आतंक) की दुआ	72

44. खैर व बरकत की दुआ	207
45. खुलूस व मेल-मिलाप की दुआ	198
46. गुनाहों से पाक होने की दुआ	317
47. गैर-मुस्लिम को सलाम के शब्द	222
48. घर से निकलने की दुआ	51
49. घबराहट और बेचैनी की दुआ	65

### च, छ, ज

50. चाँद देखने की दुआ	121
51. छींक की दुआ	10
52. छींक का जवाब देनेवाले की दुआ	10
53. जनाजे की दुआ	108
54. जवाब (सलाम का)	211
55. जवाब (अस्सलातु खैरूम-मिनन्नौम का)	85
56. जवाब (क्रद क्रामतिस्सलाह का)	85
57. जवाब (छींक का)	10
58. जवाब (हय-य अलस्सलाह का)	85
59. जवाब (तकलीफ़ देनेवाली चीज़ के दूर करने का)	230
60. जहाज़ में उड़ने की दुआ	55
61. जामेअ दुआ	317
62. जुमे का खुतबा	340
63. जुमा के दिन की दुआ	100
64. ज़ियारते रसूल (सल्ल०) की दुआ	46

### फ़, ब, म

65. फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते वक़्त की दुआ	91
66. फ़ज्र और मगरिब के बाद की दुआ	92
67. फ़लाहे दारैन (दोनों दुनिया की फ़लाह) की दुआ	303
68. फ़हमे कुरआन (कुरआन समझने) की दुआ	339
69. फ़िक्र व परेशानी की दुआ	339
70. बच्चे की ज़बान खुलने पर तौहीद की आयत की तालीम	168
71. बच्चे की ज़बान खुलने पर कलिमा तैय्यिबा की तालीम	165

72. बच्चे के कान में अज्ञान व इक्रामत	166
73. बाज़ार जाने की दुआ	51
74. बाज़ार में दाखिल होते वक़्त की दुआ	52
75. बारिश से हिफ़ाज़त की दुआ	73
76. बादलों की गरज और कड़क की दुआएँ	74
77. बिस्तर पर जाते वक़्त की दुआ	225
78. बीमारी से हिफ़ाज़त की दुआ	225
79. बैतुलख़ला (शौचालय) जाने की दुआ	8
80. बैतुलख़ला से निकलने की दुआ	8
81. मग़रिब की अज्ञान के वक़्त की दुआ	37
82. मग़रिब की नमाज़ के बाद की दुआ	92
83. मसजिद में दाखिल होने की दुआ	84
84. मसजिद से निकलने की दुआ	84
85. दुनिया की नज़र में इज़्ज़त की दुआ	317
86. मज्लिस बर्खास्त होते वक़्त की दुआ	210
87. मग़फ़िरत और अल्लाह की रिज़ा की दुआ	316
88. मरीज़ के दुख-दर्द के लिए दुआ	226
89. मदीने में पहला जुमा: (ख़ुतबा)	340
90. माँ-बाप के लिए दुआ	309
91. आज्ञामाश से बचने की दुआ	309
92. मुसीबत में फँसे को देखकर पढ़ने की दुआ	67
93. मुसीबत आने पर दुआ	110
94. मेज़बान के हक़ में ख़ैर व बरकत की दुआ	205
95. मैयत के पास पढ़ने और क़ब्र में उतारने की दुआ	111
96. मौत की ख़बर सुनकर पढ़ने की दुआ	110

### त, द, न,

97. तकलीफ़ पहुँचने पर पढ़ने की दुआ	59
98. तारीकी और घटा छा जाने की दुआ	72
99. तलबिया (हज की दुआ)	137
100. तक्रवा और पाकदामनी की दुआ	314

101. तकलीफ़ और दर्द ख़त्म होने की दुआ	67
102. तकलीफ़ देनेवाली चीज़ों से बचानेवाले की दुआ	68
103. तरावीह की दुआ	329
104. ताल्लुकात के सुधारने की दुआ	198
105. तिलावते क़ुरआन के बाद की दुआ	97
106. दरूद व सलाम	321
107. दुनिया और आखिरत की रूसवाई से बचने की दुआ	314
108. दुश्मन की ओर से डर पैदा होने की दुआ	71
109. दुश्मन के घेरे में आ जाने के वक़्त की दुआ	72
110. दुख-दर्द की दुआ	226
111. नमाज़ के बाद की दुआ	315
112. नमाज़े फ़ज़ के लिए जाते वक़्त की दुआ	91
113. नमाज़े जनाज़ा की दुआ	108
114. नमाज़े हाज़त की दुआ	333
115. नया कपड़ा पहनने की दुआ	25
116. नबी (सल्ल०) की वसीयत	315
117. नव मुस्लिम की दुआ	319
118. नापसन्दीदा ख़वाब देखने की दुआ	47
119. निफ़ाक़ और बदअख़लाक़ी से बचने की दुआ	319
120. निकाह का ख़ुतबा	352
121. निकाह की मुबारकबाद	79
122. नींद से जागने की दुआ	45
123. नुक़सान हो जाने पर पढ़ने की दुआ	59
124. नेकियों से चाव पैदा करने की दुआ	180

### र, ल, व, स, श, ह

125. रहमत व मग़फ़िरत की दुआ	306
126. रंज व ग़म को ख़ुशी में बदलने की दुआ	66
127. रंज व ग़म के वक़्त की दुआएँ	59
128. मग़फ़िरत और अल्लाह की रिज़ा की दुआ	316
129. लिबासे जदीद (नए कपड़े) की दुआ	24



	43
130. लेटने की दुआ	309
131. माँ-बाप के लिए दुआ	164
132. विलादत (पैदाइश) के वक़्त की दुआ	9
133. बुज़ू शुरू करने की दुआ	9
134. बुज़ू के दौरान की दुआ	9
135. बुज़ू से फ़ारिग होने की दुआ	54
136. सफ़र पर जाने की दुआ	54
137. सवारी रवाना होते वक़्त की दुआ	56
138. सलामती और आफ़ियत की दुआ	55
139. सवारी के ऊँचाई पर चढ़ने या उड़ने की दुआ	56
140. सफ़र से वापसी की दुआ	57
141. सफ़र पर किसी को विदा करते वक़्त की दुआ	88
142. सजदों के दरमियान की दुआ	220
143. सलाम के जवाब की दुआ	306
144. सब्र और जमाव की दुआ	308
145. दिल की सफ़ाई की दुआ	290
146. सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार	313
147. सुबह व शाम की दुआएँ	91
148. सुबह की नमाज़ के लिए जाते वक़्त की दुआ	44
149. सोने से पहले की दुआ	123
150. शबेक़दर की दुआ	37
151. शाम के वक़्त की दुआ	307
152. शैतान की शरारतों से बचे रहने की दुआ	308
153. हालात के सुधार की दुआ	333
154. हाजत (ज़रूरत) की दुआ	135
155. हज की दुआ (तलबिया)	335
156. हिफ़ज़े क़ुरआन की दुआ	